

D.El.Ed.

DIPLOMA IN
ELEMENTARY EDUCATION

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि

(डी.एल.एड.)

हिंदी भाषा शिक्षण - स्तर एक

प्रथम वर्ष



**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर**

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक ¹[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और ²[राष्ट्र की एकता

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि (डी.एल.एड.)

Diploma in Elementary Education (D.El.Ed.)

हिन्दी भाषा शिक्षण स्तर—1

प्रथम वर्ष

प्रकाशन वर्ष—2021



राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
छत्तीसगढ़, रायपुर



प्रकाशन वर्ष – 2021

हिन्दी भाषा शिक्षण स्तर-1

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

डी. राहुल वेंकट I.A.S.

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

पाठ्य सामग्री समन्वयक

डेकेश्वर प्रसाद वर्मा

विषय संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

डेकेश्वर प्रसाद वर्मा

विशेष सहयोग

बी.आर. साहू आर.के. वर्मा

पाठ्य सामग्री संकलन एवं लेखन

एकलव्य भोपाल, अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन बेंगलुरु,

छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केन्द्र रायपुर, विद्या भवन सोसाईटी उदयपुर,

लैंग्वेज लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली

आवरण एवं लेआउट

सुधीर कुमार वैष्णव, हिमांशु वर्मा

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद छत्तीसगढ़, रायपुर उन सभी लेखकों/प्रकाशकों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है जिनकी रचनाएँ/आलेख इस पुस्तक में समाहित हैं।

प्राक्कथन

विद्यालय में अध्ययनरत बच्चे भविष्य में राष्ट्र का स्वरूप व दिशा निर्धारण करते हैं तथा विद्यालय शिक्षक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में किसी अन्य विकासात्मक प्रसास की तरह समाज की बदलती आवश्यकताओं और मांगों को पूरा करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहते हैं।

“शिक्षा बिना बोझ के” यशपाल समिति की रिपोर्ट (1993) के अनुसार शिक्षकों की तैयारी के अपर्याप्त अवसर से स्कूल में अध्ययन-अध्यापन की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा कोटारी आयोग (64-66) से भी स्पष्ट है कि शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयार करना अत्यंत जरूरी है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में भी शिक्षकों की बदलती भूमिका को रेखांकित किया गया है। आज एक शिक्षक के लिए जरूरी है कि वह बच्चों को जाने, समझे, कक्षा में उनके व्यवहार को समझे, उनके सीखने के लिए उपयुक्त माहौल तैयार करें, उनके लिए उपयुक्त सामग्री व गतिविधियों का चुनाव करे, बच्चों की जिज्ञासा को बनाए रखें उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करें उनके अनुभवों का सम्मान करें। तात्पर्य यह कि आज की जटिल परिस्थितियों में शिक्षकों की भूमिका कहीं अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण व महत्वपूर्ण हो गई है।

इसी परिप्रेक्ष्य में शिक्षक-शिक्षा को और कारगर बनाने की आवश्यकता है। शिक्षक-शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता बताते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में शिक्षकों की भूमिका के संबंध में कहा गया है “सीखने-सिखाने की परिस्थितियों में उत्साहवर्धक सहयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले बनें जो अपने विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभाओं की खोज में, उनकी शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमताओं को पूर्णता तक जानने में, उनमें अपेक्षित सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों व चरित्र के विकास में तथा जिम्मेदार नागरिकों की भूमिका निभाने में समर्थ बनाएँ।”

प्रश्न यह है कि शिक्षक को तैयार कैसे किया जाए? बेहतर होगा कि विद्यालय में आने के पूर्व ही उसकी बेहतर तैयारी हो, इसके लिए उसे विद्यालय के अनुभव दिए जाएँ। इसीलिए शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम व विषयवस्तु को पुनः देखने की जरूरत महसूस हुई, और डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम में बदलाव किया गया है।

पाठ्यसामग्री का लक्ष्य शिक्षा की समझ, विषयों की समझ, बच्चों के सीखने के तरीके की समझ, समाज व शिक्षा का संबंध जैसे पहलुओं पर केन्द्रित है। पाठ्यक्रम में शिक्षण के तरीकों पर जोर देने के स्थान पर विषय की समझ को महत्व दिया गया है। साथ ही शिक्षा के दार्शनिक पहलू को समझने, पाठ्यचर्या के आधारों को पहचानने और बच्चों की पृष्ठभूमि में विविधता व उनके सीखने के तरीकों को समझने की शुरुआत की गई है।

चयनित पाठ्यसामग्री में कुछ लेखक/प्रकाशकों की पाठ्य सामग्री प्रशिक्षार्थियों के हित को ध्यान में रखकर उनके मूल स्वरूप को लिया गया है। कहीं-कहीं स्वरूप में परिवर्तन भी किया गया है, कुछ सामग्री अंग्रेजी की पुस्तकों से ली गई है। हमारा प्रयास यह है कि प्रबुद्ध लेखकों की लेखनी का लाभ हमारे भावी शिक्षकों को मिल सके। इग्नू और एन.सी.ई.आर.टी. सहित लेखकों/प्रकाशकों की पाठ्यसामग्री किसी भी रूप में उपयोग की गई है, हम उनके हृदय से आभारी हैं। हम विद्या भवन सोसायटी उदयपुर, दिगंतर जयपुर, एकलव्य भोपाल, अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन बंगलुरु, आई.सी.आई.सी.आई. फाउण्डेशन पुणे, आई.आई.टी. कानपुर, छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केन्द्र रायपुर के आभारी हैं जिनकी टीम ने एस.सी.ई.आर.टी. और डाइट/बी.टी.आई.के संकाय सदस्यों के साथ मिलकर पठन-सामग्री को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया।

अंत में पाठ्यसामग्री तैयार करने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सहयोगियों का हम पुनः आभार व्यक्त करते हैं। पाठ्यक्रम तैयार करने पाठ्य सामग्री के संकलन व लेखन कार्य से जुड़े लेखन समूह सदस्यों को भी हम धन्यवाद देना चाहेंगे जिनके परिश्रम से पाठ्य सामग्री को यह स्वरूप दिया जा सका। पाठ्य-सामग्री के संबंध में शिक्षक -प्रशिक्षकों, प्रशिक्षार्थियों के साथ-साथ अन्य प्रबुद्धजनों, शिक्षाविदों के भी सुझावों व आलोचनाओं की हमें अधीरता से प्रतीक्षा रहेगी जिससे भविष्य में इसे और बेहतर स्वरूप दिया जा सके।

रायपुर

वर्ष 2021

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय-सूची

इकाई	अध्याय	पेज न.
इकाई-1	भाषा किस चिड़िया का नाम है -	01-27
	1 बच्चों की भाषा	
	2 अपना सिर थपथपाना व पेट को मलना	
	3 प्रारंभिक कक्षा में क्यों भाषा शिक्षण पर जोर देने की जरूरत है	
इकाई-2	समाज का ताना बाना और भाषा -	28-43
	4 बहुभाषिता, साक्षरता, भाषा-शिक्षण एवं बौद्धिक विकास	
	5 भाषा और तौर तरीके	
	6 कौन भाषा, कौन बोली	
इकाई-3	भाषा का दूसरा कदम-स्कूल -	44-68
	7 बच्चों के प्रारंभिक कक्षा में भाषा और साक्षरता के लिए अधिगम लक्ष्य और सिद्धांत	
	8 भाषा सिखाना माने क्या	
	9 भाषा व भाषा शिक्षण	
	10 प्रारंभिक शिक्षा में भाषा शिक्षण से जुड़ी चुनौतियां	

विषय-सूची

इकाई	अध्याय	पेज न.
इकाई-4	बातें, पढ़ना, निजी संसार गढ़ना –	69-101
	11 बातें करना	
	12 पढ़ना यानि एक सृजनात्मक अनुभव	
	13 पढ़ना कैसे सिखाया जाए	
इकाई-5	पढ़वाना किस चिड़िया का नाम है –	102-131
	14 उभरता पठन और प्रिंट चेतना	
	15 पढ़ाई पहली कक्षा की	
	16 पढ़ने के अभ्यास की गतिविधियां	
	17 पढ़ने का आकलन कैसे करें	
इकाई-6	अब, लिखना किस चिड़िया का नाम है –	132-176
	18 लिखना – क्या और कैसे?	
	19 लिखना सिखाने के उभरते आयाम	
	20 लेखन के विविध प्रकार	
	21 लिखना-बातचीत	
	सीखने के प्रतिफल, कक्षा- 1 से 5	177-186

भाषा किस चिड़िया का नाम है

अध्याय : 1. बच्चों की भाषा :

- भाषा क्या है?
- बच्चों द्वारा भाषा का उपयोग कहाँ-कहाँ व कैसे?
- भाषा व व्यक्तित्व।

अध्याय : 2. अपना सिर थपथपाना व पेट को मलना :

- इंसानों की भाषा सीखने की क्षमता,
- भाषा सीखने की प्रक्रिया।

अध्याय : 3. प्रारंभिक कक्षा में क्यों भाषा शिक्षण पर जोर देने की जरूरत है :

- बच्चे और भाषा,
- बच्चों का भाषायी विकास,

fopkj dja&

क्या आग सिर्फ जलाती है या जन्म भी देती है? क्या चट्टानें बोलती हैं? क्या नदियाँ महसूस करती हैं? क्या पंछी और पशु इतिहास बनाते हैं?

पहली नज़र में ऐसे सवाल अजीब लग सकते हैं, मगर गहरी नज़र डालने से इन सवालों में गहरे अर्थ निकलने लगते हैं। मसलन, सूरज नाम के दहकते आग के महापिंड से उपजी हमारी धरती एक अर्से बाद ठंडी होकर जीवन जन्म देने लायक हो पाई। मसलन, चट्टानों का होना इस बात का सबूत है कि हमारी धरती में जबरदस्त उठापटक हुई जिसमें पिघला लावा जमकर हिमालय बन गया।

इसी तरह के सवालों में जुड़ा है यह सवाल कि जिसे हम भाषा कहते हैं वह किस चिड़िया का नाम है। क्या वह महज हमारे अनुभवों का पिटारा है? या फिर, क्या वह साइकिल की तरह सफर का साधन है? या फिर, वह दूरबीन की तरह एक खोज का यंत्र है? या फिर, वह नाक और हाथों की तरह हमारा अंग है? साफ है कि, भाषा का चरित्र उतना ही जटिल है जितना हमारे जीवन का चरित्र।

एक बात और। अब सब मानते हैं कि पृथ्वी में जीवन का उदय सूक्ष्म बैक्टीरिया से हुआ और धीरे-धीरे बदलकर पनपता गया, और यह विकास आज तक पहुँचा है। मगर सफर खत्म नहीं हुआ। क्या हम यकीन के साथ कह सकते हैं कि आगे आने वाली मानव जाति में दो की जगह तीन आँखें नहीं होंगी? या फिर, कि आने वाली मानव जाति हवा में उड़ सकेगी? पक्का जवाब मुमकिन नहीं है। यही हाल भाषा का है। आने वाले युगों में जिस तरह हमारे जीवन में स्टील, बिजली, रसायनों की भूमिका में बदलाव आना तय है, उसी तरह सभ्यता में भाषा की भूमिकाओं में भी बदलाव तय है। ये मानव जीवन के भागीदार आपस में जुड़े हैं और जुड़े रहेंगे, मगर जुड़ाव के तौर-तरीकों में लगातार बदलाव आता रहेगा। हीरो-हीरोइनें तो ज्यादा से ज्यादा उबल रोल करते हैं। भाषा हमारे जीवन में सैकड़ों रोल एक साथ करती है, जिसमें से सिर्फ पाँच या छः रोल ही भाषा शास्त्री अभी तक समझ पाए हैं। भविष्य और भाग्य पहले से तय नहीं हैं।

आखिरी बात। क्या जानवर, पक्षी, कीड़े, ये सब भी भाषा का इस्तेमाल करते हैं? जवाब है : हाँ, मगर वैसे नहीं जैसे इंसान करते हैं। तो क्या इंसानों में भाषा का जन्म बन्दरों से इंसान बनने के सिलसिले के साथ हुआ? जवाब है : बेशक, मगर अलग-अलग तरीकों से – इसीलिए रूसी, जापानी, तुर्की जैसी अलग-अलग भाषाएँ बनीं। आगे चलकर क्या सभी भाषाएँ मिट कर एक दुनियावी भाषा बन जाएँगी? आज तक का जवाब है : कहा नहीं जा सकता। पढ़ के देखो।

अध्याय — 1

बच्चों की भाषा

परिचय :

हममें से कई लोग भाषा को बातचीत का साधन मानने के इतने ज्यादा आदी हो चुके हैं कि हम सोचने, महसूस करने और चीजों से जुड़ने के साधन के रूप में भाषा के इस्तेमाल को अक्सर भूल जाते हैं। भाषा के उपयोग का यह बड़ा दायरा उन लोगों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है जो छोटे बच्चों के साथ काम करना चाहते हैं। शिशु के व्यक्तित्व और उसकी क्षमताओं के विकास को आकार देने में भाषा एक विशेष भूमिका निभाती है। एक सूक्ष्म किंतु मजबूत ताकत की तरह भाषा संसार के हरेक बच्चे के दृष्टिकोण, उसकी रुचियों, क्षमताओं, यहाँ तक कि मूल्यों और मनोवृत्तियों को भी बनाती है। यह सब कैसे होता है— इस पाठ का यही विषय है।

उद्देश्य :

- यह समझ पाएँगे कि भाषा क्या है? क्या यह सिर्फ संप्रेषण का माध्यम है?
- क्या यह सिर्फ एक विषय है? अथवा इससे कहीं ज्यादा?
- बच्चों की जिंदगी में भाषा कहाँ—कहाँ पर व किन रूपों में होती है इस बारे में समझ बना पाएँगे।
- भाषा सीखने में हम बच्चों की मदद कैसे कर सकते हैं इस पर समझ बना पाएँगे।
- शिक्षक ऐसे मौके चिह्नित कर पाएँगे जहाँ बच्चों को भाषा का अलग—अलग स्तर पर उपयोग करना पड़े।

पहले हमें एक ऐसी बात साफ कर लेनी चाहिए जिस पर अक्सर काफी बहस छिड़ी रहती है। स्कूली अध्यापक भाषा के नाम पर 'हिंदी' और 'अंग्रेजी' या अन्य किसी भाषा को एक स्कूली विषय की तरह लेने के आदी हैं। इसलिए वे शायद सोचेंगे कि यह किताब किसी खास भाषा की पढ़ाई के बारे में होगी। दूसरी तरफ विशेषज्ञ हैं जो बच्चे की 'पहली भाषा' और 'दूसरी भाषा' इत्यादि में गहरे भेद करने के आदी हैं। अध्यापक और विशेषज्ञ दोनों सोचते हैं कि भाषा की शिक्षा में चर्चा एक खास भाषा के नियमों, उसकी आम संरचनाओं, शब्दावली इत्यादि के विवरण से होनी चाहिए।

यह सब इस इकाई में नहीं है। यह किसी एक खास भाषा के अध्यापन की निर्देशिका कतई नहीं है। 'यहाँ हम उन जरूरतों के बारे में बात करेंगे जिन्हें कोई भी भाषा बच्चों के जीवन में पूरा करती है।' दुनिया का हर बच्चा— चाहे उसकी मातृभाषा कोई भी हो—भाषा का इस्तेमाल कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करता है। एक बड़ा उद्देश्य है दुनिया को समझना, और उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भाषा एक बढ़िया औजार का काम देती है। जब तक हम बच्चे की निगाह से देखने और बच्चे की जिंदगी में भाषा की भूमिका को समझने में असमर्थ रहते हैं, तब तक हम अध्यापक, माता—पिता या देखरेख करने वालों के रूप में अपनी भूमिका ठीक से तय नहीं कर सकते।



भाषा और काम करना

बच्चों की भाषा का संबंध उन अनुभवों से है जिन्हें वे अपने हाथों और शरीर से स्वयं करते हैं और उन वस्तुओं से भी है, जिनके संपर्क में वे आते हैं। बचपन में शब्द और क्रियाकलाप साथ-साथ चलते हैं। क्रियाकलाप और अनुभवों को हजम करने और बयान करने के लिए शब्दों की जरूरत होती है। कोई अनुभव जब पूरा हो चुकता है, उसके बाद भी वह शब्दों के जरिए उपलब्ध रहता है। बच्चे जिन चीजों के संपर्क में आते हैं उनसे और घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए वे शब्दों की मदद लेते हैं। दूसरी तरफ, ऐसे शब्द, जो बच्चों के सक्रिय अनुभवों और वस्तुओं से जुड़े नहीं होते, उनके लिए खाली और बेजान रहते हैं। 'बिल्ली', 'दौड़ना', 'गिरना', 'नीला', 'नदी' और 'खुरदरा' जैसे शब्द यदि पहले-पहल किसी क्रियाकलाप या अनुभव के मौके पर नहीं आएँ तो उनका अर्थ बच्चे के लिए बहुत सतही रहेगा। केवल एक सक्रिय अनुभव के बाद ये शब्द एक तस्वीर से जुड़ते हैं और भविष्य में सार्थक इस्तेमाल के लिए उपलब्ध होते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की किसी शब्द को अर्थ देने अथवा उसका अर्थ समझने की प्रक्रिया अलग-अलग होती है। कभी बातचीत के संदर्भ से हम शब्दों के अर्थ के बारे में अनुमान लगा लेते हैं, कभी हम शब्दकोश का सहारा लेते हैं, कभी अनुभव करके जान लेते हैं। लेखक का कहना है कि शुरूआती दौर में जब बच्चे शब्दों को समझना सीख रहे होते हैं तो महत्वपूर्ण होता है कि वे उन शब्दों को अनुभव करें।

बच्चे के शारीरिक अनुभवों और शब्दों के बीच यह संबंध बड़ों, विशेषतया अध्यापकों पर एक निराली जिम्मेदारी डालता है। एक अध्यापक के रूप में आप शायद यह उम्मीद करते होंगे कि माता-पिता ने अपने बच्चों को तरह-तरह के अनुभव पहले ही करा दिए होंगे। पर यह बात ज्यादातर माता-पिता पर लागू करना मुश्किल है।

ज्यादातर माता-पिता में या तो इतना विश्वास नहीं होता कि वे अपनी दिनचर्या में चीजों को देखने और करने की बच्चों की धीमी रफ्तार को जगह दे सकें। बड़े अक्सर काफी परेशान हो जाते हैं अगर बच्चा नल में पानी की धारा से आधे घंटे खेलता रहे या सारे बर्तनों को फर्श पर बिखेर दे या छाने को सैकड़ों बार खोले और बंद करे। कभी-कभी चीजों को या फिर बच्चे को नुकसान या चोट से बचाने की खातिर बड़े कुछ इने-गिने अनुभवों को छोड़कर बाकी पर पाबंदी लगा देते हैं।

माता-पिता ने जो भी किया हो या न किया हो, अध्यापक की जिम्मेदारी साफ है। उसे ऐसा वातावरण पैदा करना है जिसमें बच्चे भाषा को लगातार जीवन के अनुभवों और चीजों से जोड़ सकें। ऐसा करने के लिए ये बातें मददगार होंगी:

xfrfof/k &

- बच्चे स्कूल में कई तरह की वस्तुएँ (जैसे पत्तियाँ, पत्थर, पंख, तिनके, टूटी-फूटी चीजें) लाएँ और उनके बारे में बात करें, पढ़ें, लिखें;
- बच्चों से उन अनुभवों के बारे में कहने, लिखने के लिए जाए जो स्कूल के बाहर हुए हैं;
- बच्चों को कक्षा से बाहर ले जाया जाए जिससे वे स्कूल के इर्द-गिर्द फैली दुनिया की तमाम छोटी-मोटी चीजें (जैसे टूटी हुई पुलिया, कीचड़ से भरा गड्ढा, मरा हुआ कीड़ा, घोंसले में अंडे) बारीकी से देख सकें और उनकी चर्चा कर सकें। ध्यान दें स्कूल के पड़ोस की ऐसी खोजी-यात्राएँ भाषा सीखने के लिए मूल्यवान सामग्री दे सकती हैं।

ऐसे स्कूल में, जहाँ बच्चे अपने हाथों से तरह-तरह के काम नहीं कर पाते, जहाँ वे ज्यादातर बैठे और अध्यापक की बातें सुनते रहते हैं, और जहाँ छूने, उलटने-पुलटने, तोड़ने और ठीक करने के लिए चीजें नहीं होतीं, भाषा के कौशलों का विकास अच्छी तरह नहीं हो सकता।

अभ्यास

- भाषा को बच्चे जीवन के अनुभव से जोड़ पाएँ इस हेतु लेख में किस तरह की गतिविधियाँ सुझाई गई हैं?
- उपरोक्त गतिविधियाँ करते हुए बच्चों का अवलोकन कीजिए। किन्हीं दो बच्चों के बीच हो रही बातचीत को रिकॉर्ड कीजिए।
- क्या इस तरह की गतिविधियाँ भाषा सीखने में मददगार होती हैं। यदि हाँ तो कैसे?

भाषा क्या-क्या करती है ?

जिन लोगों ने बच्चों की भाषा का अध्ययन किया है, उनके अनुसार बच्चे बातचीत की बुनियादी क्षमता हासिल करते ही भाषा का प्रयोग अनेक मकसदों के लिए करना शुरू कर देते हैं। इनमें से कुछ मकसद इस प्रकार हैं:

1. अपने काम का संचालन

बच्चे कुछ करने के साथ-साथ उसके बारे में बात करते जाते हैं। यह बात अपनी गतिविधि पर एक तरह की निजी टीका होती है। शायद यह टीका उन्हें अपनी गतिविधि कुछ और देर तक जारी रखने में मदद देती है और उनकी दिलचस्पी बनाए रखती है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि टीका कोई सुन रहा है या नहीं। संभव है गीली रेत में सुरंग या किले बनाते हुए छोटे बच्चों के दल में हर बच्चा अपनी टीका अलग चालू रखे। हो सकता है, यह टीका दूसरे को सिर्फ कुछ बुदबुदाहट की तरह सुनाई दे।



अभ्यास

- आपने भी कभी बच्चों को अकेले खेलते हुए अपने आपसे बातचीत करते हुए सुना होगा। यदि नहीं तो तीन से आठ साल के बच्चे को उस वक्त गौर से देखिए जब वह अकेले कुछ कर रहा हो या खेल रहा हो। वह जो कहे, ध्यान से सुनिए।
- उन बातचीत को लिखिए और बताइए कि क्या आपने उनकी एकांत 'बात' में कोई व्यक्तिगत फर्क पाया? क्या यह 'बात' बच्चों को एक काम में रुचिपूर्वक लगे रहने में मदद देती है? क्यों?

2. दूसरों के क्रियाकलाप और ध्यान का संचालन

भाषा के इस उपयोग से माता-पिता और अध्यापक के रूप में हम अच्छी तरह परिचित हैं क्योंकि हमारा बहुत-सा समय बच्चों की माँगों को पूरा करने में लगता है। अक्सर हम शारीरिक किस्म की माँगों के प्रति सचेत रहते हैं, पर दूसरी तरह की माँगें—जिनमें दिमागी और दिली माँगें शामिल हैं— भी महत्वपूर्ण हैं? बच्चे अजीब या आकर्षक चीजों की ओर ध्यान खींचने के लिए भाषा का इस्तेमाल करते हैं। उन्हें यह उम्मीद रहती है कि जिस चीज ने उनका ध्यान खींचा है, वह उनकी बात सुनने वाले का ध्यान भी खींचेगी।



यदि आप बच्चों की एक टोली को गौर से देखें तो पाएँगे कि वे एक-दूसरे का ध्यान अक्सर किसी ऐसी चीज या किसी चीज की ऐसी विशेषता की बात करके खींचते हैं, जिसे वे सोचते हैं, दूसरा देख न पाया होगा। दूसरों से उम्मीद प्रकट करना ही भाषा के इस उपयोग की विशेषता है : उम्मीद यह कि 'जो मैंने देखा उसे दूसरे भी देखना चाहेंगे।' यह उम्मीद मानवीय संबंधों और साथ-साथ रहने के आनंद की एक गहरी मान्यता पर टिकी है। यदि वह व्यक्ति, जिसका ध्यान खींचा जा रहा है, इस उम्मीद को पूरा नहीं करता है तो भाषा के विकास की बुनियाद को चोट पहुँचती है।

3. खेलना

अधिकतर बच्चों के लिए शब्द ढाई साल की उम्र से खेल और खुशी का एक प्रमुख साधन बन जाते हैं। अलग-अलग स्वर में दुहरा कर, नए रूपों और मौलिक संदर्भों में रखकर बच्चे शब्दों से खेलते हैं और संतुष्ट होते हैं :

'दूध-जलेबी जगगगा
पर इसमें है मगगगा !'
'गुड़िया को बादल में भेज दिया।
अब रोटी खाऊँगी। गुड़िया कल से
रो रही थी।'
'मैं चम्मच में बाल्टी रखूँगा।
उससे कुएँ का दूध निकालूँगा !'

गलत जगह पर शब्द का प्रयोग करना उन्हें भाता है। उन्हें ऐसी कविताएँ जल्दी से याद हो जाती हैं जिनमें इसी तरह शब्दों की खींचतान की गई हो। मतलब यह है कि छोटे बच्चे शब्दों को खिलौनों की तरह इस्तेमाल करते हैं। शब्दों से खेलना बच्चों की रचनाशक्ति और ऊर्जा को बाहर लाने में अनोखी भूमिका निभा सकता है।

प्रायोजना - घर के अंदर या गली में अकेले या टोली बनाकर खेलते-रस्सी कूदते, दौड़ते, उछलते, गेंद से टप्पा मारते हुए-बच्चे जो पंक्तियाँ दुहराते हैं सुनिए। अपने और इस तरह के खेल गीतों को संकलित कीजिए

बच्चों के कुछ पारंपरिक खेलगीतों के नमूने हैं :

सूख सूख पट्टी	शान्ती मन भान्ती
चंदन गट्टी	कहना क्यों नई मानती
राजा आया	पंडित जी बुलाने आए
महल चुनाया।	बस्ता क्यों नहीं बाँधती।
झंडा गाड़ा	
बजा नगाड़ा।	'अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो
रानी गई रूठ	अस्सी नब्बे पूरे सौ
पट्टी गई सूख।	सौ में लगा धागा
	चोर निकल के भागा।'

अभ्यास

- ऊपर कही गई बात “बच्चे शब्दों को खिलौनों की तरह इस्तेमाल करते हैं, गलत जगह पर शब्द का प्रयोग करना उन्हें भाता है” क्या आपने कभी अपने आस-पास कक्षा में/स्कूल में बच्चों को ऐसा करते देखा है? दो उदाहरण दीजिए जब बच्चों ने ऐसा कुछ किया हो।

4. समझाना

बच्चों की बात का मकसद कई बार यह बताना होता है कि कोई चीज कैसे हुई। उदाहरण के तौर पर यदि आप एक बच्चे से पूछें कि बारिश कैसे हुई तो शायद वह आपको बताएगा कि पहले आसमान काले बादलों से घिर गया, फिर छोटी – छोटी बूंदें टपकने लगीं, फिर बारिश हुई, जो बाद में इतनी तेज हो गई कि कोई चीज दिखाई तक न दे। घटनाक्रम बताकर बच्चा यह समझाता है कि एक बड़ी घटना कैसे घटी।

भाषा के इसी प्रयोग से कहानियाँ जन्म लेती हैं। इस दृष्टि से कहानियाँ चीजों की व्याख्या करने का साधन होती हैं। जाहिर है कि सब कहानियाँ चीजों की विश्वसनीय या वैज्ञानिक व्याख्या नहीं करतीं। वे जीवन की व्याख्या करने की हमारी इच्छा की प्रतीक होती हैं। जिस तरह बड़े, दुनिया की घटनाओं या राजनीति की व्याख्या करने को उत्सुक रहते हैं, उसी तरह छोटे बच्चे भी जिंदगी की घटनाओं को बयान करना चाहते हैं।

प्रायोजन : कोई चीज क्यों शुरू हुई? यह समझाने वाली कहानियाँ इकट्ठी कीजिए। इस तरह की कई कहानियाँ आपको स्थानीय लोक कथाओं में मिलेंगी। बारिश क्यों होती है या आदमी ने आग कैसे ढूँढी—ऐसी एक कहानी नीचे दी गई है जो समझाती है कि हाथियों ने उड़ने की क्षमता कैसे गँवाई। इन कहानियों को भाषा के अध्यापन में काम में लाने के कुछ तरीके ‘बात’ और ‘पढ़ना’ शीर्षक अध्यायों में देखिए।

अभ्यास

- आपको अपने बचपन में कौन-सी कविता/कविताएँ अच्छी लगती थी? उन्हें याद कीजिए व क्या आप कक्षा के बच्चों के साथ इन्हें बाँटना चाहेंगे?
- बच्चे शब्दों को खिलौनों की तरह इस्तेमाल करते हैं, गलत जगह पर शब्द का प्रयोग उन्हें भाता है। अपने आस-पास कक्षा में, स्कूल में बच्चों को बातचीत करते हुए सुनिए व इस संदर्भ में दो उदाहरण दीजिए।

आसमान में हाथी

बहुत पहले एक जमाने में भारत के हाथी उड़ लेते थे। आज की तरह हाथी तब भी बहुत बड़े होते थे। उनका रंग बादलों की तरह सलेटी था। बादल आखिर उनके भाई ही तो थे। बादलों की तरह हाथी भी आसमान में जहाँ चाहे उड़ सकते थे। बस उन्हें अपने कान फटफटाने की देर थी।

बादलों की ही तरह वे अपना आकार भी बदल सकते थे। वे जो चाहे बन जाते थे—कभी एक राक्षस तो कभी छोटी-सी बिल्ली। वे कभी किले की तरह दिखते तो कभी पहाड़ की तरह और कभी दौड़ते हुए एक कुत्ते की तरह।

गर्मियों के मौसम में एक दिन मोती की तरह चमकते हुए सलेटी हाथी धूप में उड़ रहे थे। वे एक गाँव के ऊपर से गुजरे, जहाँ छोटे-छोटे बच्चे खेल रहे थे, एक खेत से गुजरे जहाँ किसान जुताई कर रहा था, एक नदी पर से गुजरे जहाँ लड़के भैंसों को नहला रहे थे। वे बातूनी बंदरों से भरे एक जंगल के ऊपर से भी गुजरे।

लेकिन आकाश में बहुत ऊपर बड़ी गर्म हवा की एक लहर बह रही थी। हाथियों को देखकर वह उनके

पीछे हो ली और सीधे उनकी सूँड में घुस गई। हवा क्या थी, काली मिर्च थी। हाथी लगे छींकने। छींकते-छींकते परेशान होकर उन्होंने सोचा कि कोई छायादार टंडी जगह ढूँढ़ कर थोड़ी देर सुस्ता लें। उनके ठीक नीचे आम के बड़े-बड़े पेड़ थे। उनके नीचे टंडक थी, छाया भी थी और आमों की बढ़िया खुशबू थी। गर्म हवा से बचने के लिए हाथी आहिस्ता से आम के सबसे बड़े पेड़ पर जा उतरे।

संयोग की बात थी कि उसी पेड़ के नीचे एक मास्टर जी और उनके छात्र बैठे हुए थे। स्कूल के अंदर उस दिन बहुत ज्यादा गर्मी थी। मास्टर जी थके हुए थे और बच्चे थे एकदम बेचैन। वे अपनी पेंसिलें तोड़ते, सारे सवाल गलत करते, फिर खुसफुसाते, हँसते और नन्हें चूहों की तरह कुलबुलाते। वे एक क्षण भी आराम से नहीं बैठ पा रहे थे।

मास्टर जी परेशान हो गए। पैर जमीन पर ठोंककर उन्होंने अपना डंडा हवा में घुमाया और बच्चों पर बरस पड़े। तभी अचानक उन्हें ख्याल आया—‘अगर ये बच्चे नहीं संभलते हैं तो मैं एक जादूमंत्र बोलकर इन सबको खरगोश बना दूँगा!’

उन्होंने सबसे शरारती बच्चे को पकड़ने के लिए अपनी बाँह बढ़ाई। उसी समय हाथी आसमान से नीचे उतरे और अध्यापक के ठीक ऊपर वाली डाल पर आ बैठे।

अर्...र...र...कर...र...र...घड़ाम !

डाल टूटकर मास्टर जी पर आ गिरी। मास्टर जी भी गिर पड़े, पर हाथियों ने इसकी कोई परवाह नहीं की। वे चुपचाप अपने कान फटफटा कर अगले पेड़ की तरफ चल दिए।

उन्हें उड़कर जाता देख अध्यापक उठ खड़े हुए और हाथियों पर चिल्लाए—‘बुरे हाथियों! मैं तुम्हें मजा चखाता हूँ। मुझे गिराने की हिम्मत! मैं तुम्हें अभी बताता हूँ।’ अध्यापक ने अपना डंडा घुमाया और एक जादूमंत्र बोला।

धीमे से सारे हाथी जमीन पर उतर गए। वे उड़ना भूल गए। और उस दिन से हाथी जमीन पर चलते हैं। जब वे आसमान में बादलों को उड़ता देखते हैं, उन्हें वो ज़माना याद आता है, जब वे खुद उड़ लेते थे, जैसे चाहे दिखने लगते थे, जहाँ चाहे चले जाते थे।

अभ्यास

- घूमते-घूमते, कहाँ-कहाँ जैसे शब्द इस कहानी में भी आए हैं उन्हें खोजिए। ये शब्द युग्म शब्द कहे जाते हैं।
- इस कहानी में कल्पना की उड़ान है, बच्चों के भाषा सीखने में कल्पनाशीलता का क्या स्थान है?

5. जीवन को बयान करना

भाषा का यह काम उसके सारे अन्य कामों में शामिल है पर यदि हमने उसे अलग से नहीं जाँचा तो संभव है हम उसे चूक जाएँ। बड़ों की तरह बच्चे अक्सर भाषा का प्रयोग बीते हुए को याद करने के लिए करते हैं—कोई घटना, व्यक्ति या कोई छोटी-मोटी चीज। जो चीज अब हमारे आसपास है, उसे हम शब्दों के जरिए फिर पैदा कर सकते हैं और इस तरह हम जो रचते हैं वह कई बार इतना यथार्थ दिखता है कि हम उस पर लंबे समय तक बातचीत कर सकते हैं।

बच्चे अक्सर चीजों और अनुभवों को इसलिए बयान करते हैं कि उन्हें स्वीकार कर सकें (शायद किसी गहरे भावनात्मक स्तर पर)। किसी चीज से डरा हुआ बच्चा उसके बारे में बीसियों बार बताता है जब तक वह अपने भीतर उसके लिए जगह नहीं बना लेता। खास तौर से जब बच्चा किसी नई बात से चौंकता है तो उसे आम चुनावों में शामिल करने के उद्देश्य से कई बार दोहराता है। चौंकाने वाली घटना में जो अनिश्चय, भ्रम और कई बार डर छिपा रहता है, वह उसे दुहराने से दूर हो जाता है।

6. जुड़ना

जब हम किसी की कहानी सुनते हैं—जो उसके अपने या किसी दूसरे व्यक्ति के अनुभव पर आधारित होती है—तो हम उस कहानी के चरित्रों और घटनाओं से स्वयं को जोड़ने की कोशिश करते हैं। कहानी से जुड़ने की खातिर हम अपनी मौजूदा जिंदगी और यहाँ तक कि अपने पिछले सीमित अनुभवों को लॉघ जाते हैं। जब कोई बच्चा किसी खिलौने की भावनाओं की चर्चा करता है तो वह स्वयं को खिलौने की स्थिति में रख रहा होता है। दूसरे पर क्या बीत रही है, यह हम भाषा के जरिए अनुभव कर सकते हैं।

7. तैयारी

बातचीत का विषय बहुत बार ऐसी घटनाएँ होती हैं जो अभी घटी नहीं हैं और उनमें कुछ ऐसी भी होती हैं जो शायद कभी न घटें। बच्चे कई बार अपने डर, अपनी योजनाएँ, अपेक्षाएँ और अजीब परिस्थितियों में क्या होगा, इस पर अपने विचार प्रकट करते हैं। भविष्य की तस्वीर रचने में शब्द उनकी मदद करते हैं। कभी—कभी यह तस्वीर भविष्य को साकार बनाने में मदद करती है कभी ऐसा भी होता है कि यह तस्वीर उन्हें भविष्य का सामना करने की ताकत देती है।

8. पड़ताल और तर्क

हरेक स्थिति में एक उलझन छिपी होती है जिसे हल करने के लिए छोटे बच्चे को यह ढूँढना पड़ता है कि अमुक चीज़ अपने मौजूदा रूप में क्यों है ? कई प्रश्न ऐसे होते हैं जिसका उत्तर छोटा बच्चा सफलतापूर्वक ढूँढ सकता है। जैसे, बस एकाएक क्यों रुकी? या उसे ठंडे पानी से नहाना क्यों पसंद नहीं है? तीन साल का बच्चा इन उलझनों को समझ सकता है, हालाँकि यह जरूरी नहीं कि सब बच्चे किसी बात का सही कारण साफ—साफ बतला सकें। प्रायः वे बच्चे ऐसा कर पाने में समर्थ होते हैं जिन्होंने बड़ों को भाषा के सहारे किसी चीज़ की पड़ताल करते या तर्क करते सुना हो या जिन्हें ऐसा करने के लिए भरोसा मिला हो।

ऊपर दी गई समस्याओं के अलावा कई समस्याएँ ऐसी होती हैं जिन्हें छोटा बच्चा 'वैज्ञानिक' अर्थ में नहीं सुलझा सकता। उदाहरण के लिए 'बारिश' क्यों होती है 'बहुत तेज़ हवा से पेड़ क्यों गिर जाता है जैसे सवालियों का सही हल चार—पाँच वर्ष के बच्चे की पहुँच के बाहर है। इसके बावजूद, ऐसी समस्याएँ भी पड़ताल के लिए भाषा के प्रयोग के बहुत उम्दा मौके उपलब्ध करा सकती हैं। इससे फर्क नहीं पड़ता कि दिया गया कारण सही है या नहीं। महत्व इस बात का है कि बच्चा भाषा का इस्तेमाल तर्क करने, किसी नई बात को बूझने के लिए करे। भाषा से यह काम लेते बड़ों को कोई बच्चा जितना अधिक सुनेगा, भाषा का यह काम उतना ही बच्चे की पहुँच के भीतर आता जाएगा।

भाषा के जिन आठ कामों की चर्चा अभी हमने की है, क्या आप उन्हें पहचान सकते हैं?

अपनी परीक्षा लेने के लिए बच्चों की बातचीत के इन आठ उदाहरणों को भाषा के आठ कामों के तहत रखिए:

1. बादल चले गए। बारिश रुक गई।
2. मैं जाऊँगा जम्मा। वहाँ मिलेगा मम्मा।
3. इस तरह नहीं। ये देखो घुंड़ी।
4. पानी रोज़ सवेरे इतने सारे घरों में कैसे पहुँच जाता है?

5. मैं इस कप को यहाँ रखूँगा। फिर रामू को आवाज दूँगा।
6. वे मिठाइयाँ बिल्कुल वैसी हैं जैसी जीत चाचा लाए थे।
7. दीवाली पर मुझे नई कमीज मिलेगी।
8. बिल्कुल बाजार जैसा था। इतनी सारी बत्तखें इतना शोर मचा रही थीं।

हमारी बात का असर हम पर ही पड़ता है।

बच्चों के जीवन में भाषा की तरह-तरह जिम्मेदारियों की इस चर्चा से एक बात यह साफ होती है कि भाषा एक बेहद लचीला माध्यम है। हम उसे जीवन की किसी भी परिस्थिति के अनुसार ढाल सकते हैं। उसे अपनी जरूरत के अनुसार ढाल कर हम परिस्थिति को भी अपने अधिक अनुकूल बना लेते हैं। रोज़ाना की जिन्दगी में इसके उदाहरण ढूँढ़े जा सकते हैं। जब हम किसी से नाराज़ होते हैं तो अपने गुस्से को प्रकट करने के लिए वे शब्द व स्वर चुनते हैं जो परिस्थिति पर हमारी इच्छा के अनुसार असर डालें। लड़ने की इच्छा हो तो हम कड़े शब्दों का प्रयोग करते हैं। मामले को शांत करना हो तो नरम शब्दों और धीमे स्वर से काम लेते हैं।

हम कह सकते हैं कि भाषा को लचीले ढंग से इस्तेमाल करने की क्षमता काफी हद तक यह तय करती है कि जीवन की विभिन्न स्थितियों का सामना हम किस तरह करेंगे। एक स्तर पर हमारी भाषा किसी स्थिति में हमारी प्रतिक्रिया प्रकट करती है। एक अन्य स्तर पर हमारी भाषा उस स्थिति को, जिससे हम जूझ रहे हैं, प्रभावित भी करती है। हमारे इर्द-गिर्द हर वक्त जो कुछ हो रहा होता है, भाषा उस सबसे निपटने में हमारी सहायता करती है। हम चाहे उस सब में स्वयं शरीक हों या सिर्फ उस पर विचार कर रहे हों, भाषा की मदद हमें दोनों दशाओं में मिलती है।

हम किसी घटना के प्रत्यक्ष गवाह हों या न हों उस घटना को प्रस्तुत करने के लिए इस्तेमाल की गई भाषा हमारी प्रतिक्रिया पर असर डालती है। हजारों चीजें रोज़ हमसे बहुत दूर स्थित जगहों पर होती रहती हैं। ये चीजें हम तक अखबार की खबर के रूप में पहुँचती हैं। एक तरह से अखबार हमें किसी घटना की तस्वीर बनाने में मदद देता है, उसी तरह जैसे एक बच्चा सड़क पर कोई चीज़ देखकर अपनी माँ को बताए। अखबार या बच्चे द्वारा बनाई गई तस्वीर उतनी ही वास्तविक या सही होगी जितनी सही तस्वीर बनाने के लिए प्रयोग की गई भाषा होगी। कोई बयान कितना सही है, यह प्रायः बयान देने वाले के इरादे पर निर्भर होता है— यानी सटीकता में हमेशा कमी-बेशी रहना स्वाभाविक है। यदि बच्चा एक दुर्घटना देखकर डर गया है तो संभव है कि वह उसे कुछ बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करे। बढ़ा-चढ़ाकर कहने से वह अपने डर को सही साबित करता है और इस तरह उस दृश्य से, जिसे उसने देखा है, समझौता करने में समर्थ होता है।

आखिरी बात यह है कि भाषा हमारी उम्मीदों पर असर डालती है। चीजों को धीरज से समझाने का शौकीन आदमी दूसरों में भी ऐसी ही अपेक्षा करता है। इसी प्रकार चीजों की गहराई से पड़ताल करने वाला व्यक्ति उम्मीद करता है कि दूसरे उसकी पड़ताल में रुचि लेंगे। इस तरह के व्यक्ति पड़ताल और व्याख्या के लिए भाषा का प्रयोग करके एक ऐसा वातावरण रचते हैं जिसमें व्याख्या और पड़ताल महत्वपूर्ण काम माने जाते हों। इसके विपरीत यदि किसी संस्था या समुदाय में भाषा का प्रयोग इन उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाता हो तो वहाँ बड़े हो रहे बच्चों को ध्यान से कोई बात समझाने या धैर्यपूर्वक तर्क करने की आदत

यदि बच्चों के साथ हमेशा आदेशात्मक, निर्देशात्मक, रूखी.. भाषा का प्रयोग किया जाए, उन्हें प्रश्न पूछने की इजाजत न हो, न कोई उनकी बात धैर्य से सुनने व समझने का प्रयास करे तो ऐसा होने की बहुत संभावनाएँ हैं कि ऐसे माहौल को पाने वाले बच्चे बड़े होकर जायज़ प्रश्न भी ना पूछें, अपने आप को अभिव्यक्त करते हुए न किसी की बात धैर्य से सुने और ना ही धैर्य पूर्वक अपनी बात दूसरों को समझाने का प्रयास करें।

शायद ही पड़ सके। यदि माता-पिता और अध्यापक भाषा का इस्तेमाल मुख्यतया बच्चों को काबू में रखने के लिए करते हों तो यह स्वाभाविक है कि बच्चे भाषा को काबू करने का साधन मानने लगेंगे। यह बहुत संभव है कि बड़े होकर वे ऐसा कोई काम न करना चाहें जिसके लिए उन्हें आदेश न दिया गया हो।

हमने इस पाठ की शुरुआत इस प्रश्न के साथ की थी कि भाषा बच्चे के व्यक्तित्व-उसकी दृष्टि, क्षमताओं, मनोवृत्तियों, रुचियों और मूल्यों-को क्यों प्रभावित करती है। इस प्रश्न का उत्तर अब हम यह कह कर दे सकते हैं कि भाषा बच्चे के व्यक्तित्व को इसलिए प्रभावित करती है क्योंकि **बच्चा भाषा द्वारा रचे गए वातावरण में जीता और बड़ा होता है**। इस वातावरण को बनाने में अध्यापक काफी योग देता है। यदि अध्यापक बच्चे के जीवन में भाषा के विभिन्न कार्य क्षेत्रों के प्रति संवेदनशील है तो वह बच्चे की बौद्धिक और भावनात्मक जरूरतों के अनुकूल कदम उठा सकता है। अलग-अलग अवसरों पर बच्चे द्वारा प्रयोग की गई भाषा पर अध्यापक की प्रतिक्रिया बहुत महत्वपूर्ण होती है। यदि प्रतिक्रिया दिखाती है कि अध्यापक बच्चे द्वारा एक खास ढंग से प्रयोग की गई भाषा का उद्देश्य समझ रहा है तो ऐसी प्रतिक्रिया भाषा-प्रयोग के उस ढंग को और समृद्ध बनाएगी। इसके विपरीत यदि अध्यापक की प्रतिक्रिया 'सही' और 'गलत' के संबंध में किन्हीं धारणाओं पर आधारित हो तो वह बच्चे की स्वतंत्र अभिव्यक्ति और संवाद-क्षमता के रास्ते में बाधा खड़ी करेगी।

अभ्यास

1. क्या आपने बच्चों को खेलते हुए देखा है, यदि हाँ तो बच्चों द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली भाषा पर अपने विचार

लिखिए।

2. बच्चे अपने जीवन को किस तरह बयान करते हैं

3. भाषा बच्चों के व्यक्तित्व रुचियों मूल्यों और मनोवृत्तियों को किस तरह प्रभावित करती हैं?

4. यदि आपसे कभी कक्षा में बच्चे नहीं संभलते हैं तो आप ऐसी स्थिति में क्या करते हैं?

• कहानी को कक्षा में बच्चों को सुनाए व बताए-

— कौन सी कक्षा के बच्चों को सुनाई?

— क्या आपको कहानी सुनाते वक्त कहानी में कुछ परिवर्तन करने पड़े? क्यों व किस तरह के परिवर्तन?

— कहानी सुनते वक्त/बच्चों की क्या प्रतिक्रिया थी? क्या प्रश्न थे? कहानी की समझ इत्यादि पर विचार दें।



अध्याय – 2

अपना सिर थपथपाना व पेट को मलना

– जीन एचिसन (Articulate Mammal)

परिचय :

हम भाषा का प्रयोग करते हैं तो हमारे शरीर में कई क्रियाएँ व प्रतिक्रियाएँ एक साथ सम्पन्न होती हैं। बातचीत के दौरान न केवल हम ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, बल्कि आगामी वाक्यों का अनुमान भी लगाते जाते हैं। साधारणतया इन क्रियाओं से हम अनजान होते हैं। प्रस्तुत पाठ में हम इन्हीं बातों पर चर्चा करेंगे।

उद्देश्य :

- भाषा बोलने की प्रक्रिया कितनी जटिल है यह समझ पाना।
- भाषा बोलने की प्रक्रिया इतनी जटिल होने के बाद भी हम भाषा बोलने में कैसे सक्षम हैं?

भाषा एवं अनुकूलन :

मनुष्यों में एक और तरह का जैविक अनुकूलन होता है जो अपने आप स्पष्ट रूप से नहीं दिखता। लेकिन गहराई से सोचने पर यह काफी चौकाने वाला अनुकूलन है। अनुकूलन का अर्थ है, सफल होने के लिए परिस्थितियों के अनुरूप अपने आप को ढालना। हम यहाँ जिस अनुकूलन की तरफ इशारा कर रहे हैं वह हर समय बातचीत करने में सामने आता है। अगर हम इस बारे में सोचें कि बोलते समय हम क्या करते हैं, तो यह बात ज्यादा समझ आएगी। बोलते समय ध्वनि उत्पादन में और कही गई बात को समझने में बहुत सारी व तरह-तरह की प्रक्रियाएँ एक साथ जुड़कर काम करती हैं (लेशले 1951)।

बातचीत के विषय को खोलने से पहले यह देखना उपयुक्त होगा कि जैविकीय गतिविधियों में एक साथ कई कार्य करना कितना सरल अथवा कितना मुश्किल होता है।

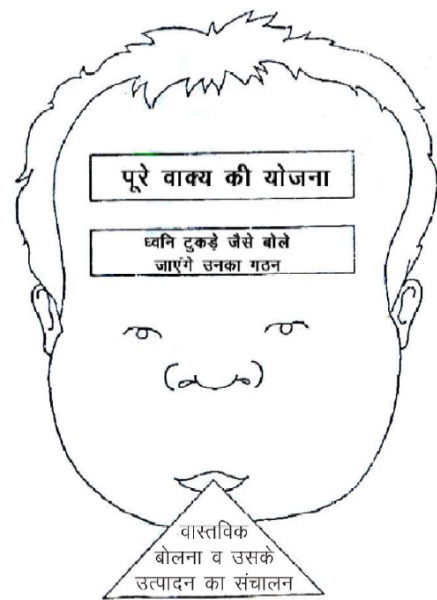
स्कूल जाने की उमर वाले बच्चे भी जान जाते हैं कि एक साथ अपने सिर को थपथपाना और पेट को मलना बहुत मुश्किल है। अगर आप भी प्रयास करें तो महसूस कर सकेंगे। आप अपनी जीभ को मुँह के एक तरफ से, दूसरी तरफ हिलाने का प्रयास करें और टाँगों को एक के ऊपर एक रखें और फिर साथ-साथ रखें (Cross-uncross) तो आप महसूस करेंगे कि यह संभव नहीं है। और इसके साथ-साथ ही अगर आप कोशिश करें कि आपके हाथ आपके सिर को थपकाएँ और पेट को मलें तो यह पूरा काम नामुमकिन हो जाएगा। करतब दिखाने वाला नट जरूर अपनी नाक पर बोलत रखकर, टखनों में रिंग घुमाते-घुमाते हाथों में सात थालियों को हवा में रख सकता है— पर इन सबके लिए उसने पूरी जिंदगी अभ्यास में खर्ची होगी और यह भी हर कोई उतने अभ्यास से भी यह करना नहीं सीख सकता और यह कार्य कितना अस्वाभाविक है, इसी से साबित हो जाता है कि नट अपना यह हुनर दिखाकर अच्छा खासा पैसा कमा पाता है।

हम यदि ध्यान से सोचें तो भाषा बहुत सारी प्रक्रियाओं के एक साथ होने से व उनमें जुड़ाव कर पाने से उत्पन्न होती है। इन प्रक्रियाओं को देखने से लगता है कि यह सब कई मायने में एक नट के करतबों से ज्यादा पेचीदा है।

भाषा उत्पादन की प्रक्रिया :

एक तीर से दो शिकार वाली कहावत आपने ने सुनी होगी यथार्थ में एक तीर से दो शिकार कर पाना असम्भव तो नहीं परन्तु मुश्किल जरूर है। ऐसा सम्भव कर पाने के लिए निरंतर अभ्यास व काफी समय खर्च करने की आवश्यकता है। आप यह बात सर्कस के कलाकारों या नटों को करतब दिखाते हुए देखकर समझ सकते हैं परन्तु भाषा उत्पादन के मामले में एक तीर से दो शिकार वाली कहावत आसानी से चरितार्थ होती है। भाषा उत्पादन में वास्तव में कई प्रक्रियाएँ एक साथ सम्पन्न होती हैं।

भाषा उत्पादन में कम से कम तीन प्रक्रियाएँ एक साथ होती हैं— पहली प्रक्रिया है— ध्वनि का उत्पादन, दूसरी है— आगे आने वाले वाक्यांशों की ध्वन्यात्मक तैयारी (याने उसमें शामिल आवाजों के बारे में सोचना), तीसरा, शेष वाक्य की रचना की योजना व मन में उसका प्रतिपादन। इनमें से प्रत्येक प्रक्रिया जितनी दिखती है, उससे अधिक जटिल है। शब्दों के उच्चारण में निहित जटिलताएँ एकदम से हमें समझ में नहीं आतीं। उदाहरण के लिए ये माना जाता है कि अंग्रेजी में 'गीज़' (Geese) बोलते समय, पहले 'ग' बोला जाएगा फिर 'ई' की आवाज़ होगी और फिर 'ज़'। परन्तु गीज़ बोलने में इससे कहीं ज्यादा होता है।



भाषा और अनुमान :

जरा सोचिए क्या हम बोलते समय या पढ़ते समय पूरे वाक्यांश पर ध्यान देते हैं? पर्याप्त ध्यान की जगह हम आगे आने वाले अक्षरों शब्दों का अनुमान भी लगाते चलते हैं। यदि हम ऐसा शब्द बोलें या पढ़ें जैसे "गाय घास" तो जैसे ही हम बोलते अथवा पढ़ते हैं हमें आगे आने वाले शब्द का अनुमान हो जाता है। हमें पता चल जाता है कि आगे आने वाला शब्द 'खाती है' ही होगा। भाषा का प्रयोग करते समय न केवल बाद में आने वाली ध्वनि पहले आने वाली ध्वनि पर प्रभाव डालती है बल्कि पहले आने वाली ध्वनि भी बाद में आने वाली ध्वनि पर प्रभाव डालती है। उदाहरण के लिए कमला बोलते वक्त शब्द की ध्वनि संरचना होगी : क् + अ + म् + ल् + आ और कमल बोलते वक्त होगी क् + अ + म् + अ + ल् कमला में म् के साथ अ नहीं बोला जाएगा क्योंकि ल में आ जुड़ने से वह दीर्घ ध्वनि हो जाती है अतः उससे पहले आने वाली ध्वनि म् छोटी होगी जबकि कमल में म के साथ अ होगा ल् रहित होगा।

पहली बात तो यह है कि 'ग' की आवाज़ जो 'गूज़' में है वह 'गीज़' में ग की आवाज़ से बहुत फर्क है, यह अंतर 'ग' पर लगने वाली मात्रा से निर्धारित होता है। बोलने वाला पहले से ही 'ई' या 'ऊ' का अनुमान अनजाने में (Sub consciously) करता है। आगे आने वाली मात्रा कौन सी है, यह सोच कर वह उसके अनुसार 'ग' की आवाज़ को परिवर्तित कर लेता है। इसी तरह की एक और बात जो हम अनजाने में सफलतापूर्वक करते रहते हैं वह है "Geese" में बोली जाने वाली ध्वनि को "Geyser" (गीज़र) के स्वर से छोटा करना। (आप यह भी देख रहे हैं कि इसका संबंध लिखने के ढंग से भी उतना सीधा नहीं है जितना हम मानते हैं। "Geyser" में "y" की ध्वनि में और yellow में "y" की ध्वनि बहुत फर्क है)

अतः यह स्पष्ट है कि बोलने वाला अलग-अलग अवयवों, हिस्सों का क्रमवार उच्चारण भर नहीं करता बल्कि उससे कहीं ज्यादा करता है।

1	2	3
G	EE	SE

वह आपस में गुँथी व जुड़ी ध्वनियों को निकालने के लिए परस्पर व्यापन करती हुई (जुड़ी हुई) क्रियाओं की शृंखला बनाता जाता है, जिसमें बाद में आने वाली ध्वनि पहले आने वाली ध्वनि पर काफी प्रभाव डालती है।

G..

EE..

SE..

इस परस्पर व्यापन के लिए तंत्रिकाओं और पेशियों में अच्छा खासा तालमेल आवश्यक है, विशेषकर इसलिए कि बोलने की गति काफी तेज़ होती है। एक सामान्य व्यक्ति प्रायः ध्वनि के 200 टुकड़े (Syllable) प्रति मिनट बोलता है। बोलने के साथ-साथ ही वह अगले 2-3 शब्दों वाले वाक्यांश (phrases) को भी अपने दिमाग में रचकर बोले जाने के लिए सक्रिय कर रहा होता है।

ध्वन्यात्मक रूप में इसका उदाहरण हमें तब देखने को मिलता है जब जीभ फिसल जाने से कोई ध्वनि जो किसी ध्वनि के बाद में आने वाली है, पहले ही बोल दी जाती है और दूसरी बाद में। जैसे— किसी ने “ओसामा बिन लादेन छिपा है” के बजाए “ओबामा सिन लादेन छिपा है” कह दिया। या जैसे किसी ने कहा “On the nerve of vergeous breakdown” जब वो कहना चाहता था “On the verge of a nervous breakdown” पर उन्होंने ‘nerve’ को ज़रूरत से पहले सक्रिय कर दिया।

अभ्यास

-
- भाषा उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान हम क्या-क्या करते हैं?
 - सही व गलत बताइए।
 - एक सामान्य व्यक्ति प्रायः ध्वनि के 200 टुकड़े प्रति मिनट बोलता है।
 - बोलते समय हम आगे आने वाले शब्दों का अनुमान नहीं लगाते हैं।
 - Geysar की ‘y’ की ध्वनि में और yellow की ‘y’ की ध्वनि में कोई अन्तर नहीं है।
-

भाषा और योजना :

- (1) व्यापक प्रभाव पड़ने से वाक्य या शब्द के उच्चारण में प्रभाव पड़ता है। कभी-कभी हम करेला को कलेरा या ‘ओसामा बिन लादेन’ को ‘ओबामा सिन लादेन’ कह जाते हैं।
- (2) भाषा प्रयोग के दौरान वाक्यों की रचना की तुलना मोजेक निर्माण की कलाकारी से की जा सकती है। मोजेक के कलाकार को अपनी कल्पना का स्वरूप एक बार तय करके आगे बढ़ना होता है, किन्तु बोलने वाले को इसमें नित्य सुधार करना होता है।

आप जरा इन शब्दों को देखें Nervous verge of a breakdown ओसामा, लादेन, बिन, है, छिपा अगर मानव 2-4 शब्द समूहों के टुकड़ों को ही एक बार में बोलते तो पूर्व तैयारी कर पाना इतना आश्चर्यजनक नहीं लगता। हैरान करने वाली बात यह है कि आगे आने वाली ध्वनियों को सक्रिय करने की प्रक्रिया और लम्बी-चौड़ी बात की तैयारी एक साथ चलती है। जरा सोचिए बोलते वक्त हम एक साथ कितने वाक्यांश बोल देते हैं। लैनबर्ग (1967, p. 107) इसकी तुलना मोजेक जैसी कलाकारी (छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी तस्वीर या आकृति) से करते हैं: समझ में आने वाली बात में शामिल शब्दों की ध्वनि शृंखला एक ऐसा क्रम अथवा पैटर्न (Pattern) है जिसकी तुलना मोजेक जैसी कलाकारी से की जा सकती है। मोजेक एक-एक छोटे पत्थर को देखकर उस रूप व पूरे ढाँचे की कल्पना के आधार पर सही जगह देख कर लगाया जाता है। बोलने की

प्रक्रिया कुछ-कुछ उससे मिलती है। पत्थर जमाना शुरू करने से पहले ही जैसे आकृति पूर्ण रूप में कलाकार के दिमाग में बन चुकी होती है वैसी ही या उससे कुछ आगे तक की योजना बोलने वाले के दिमाग में बनती रहती है। (मोज़ैक के कलाकार को अपनी कल्पना का स्वरूप एक बार तय करके आगे बढ़ना होता है, किन्तु बोलने वाले को उसमें नित्य सुधार भी करना हो सकता है।)

कभी-कभी वाक्य सरल होते हैं। उनकी बनावट में कोई जटिलता नहीं होती। सभी हिस्से भी व अर्थ भी स्पष्ट उभर कर आते हैं, जैसे "The baby fell down from stairs" "The cat was sick" And "I have resigned," "बच्चा सीढ़ियों से गिर गया," "बिल्ली बीमार थी" और "मैंने इस्तीफा दे दिया है।" इनको समझना व बोलना सरल प्रतीत होता है। किन्तु कभी कभार वाक्य काफी पेचीदा भी होते हैं। इनमें वक्ता और श्रोता दोनों को उपवाक्यों की परस्पर निर्भरता (interdependencies) को याद रखना पड़ता है। उदाहरण के तौर पर यदि इस तरह का वाक्य है कि, बच्चा सीढ़ियों से गिर गया या बिल्ली बीमार हुई तो मैं या तो इस्तीफा दे दूँगा या पागल हो जाऊँगा। (If either the baby falls down stairs or the cat is sick, then I shall either resign or go mad). यहाँ, 'तो' 'यदि' पर आश्रित होगा तो वाक्य पूरा नहीं होगा। और इसी तरह 'या' (either) के साथ एक और या (or) का आना अनिवार्य है। इसके साथ 'Falls' अथवा 'गिरने' का कौन सा रूप उपयोग होगा यह शिशु अथवा उसके स्थान पर जो है उससे जुड़ा होगा। इसी तरह 'थी' (was) के रूप को बिल्ली के अनुसार ही होना होगा। स्पष्टतः यह पूरा वाक्य इसकी हुबहू छवि, और उसके लक्षणों के साथ पहले ही बन गया होगा। इसके बनने का क्रम योजनाबद्ध होगा।



इन उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि इंसानों की बातचीत में शामिल होकर बोलने के लिए लगातार योजना बनाते रहना व बोलते रहना ज़रूरी है। यह दोनों साथ-साथ कर पाने की क्षमता इस हद तक है कि यह माना जा सकता है उन्हें, इसी तरह के समन्वयन के लिए विशेष तौर पर बनाया गया है।

परन्तु फिर भी यह सोचना होगा कि इसमें किस-किस तरह के तरीके शामिल हैं? यह कैसे होता है? कैसे मनुष्य कथनों को सार्थक ढंग से बोल पाता है? और सोचते-सोचते भी सही क्रम में बोलते चलता है? क्यों वह इन्हें गड्ड-मड्ड नहीं कर देता लगभग सभी लोग RABBIT को सही ढंग से Rabbit ही कैसे बोल पाते हैं, वे उसे BARIT या TIRAB क्यों नहीं बोलते? यह ध्यान देने योग्य बात है कि जिन लोगों के दिमाग को कोई भी क्षति हुई है, वे अकसर ऐसा बोल जाते हैं।

लैनबर्ग (1967) सुझाते हैं कि बोलने का सही क्रम ऐसे नियमों के तहत होता है जो लयबद्ध हैं। यह सभी बोलियों में मदद करते हैं। यह तो सब जानते हैं कि पद्य को याद रखना गद्य को याद रखने से सरल होता है क्योंकि पद्य में एक अंतर्निहित लय होती है।

I wandered lonely as a cloud

(ti-tim - ti-tum- ti-tum - ti-tum)

That floats on High O'er vales and Hells

(ti-tim - ti-tum- ti-tum - ti-tum)

वह देखो माँ आज खिलौने वाला फिर से आया है।
कई तरह के सुंदर-सुंदर नए खिलौने लाया है।

ऐसा भी हो सकता है कि मनुष्य की भाषा में कोई अंतर्निहित जैविक ताल (Biological 'beat') हो, ऐसी

ताल जो उसे लय आधारित उचित क्रम बनाने में सहायक हो। इस ताल के टूट जाने से ही भाषा असंयमित तेज़ रफ्तार से बोली जाने लगती हो (जैसे पार्किन्सन्स की बीमारी में)। लैनबर्ग सुझाते हैं कि भाषा उत्पादन में एक सेकण्ड का 1/6वाँ हिस्सा समय की आधार इकाई है। यह अनुमान उन्होंने कई प्रयोगों के आधार पर बनाया है। इसमें एक तथ्य जो शायद हम सब परख सकते हैं वह यह है कि सामान्य गति से बोलने में 6 स्वतंत्र ध्वनि टुकड़े (syllable) एक सेकण्ड में बोले जाते हैं। हालाँकि इन में से कई सूक्ष्म पहलुओं व बारीक बातों पर अभी अटकलें ही लगाई जा रही हैं।

हमें भले अभी विस्तृत जानकारी नहीं हो पर मोटी तस्वीर स्पष्ट है। भाषा के प्रति जिस तरह का शारीरिक अनुकूलन इंसान का है, वैसा पेड़, पौधे या बंदर का नहीं है। हमारे वाक् अंग, फेफड़े, दिमाग आदि भाषा की बारीकियों को समझने व उपयोग करने के लिए वैसे ही तैयार हैं जैसे बंदर पेड़ पर चढ़ने के लिए तैयार हैं।

अभ्यास :

-
- भाषा बोलते या पढ़ते समय हम किस तरह अनुमान लगाते हैं।
 - बोलने की प्रक्रिया की मौजूक निर्माण की कला से क्या समानता व क्या असमानता है?
 - पद्य को याद रखना गद्य की अपेक्षा सरल होता है। इसके क्या क्या कारण बताए गए हैं।
 - भाषा उत्पादन की प्रक्रिया पर अपने विचार कीजिए?
 - किसी व्यक्ति के साथ बातचीत की प्रक्रिया के लिए किन तथ्यों का होना आवश्यक है?
-



अध्याय – 3

प्रारंभिक कक्षा में भाषा शिक्षण पर जोर देने की जरूरत क्यों है?

परिचय

“बच्चा जन्म से पहले गर्भ में ही भाषा से परिचित होना शुरू कर देता है।” इस कथन के पक्ष या विपक्ष में बहुत सारे तर्क मिल जाएंगे। किंतु सार्वभौम सत्य यही है कि बच्चे जन्म लेने के तुरंत बाद से जिस तरह भाषा के साथ अंतर्क्रिया संपादित करते हैं वह स्पष्ट इशारा करता है कि भाषा मानव के अनुवांशिक गुणों की तरह ही जुड़ चुकी है। बच्चे प्रारंभ से ही एक स्वतंत्र इकाई के रूप में भाषा का प्रयोग करना शुरू कर देते हैं और दिन प्रतिदिन इस कौशल को विकसित करते जाते हैं। इसी विकास के दौरान उन्हें सहायता, वातावरण और प्रयोग करने की आजादी की आवश्यकता होती है।

उद्देश्य

भाषा एक अत्यंत जटिल और विशिष्ट मानवीय कौशल है। इसकी ठोस समझ आवश्यक है कि इस मानवीय कौशल को बच्चा प्रारंभ से ही आत्मसात करने की प्रक्रिया से कैसे गुजरता है। इस प्रक्रिया से गुजरते हुए उसे किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो सकती है। यह जानना एक शिक्षक के लिए आवश्यक है। इस हेतु कुछ विशेष सिद्धांतों पर अमल किया जाना आवश्यक होगा ताकि बच्चे का प्रारंभिक भाषायी विकास संतुलित और सदिश हो। इन्हीं बातों सिद्धांतों को सामने लाना इस इकाई का उद्देश्य है।

बच्चे और भाषा

बच्चों का भाषायी विकास

एक साल से कम उम्र के बच्चे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए सबसे पहले भाषा का इस्तेमाल करते हैं। वे भूख लगने पर रोते हैं, कुछ अच्छा लगने पर हँसते हैं और किलकारियाँ भरते हैं। धीरे-धीरे शब्दों से शुरू होते हुए, जैसे— मम, बाबा, आदि शब्द बोलने लगते हैं। फिर इन शब्दों को वाक्यों में उपयोग करने लगते हैं।

दरअसल, कुछ ही महीने का शिशु किसी परिदृश्य में से वस्तुओं को देख कर छॉट सकता है और नजर से उनका पीछा कर सकता है। साल भर का होते-होते शिशु वस्तुओं की रूपरेखा, बनावट और आकार को पहचानने लगता है। दो साल का होते-होते बच्चे की शब्दावली हर रोज़ दस से बीस नए शब्दों को सीखते हुए आश्चर्यजनक ढंग से प्रगति करने लगती है।

चित्र में दो साल का यह बच्चा न केवल बिस्कुट के पैकेट को देख कर पहचान रहा है बल्कि यह भी बता रहा है कि उसे बिस्कुट खाना है।



कई बार आपने दो-तीन साल के बच्चों को आपस में बातचीत करते हुए सुना होगा। बच्चे किसी काम में जुटे रहते हैं और भाषा प्रयोग भी करते रहते हैं।

जब तक ये बच्चे पाँच-छह साल की उम्र में स्कूल पहुँचते हैं, उनके पास कई हजार शब्दों के भंडार और व्याकरण के नियम होते हैं।

अक्सर लोग मानते हैं कि बच्चे वयस्कों की नकल करके भाषा सीखते हैं, परंतु यह बहुत ही सीमित दृष्टिकोण है। दरअसल, बच्चों में भाषा सीखने का एक उत्साह होता है, क्योंकि वे अपने आस-पास की दुनिया में भाग लेना चाहते हैं, बड़ों से बातचीत करना चाहते हैं और अपनी बात दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं। जैसे-जैसे बच्चे भाषा सीखते हैं, वे अपने आस-पास सुनी जा रही भाषा और उनके पिटारे में मौजूद भाषा में संबंध बिठाते रहते हैं। वे नए शब्दों और वाक्यांशों को समझने के लिए लोगों के हाव-भाव, हाथ के संकेत आदि को भी गौर से देखते हैं। वे जो सुनते हैं और जो उन्हें पहले से पता है, उसे मिलाकर अपने संवाद में शामिल करने की कोशिश करते हैं। इसी तरह, वे प्रतिदिन भाषा की नई जटिलताओं को अपने पिटारे में सम्मिलित करते रहते हैं।

ऐसा कहना गलत होगा कि बच्चों के भाषा विकास में वयस्कों का हाथ नहीं है। बच्चों को सबसे अधिक लाभ वयस्कों के साथ बातचीत करके होता है, जहाँ वयस्क बच्चों की पसंद और दिलचस्पी के अनुसार बात करते हैं वहाँ अक्सर आप देखेंगे कि इस प्रकार की बातचीत हरेक घर में बच्चे और माँ के बीच अधिक होती है।

अनेक शोधों के अनुसार, वयस्क ज्यादातर बच्चों से कुल 3 प्रकार की बातचीत करते दिखते हैं:-

1. बच्चों को सीधे-सीधे बताना व सिखाना: बच्चों को सीधे निर्देश देकर सिखाने की प्रक्रिया शुरुआती महीनो में बहुत दिखाई देती है।



2. भाषा के इस्तेमाल का आदर्श नमूना देना: जब बच्चे वाक्य संरचना में गलती करते हैं, तो अक्सर वयस्क उसे सही कर पूरा वाक्य दोहराते हैं। वे जानते हैं कि उस समय बच्चा तुरंत सही संरचना नहीं सीखता, मगर वयस्क उसे वाक्य का आदर्श उपयोग करके दिखाते हैं।



3. विस्तृत बातचीत करना: इस तरह की बातचीत प्रायः देखने को मिलती है। इस प्रकार, बच्चों का वयस्क से बातचीत करना अत्यंत लाभदायक होता है। आम तौर



पर घरों में माँ-बाप, दादा-दादी बच्चों से ऐसी बातचीत करते हैं, उनकी बात सुनते हैं, उनकी दिलचस्पी पहचानते हुए बात आगे बढ़ाते हैं, उनसे सवाल पूछते हैं तथा बच्चों को अधिक से अधिक बोलने के लिए प्रेरित करते हैं।

बच्चों का शुरुआती मौखिक भाषा अर्जन वास्तव में आश्चर्यजनक है। भाषा विज्ञान के विशेषज्ञ नोम चौमस्की के अनुसार मनुष्य में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता है। इसके लिए मस्तिष्क में एक विशेष हिस्सा है, जिसे 'भाषा अर्जन तंत्र' कहा जाता है। यह तंत्र भाषा के सारे जटिल नियमों और अंगों को सहज ही अर्जित करने में सक्षम है। अपने परिवेश में मौजूद भाषाओं के बीच बच्चे, वयस्कों से बेहतर भाषा सीखने की क्षमता दर्शाते हैं और तो और, प्रवासियों के बच्चे भाषाओं को सुनते-सुनते नई प्रकार की भाषा सीखने की क्षमता दर्शाते हैं। यह क्षमता कुदरती और जैविक ढंग से इंसानों को हासिल है।



विचार करें:

क्या आप को किसी ने बार-बार बोल कर रटवाया था कि 'गाड़ी चलती है' और 'स्कूटर चलता है'? क्या स्त्रीलिंग-पुल्लिंग सिखाते हुए शिक्षक ने हिंदी भाषा के सभी शब्दों का उदाहरण लिया था? क्या आप यह स्पष्टता से बता पाएँगे कि ऐसा क्यों है कि 'गाड़ी चलती है' और 'स्कूटर चलता है'?

सामान्यतः बच्चों में भाषा विकास की कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ इस प्रकार होती हैं—

0-6 माह	स्व ध्वनियों में अंतर
12-18 माह आते-आते	शब्दावली 50 शब्द तक
2 साल	लगातार तेजी से बढ़ती शब्दावली, बहुवचन का सही उपयोग, भूतकाल का प्रयोग

5-6 साल की आयु तक पहुँचते-पहुँचते बच्चे 3000-5000 शब्दों का सरल वाक्यों में प्रयोग करने लगते हैं। परंतु जिन घरों में बच्चों को बातचीत के अवसर कम मिलते हैं और प्रिंट रिच संसाधनों की कमी होती है, उन घरों से आए हुए बच्चों की शब्दावली सीमित होती है। बहुत से अध्ययनों में यह पाया गया है कि बच्चों की शब्दावली स्कूल की भाषा में कम एवं अपने घर की भाषा में अधिक होती है।

1. भाषा के कार्य –

परिचय:— भाषा, हमारे तंत्र, जीवन और संस्कृति का एक आधार स्तम्भ है। हकीकत में भाषा भी आगे कुछ है जिसे विस्तार से सोचने, समझने और महसूस करने की आवश्यकता है। साधारण भाषा को प्रतीकों के इस्तेमाल से संप्रेषण की व्यवस्था के रूप में पहचाना जाता है। लेकिन ये इससे कहीं आगे एक अद्वितीय और अनमोल संरचना है जो हमें एक विशिष्ट कौशल प्रदान करते हुए अन्य जीवों से एक दम अलग स्थान प्रदान करती है।

उद्देश्य:— भाषा को समझने का सबसे सरल उपाय उसके कार्यों को समझना है। अगर हम भाषा के कार्य और कार्यविधि को समझ सकते हैं तो हमारे लिए मानवीय भाषा की संरचना, और विलक्षणता को समझना काफी हद तक आसान हो जाएगा। अगर हम समझ सकें कि भाषा, विचार, संप्रेषण, चिंतन-मनन तर्क समस्या समाधान जैसे क्षमताओं का आधार है तो हम सफल होंगे भाषा और उसके ताने बाने को समझपाने में जो कि इस इकाई का उद्देश्य है।

गतिविधि –1

हम नीचे कई वाक्य दे रहे हैं। उनसे आप अनुमान लगाएँ कि यहाँ पर भाषा किस तरह का कार्य कर रही है। आपको पहले स्तंभ में दिए वाक्यों का दूसरे स्तंभ में दिए कार्यों से उपयुक्त मिलाप करना है।

वाक्य	वाक्य में निहित भाषा के कार्य
1. मैं बाज़ार जा रहा हूँ	क. एक व्यक्ति के अंदर आने वाली सोच को प्रकट कर रही है।
2. भारत एक स्वतंत्र देश है।	ख. हमारे सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शा रही है। यहाँ किसी व्यक्ति का स्वागत किया जा रहा है। शब्दों के चयन से ही पता लग जाता है कि उसे सम्मानपूर्वक बुलाया जा रहा है। "आओ, अंदर आओ" में एक अलग तरह की भावना दिखती है।
3. नमस्कार! आइए, आपका स्वागत है।	ग. एक व्यक्ति से दूसरे तक विचार पहुँचाने या संप्रेषण का काम कर रही है।
4. उफ़, इतना गर्म।	घ. भाषा के ज़रिए स्थानों की दूरियाँ पाट कर एक जगह होने वाली घटना बहुत सारी जगहों पर पहुँचाई जा रही है।
5. ह्वेनसांग ने लिखा कि 634 ईसवी में मथुरा में दो हजार बौद्ध भिक्षु थे।	ङ. ऐसी घटनाओं का ब्यौरा दे रही है जो सैकड़ों वर्ष पहले हुए। इस प्रकार भाषा, समय और स्थान की छोटी या बड़ी दूरियाँ पाटने में इंसानों की मदद करती हैं।
6. अमेरिका के चुनाव में 'जो बाइडेन' जीते।	च. भावनाओं और सौंदर्य व्यक्त करने के साधन के रूप में प्रयोग की जा रही है।
7. जब मैं बड़ी होऊँगी, तो पूरी दुनिया घूमूँगी।	छ. भाषा केवल पिछली घटनाओं को ही नहीं, बल्कि भविष्य की घटनाओं के बारे में भी मनुष्यों को सोचने, योजना बनाने या कल्पना करने में मदद करती है।
8. पक्षियों की मधुर चह-चहाहट से पूरा वातावरण गुंजायमान हो उठा।	ज. विचारों और अवधारणाओं को व्यक्त करने का साधन है। यह 'देश', 'स्वतंत्र' जैसे विचारों को नाम दे रही है, साथ ही एक विशिष्ट देश को एक खास नाम 'भारत' भी दे रही है।

उत्तर : 1. (ग) 3. (ख) 5. (ङ) 7. (छ) 2. (ज) 4. (क) 6. (घ) 8. (च)

ऊपर दिए गए कार्यों के अलावा भाषा कहीं अधिक व्यापक भूमिकाएँ भी निभाती है।

पशुओं में संचार के जो थोड़े-बहुत प्रतीक हैं वे ज्यादातर आनुवांशिक (hereditary) हैं; जबकि मानवीय भाषा प्रतीक और नियम ज्यादातर समाज से ही सीखने पड़ते हैं। कुछ आनुवांशिक भी हैं, जैसे-रोना।

आइए, एक अभ्यास के जरिए हम यह देखने की कोशिश करें कि मनुष्य अपनी भाषा के जरिए कितने तरह से मानसिक प्रक्रियाएँ करते हैं।

गतिविधि-2

नीचे दिए पैरा को पढ़ें:-

जब भी तुम अपने घर में बल्ब जलाते हो, बिजली तॉबे के तारों में दौड़ती हुई तुम्हारे घर को रोशन करती है। ऐसे हर क्षण में तुम उस खदान मज़दूर से जुड़ जाते हो, जिसने तॉबे की गहरी खान में घुसकर तॉबे को कच्ची चट्टान से निकाला था। खदानों में काम करने वालों का जीवन बेहद कठिन और जोखिम भरा है। वे गंभीर खतरों से जूझते हुए हमारे लिए धातुएँ, कोयला, खनिज आदि धरती के गर्भ से निकालते हैं। हाल ही में चिली में धरती की गहराई में 33 खनिक अंदर फंस गए थे। उनके बचने की उम्मीद न के बराबर थी लेकिन 69 दिनों तक जमीन के अंदर सुरंग में दबे ये लोग कैसे जिंदा वापस आए, पढ़ो यह हैरतअंगेज़, रोमांचक किस्सा, जिसे पूरी दुनिया ने साँस रोककर घटते देखा।

इसको ध्यान से दो-तीन बार पढ़ते हुए यह भी देखने की कोशिश करें कि पढ़ते हुए केवल शब्द पहचानने के अलावा, यह लेख आपको किन-किन मानसिक क्रियाओं के लिए प्रेरित कर रहा है।

नीचे दी हुई क्रियाओं में से सब छॉटे जो आप पढ़ते हुए कर रहे होंगे।

अनुभवों को बताना या समझना	जानकारी का आदान-प्रदान	तर्क देना
अतीत, वर्तमान या भविष्य के बारे में बात करना	भावनाएँ महसूस या व्यक्त करना	ज्ञान या समझ का निर्माण करना
मूल्यांकन करना	असल या काल्पनिक घटनाओं के बारे में बात करना	अमूर्त अवधारणाओं के बारे में बात करना
पूर्व ज्ञान को सक्रिय करना	सहमति या असहमति तय करना	अर्थ निकालना

हम देख सकते हैं कि यह लेख पढ़ते हुए हम ऊपर बताई गई लगभग सभी प्रक्रियाएँ करते हैं।

हम इस पाठ के साथ कई स्तरों पर अन्तःक्रिया कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब पाठ कहता है कि खदानों का काम जोखिम भरा है, तो आप उसका मूल्यांकन करते हैं कि यह बात आपको वास्तव में सही लगती है या नहीं। इसके बारे में आप पहले से क्या जानते हैं? इसी तरह पाठ यह तर्क देता है कि जब हम कोयला जलाते हैं तो खदान मजदूर से जुड़ जाते हैं, तो हम अपनी तर्क-शक्ति से इस बात को स्वीकार या अस्वीकार करते हैं। जब पाठ हमें मजदूरों के कठिन हालात की बात बताता है तो हम भावनाएँ महसूस करते हैं। यही नहीं, हम बल्ब, बिजली, चट्टान, खान आदि बहुत से शब्दों के बारे में अपना पूर्वज्ञान इस्तेमाल करते हैं। हम बिजली, खतरा, जोखिम, खनिज जैसी अमूर्त अवधारणाओं की समझ का भी इस्तेमाल करते हैं। सबसे हैरानी की बात तो यह है कि इस छोटे से लेख के ज़रिए हम समय और स्थान की सारी सीमाओं के पार जाकर अनुभव या ज्ञान का आदान-प्रदान कर सकते हैं।

2.1 भाषा और संप्रेषण

अपने विचारों, भावनाओं, सोच व जानकारी को संप्रेषित करना भाषा की सबसे स्वीकार्य उपयोगिता मानी जाती है। इस तरह का संप्रेषण तब होता है जब हम बोलते, सुनते, पढ़ते या लिखते हैं। लिहाजा भाषा में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना, ये चारों आयाम समाहित हैं।

2.2 भाषा और विचार

भाषा और विचार का आपस में क्या संबंध है? इस पर बहुत बहस और अनुसंधान हो चुके हैं।

आपका क्या मानना है, नीचे लिखे वाक्यों में जाँचें—

1. क्या आप कभी कुछ ऐसा महसूस करते हैं या सोचते हैं जो शब्दों में नहीं कह पाते? हाँ / नहीं
2. क्या आप कई कल्पनाएँ शब्दों के बिना भी करते हैं? हाँ / नहीं

3. क्या आपके सारे विचार शब्दों में ही आते हैं? हाँ / नहीं

यह तो बहुत स्पष्ट है कि शब्दों के बिना हमारा सोचना बहुत सीमित हो जाएगा। लेकिन क्या शब्दों के बिना सोचना संभव भी है? इस प्रश्न पर विद्वानों के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं।

फ्राँसीसी मनोवैज्ञानिक पियाजे का कहना है कि भाषा चिंतन पर आश्रित होती है। इसका मतलब है कि सोच भाषा से पहले आती है। दूसरी ओर रूसी मनोवैज्ञानिक वायगॉस्की के विचार इससे कुछ भिन्न हैं।

वाईगोत्स्की का कहना है कि भाषा और विचार को अलग नहीं किया जा सकता। वयस्कों में **आंतरिक वाणी** (inner speech) सोचने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका रखती है। यदि आप कोई कमोबेश जटिल काम कर रहे हैं, तो आप पाएँगे कि उस काम के बारे में सोचते हुए आप अपने आप से ही बात करते जा रहे हैं। इस प्रकार हमारे विचार और आंतरिक वाणी आपस में गुंथे होते हैं और उनको अलग करना कठिन है।

आंतरिक वाणी बचपन में विकसित होती है। जीवन के पहले दो वर्षों के दौरान हमारे विचार शब्दों से रहित होते हैं। इसके बाद शब्द हमारे सोचने में अहम भूमिका अदा करना शुरू कर देते हैं। छोटे बच्चे जो कर रहे होते हैं, उसके बारे में वे अक्सर अपने आपसे बात करते हुए दिखाई देते हैं। इसे वायगॉस्की ने **निजी वाणी** (private speech) कहा है। इस तरह का बोलना बच्चे की उम्र बढ़ने के साथ कम होता जाता है और विकास के बाद की अवस्थाओं में (लगभग 7 साल की उम्र के आसपास) आंतरिक वाणी उसकी जगह लेती जाती है। इससे पता चलता है कि सोचने के लिए वाणी बहुत महत्वपूर्ण बौद्धिक भूमिका निभाती है।

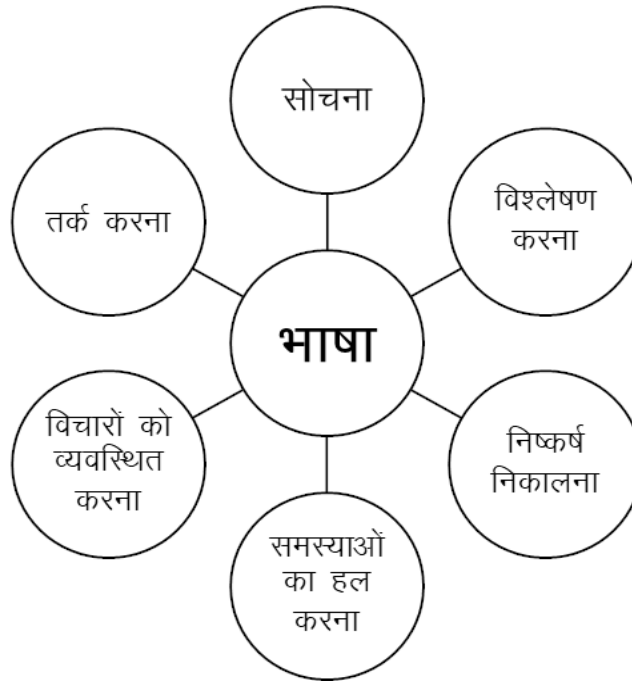
2.3 भाषा और सीखना

अब हम भाषा के एक और महत्वपूर्ण कार्य के बारे में बात करेंगे। वह है— सीखने के सबसे महत्वपूर्ण साधन के रूप में भाषा के जरिए ही मानसिक क्षमताओं का विकास होता है भाषा सीखने का सबसे सशक्त माध्यम है। केवल **‘भाषा सीखना’** ही अपने आप में काफी नहीं **‘भाषा**

के जरिए सीखना वह शक्तिशाली क्षमता है जो हमें भाषा से मिलती है।

ऑस्ट्रालयायी भाषाविद् हैलिडे के अनुसार जब हम कुछ भी सीखते हैं तो अर्थ निकालकर समझ बनाते हैं। अर्थ-निर्माण के लिए भाषा ही सबसे महत्वपूर्ण जरिया होती है। आइए देखें भाषा किस तरह हमें अधिगम या सीखने में मदद करती है।

आकृति-1 में दिखाई गई सभी प्रक्रियाओं के जरिए भाषा हमारे लिए सीखने के माध्यम के रूप में कार्य करती है। इसे 'भाषा आधारित अधिगम सिद्धांत' के नाम से जाना जाता है। ध्यान



दें कि जब हम कुछ भी नया सीखते और समझते हैं और यदि वह बात हमें समझ आ जाती है, तो हम उसे अपने शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं। अर्थात् हम उस ज्ञान को आत्मसात् करके एक तरह से एक नया रूप दे सकते हैं। बाहर उपलब्ध ज्ञान और शब्द 'हमारे अपने' हो जाते हैं।

2.4 भाषा और अवधारणाएँ

आइए, देखें कि भाषा किस तरह हमें अवधारणाएँ बनाने में मदद करती है।

गतिविधि-3

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप उस शब्दों का वर्णन दूसरे शब्दों में कीजिए अर्थात् यदि शब्द आपकी भाषा में उपलब्ध नहीं है तो आप उस बात को कैसे व्यक्त करेंगे?

1. चिड़िया
.....
.....
2. घर
.....
.....
3. देश
.....
.....

चिड़िया : जैसे ही हम 'चिड़िया' नामक एक अवधारणा पाते हैं, हम उसे दूसरे बहुत से नामों से अलग एक श्रेणी में डाल देते हैं। ध्यान दें कि इसे एक वर्ग बनाने से पहले हमने तरह-तरह की कई चिड़ियाएँ देखी-पहचानी होंगी। यह भी देखा होगा कि उनमें क्या विशेषताएँ हैं तथा वे अन्य जीवित प्राणियों से किस तरह अलग हैं। इस प्रकार देखी या महसूस की हुई चीजों को शब्द या अवधारणा का नाम देकर हम स्मृति में बसा लेते हैं और उनका कुशल प्रयोग भाषा में करने लगते हैं। हम इन्हें '**प्रत्यक्ष अवधारणाएँ**' कह सकते हैं, क्योंकि इन्हें हम अपनी इंद्रियों के ज़रिए देखते या सीखते हैं।

घर : ध्यान दें कि घर जैसी वस्तु अपने रंग-रूप के कारण नहीं, बल्कि अपने प्रयोग के कारण महत्वपूर्ण है। इंसान जिस प्रकार अपने जीवन में वस्तुओं का प्रयोग करते हैं, उसके अनुसार उन्हें नाम देकर एक अवधारणा के रूप में स्थापित कर लेते हैं। घर शब्द सुनते ही आपकी स्मृति में वे सारे प्रयोग आ जाते हैं जो आप घरों के साथ करते हैं। यही बात घड़ी, दीवार, बिजली, सड़क आदि व्यवहार में लाने वाली ढेरों चीजों, पर लागू होती है। इन्हें हम 'व्यावहारिक अवधारणाएँ' कह सकते हैं।

देश : यह स्पष्ट है कि देश अमूर्त विचार है जिसे हम देख नहीं सकते, न ही इस्तेमाल कर सकते हैं लेकिन इस अवधारणा के आते ही बहुत से विचार इससे जुड़ जाते हैं। इस प्रकार की अमूर्त अवधारणाओं को विशेष नाम देकर, भाषा हमें अपने दिमाग में खूँटे प्रदान करती है जिनके जरिए बहुत से विचार आपस में बँध सकते हैं। ऐसी अवधारणाओं को हम 'सैद्धांतिक' कह सकते हैं जिनके जरिए हम अमूर्त और सिद्धांत संबंधी विचार व्यक्त कर सकते हैं।

ऊपर दिए उदाहरणों से आप देख सकते हैं कि किस प्रकार भाषा हमें विचारों या अवधारणाओं के बारे में सोचने या बात करन का अवसर देती है। इस तरह से यह विचारों के प्रतिनिधित्व का एक शक्तिशाली औजार है।

अभ्यास कार्य-1

भाषा के विभिन्न कार्यों के बारे में हम ऊपर वाले खंड में पढ़ चुके हैं, नीचे दिए गए टेबल में भाषा के प्रमुख चार कार्यों को भरें और अपने मेंटर को इसकी फोटो भेजें।

भाषा के प्रमुख कार्य

1	2	3	4
.....
.....
.....
.....
.....

प्रश्न:—

1. बच्चे भाषायी करिश्मा करते हैं? आप इस कथन से कहां तक सहमत हैं। सतर्क विचार लिखिए।
 2. "शब्दावली विकास में क्या-क्या तरीके हो सकते हैं?" अपने सुझावों को कारण सहित लिखिए।
 3. भाषा 'संप्रेषण' को किस हद तक नियंत्रित कर सकती है। अपने विचार लिखिए।
 4. "भाषा के जरिए सीखना" से आप क्या समझते हैं।
 5. भाषा सीखने के बुनियादी सिद्धांत को समझाएँ।
-



समाज का ताना बना और भाषा

अध्याय : 4. बहुभाषिता, साक्षरता, भाषा-शिक्षण एवं बौद्धिक विकास : संविधान में भाषाएँ- बहुभाषायी मतलब क्या? - भाषा की राजनीति - बहुभाषिता अच्छी बात या बुरी? - साक्षरता कार्यक्रमों में अंधापन - एकभाषी मानदंडों का प्रकोप - दिमागी विकास और भाषा।

अध्याय : 5. भाषा और तौर तरीके : इंसान के कई रोल-अलग रोल की अलग भाषा - क्या ठीक है और क्या गलत? - देश-देश में अलग-अलग तौर तरीके, रीति-रिवाजों और समारोहों की भाषा।

अध्याय : 6. कौन भाषा, कौन बोली? : बोली और व्याकरण किसके पास है? - भाषा और बोली के बेबुनियाद भेद - एक ही मापदंड क्यों हो? सत्ता से जुड़े भाषायी सवाल - लिपि और भाषा - व्यापक क्षेत्र का बखेड़ा - वैज्ञानिक समझ की ज़रूरत।

- | | |
|--|---|
| (1) जग जग सारा जग सारा निखर गया
हुण प्यार के वादे विच बिखर गया
हुण मौजौं ही मौजौं | (2) रमैय्या वत्ता वैय्या
रमैय्या वत्ता वैय्या
मैंने दिल तुझ को दिया ... |
|--|---|

ये दो फिल्मी गीत हैं जिन्हें हिन्दुस्तान में करोड़ों लोगों ने सुना है, गाया है, जिन्होंने सबका दिल छुआ है। पहला आजकल का, दूसरा पचास साल पुराना। अब सवाल है : ये किस भाषा में हैं, या किस बोली में हैं, या किस अंचल के हैं?

इन सवालों का जवाब ढूँढते हुए हम घंटों सोच सकते हैं मगर साफ जवाब नहीं मिलेगा। क्यों? क्योंकि भाषा क्या है, बोली क्या है, ये सब मसले उलझे हुए हैं। भाषा शास्त्री कुछ कहते हैं, कानूनदाँ कुछ और कहता है, राजनीति वाले कुछ और ही कहते हैं- क्योंकि इन सब लोगों का मकसद अलग-अलग है। इन गीतों को डोगरी मातृभाषा वाले भी उतनी ही अच्छी तरह समझते हैं जितनी तमिल भाषी, या असमी, या गुजराती। लोग फिल्मों के मामले में बहुभाषी हैं, मगर राजनीति के मामलों में नहीं- और उधर साइंस या तकनीकी मामले हो तो अंग्रेजी भी अपनी और भारतीय भाषा बन जाती है।

पहले या दूसरे विश्व युद्धों में ऐसा होता था- और आज भी छोटे-मोटे हर युद्ध में हो रहा है- कि मुल्कों की सीमाओं पर युद्ध में उजड़े लोग एक मुल्क से दूसरे मुल्क पनाह लेने चलते हैं, और सीमा-चौकियों पर सेना-पुलिस के अफसर एक-एक की जाँच-पड़ताल करके ही उनको आने देते हैं। वजह? वजह यह कि असली उजड़े लोगों की भीड़ में दुश्मनों के भेदिये और जासूस मिले होते हैं। इस जाँच पड़ताल में भाषा-बोलियाँ समझने वाले भाषा वैज्ञानिक भी सेना-पुलिस के साथ बैठे होते हैं। क्यों? इसलिए कि वे आने वाले की बातचीत सुनकर पता लगा लेते हैं कि वे कौन से अंचल, या जिले, से आ रहे हैं, और क्या वे अपने निवास-स्थान के बारे में झूठ बोल रहे हैं। हर इंसान की बातचीत में उसके परिवार, जगह, अंचल, पेशा, शिक्षा, इन सब का निशान रह जाता है। भाषा इतनी गहरी चीज़ है। उलटा भी होता है। इंग्लैंड में जन्मी एक नई पुस्तक व पंजाबियों की हो गई है। उनकी पंजाबी सुनकर भाषा वैज्ञानिक चकरा जाते हैं कभी लगता है ब्रेडफोर्ड शहर की भाषा है, और कभी लगता है भटिंडा की।

भाषा जोड़ती भी है, और तोड़ती भी है- मजहब की तरह। आजादी के समय 'दो-देश' का महज़बी फार्मूला लगाकर देश को दो भागों में बाँट दिया गया, भारत और पाकिस्तान में। मगर चौबीस साल बाद उर्दू-बंगला को झगड़ा बनाकर पाकिस्तान भी दो टुकड़ों में बाँट दिया गया, पाकिस्तान और बांग्लादेश में। मजहब की तरह, क्या भाषा इंसान की पहचान बनती है? हाँ, लेकिन पहचान के ज़रिये सैकड़ों हो सकते हैं। इंसान खुद चुनता है कि वह अपनी पहचान किस-किस जरियों से करता है।

हिन्दी राजभाषा है? राष्ट्रभाषा है? लोकभाषा है? क्या ब्रज, अवधी, मैथिली हिन्दी की बोलियाँ हैं? भाषा और बोली में क्या फर्क है? ये सब पेचीदा सवाल हैं। इनका पूरा जवाब भाषा विज्ञान में नहीं मिलेगा - इनका धरातल सामाजिक, राजनीतिक, और व्यक्तिगत है।

आखिरी बात। क्या हमारे देश, या हमारी दुनिया में, भाषा-बोलियाँ बढ़ रही हैं या कि अंग्रेजी/हिन्दी के चलते लुप्त हो रही हैं? जवाब मजेदार है। पढ़ के देखो।

बहुभाषिता, साक्षरता, भाषा-शिक्षण एवं बौद्धिक विकास

रमाकांत अग्निहोत्री

परिचय :

“बहुभाषिता, साक्षरता, भाषा-शिक्षण एवं बौद्धिक विकास” रमाकांत अग्निहोत्री के इस लेख में भारत के बहुभाषी होने के Unique तथा अनेकार्थी रूपों को उजागर किया गया है और उसके साथ ही बहुभाषिता को समस्या के रूप में न देखकर एक प्रचुर-स्रोत के रूप में देखने की बात पर जोर दिया गया है।

उद्देश्य :

- बहुभाषिता के अर्थ को गहराई से समझ पाएँगे?
- भाषा और राजनीति के गहरे संबंध को समझ पाएँगे?
- भाषा-शिक्षण में बहुभाषिता के महत्त्व को समझ पाएँगे?

बहुभाषी भारत

हमारा देश किस मायने में बहुभाषी है, यह समझना जरूरी है। खासकर उन लोगों के लिए जो साक्षरता, शिक्षा, बौद्धिक विकास एवं सामाजिक बदलाव के साथ जुड़े हैं। कुछ लोग तो केवल यही समझते हैं कि भारत बहुभाषी है क्योंकि उसके संविधान की आठवीं सूची में 18 भाषाएँ अनुसूचित हैं। हमारा देश केवल अपने संविधान की ही दृष्टि से बहुभाषी नहीं, यह अलग बात है कि उसका संविधान कई भाषायी आयामों की दृष्टि से अनूठा है। जब संविधान लागू हुआ तो आठवीं सूची में केवल 14 भाषाएँ थीं, 1967 में सिंधी जोड़ दी गई व 1992 में कोंकणी, मणिपुरी व नेपाली। स्पष्ट है कि भारतीय गणतंत्र में इतनी जगह है कि जब भी कोई समुदाय चाहे तो उपयुक्त राजनीतिक एवं प्रशासनिक तरीकों से आठवीं सूची में अपनी भाषा का नाम जुड़वा सकता है। यह महत्त्वपूर्ण बात है कि इसके लिए कोई आवश्यक नहीं कि उस भाषा की अपनी विशेष लिपि हो या कोई प्राचीन लंबा-चौड़ा साहित्य हो। एक बात और महत्त्वपूर्ण है संविधान की दृष्टि से। भारतीय संविधान बनाने वालों ने राष्ट्रभाषा का सवाल नहीं उठाया। इस बात से देश को मुक्त रखा कि राष्ट्र, राष्ट्रीयता व राष्ट्रभाषा में कोई अनिवार्य समीकरण है— ऐसे समीकरण जो लगभग सभी अन्य देशों में अनिवार्य माने जाते हैं। बहुत अधिक हुआ तो राज्य की दो, राष्ट्रीय भाषाएँ मान लीं। भारत में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया, हिंदी के प्रचार, विस्तार व मानकीकरण के लिए प्रावधान रखे व अंग्रेजी को सह-राजभाषा का दर्जा दिया और अहिंदीभाषी भारतीयों को यह आश्वासन कि जब तक वे नहीं चाहेंगे, अंग्रेजी को इस देश से हटाया नहीं जाएगा। इन सब बातों के बावजूद, संवैधानिक बहुभाषिता भारत के बहुभाषी होने का केवल एक आयाम है जो उसकी बहुभाषिता की रक्षा तो करता है पर उसे परिभाषित नहीं करता, उसके मर्म को नहीं समझता। यह संविधान का काम भी नहीं है शायद।

- टीप – वर्तमान में आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ अनुसूचित हैं।

कुछ अन्य लोग कहते हैं कि भारत में केवल 18-20 नहीं अपितु 1632 भाषाएँ हैं, क्योंकि ऐसी गिनती जनगणना दफ़्तर ने की है। इसलिए भारत बहुभाषी है। राजनीतिक या धार्मिक कारणों की वजह से गिनती करते वक्त कई छोटे-मोटे समुदायों की भाषाएँ, जो एक-दूसरे से काफी मेल खाती थीं, अलग-अलग गिना गया, और दूसरी तरफ भोजपुरी, अवधी, मैथली, बुंदेली आदि जैसी मुख्य भाषाओं को हिंदी भाषा के अंतर्गत गिन लिया गया। उत्तर भारत मुख्यतः हिंदीभाषी है, ऐसी मान्यता बनाने के लिए आखिर कोई आधार तो बनाना ही था। स्पष्ट है कि बहुभाषिता का एक आयाम यह भी है कि आप भाषा किसे कहते हैं। भाषा व बोली में अंतर करते हैं या

नहीं। समाज भाषा किसे मानता है? भाषा—वैज्ञानिक भाषा किसे मानते हैं? क्या भाषा के बारे में समाज से हटकर कुछ भी सोचा जा सकता है? भाषावैज्ञानिक होने के नाते मैं समाज से कितना भी कहूँ कि अवधी अपने आप में एक भाषा है व हिंदी की माँ जैसी है, समाज यही कहेगा कि अवधी हिंदी की एक बोली है। भाषाविदों ने तो कह दिया कि एक शब्दकोश व कुछ संरचनात्मक नियमों की नियमबद्ध व्यवस्था भाषा है। अब इस परिभाषा में न तो समुदाय के लिए कोई स्थान है, न जनगणना की राजनीति के लिए और न ही मानकीकरण के सामाजिक परिणामों के लिए।

कुछ लोग भारत को बहुभाषी इसलिए मानते हैं क्योंकि हमारे यहाँ अखबार फिल्में, किताबें, टी.वी., रेडियो, शिक्षा, दफ़तर, कचहरी आदि का कामकाज कई भाषाओं में एक साथ होता है। कोठारी कमीशन से लेकर आज तक त्रिभाषा सूत्र भारतीय शिक्षा का आधार—सा बना हुआ है। यह बात अलग है कि कुछ अनुसूचित जातियों के लिए इसका अर्थ रहा है, चार या पाँच भाषाएँ सीखी जाएँ व कुछ समृद्ध उत्तर—भारतीयों के लिए केवल एक या दो।

असल में भारतीय बहुभाषिता के कई आयाम हैं और यह कोई हैरानी की बात नहीं कि पश्चिमी एकभाषी देशों को यह सब एक सिरदर्दी—सा लगता है, अधिकतर पिछड़ेपन से जुड़ा हुआ। अभी तक जितने पहलुओं की हमने चर्चा की है उन सभी में भारतीय बहुभाषिता का कोई न कोई अंश अवश्य निहित है लेकिन सबको मिलाकर भारत की बहुभाषिता परिभाषित नहीं की जा सकती और उसको समझे बिना, उसके प्रति संवेदनशील हुए बिना, किसी भी साक्षरता, शिक्षा या सामाजिक परिवर्तन के कार्यक्रम को कैसे सफल बनाया जा सकता है?

सबसे मुख्य बात तो यह है कि बहुभाषी होना व्यक्तिगत या सामाजिक स्तर पर भारत के लिए कोई सिरदर्दी का विषय नहीं रहा, कभी भी। कई भाषाओं को अपने—आप में समेट लेना व अन्य देश—विदेश की भाषाओं से स्वतंत्रतापूर्वक आदान—प्रदान करना, भारतीय व्यक्ति व समाज के लिए एक आम बात है। यहाँ यह कोई अचरज की बात नहीं कि बेटा माँ—बाप से तो भोजपुरी में बात करता है, पुराने दोस्तों से भोजपुरी व हिंदी में, कॉलेज के दोस्तों से हिंदी या अंग्रेजी में व अपने व्यवसाय का सारा काम केवल अंग्रेजी में करता है। यही नहीं, कई परिस्थितियों में तो ऐसा भी होता है कि दो या अधिक भाषाएँ मिल—जुल जाती हैं। ऐसी प्रक्रिया से भाषाएँ समृद्ध होती हैं न कि खिचड़ी बनती हैं। एकभाषी मापदंडों से बहुभाषी क्षमता को नापा नहीं जा सकता। भाषाएँ मरती नहीं, हमारे यहाँ अक्सर बदलती रहती हैं। कोई भी समुदाय अपनी भाषाई पहचान को आसानी से नहीं छोड़ता। आज भी लोग बहस करते हैं कि भारतीय स्वतंत्रता—संग्राम का माध्यम अंग्रेजी थी, हिंदी, हिंदुस्तानी, उर्दू या लोगों की स्थानीय भाषाएँ। किसी—न किसी स्तर पर मानना पड़ेगा कि सभी थीं। जब तक कोई विशेष राजनीतिक या धार्मिक प्रश्न सामने नहीं आता, हम एक भाषा, एक भौगोलिक परिधि, एक समुदाय, एक धर्म आदि के चक्रव्यूह से दूर ही रहते हैं।

भाषा, समाज, राजनीति

लेकिन ऐसा नहीं है कि भाषा, सामाजिक सत्ता व राजनीति में कोई संबंध नहीं। न जाने कितने वर्षों से संघ लोकसेवा आयोग के बाहर कई लोग इसलिए धरना दिए बैठे हैं क्योंकि उनके मतानुसार अंग्रेजी का ज्ञान भारतीय शासकीय तंत्र में कोई पद प्राप्त करने के लिए आवश्यक नहीं होना चाहिए। वे नहीं मानते कि हमारे लिए केवल अंग्रेजी ही ज्ञान की भाषा है या अंग्रेजी के बिना भारत का वैज्ञानिक व तकनीकी विकास संभव ही नहीं। या कि हम और अधिक पिछड़ जाएँगे, हमारे विचार फिर से दकियानूसी हो जाएँगे, वो जो

विश्व के साथ जुड़े रहने का एक झरोखा है, हमारे पास वह बंद हो जाएगा। उनका कहना है कि यदि फ्रांस अपना काम फ्रेंच में व जर्मनी अपना काम जर्मन में कर सकता है तो भारत अपना काम भारतीय भाषाओं में क्यों नहीं कर सकता। ऐसा क्यों है कि अंग्रेजी ही सामाजिक सत्ता पाने का एकमात्र तरीका है? ऐसा क्यों है कि हर महत्वपूर्ण क्षेत्र में— वैज्ञानिक या तकनीकी, शैक्षिक या व्यापारी, शासकीय या न्यायिक, चिकित्साशास्त्रीय या औद्योगिक सभी जगह अंग्रेजीवालों का बोलबाला है? ऐसा क्यों है कि त्रिभाषीय कार्यक्रम हिंदीभाषी क्षेत्रों में अधिकतर द्विभाषी होकर रह गया? भाषा और राजनीति में गहरे संबंध से आप कहाँ तक भागेंगे?

नई आर्थिक-नीति को लेकर एक बहुत ही मोहक शब्दकोश लोगों तक इस खूबसूरती से पहुँचाया जा रहा है कि लोग उसे लगभग अपना ही मानने लग गए हैं। भाषा के राजनीतिक आयामों की वास्तविकता अब कुछ साफ होने लगी है। कुछ झारखंड में, कुछ सिंधी, कोंकणी, नेपाली व मणिपुरी के संविधान की आठवीं सूची में आने से, कुछ उन लोगों के प्रयासों की विफलता से जो साक्षरता से जुड़े हैं और कुछ उन लोगों की घोर निराशा से जो दूर-सुदूर गाँवों में जाकर एक तरफ तो गाँववालों की भाषाओं को बचाना ही नहीं बल्कि समृद्ध करना चाहते हैं और दूसरी तरफ उन्हें सामाजिक तरक्की के लिए मानकीकृत भाषाएँ पढ़ाने को भी अपने आप को मजबूर पाते हैं। बहुभाषिता के इस तरह कई आयाम हैं।

एक अपार स्रोत है हमारी शक्ति का। लेकिन यदि हम बहुभाषिता के बारे में और अधिक संवेदनशील होकर कुछ गहराई से नहीं सोचेंगे तो हम उस प्राचीन सदियों से चली आ रही, हमारे घर-घर में बसी अपार संपत्ति का कुछ फलदायी इस्तेमाल नहीं कर पाएँगे। यह दुर्भाग्य का विषय है कि हमारे अधिकतर भाषावैज्ञानिक अपने शोध-कार्य को संरचनात्मक सीमाओं में ही रखते हैं। उसे ही विज्ञान समझते हैं। और अधिकतर जो बातें संरचना की दृष्टि से पश्चिमी भाषाओं में दिखाई जा चुकी हैं उन्हें अपनी भाषाओं में निरंतर ढूँढ़ने का प्रयास करते रहते हैं। शायद वह समय आ गया है कि यदि भाषाविज्ञान एक सामाजिक विज्ञान है तो भाषाविद् अपने आप से कुछ सामाजिक सवाल पूछें व अपने शोध-कार्य को उन सवालों से जोड़ें।

अभ्यास

- भाषा व राजनीति में संबंध है इसकी क्या वजहें बताई गई है?
- क्या आपको भी लगता है कि हमारा देश/समाज बहुभाषी है। उदाहरण देकर बताइए।

साक्षरता

साक्षरता कार्यक्रमों में शिक्षाकर्मी अक्सर ये मानकर चलते हैं कि जो पढ़ा-लिखा नहीं वह अज्ञानी है और अज्ञान का यही अंधेरा उसकी गरीबी व दुःखों का एकमात्र या मुख्य कारण है। वे लोग यह भी मानकर चलते हैं कि साक्षरता से, यानी लिखना-पढ़ना सीखने से या कुछ गिनती व पहाड़े याद करने से उसका अज्ञान दूर हो जाएगा और उसके साथ-साथ गरीबी भी। ऐसी अवधारणाएँ कितनी गलत, बेबुनियाद व खतरनाक हो सकती हैं, यह समझाने में एक भाषावैज्ञानिक काफी मदद कर सकता है। वह शायद यह भी समझा सकता है कि इस प्रकार की अवधारणाएँ मासूमियत की निशानी नहीं, पर उनके पीछे एक पूरा राजनीतिक एजेण्डा छुपा रहता है।

पहली बात तो यह कि जिसे पढ़ना-लिखना नहीं आता वह अज्ञानी नहीं है। वह पूरी तरह से अपनी भाषा या भाषाएँ समझ व बोल सकता है। उनमें कहानी व कविता कह सकता है। विवरण व इतिहास सुना सकता है। अपनी भाषा के साथ नए-नए प्रयोग कर सकता है। अपनी भाषा का प्रयोग कर सकता है शोषण के लिए, अपनी पहचान के लिए या फिर अपने अस्तित्व के लिए लड़ने के लिए। साक्षरता में जुटे शिक्षाकर्मी

के लिए यह समझना आवश्यक है कि उसके विद्यार्थी उसके सामने ज्ञान व भाषाओं की एक संपत्ति लिये बैठे हैं। ऐसी संपत्ति जिसका सदुपयोग करने से साक्षरता सार्थक हो सकती है।

उदाहरण के लिए, साक्षरता का कार्यक्रम हम सीखनेवालों की भाषाओं से ही क्यों न शुरू करें। यदि वे अपनी भाषा लिखना सीख जाएँगे तो मानकीकृत भाषा खुद ही सीख जाएँगे। अपनी भाषाएँ लिखने की प्रक्रिया में उनके सामने अपनी भाषाओं की समानताएँ व अंतर कुदरती रूप से सामने आएँगे। इन सब बातों को वे आसानी से अपने माहौल से जोड़ पाएँगे। भाषागत विश्लेषण से बौद्धिक क्षमता व सवाल उठाने की ताकत का सार्थक विकास संभव है।

भाषा—शिक्षण

बहुभाषिता केवल साक्षरता में ही नहीं अपितु भाषा—शिक्षण में भी बहुत मददगार हो सकती है। वास्तव में, हमारे लिए तो ज़रूरी है कि हम ऐसे तरीके निकालें जिनका आधार बहुभाषिता ही हो। दुर्भाग्यवश हम निरंतर एकभाषी देशों में बनाए गए तरीकों व सामग्री का उपयोग अपने देश में करते रहे हैं। जब व्याकरण व अनुवाद पर आधारित तरीकों की हवा चली तो हमने अंग्रेजी ही नहीं संस्कृत व उर्दू भी उसी तरीके से पढ़ाई। फिर व्यवहारवाद का जमाना आया और हम सब मानो पावलोव के कुत्ते — जैसे हो गए—अधिक अभ्यास, अधिक ज्ञान। एक ही चीज को बार—बार याद करो तो वह आदत—सी बन जाएगी। व्याकरण व अनुवाद की छुट्टी। आजकल संप्रेषण—आधारित तरीकों (कम्यूनिकेटिव एप्रोचज) की बात होती है। फंक्शनलिज्म का जमाना है। काम होना चाहिए। परिस्थिति उपयुक्त भाषा बोलनी व लिखनी आनी चाहिए। मुझे कभी यह समझ नहीं आया कि एकभाषी समाज में स्थापित मानदंडों से आप बहुभाषी समाज की क्षमताओं को कैसे नाप सकते हैं?

अक्सर आपने सुना होगा कि भारत में अंग्रेजी के स्तर बहुत तेजी से गिर रहे हैं और कई भारतीय अंग्रेजी वाक्यों व अभिव्यक्तियों को लेकर भारतीयों का काफी मजाक भी उड़ाया जाता है। लेकिन क्या कोई एकभाषी अंग्रेजी बोलनेवाला भोजपुरी, हिंदी या तमिल जैसी अन्य भाषाएँ भी बोलता है? जो बात साक्षरता के संदर्भ में कही है वही मुझे भाषा—शिक्षण के संदर्भ में भी कहनी है। एक कक्षा है आपके सामने, जो एकभाषी नहीं है। अलग—अलग भाषाएँ बोलनेवाले कई बच्चे हैं, उस कक्षा में। इस बात को नकारने की बजाय या इसे एक समस्या समझने की बजाय, इसका अत्यधिक क्रियात्मक उपयोग कक्षा में ही हो सकता है।

उदाहरण के लिए मान लीजिए आपकी कक्षा में तीन—चार अलग—अलग भाषाएँ बोलनेवाले बच्चे हैं। यह कोई अनूठी बात नहीं। दिल्ली के किसी भी स्कूल में हिंदी, भोजपुरी, बंगाली व तमिल बोलनेवाले बच्चे एक ही कक्षा में हो सकते हैं। गाँवों या छोटे—मोटे शहरों में भी ऐसी परिस्थिति हो सकती है। होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) के किसी भी मिडिल या हाईस्कूल की कक्षा में अक्सर बुंदेली, मराठी, हिन्दी व गोंडी बोलने वाले बच्चे साथ—साथ पढ़ते हैं। एक गतिविधि पर गौर कीजिए। आठवीं कक्षा मानकर चलिए। अध्यापक बच्चों से पूछकर हिंदी के कुछ शब्द बोर्ड पर लिख देता है। फिर उन्हीं से उनके बहुवचन पूछकर लिख देता है। अध्यापक का काम लगभग खत्म। अब तमिल बच्चा उठकर उन्हीं शब्दों के एकवचन या बहुवचन सभी बच्चों को सिखाता व लिखवाता है। देवनागरी लिपि में तमिल लिखी जा सकती है। कोई भी भाषा किसी भी लिपि में लिखी जा सकती है। अध्यापक भी इस प्रक्रिया में कुछ तमिल शब्द सीख रहा है, बच्चों के साथ बैठा। इसके बाद इसी तरह बंगाली बच्चे की बारी आती है। काफी मसाला हो गया दो दिन के लिए। बच्चों को तीनों भाषाओं के एकवचन—बहुवचन बनाने के लिए नियम निकालने हैं व सारी कक्षा को समझाने हैं। अध्यापक को भी।

आपका यह पूछना अनुचित न होगा कि इसमें पढ़ाई क्या हुई? सच पूछिए तो काफी पढ़ाई ही नहीं बल्कि और भी बहुत कुछ हुआ। बच्चों व अध्यापक के बीच का फासला कुछ कम हुआ। दूसरे, बच्चों को यह अहसास हुआ कि उनकी भाषा का भी स्कूली पाठ्यक्रम में कोई स्थान है। जब बच्चे और अध्यापक मिलकर यह

समझते हैं कि बुंदेली भी उतनी ही नियमबद्ध व व्याकरणयुक्त है जितनी हिंदी तो बुंदेली बोली के लिए उनके दिल में जो एक अनादर की भावना बनी हुई थी, दूर होने लगती है। तीसरे, बच्चे एक-दूसरे की भाषा के प्रति अधिक संवेदनशील होने लगते हैं। चौथे, भाषाई संरचना के प्रति जागरूक होते हैं— भिन्न-भिन्न भाषाओं की समरूपता व अंतरों को पहचानने लगते हैं। वास्तव में, यही व्याकरण है। पाँचवाँ, जो कि शायद सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, वे एक ऐसी प्रक्रिया से गुजरते हैं जिसे वैज्ञानिक माना गया है।

अभ्यास

- आपकी कक्षा में बच्चे कौन-कौन सी भाषाएँ बोलते हैं?
 - कक्षा के विभिन्न भाषाओं को उपयोग करने के क्या सकारात्मक पहलू बताएँ हैं? क्या आप इनसे सहमत हैं?
-

बौद्धिक विकास

विज्ञान व वैज्ञानिक तरीके की क्या परिभाषा हो? इस पर काफी वाद-विवाद है। लेकिन शायद इस बात पर कोई विशेष असहमति न हो कि सामग्री या आँकड़े एकत्रित करना, उनका समरूपता या किसी अंतर के आधार पर अलग-अलग वर्गीकरण करना व उस वर्गीकरण के आधार पर कुछ नियम बनाना और फिर उन नियमों को और भी ज़्यादा सामग्री पर जाँचना वैज्ञानिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। और जब बच्चे बार-बार ऐसी प्रक्रिया से गुजरते हैं तो उनका दिमागी विकास लाज़िमी है।

पहले ऐसा माना जाता था कि बहुभाषिता व बौद्धिक स्तर में एक उलटा रिश्ता है— जैसे-जैसे बहुभाषिता बढ़ती है, बौद्धिक स्तर घटता है। इसी तरह की मान्यताएँ व शोध-कार्यक्रम जरूरी भी थे एकभाषी उपनिवेशवादियों के लिए, जो बहुभाषी देशों पर राज करना चाहते थे। लेकिन आज पूरी तरह से साबित हो चुका है कि बहुभाषिता व बौद्धिक स्तर में सीधा रिश्ता है— जैसे-जैसे बहुभाषिता बढ़ेगी, बौद्धिक-स्तर भी ऊँचा होगा।

हमारे पास तो पहले ही भंडार है बहुभाषिता का। हम क्यों न कोशिश करें ऐसी पठन-सामग्री बनाने का, पढ़ाने के ऐसे तरीके निकालने का व मूल्यांकन के ऐसे मापदंड बनाने का जिनका आधार बहुभाषिता हो। यह कोई कठिन कार्य नहीं है। केवल हमें अंधे होकर एकभाषीय संदर्भ से उपजे तौर-तरीकों की नकल को बंद करना होगा।

अभ्यास :

- भारत को किन-किन कारणों से बहुभाषी माना जाता है?
 - लेखक के अनुसार एकभाषी मापदंडों से बहुभाषी क्षमता को नहीं नापा जा सकता। कुछ एकभाषी समाजों/ देशों का उदाहरण लेकर भारत की स्थिति के साथ तुलना करते हुए इस कथन पर चर्चा करें।
 - उदाहरणों की मदद से चर्चा करें कि भारत के संदर्भ में साक्षरता/शिक्षा में शिक्षक किस प्रकार अक्सर पाई जाने वाली बहुभाषिता को छात्रों के साथ इस्तेमाल कर सकता है?
 - बहुभाषिता और बौद्धिक स्तर/विकास में विपरीतात्मक संबंध मानने के पीछे क्या कूटनीति रही होगी? लेखक के अनुसार दोनों में किस प्रकार का रिश्ता है? कुछ ऐसे अध्ययनों के बारे में पता लगाएँ जिनमें इन दोनों के बीच सीधा संबंध स्थापित होता है?
 - संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्तमान में कितनी भाषाएँ हैं?
 - भारत में कुल कितनी भाषाएँ हैं?
 - राज भाषा का मुद्दा भाषायी मुद्दा कम राजनैतिक मुद्दा ज़्यादा है इस सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं?
 - जिसे पढ़ना, लिखना नहीं आता वह अज्ञानी नहीं है। ऐसा क्यों कहा गया है?
-



अध्याय — 5

भाषा और तौर तरीके

परिचय :

यह अध्याय मुख्य रूप से दो बातों की ओर हमारा ध्यान दिलाता है। एक तो यह कि भाषा का हमारी सामाजिक भूमिका से गहरा जुड़ाव होता है। इंसान जिस प्रकार की सामाजिक भूमिका निभाता है और उस भूमिका को निभाते हुए वह जिस प्रकार के व्यवहार करता है, उसी के अनुसार उसकी भाषा बदलती रहती है जैसे एक पिता के रूप में उसकी भाषा, एक पुत्र के रूप में उसकी भाषा, एक पत्नी के रूप में उसकी भाषा अलग-अलग होगी। कभी-कभी इंसान को नई सामाजिक भूमिका मिलने पर उसे नई भाषा भी सीखनी होती है जैसे डॉक्टर, वकील या कोई पर्यटक मार्गदर्शक। दूसरी बात जिसकी बात इस अभ्यास में की गई है वह यह कि ज्यादातर समुदायों में सामाजिक रीति-रिवाजों, समारोहों की भाषा, आम बातचीत या रोजमर्रा की भाषा से अलग होती है। आम जीवन में लोग कुछ और भाषा का इस्तेमाल करते हैं लेकिन किसी रीति-रिवाज के संचालन में किसी और भाषा का उपयोग किया जाएगा जबकि वह सुनने वाले को समझ में आए या नहीं।

उद्देश्य :

- आप समझ पाएँगे कि मनुष्य जिस प्रकार की सामाजिक भूमिका निभाता है उसी के अनुसार उसकी भाषा या शब्दावली होती है।
- आप समझ पाएँगे कि कभी-कभी कुछ खास सामाजिक भूमिका अपनाने पर नई भाषा भी सीखनी होती है।
- उन कारणों की खोज कर पाएँगे जिनकी वजह से आम बोलचाल की भाषा व समारोहों/रीति-रिवाजों की भाषा में फर्क होता है।

सामाजिक दर्जा (Status)

सामाजिक दर्जा किसी भी व्यक्ति के समाज में स्थान को दिखाता है। सामाजिक भूमिका (Roles) मान्य व्यवहार हैं, जिनकी उम्मीद समाज हर उस व्यक्ति से करता है, जो उस पद पर हो। राजकीय भूमिकाओं के साथ अक्सर विशेष औपचारिक चिन्ह जुड़े रहते हैं जैसे कि वर्दी। लेकिन सामाजिक दर्जे के प्रमुख चिह्नों में से एक, बेशक, भाषा है। हर व्यक्ति कई भूमिकाएँ अदा करता है, उसकी कई पहचान होती हैं। घर में एक (जैसे परिवार का मुखिया, सबसे बड़ा पुत्र/पुत्री आदि), और इसी तरह से कार्य स्थल में भी एक और भूमिका होती है (जैसे सुपरवाइजर, शागिर्द आदि)। इसी तरह चर्च में, स्थानीय खेलकूद केन्द्र में और ऐसे ही और भी कई मौकों पर। हर भूमिका के साथ पुकारे जाने की एक खास भाषाई शब्दावली जुड़ी है, एक औपचारिक ढंग है या एक खास शब्दावली। अपने जीवन में हर व्यक्ति बहुत से ऐसे व्यवहार सीखता है।

ऐसा कभी-कभी ही होता है कि एक खास सामाजिक भूमिका अपनाने के लिए एक बिल्कुल नई भाषा सीखने की ज़रूरत पड़े। जैसे कि किसी खास भाषा का शिक्षक बनना हो या विदेशी पर्यटकों का मार्ग दर्शक बनना हो। आमतौर पर एक व्यक्ति भाषा का नया प्रकार तभी सीखता है जब वह कोई सामाजिक भूमिका लेता है जैसे किसी संस्कृति में कोई भी खास किस्म की सांस्कृतिक क्रिया को संचालित करना (शादी की रस्म

या फिर कुछ और); या फिर किसी खास कारोबार में (वकील, पुलिस या डॉक्टर) आदि। इन सभी तरह की कार्य भूमिकाओं में नए तरीके की लय में बात रखना, बोलते समय कहाँ जोर देना है, कहा नहीं देना है, आदि सीखना पड़ता है।

इस तरह की भूमिकाओं में निभानेवाले का लहजा, उच्चारण का ढंग, कुछ बातें जोर से कहना, लय और उतार-चढ़ाव आदि सभी खास प्रकार के होते हैं। इस तरह की किसी भी सामाजिक भूमिका के भाषायी गुण आमतौर पर काफी आराम से पहचाने जा सकते हैं। लेकिन कई बार इन्हें आसानी से नहीं भी पहचाना जा सकता। ऐसा तब होता है, जब उन भूमिकाओं को ही आसानी से अलग करके नहीं पहचाना जा सके। जिन संस्कृतियों से आपका कम परिचय होता है जैसे विदेशी लोगों की व उन भाषाओं को जिन्हें आप उनकी अपनी आबोहवा में नहीं सीखते, उसके संदर्भ में यह समझना खास मुश्किल हो जाता है कि समाज के अन्दर-अन्दर में क्या कुछ हो रहा है। जो हो रहा है उसके पीछे क्या है? यह समझना भी मुश्किल होता है कि किसी सामाजिक समारोह, बैठक अथवा जब भी लोग इकट्ठे होकर कुछ कर रहे हों तो उसमें भागीदार के रूप में कैसा व्यवहार करना है। किसी एक भाषायी समुदाय अथवा किसी दूसरे समुदाय में आने पर मेहमान को कैसे व्यवहार करना है, यह भी अलग-अलग होता है। कुछ देशों में यह सभ्य व शिष्ट समझा जाता है कि खाने के साथ-साथ खाने की तारीफ़ की जाए, किन्तु कई अन्य जगहों पर इसे अभद्र समझा जाता है। कुछ देशों में औपचारिक आमंत्रण पर आए मेहमान से अपेक्षा होती है कि वह खाने के बाद तत्काल एक छोटा भाषण दें, अन्य देशों में ऐसी कोई अपेक्षा नहीं होती। कई बार चुप्पी को भी महत्त्वपूर्ण मान लिया जाता है।

अभ्यास

- इंसान जिस प्रकार की सामाजिक भूमिका निभाता है उस अनुरूप उसकी भाषा बदलती रहती है। कैसे?

समारोहों की भाषा

रीति-रिवाजों को सम्पन्न करने के लिए सभी समुदायों ने अपनी-अपनी भाषा का विकास किया है। इन रीति-रिवाजों के संचालन में जिन लोगों की मुख्य भूमिका होती है वे खास तौर की भाषा का उपयोग करते हैं। जो इनमें भाग लेते हैं वे भी विशेष भाषा का उपयोग करते हैं। रीति-रिवाज की भाषा में यह फर्क नई भाषा के उपयोग में भी है (इसमें सुननेवाले को कुछ भी समझ आया या नहीं इसकी चिन्ता नहीं होती)। हिन्दू समुदाय के रीति-रिवाजों में अक्सर संस्कृत भाषा के मंत्रों श्लोकों, प्रार्थनाओं का व मुस्लिम समुदाय के समारोहों में अरबी भाषा का उपयोग ज्यादा होता है जबकि यह रोजमर्रा की भाषा से भिन्न है। कभी यह फर्क रोजमर्रा की भाषा में थोड़े बहुत फर्क तक ही सीमित होता है। जैसाकि प्रार्थनाओं व धार्मिक भाषणों में यह फर्क खास सुर, तान, लय, गायकी, या फिर कभी-कभी खास व्याकरण व शब्दावली आदि।

कोलम्बिया के खाम्सा आदिवासियों के रीति-रिवाजों में उपयोग होने वाली भाषा में भी लय व ताल स्पष्ट पता चलती है जो कुछ-कुछ (मंत्र) की तरह है पर इसके अलावा रीति-रिवाज की भाषा में व्याकरण में व शब्दों के अर्थ में भी कुछ अन्तर होता है। वे स्पेनिश भाषा से लिए हुए शब्दों का कहीं अधिक उपयोग करते हैं। सामान्य में हो रहे 20% उपयोग के स्थान पर 60% तक स्पेनिश शब्दों तक। इसी तरह हिन्दू शादियों में अधिकाधिक संस्कृत शब्दों व मंत्रों का उपयोग होता है जबकि आम बोलचाल में उन शब्दों/मंत्रों का उपयोग नहीं होता है। इस तरह के कई उदाहरण अन्य अलग-अलग स्थानों व समाजों के भी उपलब्ध हैं।

यह फर्क क्यों?

अभी हमने देखा कि लगभग सभी समुदायों में रोजमर्रा की भाषा से रीति-रिवाजों की भाषा अलग होती है। सोचने वाला सवाल यह है कि यह फर्क क्यों है? रीति-रिवाज व परम्पराएं काफी समय से चले आ रहे होते हैं और हम उनका उसी रूप में, बिना कोई बदलाव किए, बिना कुछ सोचे पालन करते हैं तथा उन रीति-रिवाजों की जड़ जिस भाषा में है अर्थात् जिस भाषा में उनके बारे में बात की गई है, उनके बारे में लिखा गया है, उनके पालन के तरीके व नियम, कायदे लिखे गए हैं, हम उसी भाषा में, उसी रूप में उनका पालन करते रहते हैं जबकि रोजमर्रा की भाषा तो निरन्तर बदलती रहती है। इसीलिए रोजमर्रा की भाषा व रीति-रिवाजों की भाषा अलग होती है।

अभ्यास

- जब आप अपने पिता या किसी बड़े से बात करते हैं तब की भाषा व किसी दोस्त से बात करते हैं तब की भाषा में कुछ अंतर होता है? यदि हाँ तो कुछ उदाहरण दीजिए।
- आम बोलचाल की भाषा व रीति-रिवाजों/समारोहों की भाषा में फर्क होता है। अपने यहाँ की स्थानीय भाषा व स्थानीय रीति-रिवाजों में प्रयुक्त भाषा को ध्यान में रखते हुए उदाहरण सहित इस बात को समझाइए।



अध्याय — 6

कौन भाषा, कौन बोली

परिचय :

यह एक आम धारणा है कि भाषा व बोली दो अलग-अलग चीजें हैं। यदि आप किसी को जाकर कहे कि भाषा व बोली में कोई फर्क नहीं होता है तो वह आपकी बात को सिरे से खारिज कर देगा और करे भी क्यों ना? उसके पास इसके लिए अच्छे खासे कारण है भाषा शुद्ध होती है, बोली नहीं। भाषा को ज्यादा लोग बोलते हैं, बोली को कम। भाषा को लिख सकते हैं, बोली को नहीं। लेकिन ये सारे कारण कहां तक सही हैं और वास्तव में भाषा और बोली में कोई अन्तर होता है या नहीं? यदि है तो यह अन्तर किस आधार पर किया जाता है? इस लेख में इन्हीं सब के बारे में बात की गई है।

उद्देश्य :

- आप समझ पाएँगे कि हर व्यक्ति अपनी भाषा अच्छे से बोलता, समझता है और उसके बारे में बहुत कुछ जानता है।
- आप समझ पाएँगे कि किन कारणों से आमतौर पर लोग भाषा व बोली को अलग-अलग मानते हैं।
- आप यह जान पाएँगे कि कौन भाषा होगी और कौन बोली होगी? इसका निर्धारण किस आधार पर किया जाता है।

“अध्यापक स्वयं को शुद्ध व मानकीकृत भाषा का रखवाला मान लेते हैं। प्रश्न समझ व दृष्टिकोण का है। पहली बात बच्चा जिस भाषा को लेकर स्कूल आता है वह पूर्णरूप से व्याकरणयुक्त है। दूसरी बात उसकी भाषा उसकी शिक्षा का माध्यम नहीं बन पाई यह एक राजनैतिक, सत्तागत प्रश्न है।”

हर सामान्य व्यक्ति अपनी भाषा खूब अच्छी तरह से बोलता व समझता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि हर व्यक्ति यह समझे कि वह भाषा के बारे में काफी कुछ जानता है। असल में सच तो यही है कि हर व्यक्ति अपनी भाषा के बारे में बहुत कुछ जानता है। लेकिन इस भाषागत ज्ञान के बारे में आम आदमी अक्सर सचेत नहीं होता। वास्तव में उस ज्ञान के बारे में उसके लिए कुछ भी विशेष कहना संभव नहीं हो पाता। अगर यह कहा जाए कि आपकी अपनी भाषा का पूर्ण व्याकरण आपके पास है— आपके दिमाग में—तो शायद कुछ अटपटा-सा लगे। लेकिन यह बिल्कुल सच है। दूसरी तरफ भाषा के बारे में जो कई बातें लोग अक्सर कहते हैं वे एकदम निराधार अवधारणाओं से जुड़ी रहती हैं। इन निराधार अवधारणाओं के कारण काफी सामाजिक, मानसिक व शैक्षिक नुकसान होता है। यदि हम सब भाषा की प्रवृत्ति को समझने का प्रयास करें तो शायद इस नुकसान से बचने का कोई रास्ता निकले।

व्याकरण की समझ कितनी?

अपनी भाषा के बारे में आपका ज्ञान पूर्ण एवं त्रुटिरहित है। अपनी भाषा बोलने व समझने में आप कभी गलती नहीं करते। यदि करें तो तुरन्त उसमें सुधार कर लेते हैं। इस तरह यदि कोई दूसरा आपकी भाषा बोलने में गलती करता है तो आप उसे तुरन्त पकड़ लेते हैं।

आप नित नए-नए वाक्य बोल व समझ सकते हैं। यही नहीं आपको यह भी मालूम है कि किस सामा. जिक संदर्भ में कौसी भाषा उचित रहेगी। लेकिन इस ज्ञान के बारे में मुक्त रूप से चर्चा करना केवल भाषाविदों तक ही सीमित रह गया। और भाषाविद् जिस भाषा में बात करते हैं वह आम आदमी की समझ में नहीं आती।

उदाहरण के लिए, यह तो हर हिन्दीभाषी जानता है कि—

गीता खाना खाता है।

ठीक वाक्य नहीं है। कुछ सोचकर शायद वह यह भी बता दें कि 'गीता' स्त्रीलिंग है इसलिए क्रिया पुल्लिंग नहीं हो सकती। (गो कि भारत में ही ऐसी अनेक भाषाएँ हैं जिनमें कर्ता के पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होने से क्रिया पर कोई असर नहीं पड़ता— अंग्रेजी भी ऐसी ही भाषा है)। लेकिन निम्न दो वाक्यों में यह नियम लागू नहीं होता।

मोहन ने खाना खाया।

गीता ने खाना खाया

'मोहन' पुल्लिंग है व 'गीता' स्त्रीलिंग फिर भी दोनों ने 'खाया'। यह कहना कि—

गीता ने खाना खाई।

गलत है। इसी तरह यदि आप दुविधा में पड़े हिन्दीभाषी का ध्यान निम्न दो वाक्यों—

मोहन ने रोटी खाई।

गीता ने रोटी खाई।

की ओर ले जाएँ, तो शायद कुछ कठिनाई से वह यह बता पाए कि यदि कर्ता के सामने 'ने' आ जाए तो क्रिया कर्म से मेल खाती है। सो कर्ता कोई भी हो— पुल्लिंग या स्त्रीलिंग— पर 'ने' आने पर

..... खाना खाया (खाना पुल्लिंग है)

..... रोटी खाई (रोटी स्त्रीलिंग है आदि)

लेकिन निम्न दो वाक्यों के बारे में हिन्दीभाषी क्या कहेगा!

मोहन ने गीता को मारा।

गीता ने मोहन को मारा।

ऐसी ही समस्याओं को लेकर भाषावैज्ञानिक भाषा से जूझते रहते हैं। अब देखिए ना—

गीता मोहन को मारती है।

तो सही है लेकिन

गीता ने मोहन को मारी।

ठीक नहीं है।

वास्तव में जैसे ही एक हिन्दीभाषी ऐसा कोई वाक्य सुनता है उसे मालूम होता है कि कोई अहिन्दीभाषी हिन्दी बोलने का प्रयास कर रहा है। साफ है कि हर व्यक्ति अपनी भाषा का व्याकरण पूरी तरह से जानता है।

लेकिन उस व्याकरण का अध्ययन करना व उसके बारे में बातचीत कर सकना बिल्कुल अलग बात है; कठिन बात है। इसलिए हमारे यहाँ कहते हैं— मोक्षार्थे व्याकरणमधितव्यम्।

मोक्षार्थे व्याकरणमधितव्यम् – ऐसा शास्त्रों में कहा गया है कि इंसान को मोक्ष प्राप्त करने के लिए व्याकरण पढ़ना चाहिए। हमने देखा कि हर व्यक्ति अपनी भाषा अच्छे से बोलता, सुनता है और इसके लिए उसे अलग से व्याकरण नहीं सीखना पड़ता है बल्कि वह अपनी भाषा का व्याकरण जानता है। इसी बात को पुष्ट करने के लिए यहाँ कहा गया है 'मोक्षार्थे व्याकरणमधितव्यम्'।

अभ्यास

- यदि आपको किसी को यह समझाना हो कि व्यक्ति अपनी भाषा को अच्छे से समझता है और उसके बारे में बहुत कुछ जानता तो आप उसे कैसे समझाएँगे?

खैर हमें तो उस ज्ञान के बारे में बातचीत करनी थी जिसका आधार अवैज्ञानिक व बेबुनियाद अवधारणाएँ हैं। हर सामान्य व्यक्ति इस तरह के ज्ञान पर आधारित अनेक विश्वास या मान्यताएँ पाल लेता है, निर्णय ले लेता है, लोगों को अलग श्रेणियों में बाँट लेता है और कुछ से घृणा व कुछ से प्यार करने लगता है।

इन निराधार मान्यताओं को समझना आवश्यक है। बिना समझे इनसे छुटकारा पाना संभव नहीं।

कौन भाषा, कौन बोली

एक मुख्य मसला है भाषा व बोली का। किसी भी सामान्य व्यक्ति से पूछकर देखिए, वह अत्यधिक विश्वास से आपको भाषा व बोली में अंतर बताने लगेगा। कहेगा, "भाषा का व्याकरण होता है, बोली का नहीं। भाषा की लिपि होती है, बोली की नहीं। भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है जबकि बोली का स्थानीय। भाषा मानकीकृत व परिमार्जित होती है, बोली नहीं। जिसका प्रयोग साहित्य, पत्राचार, दफ्तरों, अदालतों आदि में हो वह भाषा और जो बोलचाल के लिए इस्तेमाल हो वह बोली। भाषा में शुद्ध-अशुद्ध का प्रश्न उठता है, बोली में सब चलता है आदि, आदि।"

वास्तव में इस तरह के सभी तर्क गलत हैं, समाज के लिए अत्यधिक हानिकारक हैं। भाषायी दृष्टि से भाषा व बोली में कोई अन्तर नहीं। दोनों का व्याकरण होता है। दोनों नियमबद्ध हैं। किसको भाषा कहा जाएगा और किसको बोली यह एक सामाजिक प्रश्न है; राजनैतिक प्रश्न है। सत्ताधारी व पैसेवाले लोग अक्सर जो बोली बोलते हैं, वह भाषा कहलाने लगती है। उसी के व्याकरण व शब्दकोश लिखे जाते हैं। उसी में साहित्य लिखा जाता है। स्कूलों में शिक्षा का माध्यम बनकर वही बोली मानकीकृत भाषा बन बैठती है। उसी से मिलते-जुलते, बात-चीत करने के अन्य तरीके उस 'भाषा की बोलियाँ' कहलाने लगती हैं। भाषा व समाज के इस रिश्ते को समझना आवश्यक है।

शायद यह ठीक ही कहा गया है कि भाषा केवल एक सशस्त्र बोली है। मुख्य प्रश्न वास्तव में दृष्टिकोण का है। एक गरीब बच्चे की भाषा को एक मानकीकृत भाषा के मापदंड से निम्नतम नापना कहाँ तक जायज है?

अभ्यास

- बोली व भाषा में कोई अन्तर नहीं यह बताने के लिए क्या तर्क दिए गए हैं?

एक ही मापदण्ड क्यों

व्याकरण के प्रश्न को लीजिए। हिन्दी का अपना व्याकरण है। लेकिन ब्रज, अवधी व मैथिली का भी अपना व्याकरण है, जो हिन्दी से कदाचित् अलग है। हिन्दी व्याकरण को मापदण्ड मानकर ब्रज के व्याकरण को क्यों देखा जाए? सदियों से लोग संस्कृत, ग्रीक, लैटिन आदि को आधार मानकर संसार की सभी भाषाओं

में शब्दों के आठ कारकगत रूप तलाश करते रहे हैं। हिन्दी के हर व्याकरण में आपको संस्कृत की ही तरह आठ कारक रूप दिखाने का प्रयत्न रहेगा। लेकिन वास्तव में हिन्दी में तीन ही कारकों के अनुसार शब्द परिवर्तन होता है यथा:

‘लड़का’ आदि			उदाहरण के लिए	
	एकवचन	बहुवचन		
कर्ता	लड़का	लड़के	लड़का जा रहा है।	लड़के जा रहे हैं।
कर्म/अन्य	लड़के	लड़कों	लड़के ने खाना खाया।	लड़कों ने खाना खाया।
संबोधन	हे लड़के!	हे लड़को!	हे लड़के इधर आ।	हे लड़को इधर आओ।
‘किताब’ आदि				
कर्ता	किताब	किताबें		
कर्म/अन्य	किताब	किताबों		
संबोधन	हे किताब!	हे किताबो!		

हिन्दी की कारक व वचन संरचना समझने के लिए इससे अधिक आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार हिन्दी व्याकरण से अन्य भाषाओं को नापना उचित नहीं है। हिन्दी का नन्द का नन्दन कदम्ब के पेड़ के नीचे धीरे-धीरे मुरली बजाता है।

अभ्यास

- इसी आधार को ध्यान में रखते हुए आप भी निम्न शब्दों के वाक्य में प्रयोग करते हुए बहुवचन बनाइए। नदी, घर, पेंसिल। बताइए क्या-क्या एकवचन व बहुवचन के रूप मिले।

ब्रज भाषा में

“नन्द को नन्दन कदम के तरु तर धीरे धीरे मुरली बजावै।”

हो जाएगा।

और मैथिल- कोकिल विद्यापति ने इसे यूँ कहा;

“नन्दक नन्दन कदमक तरुतर धीरे धीरे मुरली बजाव।”

मैथिली का नियम है कि ‘नन्द’ व ‘नन्दन’ में जो संबंध है वह ‘क’ के प्रयोग से दिखाया जाएगा; ब्रज में वहीं ‘को’ के व हिन्दी में वह ‘का’ के प्रयोग से। तो:

हिन्दी : नन्द का नन्दन

ब्रज : नन्द को नन्दन

मैथिली : नन्दक नन्दन

यह कहना कि ब्रज या मैथिली भाषा को सदैव ‘नन्द का नन्दन’ ही कहना चाहिए उचित न होगा। ऊपर के उदाहरणों से यह भी स्पष्ट हो गया होगा कि कब हिन्दी- ब्रज-मैथिली एक दूसरे से घुल मिल जाएँगी और कब अपना-अपना स्वतंत्र रूप दिखाएँगी, यह कहना भी कोई आसान काम नहीं।

आप मैथिली, सिंधी, कोंकणी, नेपाली या मणिपुरी को कब ‘भाषा’ का दर्जा देना चाहते हैं, यह एक राजनैतिक प्रश्न है, भाषायी नहीं।

अभ्यास

- हिन्दी के वाक्य लीजिए और उन्हीं वाक्यों को छत्तीसगढ़ी में भी लिखिए। देखिए कि छत्तीसगढ़ी के क्या नियम हैं? उदाहरण के लिए यदि हिन्दी में नन्द का नन्दन है ब्रज में नन्द को नन्दन अवधि में नन्दक तो छत्तीसगढ़ी में या अपनी अपनी भाषा में क्या होगा?

सत्ता से जुड़े सवाल

व्याकरण को लेकर शुद्ध-अशुद्ध का प्रश्न भी बार-बार सामने आता है। विशेषकर अध्यापक स्वयं को शुद्ध व मानकीकृत भाषा का रखवाला मान लेते हैं। मैंने पहले भी कहा कि प्रश्न समझने व दृष्टिकोण का है। पहली बात- बच्चा जिस भाषा को लेकर स्कूल आता है वह पूर्णरूप से व्याकरण युक्त है। दूसरी बात- उसकी भाषा उसकी शिक्षा का माध्यम नहीं बन पाई यह एक राजनैतिक, सत्तागत प्रश्न है। तीसरी बात- मानकीकृत भाषा के सीखने के प्रयास में जो अशुद्धियाँ बच्चा करता है वे निराधार या बेतरतीब नहीं होतीं, उनकी अपनी संरचना होती है। चौथी बात- किसी अध्यापक के शुद्ध करने से बच्चे अपनी गलती एकदम सुधार नहीं लेते। गलतियाँ समय आने पर ही सुधरती हैं। पाँचवीं बात- कोई भी बच्चा, कोई भी भाषा (पहली, दूसरी या दसवीं) बिना 'गलतियों' को किए बिना नहीं सीखता।

साहित्य के प्रश्न को ही लीजिए। अक्सर कहा जाता है कि जिसमें शिष्ट साहित्य लिखा जाए वह भाषा, शेष उस भाषा की बोलियाँ। आम आदमी आज यही समझता है कि खड़ी बोली हिन्दी की मानकीकृत भाषा है, साहित्य उसी में लिखा जाता है; अखबारों दफ्तरों आदि में यही प्रयोग होती है। ब्रज, अवधी, मैथिली आदि हिन्दी की बोलियाँ हैं।

कैसी विडम्बना है- अवधी, जिसमें तुलसीकृत रामचरितमानस लिखा गया; ब्रज, जिसमें सूरदास ही नहीं अपितु अनेक हिन्दू व मुसलमान लेखकों ने महान् साहित्य की रचना की व मैथिली, जिसमें विद्यापति ने लिखा- सब आज हिन्दी की माताएँ न होकर उसकी बोलियाँ हो गईं। जब राजनीति व सत्ता का केन्द्र कन्नौज था, तो साहित्य की शिष्ट भाषा थी 'अपभ्रंश'। खड़ी बोली, ब्रज, अवधी आदि का जो भी रूप रहा हो, उसकी बोलियाँ कहलाई। इसी तरह जब राजनैतिक केन्द्र ब्रज-क्षेत्र बना तो शिष्ट साहित्य की भाषा 'ब्रज' हो गई और दिल्ली, मेरठ की खड़ी बोली उसकी बोली कहलाई। शासन व सत्ता का केन्द्र दिल्ली, मेरठ हुआ तो ब्रज, अवधी आदि हिन्दी की बोलियाँ कहलाने लगीं। वही बात कि सवाल दरअसल भाषा व राजनीति के संबंध को समझने का है। उसको समझकर एक ऐसा सजग दृष्टिकोण बनाने का है जो वैज्ञानिक व संरचनात्मक हो। इसलिए साहित्य के आधार पर भाषा व बोली में अन्तर संभव नहीं।

कोई भी लिपि, कोई भी भाषा

लिपि के प्रश्न को लीजिए। अक्सर लोग ऐसे बात करते हैं जैसे भाषा व लिपि का कोई जन्मजात संबंध हो। वास्तव में संसार की सभी भाषाएँ एक ही लिपि में लिखी जा सकती हैं। और एक ही भाषा को लिखने के लिए आप संसार की सभी लिपियों का प्रयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा व देवनागरी व रोमन लिपि को लीजिए:

हिन्दी (देवनागरी)

मोहन खेल रहा है।

हिन्दी (रोमन):

Mohan khel rahaa hai.

अंग्रेजी (देवनागरी):

मोहन इज प्लेइंग।

भारत की अनेक भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाती हैं व एक संस्कृत को लिखने के लिए भारत में ही अनेक लिपियों का प्रयोग होता है। ऐसा भी नहीं है कि लिपि होने से ही किसी भाषा में साहित्य की संभावना होती है। ऋग्वेद जैसे साहित्य के लिए सदियों से किसी लिपि की आवश्यकता नहीं पड़ी। सारे भारत में फिर भी ऋग्वेद का वाचन एक ही तरह से होता है। गाँव-गाँव में रामचरितमानस नित गाया, सुना जाता है— लिपि की कोई आवश्यकता नहीं। भाषा प्राचीन है; लिपि अभी कल का आविष्कार। लिपि होने न होने से भाषा-बोली में अंतर करना संभव नहीं। आप कुछ दोस्त मिलकर अपनी भाषा के लिए बड़ी आसानी से अपनी एक अलग लिपि बना सकते हैं। उसे कितना राजनैतिक समर्थन मिलेगा वह एक अलग बात है। संथाली आज कई लिपियों में लिखी जाती है— देवनागरी, रोमन, बंगला, उड़िया व ओल चिक्की। इनमें से कौन-सी लिपि मानकीकृत हो जाएगी यह एक राजनैतिक प्रश्न है। अभी द्वन्द्व जारी है।

विस्तृत क्षेत्र व व्यापक प्रयोग

विस्तृत क्षेत्र व व्यापक प्रयोग की खूब ठहरी। बार बार कहो कि हिन्दी का क्षेत्र विस्तृत है, प्रयोग व्यापक। जगह-जगह पोस्टर लगाओ। अखबारों में नित इश्तहार दो, रेडियो व टी.वी. पर प्रयोग करो और न जाने क्या-क्या बातों-बातों में हिन्दी को 'संवैधानिक राजभाषा' से 'राष्ट्रभाषा' का दर्जा दे दो। शिक्षा का माध्यम हिन्दी कर दो। और फिर कहो— लो भाई हिन्दी हुई भाषा व ब्रज, अवधी मैथिली, बुन्देली, भोजपुरी आदि उसकी बोलियाँ। इन 'बोलियों' को बोलनेवालों की अपार संख्या को हिन्दी में जमा कर दो और फिर कहो कि देखो, करोड़ों लोग हिन्दी बोलते हैं, कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक। थोड़ा धीरज रखकर ध्यान से सोचिए— हिन्दी आखिर कहाँ बोली जाती है? मानकीकृत हिन्दी का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता है?

क्या आप या आपके दोस्त घर पर या आपस में हिन्दी बोलते हैं या आप भोजपुरी, अवधी, मैथिली, छत्तीसगढ़ी, मगही, बुन्देली, ब्रज आदि-आदि बोलते हैं। मानकीकृत हिन्दी शायद मेरठ, इलाहाबाद व बनारस के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। क्या चम्बा व हमीरपुर (हिमाचल), रोहतक व भिवानी (हरियाणा), जैसलमेर व सवाई माधोपुर (राजस्थान), छपरा व बलिया (बिहार), छिंदवाड़ा (मध्यप्रदेश) व रायपुर में मानकीकृत हिन्दी बोली जाती है?

अभ्यास

- आप अपने रोज़मार्गी के जीवन में जो बातचीत करते हैं उसमें से 10 वाक्यों को यहाँ उसी रूप में लिखिए जैसे आप उन्हें बोलते हैं। अब उन वाक्यों को ध्यान से देखिए और पता लगाइए कि उनमें क्या-क्या चीज़ें ऐसी हैं जो तथाकथित मानकीकृत हिन्दी से अलग हैं?

मेरी हिन्दी में निम्न प्रयोग देखकर मेरे कुछ साथी अक्सर हँसते हैं, लेकिन जब उनके अपने बच्चे वही प्रयोग करते हैं तो लाचार से हो जाते हैं:

मैंने बाज़ार जाना है।

मेरे को काम है।

मुझे एक कौली दे दो।

ज़रा सब्जी को छेड़ा दे देना।

जो पंजाबी कहकर मेरा मजाक उड़ाते हैं वे यह भूल जाते हैं कि राजनीति व सत्ता का केन्द्र अब दिल्ली है। हिन्दी भी यहीं की चलेगी। या फिर लाखों पंजाबी जो अपनी मातृभाषा हिन्दी बताते हैं या लाखों ऐसे लोग जिनकी मातृभाषा हिन्दी गिन ली जाती है— हिन्दी बोलनेवालों की संख्या में से कम कर देने चाहिए।

साफ है कि लिपि, व्याकरण, साहित्य, विस्तृत क्षेत्र व व्यापक प्रयोग आदि के आधार पर भाषा व बोली में अंतर करना संभव नहीं। फिर भी यह अंतर क्यों किया जाता है? और इतनी गहराई से किया जाता है कि हम 'हिन्दी' को भाषा व 'ब्रज' या 'बुन्देली' को बोली कहने में कुछ भी झिझक महसूस नहीं करते। हिन्दी को एक मानकीकृत भाषा का दर्जा देने के लिए व ब्रज अवधी आदि को उसकी बोलियाँ बनाने के लिए आपके चारों ओर निरन्तर प्रयास हो रहे हैं; उन्हें ज़रा गौर से समझने का प्रयास करें।

अभ्यास

- सही कथन के सामने (✓) व गलत कथन के सामने (X) का निशान लगाइए।

- भाषायी दृष्टि से भाषा व बोली में कोई अन्तर नहीं है।
- एक भाषा को अनेक लिपियों में नहीं लिखा जा सकता है।
- हिन्दी व्याकरण को आधार मानकर ही ब्रज, मगही, छत्तीसगढ़ी आदि भाषाओं के व्याकरण को देखना चाहिए।
- कोई भी बच्चा, भाषा बिना गलतियाँ किए हुए नहीं सीखता है।

- भाषा व लिपि में किस तरह का संबंध है?
 - इस लेख में भाषा के किन पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है?
-



भाषा का दूसरा कदम-स्कूल

अध्याय : 7. बच्चों के प्रारंभिक कक्षा में भाषा और साक्षरता के लिए

अधिगम लक्ष्य और सिद्धान्त -

अध्याय : 8. भाषा सिखाना माने क्या? : कुछ प्रयोग - स्कूलों में छात्रों और शिक्षकों की मुश्किलें - क्या भाषा एक "विषय" है? - अपनी भाषा का इस्तेमाल - गलतियाँ क्या समझाती है? - सीखने के पड़ाव -लिखना।

अध्याय : 9. भाषा व भाषा शिक्षण : सिखाना बनाम सुधारना - बच्चा पहले से ही समृद्ध है - घर की भाषा, किताबों की भाषा - बच्चों की बातचीत से बनी पाठ्यपुस्तकें - भाषा सिखाने का उद्देश्य क्या है?

अध्याय : 10. प्रारंभिक कक्षा में भाषा शिक्षण से जुड़ी चुनौतियाँ -

हमने अभिमन्यु की कहानी पढ़ी-सुनी है कि वह, अर्जुन का बेटा, जब अपनी माँ के पेट में ही था तब उसने अपने पिता अर्जुन की बातचीत सुनी। अर्जुन अपनी पत्नी को युद्ध के चक्रव्यूह में घुसने की तरकीब बता रहा था। अभिमन्यु ने यह तरकीब तो सुन ली मगर किसी वजह से बाद की बात - जिसमें चक्रव्यूह से बाहर निकलने की तरकीब अर्जुन ने बताई थी - वह नहीं सुन पाया। बाद में महाभारत की लड़ाई में क्या हुआ यह भी हम जानते हैं। जब बड़े-बड़े योद्धा मर गए तब नौजवान अभिमन्यु को लड़ाई में जाना पड़ा। वह चक्रव्यूह में घुस तो गया मगर बाहर निकल नहीं पाया - वहीं अपने चाचाओं, ताउओं, आदि के हाथों मारा गया।

इस कहानी का हमारी इस किताब में एक खास स्थान है।

पहली बात तो यह है कि अभिमन्यु अपने जन्म से पहले ही, अपनी माँ के पेट में, काफी कुछ सीखने लगा था। कुछ-कुछ यही बात सिर्फ अभिमन्यु में ही नहीं बल्कि हर बच्चे में देखी जाती है। हाँ, चक्रव्यूह वगैरह सीखना तो कहानीबाजी है, मगर वैज्ञानिक खोज ने साबित कर दिया है कि जन्म से पहले ही बच्चा बहुत कुछ तैयार हो जाता है। फिर जन्म के बाद शुरुआती 2-3 सालों में हर बच्चा अपने घर की बातचीत सुन-परख कर भाषा का ज्ञान हासिल कर लेता है। और 4-5 साल तक उसकी भाषायी काबिलियत लगभग एक वयस्क आदमी के बराबर हो जाती है।

फिर क्या होता है? फिर बच्चा स्कूल में डाल दिया जाता है - एक ऐसा चक्रव्यूह जो उसे अभिमन्यु की तरह खत्म करने की भरसक कोशिश करता है। 'मतारी' नहीं 'माता' कहो, 'अबू' नहीं 'पिता' कहो। गेंद जिससे वह अच्छी तरह खेलता है, उसे फिर से ग-ए की मात्रा - आधा-न द की शकल में पहचानना पड़ता है। अच्छी भली कहानियों की जगह अजीब, बेमतलब सीख रटनी पड़ती है। अचरज की बात नहीं कि एल्बर्ट आइन्सटीन जैसे महानतम वैज्ञानिक अपने बचपन में स्कूल से भागे थे, या भागने की सोचते रहते थे। अगर स्कूल नहीं होते, तो शायद आज तक दर्जनों आइन्सटीन हुए होते।

तो फिर, स्कूली पढ़ाई में क्या-क्या नुक्स है? शिक्षकों के तरीके, किताबों की बनावट, पढ़ाने के गुर, लिखवाने के तरीके, व्याकरण नाम का अजगर, तमीज़ से बैठने का आतंक, परीक्षा का जानलेवा बुखार - ये सब जैसे हमारे स्कूलों में हैं वैसा क्यों हैं? हम, हमारी सबसे प्यारी चीज़, यानि हमारे बच्चों को स्कूल नाम की जेल में क्यों झोंक देते हैं? सोचने वाली बात है।

गौरतलब है : स्कूलों का निज़ाम ज़्यादा पुराना नहीं है। प्राचीन काल में - पूरी दुनिया में राजों - रजवाड़ों के राजकुमारों (राजकुमारियों को भी नहीं) को गुरुओं - आचार्यों द्वारा शिक्षा दी जाती थी। उन्हें आगे जाकर राजकाज तो करना होता था। आम जनता जाहिल रहती थी। पिछले सौ-डेढ़ सौ सालों तक। तब से स्कूल नाम का निज़ाम शुरु हुआ है। पढ़ने-पढ़ाने की साइंस के बारे में भी जानकारी कम थी। पिछले 20-30 सालों में यह जानकारी बढ़ी है। साथ-साथ स्कूली पढ़ाई में भी निखार आना शुरु हुआ है।

मगर, अभी सफर काफी लम्बा तय करना है। पढ़ के देखो।

अध्याय – 7

बच्चों के प्रारंभिक कक्षा में भाषा और साक्षरता के लिए अधिगम लक्ष्य और सिद्धान्त

परिचय:

इस पाठ में नवीनतम शोधों और दस्तावेजों के आधार पर प्रारम्भिक भाषा शिक्षण में कक्षा 1-2-3 के लिए अधिगम प्रतिफलों के बारे में बताया गया है। साथ ही भाषा सीखने के बुनियादी सिद्धान्तों पर विस्तार से चर्चा की है। बच्चों की घर की भाषा से स्कूल की अकादमिक भाषा की ओर ले जाने के लिए ध्यान रखने योग्य बिन्दुओं पर भी बात की गई है।

उद्देश्य:

1. प्रारम्भिक भाषा शिक्षण में कक्षा 1-2-3 के लिए अधिगम प्रतिफलों को समझना/जानना
2. भाषा सीखने के बुनियादी सिद्धान्तों को समझना
3. घर की भाषा से स्कूल की अकादमिक भाषा के अन्तर को समझते हुए भाषा शिक्षण पर ध्यान देने की जरूरत को समझना।

भाषा सीखने के बुनियादी सिद्धान्तों को समझना

- भाषा किसी सार्थक और उद्देश्यपूर्ण संदर्भ में सीखी जाती हैं।
- भाषा सीखने के लिए भाषा को सुनने और बोलने के भरपूर मौके मिलने चाहिए।
- भाषा तनाव रहित वातावरण में सीखी जाती है।
- भाषा सीखना तब संभव होता है जब उसका मुख्य उद्देश्य संप्रेषण हो।
- बच्चों द्वारा भाषा सीखने में की जाने वाली गलतियां उनके सीखने में सीढ़ी का काम करती है।

भाषा सीखने के कुछ बुनियादी सिद्धान्त

हमने यह तो जान लिया कि बच्चों में भाषा सीखने की क्षमता और उत्साह दोनों ही होती है मगर, भाषा सीख पाने के लिए केवल यही नहीं बल्कि उचित और सहायक वातावरण भी चाहिए आइए, हम मौखिक रूप से भाषा अर्जन के कुछ बुनियादी सिद्धान्तों को देखें:-

1. भाषा किसी सार्थक और उद्देश्यपूर्ण संदर्भ में सीखी जाती है:

बच्चे भाषा हमेशा वास्तविक स्थिति के संदर्भ में ही सीखते हैं। संदर्भ को समझे बिना, सुनी हुई कोई भी बात अपना अर्थ नहीं दर्शा पाती। उदाहरण के लिए, एक ढाई साल के बच्चे और उसकी माँ के बीच हो रही बातचीत को देखें:



1. डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

यहाँ दिए उदाहरण से स्पष्ट है कि बच्चा भाषा का प्रयोग किसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए कर रहा है। इस प्रक्रिया में उद्देश्य सामान्य तौर पर फल का नाम भी सीखा है और माँ के कहे वाक्यों को सुनते हुए समझा भी है।

2. भाषा सीखने के लिए भाषा को सुनने और बोलने के भरपूर मौके मिलने चाहिए :-

यदि बच्चों को भाषा का अर्थपूर्ण प्रयोग व बार-बार सुनने और बातचीत करने के मौके मिलें, तभी वे नई भाषा अर्जित करते हैं। प्रायः घरों में बच्चों के साथ बातचीत करते हुए उन्हें बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

3. भाषा तनावरहित वातावरण में सीखी जाती है:-

प्रारंभिक वर्षों में बच्चों पर भाषा सीखने का कोई दबाव नहीं होता। हँसते-खेलते उन्हें बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अपनी छोटी-छोटी उपलब्धियों पर उन्हें शाबाशी मिलती है। तनावरहित और लगाव भरे वातावरण में बच्चे अपनी गति से सही भाषा का उपयोग करना सीख लेते हैं।

4. भाषा सीखना तब संभव होता है जब उसका मुख्य उद्देश्य संप्रेषण हो:-

जब अपनी बात समझाना या दूसरे की बात को समझने का प्रयास करना भाषा का मुख्य उद्देश्य होता है, तभी बच्चा भाषा सीख पाता है। स्कूल के बाहर, घर के वातावरण में वास्तव में भाषा सीखने और सिखाने का एकमात्र उद्देश्य होता है कि बच्चे दुनिया का हिस्सा बन पाएँ और अपनी बात दूसरों तक पहुँचा पाएँ।

5. बच्चों द्वारा भाषा सीखने में की जाने वाली गलतियाँ उनके सीखने में सीढ़ी का काम करती हैं:

बच्चे अपनी बात को समझाने के लिए भाषा का निःसंकोच प्रयोग करते हैं। वे शब्दों का उच्चारण और प्रयोग अपनी सामर्थ्य के अनुसार उद्देश्यपूर्ति के लिए कर रहे होते हैं। उन्हें गलतियों का भय नहीं होता। वे सामान्यतः अपनी गलतियों को खुद ही ठीक करते हुए चलते हैं। यह उनके लिए भाषा सीखने में सीढ़ी का काम करता है।

स्कूल में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से पहले, अगर इन बुनियादी सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए बच्चों के साथ काम किया जाए तो, उन्हें किसी भी चीज को सोचने, समझने और मौखिक रूप से अपनी समझ को व्यक्त करने में बहुत मदद मिलती है।

घर की भाषा से स्कूल की अकादमिक भाषा की ओर

स्कूल में दाखिले के समय बच्चे घर की भाषा मौखिक रूप से बोलना और समझना सीख चुके होते हैं लेकिन, इसके आगे का सफर थोड़ा कठिन होता है, जिनके कुछ खास कारण हैं:-

1. बोलचाल की भाषा और अकादमिक भाषा में अंतर होना-

जब 5-6 वर्ष के बच्चे विद्यालय आते हैं तो उनका सामना पाठ्यपुस्तकों से होता है, जिसकी भाषा बच्चों की बोलचाल की भाषा से बहुत अलग होती है। कई बच्चे लिखित भाषा के स्वरूप से परिचित नहीं होते। इसके अतिरिक्त उनका भाषायी कौशल इतना विकसित नहीं हुआ होता है कि वे पाठ्यपुस्तकों की भाषा को सहज रूप से समझ सकें।

लिखित भाषा और मौखिक भाषा के इस अंतर को समझने के लिए नीचे लिखी बातचीत के एक उदाहरण को देखें:

नीलू: तैयार ?

विमला: बस एक मिनट ।

नीलू: अरे, बस छूट जाएगी।

विमला: नहीं, अक्सर देर से आती है।

नीलू: तुम भी ! इतनी लापरवाही अच्छी नहीं।

विमला: अच्छा भई, आती हूँ, गुस्सा न करो।

इसी बातचीत को लिखित भाषा में किसी कहानी के अंश के रूप में नीचे लिखा गया है।
“नीलू और विमला जल्दी-जल्दी तैयार हो रही थीं। विमला जब देर तक कमरे से तैयार होकर नहीं निकली तो नीलू ने आवाज लगाकर पूछा, “तैयार हो गई ?” इस पर विमला ने कहा, “नहीं मुझे बस एक मिनट और लगेगा।” इस पर नीलू ने उससे कहा, “देर हो रही है। बस छूट जाएगी।” विमला ने उत्तर देते हुए कहा कि देर नहीं होगी। बस अक्सर देर से आती है। इस तरह, यह कहानी आगे बढ़ती रहेगी। बच्चों के लिए लिखित भाषा के स्वरूप नए होते हैं। इसलिए उन्हें लिखित भाषा को समझने में थोड़ी मदद एवं अभ्यास की आवश्यकता होती है।

वास्तव में लोगों की बातचीत को लिखना प्रायः बहुत कठिन होता है जब हम लिखते हैं, तो बोली गई बात सीधे-सीधे नहीं लिख सकते इसका कारण यह है कि मौखिक बातचीत में बोलने वाले आमने-सामने होते हैं और उनका एक साझा संदर्भ होता है, जिसे दोनों समझते हैं।

यही नहीं, मौखिक बातचीत में लोग हाव-भाव, इशारों व शारीरिक संकेतों का प्रयोग करते हैं। (जैसे- हाथों को हिलाना, चलाना, चेहरे के उतार-चढ़ाव आदि)। लिखित भाषा में इन्हीं भावों और इशारों को लिखित रूप में दर्शाया जाता है।

जब बच्चे स्कूल में आते हैं तो यह सब उनके लिए नया होता है। वे प्रवाहपूर्वक अपनी मौखिक भाषा बोल सकते हैं, लेकिन लिखित भाषा के नियम उन्हें सीखने पड़ते हैं।

2. अलग-अलग परिवारों से आने वाले बच्चों की मौखिक भाषा में अंतर:

कई बच्चों की मौखिक भाषा स्कूल में सिखाई जा रही मानक भाषा के निकट होती है, तो कई बच्चों की घर की भाषा मानक भाषा से बिल्कुल अलग होती है। इन बच्चों को इस नई भाषा के दायरे से बाहर जाने का यह पहला अवसर होता है। उन्हें कई स्तरों पर इस नए वातावरण से समायोजित होने के लिए अतिरिक्त प्रयास करना पड़ता है।

3. स्कूल और घर में भाषा सीखने के वातावरण बहुत अलग होते हैं :-

जहाँ घरों में भाषा तनावरहित परिस्थिति में, रोजमर्रा के काम करते हुए, सार्थक उद्देश्यों के लिए सीखी जाती है, वहीं स्कूल में भाषा का शिक्षण पाठ्यपुस्तक पढ़ने, परीक्षा में अंक लाने जैसे उद्देश्यों के लिए होता है, जहाँ बच्चे सामान्यतः तनाव और भय महसूस करते हैं। भाषा सीखने की एक बुनियादी परिस्थिति प्रायः स्कूलों में बन नहीं पाती।

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

इन सभी कारणों की वजह से साक्षरता का सफर बच्चों के लिए कठिन होता है। उनके लिए मौखिक रूप से भाषा अर्जन जितना सहज होता है, स्कूल में आते ही लिखकर और पढ़कर समझ बनाने का काम उतना ही कठिन।

बच्चों के लिए उनके घर की भाषा के इस सफर को सरल बनाने के लिए शिक्षकों को दो बातों पर संतुलन बना कर चलना चाहिए। पहला यह कि बच्चे जिस भाषा की मौखिक क्षमता अपने साथ ले कर आए हैं, उसके लिए कक्षा में जगह बनाएँ। दूसरा कि बच्चों की जिस भाषा में साक्षरता कौशल का विकास करना है, उसके लिए सीढियों बनाएँ। शिक्षकों को यह समझना होगा कि घर-परिवार में मौखिक भाषा अर्जित करने और साक्षरता के कौशल सीखने में बहुत फर्क है अतः उन्हें इसे बारीकी से समझते हुए कार्य नियोजन करना होगा।

इस अध्याय के मुख्य बिंदु –

- नोम चौमस्की और उनकी विचारधारा से सहमति रखने वाले शिक्षाविदों का मानना है कि मनुष्य में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती है।
- बच्चों के भाषा अर्जन में वयस्कों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।
- 0 से 6 साल की उम्र तक बच्चे चौंका देने वाली गति से भाषा अर्जन करते हैं।
- भाषा अर्जन के लिए कुछ बुनियादी सिद्धांत हैं: तनावरहित वातावरण, सार्थक व उद्देश्यपूर्ण संदर्भ व भाषा बोलने-सुनने के अनेक मौके।
- भाषा अर्जन और साक्षरता के कौशल सीखने में अंतर होता है। इसलिए बच्चों की भाषा को कक्षा में स्थान देना और साक्षरता के लिए उचित नियोजन करना आवश्यक है।

अभ्यास:

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:-

1. मौखिक और लिखित भाषा में कोई एक अंतर बताएँ।
 2. मौखिक रूप से भाषा अर्जन और साक्षरता के कौशल सीखने में अंतर की वजह क्या है ? कोई दो कारण बताएँ।
 3. “स्कूल में भाषा शिक्षण का वातावरण और घर का माहौल, जहाँ बच्चे भाषा अर्जित करते हैं वह अलग है।” इस कथन से आप सहमत हैं या असहमत और क्यों?
-



अध्याय – 8

भाषा सिखाना माने क्या

परिचय :

“भाषा सिखाने माने क्या” लेख, भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत लोगों की भाषा शिक्षण को लेकर लगातार विस्तृत होती समझ के सफ़र का विवरण है। भाषा को एक विषय के रूप में समझने से शुरू कर उसके साथ दूसरे विषयों का संबंध, भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम भर होने के तथ्य को चुनौती, समेकित परिप्रेक्ष्य में ज्ञान की संरचना में खासतौर से गणित की अवधारणाओं को बनाने में और साथ ही अन्य विषयों को समझने में भाषा की भूमिका आदि कई आयामों का भाषा की समझ में जुड़ते जाना। ये इस लेख का केन्द्र बिन्दु है।

उद्देश्य :

- भाषा सिखाने के उद्देश्यों के बारे में समझ बन पाएँगे।
- ‘सीखने-सिखाने में गलतियों का क्या महत्त्व है’ इस बारे में समझ बना पाएँगे।
- प्राथमिक शालाओं में भाषा शिक्षण में क्या-क्या सम्मिलित हो इस बारे में समझ पाएँगे।

बात शुरू होती है प्राथमिक शाला में आने वाले बच्चों को पढ़ाना-लिखना सिखाने से। हमारे साथियों के शुरुआती अवलोकनों, अहसासों व विश्लेषण ने हमें यह तो समझा दिया था कि बच्चे सामान्य तौर पर पाठ्यपुस्तकों में लिखी बातें पढ़ नहीं पाते। प्राथमिक शाला के अधिकांश छात्र-छात्राओं के लिए किताब पढ़ने का मतलब है याददाश्त से उस पन्ने पर लिखी बातें सुनाना। उन्होंने यह भी पाया कि कक्षा 6-8 के बच्चों के लिए संस्कृतनिष्ठ हिन्दी समझना तो बच्चों के लिए कठिन है ही लेकिन सरल हिन्दी समझना भी कोई आसान नहीं है। यद्यपि संस्कृतनिष्ठ हिन्दी की तुलना में सरल हिन्दी वह कुछ ज्यादा समझ पाते हैं पर वह ज्यादा भी इतना कम है कि उसे हासिल करने के बाद भी वह पढ़ी जा रही सामग्री को ठीक से समझ नहीं पाते। बहुत से बच्चे तो हिज्जे करके पढ़ने के कारण शब्द को ही ठीक से समझ नहीं पाते थे और बहुत से शब्द तो समझ लेते थे लेकिन पूरा वाक्य समझना मुश्किल था। कोई बात अगर 3-4 वाक्यों से मिलकर समझाई गई हो तो उसके लिए समझना बहुत ही मुश्किल था।

अभ्यास

- लेखक का अवलोकन है कि 5वीं कक्षा पास करने के बाद भी बच्चे समझ के साथ पढ़ना नहीं सीख पाते हैं? क्या आप लेखक की बात से सहमत हैं? पहले के लेख में आपने पढ़ा है कि बच्चों में भाषा सीखने की अपार क्षमता होती है तो फिर बच्चे क्यों नहीं सीख पाते?

प्राथमिक शालाओं में शुरुआती अनुभव

प्राथमिक शालाओं में जाकर बच्चों के साथ बातचीत में यह कोशिश की कि वे उनकी रुचि की बातें पता करें, वह विषय पता करें जिन पर वे अक्सर बातें करते हैं, उनके किस्से, कहानियाँ व गीत आदि पता करें। यह सब इसलिए क्योंकि उनके परिचित विषय व उनके किस्से कक्षा में उपयोग करके उनमें बातचीत करवाई जा सकती है। ऐसे मौके उत्पन्न किए जा सकते हैं जिनमें ज्यादा बच्चे, ज्यादा से ज्यादा बोलें और एक दूसरे की सुनें, बजाय चुपचाप बैठकर शिक्षक की सुनने के।

हमने बच्चों की बातचीत को रिकार्ड करने की कोशिश की, उनके साथ कविताएँ गाईं, चित्र बनवाए व बनाए और उन्हें तरह-तरह के चित्र दिखाए। चित्र दिखाने के पीछे उद्देश्य यह था कि हम चित्र पर बातचीत करें और अपने विचारों को अभिव्यक्त करें। लेकिन चित्र दिखाने में यह समझ में आया कि चित्रों की भी एक भाषा है और उसे भी जानना आवश्यक है।

माध्यमिक शाला में विज्ञान के प्रयोगों को करवाते समय भी कई बातें समझ आईं। ये बातें न सिर्फ इन कक्षाओं में पढ़ रहे छात्रों के लिए थीं परन्तु उन सभी के लिए भी थीं जो इन कक्षाओं में व प्राथमिक शालाओं में पढ़ा रहे थे। निर्देश पढ़कर समझना व उनके अनुसार प्रयोग करना सबके लिए मुश्किल था और उतना ही मुश्किल था अपने अवलोकनों को लिख पाना। बोल कर बताना अपेक्षाकृत आसान था किंतु लिखने में अत्यधिक कठिनाई थी। अगर अवलोकन निर्धारित तरह से लेने हों व निर्धारित नापजोख लायक चीजों के हों और उन्हें किसी जगह भरना हो तो शिक्षक वह काम कर पाते किंतु अगर तालिका स्वयं सोच कर बनानी हो तो फिर काम नहीं होता था।

भाषा सिखाने में क्या-क्या

हमने सोचा कि भाषा सिखाने का मतलब क्या-क्या है? अब तक यह सोच रहे थे कि भाषा सिखाना यानी समझ कर पढ़ना सिखाना, अपनी बात बोल पाना, दूसरे की बात समझ पाना। स्वयं भी हम अक्षरों, शब्दों व वाक्यों से मिल कर बने पैराग्राफों व सम्पूर्ण अध्यायों की बात कर रहे थे। फिर हमने उसमें अब चित्रों को पढ़ना व समझना जोड़ा, तालिकाओं को जोड़ा और एक बार जब यह बुनियादी बात समझ आ गई कि भाषा यानी सिर्फ अक्षर व वाक्य आदि नहीं है तो उसमें नक्शा पढ़ना, हाव-भाव, संकेत आदि सभी जुड़ गए।

अभ्यास

- आपके अनुसार भाषा की कक्षा में क्या-क्या होना चाहिए?
- अमूमन भाषा की कक्षाओं में बच्चे शिक्षक की बात सुनते नजर आते हैं जबकि होना यह चाहिए कि बच्चे ज्यादा से ज्यादा बोलें और एक दूसरे की सुनें। इस कथन के बारे में आपके क्या विचार हैं?

भाषा एक विषय या.....?

इस सब के जुड़ने का क्या अर्थ हुआ और यह क्यों जुड़ पाया इसके बारे में अलग से इसके पहले एक और जरूरी बात है। हमने स्कूलों में भाषा के अध्ययन व अध्यापन को समझने का प्रयास किया। हमें लगा भाषा शिक्षण में आम तौर पर जोर होता है भाषा को एक विषय के रूप में पढ़ाने पर। विषय का अर्थ यह हुआ जैसे हम विज्ञान पढ़ते हैं, सामाजिक अध्ययन पढ़ते हैं वैसे ही हिन्दी। हमारा झुकाव जल्दी ही साहित्यिक कविताओं, कहानियों व उनके विश्लेषण पर होता है। भाषा को समझने व उसके इस्तेमाल की ताकत को बढ़ाने के बजाय पाठ्यपुस्तक में चयनित रचनाओं पर केन्द्रित प्रश्नों के सही उत्तर याद करने पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। शुरू में अपठित बनाई सामग्री को पढ़ कर स्वयं सवालियों के उत्तर लिखने की अपेक्षा बच्चों से नहीं की जाती है। उन्हें रट कर ही शिक्षक द्वारा सही माने गए उत्तर उपयुक्त शब्दों में लिखने हैं। चयनित रचनाओं की भाषा व उनका स्तर भी ऐसा नहीं कि जिन्हें पढ़ने वाले बच्चे स्वयं पढ़ कर समझ सकें और स्वरूप अधिकांशतः ऐसा नहीं कि उन्हें उस रचना को पढ़ने में मजा आए।

प्राथमिक शालाओं में भाषा को उतना ही समय मिलता है जितना अन्य विषयों को। ऐसा उस समय होता है जब बहुत से बच्चों के लिए स्कूल, शिक्षक व किताब की भाषा उनकी अपनी भाषा से दूर से लेकर बहुत दूर तक है। भाषा सिखाने का मतलब लिपि, वर्तनी, सुन्दर लिखाई व व्याकरण बन जाते हैं। महत्व की दृष्टि से समय के अंसतुलित विभाजन के कारण भाषा से खेलने, उसमें डूबने, उसे अहसास करने व आत्मसात करने का समय ही नहीं मिलता। असल में तो इस बात का महत्व ही नहीं समझा जाता क्योंकि स्कूल में भाषा

भी एक विषय है, आधार नहीं। आधार बन रहा हो तो जरूरी नहीं है कि उसमें कुछ दिखे और बच्चा क्रमबद्ध ढंग से कुछ सीखता व उसे प्रदर्शित करता दिखे। आधार तो जमीन के नीचे ही रहता है न। स्कूलों में इतना धैर्य कहाँ वे तो जल्द से जल्द इमारत खड़ी कर देना चाहते हैं। चाहे वह आधारहीन, ढहने वाली व अनुपयोगी ही क्यों न हो।

बच्चे कैसे बोलें

कैसे बच्चों का पढ़कर समझने में आत्मविश्वास बने, कैसे वे अपने आप को जाहिर करने लायक हो पाएँ यह हमारे लिए कुछ प्रमुख सवाल थे। हमने यह समझा कि कक्षा में बच्चों के लिए भाषा बातचीत का माध्यम बने। सभी विषयों का अध्ययन व अध्यापन किसी भाषा के माध्यम से ही होता है, इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि बच्चों को इस सब में मुश्किल न हो। बच्चे अपनी भाषा, जो कि उनकी संस्कृति, उनके मन, उनके घर व आधार का एक हिस्सा है, तो सीख नहीं रहे। फिर एक दूसरी भाषा में वे सम्प्रेषण की आजादी कैसे हासिल करें? उनकी भाषा और हमारे स्कूलों की भाषा में बहुत फर्क है। जहाँ कहीं भी सामान्य स्कूलों में हमें उनकी भाषा की झलक मिलती है, हम उसे गलत कह देते हैं। यानी उनकी पूरी संस्कृति, अनुभव व आत्मसम्मान मिट्टी में मिल जाता है क्योंकि स्कूल में उसका उपयोग गलत है, गँवारी है। न जाने और क्या-क्या जुड़ा है उनकी अपनी भाषा के उपयोग की इस बदहाली के साथ।

बच्चों की भाषा व भाषा की समृद्धता बनाम गलतियाँ

इन सबसे हमने सीखा उनकी भाषा को कक्षा में स्थान देना, सही-सही लिखने व गलतियाँ ढूँढने के स्थान पर लिखने व बोलने के ज्यादा मौके देना, इस बात पर ध्यान देना। क्योंकि हम सब कोशिश करके-गलतियाँ करके ही सीखते हैं। कोई भी पहले ही दिन से ठीक-ठाक व उल्लेखनीय ढंग से कोई काम नहीं कर सकता। गलतियाँ हमारे सीखने के पथ को दर्शाती हैं। वे ही हमारे द्वारा विचारों, आइडियाओं की समझ के विकास का आधार है। हमें यह लगा कि भाषा सीखने में यह बात बहुत ही आवश्यक है।

अपनी भाषा का ढाँचा, उसका व्याकरण हर बच्चा सीख जाता है क्योंकि वह भाषा को बोलते-बोलते, सुनते-सुनते सारे नियम समझ लेता है। हो सकता है कि वह उन्हें बता न पाए, समझा न पाए किन्तु वह वाक्यों को पहचान सकता है, व ठीक कर सकता है। अपनी भाषा को सीखना उसके लिए एक सहज एवं स्वाभाविक क्रिया है फिर दूसरी भाषा सिखाने में गलतियों, व्याकरण व अस्वाभाविकता पर कितना जोर हो? क्या विभिन्न परिस्थितियों में भाषा का इस्तेमाल कर वह उस भाषा के व्याकरण का अहसास नहीं कर सकता?

1. क्या आपने भाषा बिना गलतियाँ किए सीखी है?
2. आपकी गलतियाँ कैसे ठीक हुई? कितनी आपने स्वयं ने ठीक की और कितनी आपके अध्यापक ने?

गलतियाँ अथवा सृजन

हम गलतियाँ सुधारने की अपेक्षा उन्हें बढ़ावा देना चाहते थे, उनकी अपनी भाषा के इस्तेमाल के लिए। उनमें यह विश्वास व आस्था जगाने की कि वह स्कूल में उपयोग की जा सकती है यदि वह अपनी भाषा का इस्तेमाल स्कूल में करता है तो वह पिछड़ा नहीं समझा जाएगा। हम उसके लिए कक्षा में व कक्षा के बाहर भाषा के लचीले व निजी इस्तेमाल के मौके बनाने पर जोर देना चाहते हैं।

भाषा के विकास व उसकी समृद्धता का उसके लचीलेपन व सहजता से सीधा संबंध है। कोई भी जीवित भाषा व्याकरण की किताबों व शब्दकोशों की दीवारों में कैद नहीं हो सकती। ये ग्रंथ भाषा सीखने में सहायता के लिए हैं, न कि उसे सीखने में व उसके ज्यादा अलग-अलग मौकों पर उपयोग की क्षमता के विकास में बाधा बनने के लिए। हमने यह माना कि बच्चे की भाषा का मानकीकृत भाषा में मिल जाना एक हद तक भाषायी समृद्धता को बढ़ाएगा और ऐसी संरचनाओं के विकास में मदद करेगा जो सीखने वालों के लिए

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

सीढ़ियाँ होंगी। हमने यह भी माना कि गलती को स्थूल व सतही तौर पर जाँच कर सही या गलत का चिह्न लगाकर सही ढंग से नहीं समझा जा सकता। शुरुआती सालों में अपने विचार लिखने व बोलने का प्रयास करना ज्यादा जरूरी है बनिस्बत गलतियाँ न करने व संकीर्ण 'तथाकथित मानक किताबी' भाषा में जकड़े जाने के।

अभ्यास

- "व्याकरण की किताबें, शब्दकोश आदि भाषा सीखने में सहायता के लिए हैं न कि उसे सीखने में बाधा बनने के लिए।" इस कथन के संदर्भ में उदाहरणों सहित समझाइए कि ये ग्रन्थ स्कूली शिक्षा में किस तरह भाषा सीखने में बाधक बन जाते हैं?
- गलतियाँ सीखने की सीढ़ियाँ हैं। समझाइए।

भाषा—सोच का आधार?

भाषा शिक्षण के बारे में सोचते-सोचते हमें यह समझ में आया कि भाषा हमारे लिए सम्प्रेषण के माध्यम से भी ज्यादा है। शायद प्रकट या अप्रकट रूप से यह हमारे हर काम को संचालित करती है। एक मोटा उदाहरण: जब हम किसी चीज को देखते हैं, तो हमारी नजरों का पैनापन भी विवरण के लिए हासिल शब्दों पर आधारित है। जिस भाषा में बर्फ के लिए 26 शब्द हैं उसमें देखने वाला उन सभी रूपों को अलग-अलग देख सकता है। काँच का पारखी काँच में बारीक किस्मों को अलग नाम देकर छॉट सकता है। जो हमारे लिए लोहा है, लोहार के लिए अलग-अलग गुण वाली सामग्री है आदि। वैसे भी किसी विचार या आइडिया को समझने के लिए हम उसके साथ अन्य कई शब्दों को जोड़ते हैं। जितने व्यापक संदर्भों में, जितने ज्यादा शब्दों अथवा विचारों व अवधारणाओं के साथ जोड़कर हम उस विचार अथवा अवधारणा को समझ पाएँगे, उतनी ही हमारी उस अवधारणा की समझ गहरी होगी।

फिर हमने यह बात पढ़ी और उसे महसूस किया कि बच्चे जब कोई क्रिया करते हैं, जिसमें वह मन से मशगूल हों तो वह अपने आप से बोलते रहते हैं। उसे बोलने से वे अपने काम को व्यवस्थित करते हैं व संचालित करते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि हम क्रियाओं को भी भाषा के अंदर समाते हैं।

हम लोग अवधारणाएँ कैसे सीखते हैं, विचार कैसे समझते हैं व समझने व सोचने के अपने ढाँचे को कैसे बदलते व ज्यादा सुदृढ़ बनाते हैं? इन सब के बारे में कई तरीके के विचार व सोच हैं। आज यह माना जाता है कि सामान्यतः सीखते समय हम ठोस अनुभवों में अमूर्तता की तरफ जाते हैं। पर ऐसा क्यों हो जाता है कि बहुत से बच्चे व बड़े अमूर्तता में हिचक जाते हैं और सोच के तार्किक ढाँचे या तार्किक समझ नहीं बना पाते? यह एक खास विषय में नहीं वरन् सभी अमूर्त बातों पर लागू है।

सीखने के विकास के ढंग से संबंधित समझ के विभिन्न ढाँचों व मॉडलों में कोई एक स्पष्ट दिशा नहीं दिखती। इसके अलावा हमारे दिमाग की रचना, उसमें भावनाओं का स्थान, भाषा का स्थान, जगह की समझ से संबंधित अमूर्त क्षमताओं का स्थान, आदि पर भी शोध कार्य जारी है और हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचे हैं। इस सब के बीच हम प्राथमिक शाला में भाषा सिखाने के अर्थ, उसके लिए उपयुक्त तरीके व सामग्री खोजने की कोशिश कर रहे थे।

अभ्यास

- एक पेंटर रंगों के अलग-अलग नामों को बखूबी जानता है। वह नीला हल्का नीला, गहरा नीला करे जल्दी से फरक या अंतर कर सकता है क्योंकि वह इन शब्दों व उनके अर्थों को रोज काम में लेता है। लेकिन एक आम आदमी को शायद ही रंगों के बारे में इतनी समझ हो। आप इस तरह के अन्य उदाहरण सोचिए जहाँ भाषा गहराई से सोचने व समझने में मदद करती है।

प्राथमिक शाला में भाषा शिक्षण

हम यह जरूर मानते थे कि हमें आम तौर पर उपयोग किए जा रहे तरीके व उसके पीछे छिपी समझ पर विश्वास नहीं है। यह हम भी मानते थे कि अभी स्कूलों में बच्चों के अनुभवों, सोच, भावनाओं, कल्पना व फन्तासी का कोई स्थान नहीं है और वह अनिवार्य है। भाषा सिखाना सोच के ढाँचों के विकास के साथ-साथ ही किया जा सकता है। भाषा सीखने व अमूर्तता की ओर बढ़ने में संबंध है। पढ़ी गई बात को गहराई से समझने के लिए विश्लेषण, संश्लेषण, तुलना, कल्पना, उसका गैर संदर्भीकरण, सामान्यीकरण, उसमें क्रम की पहचान, सार निकालना आदि-आदि कितनी ही क्षमताओं का उपयोग जरूरी है। इनमें कितनी गणित सीखने की प्रक्रिया में नहीं जुड़ती?

एक पेंटर रंगों के अलग-अलग नामों को बखूबी जानता है वह नीला, हल्का नीला, गहरा नीला को जल्दी से फर्क कर सकता है क्योंकि वह इन शब्दों व उनके अर्थों को रोज काम में लेता है। लेकिन एक आम आदमी को शायद ही रंगों के बारे में इतनी समझ हो। आप इस तरह के अन्य उदाहरण सोचिए जहाँ भाषा गहराई से सोचने व समझने में मदद करती है।

अभ्यास

- “भाषा सीखने व अमूर्तता की ओर बढ़ने में सम्बन्ध है।” क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने अनुभव व उदाहरणों की मदद से पुष्टि करें।

दरअसल खासतौर पर प्राथमिक शाला में हमें बच्चों को अटूट अनुभव देने की आवश्यकता महसूस होती है। यह जुड़ाव मात्र स्थूल रूप में नहीं कि, एक ही किताब में भाषा भी व गणित भी दोनों को सिखाया जाना है, वरन् किताब को और सीखने की प्रक्रिया के साथ-साथ क्या सीखा जाना है, उसको परिभाषित करने के ढंग में। यह आवश्यक नहीं कि किताब के हर सबक में भाषा हो, गणित भी हो, विज्ञान भी हो और सामाजिक अध्ययन भी, किन्तु यह कि इन सबकों का सिलसिला एक अटूट समझ पर आधारित हो। ऐसी इकाइयों की संरचना का क्या तार्किक आधार हो, हर इकाई में क्या शामिल हो सकता है, इसमें भाषा कैसी हो, चित्र कैसे होने चाहिए आदि, वे सवाल हैं जिनके बारे में विचार करना, बच्चों के सोच के ढाँचे के अनुसार सामग्री व कार्य विधि बनाने में मदद करेंगे।

प्राथमिक शाला कार्यक्रम के अन्तर्गत हम विशेष तौर पर लिखित भाषा को भी सीखने की बात कर रहे थे। ऐसे अभ्यास सोच रहे थे जिसमें कि सीखने वाला औपचारिक तर्क समझ सके व अभिव्यक्त कर सके। एक सार्थक कोशिश कर सके अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचा पाने की व दूसरे के विचार समझ पाने की, व्यापक संदर्भों व अनुभवों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की किताबों से जुड़ पाने की। हमने माना कि इस सब को करने के लिए भाषा व गणित सीखने में एक गहरा संबंध है। गणित की अवधारणाओं के विकास का ढाँचा भी तर्कों के ढाँचे पर आधारित है। इस तर्कों के ढाँचे के विकास के लिए इसके टुकड़ों को भाषा में व्यक्त कर पाना बहुत आवश्यक है। हमने यह भी माना कि तथाकथित इन अलग-अलग विषयों की बिखरी अवधारणाओं में गहरे संबंध हो सकते हैं और उनमें पारस्परिक समझ को मजबूत बनाने की गुंजाइश है। इन सभी विषयों को एक दूसरे के सापेक्ष रखकर ही समझना चाहिए। उनकी विभिन्न अवधारणाओं में अमूर्तता का स्तर, अवधारणा समझने के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे का विकास, अलग-अलग विषयों में एक-दूसरे के समान या एक-दूसरे से जुड़े विचारों/अवधारणाओं/क्षमताओं आदि को एक ढाँचे में लेना चाहिए।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि यह आवश्यक नहीं है कि हर अभ्यास में सब कुछ हो, यह भी आवश्यक नहीं है कि बच्चा यह सब एक साथ सीख जाए पर इस पारस्परिक संबंध व निर्भरता का ध्यान रखना होगा और उसी के आधार पर कार्य का संतुलन बनाना होगा। ऐसा ही प्रयास हमने प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

किया है। इसमें भाषा को उसके बच्चे कल्पना, समझ, अभिव्यक्ति, जगह की समझ, परिप्रेक्ष्य के विकास आदि ही नहीं वरन मस्तिष्क व सम्पूर्ण व्यक्तित्व के आधार के रूप में मानकर कार्यक्रम के सभी हिस्से विकसित किए गए हैं।

प्रोजेक्ट वर्क

(1) भाषा की कॉपियाँ जाँचने में शिक्षक किस प्रकार का फीडबैक देते हैं, इसका एक छोटे से सर्वेक्षण के आधार पर ब्यौरा प्रस्तुत करें। इसमें निम्नांकित बिन्दुओं पर (लेकिन केवल इन तक ही संकुचित नहीं) गौर किया जा सकता है।

(क) क्या केवल 'X' ही लगा है या कोई टिप्पणी भी है?

(ख) किस प्रकार की टिप्पणियाँ हैं?

(ग) अधिकतर कैसी गलतियाँ निकाली गई हैं?

2. बच्चे किस तरह की गलतियाँ करते हैं?

आप कक्षा 5 वीं के 25 छात्र-छात्राओं की कॉपियों का अवलोकन कर गलतियों का सूचीकरण करें।



अध्याय — 9

भाषा व भाषा शिक्षण

परिचय :

बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। बच्चे जब स्कूल आते हैं तो वे न केवल भाषा को सही बोल लेते हैं बल्कि उनका उचित प्रयोग भी कर रहे होते हैं। जब हम घर की भाषा और मातृभाषा की बात करें तो ये बच्चा स्वाभाविक रूप से अपने घर और समाज के वातावरण से सीख लेता है। इस लेख में भी इस बात पर जोर दिया गया है कि स्कूल में शिक्षण का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए और धीरे-धीरे मानकीकृत भाषा की ओर जाना चाहिए।

उद्देश्य :

- आप इस सवाल का जवाब दे पाएँगे कि बच्चों को भाषा क्यों व कैसे पढ़ाएँ?
- भाषा की कक्षा में क्या-क्या होना चाहिए इस बारे में समझ बन जाएगी।
- भाषा की कक्षा में मातृभाषा की उपयोगिता को समझ पाएँगे।

भाषा हमारे जीवन का शायद उतना ही कुदरती अंग है जितना कि साँस लेना। बिना बातचीत किए, चाहे बोलकर या लिखकर, समाज में शायद कुछ भी करना संभव नहीं है। अपनी बात समझाने के लिए, दूसरे की बात समझने के लिए, नई बातें जानने के लिए, पढ़ने-लिखने के लिए, सभी कुछ के लिए तो हम भाषा का सहारा लेते हैं। इस स्वाभाविकता के ही कारण शायद हम भाषा और उसके उपयोग पर कभी गम्भीरता से विचार नहीं कर पाते। यदि कोई बच्चा इतिहास, भूगोल या विज्ञान में पीछे रह जाता है तो हम (शिक्षक हों या पालक) बहुत चिन्तित हो जाते हैं। भाषा के बारे में अक्सर यही सोचा जाता है कि भाषा तो बच्चों को आती ही है, फिर आगे की कक्षा में अपने पसन्द का विषय लेने के लिए आमतौर पर भाषा की समझ का महत्व ही नहीं होता है।

शालाओं में जो थोड़ी बहुत भाषा पढ़ाई भी जाती है उसका उद्देश्य अक्सर बच्चे को भाषा सिखाना नहीं बल्कि उसकी भाषा सुधारना है। शालाओं में भाषा की शुद्धता पर अधिक ध्यान दिया जाता है, बजाय इसके कि बच्चा लिखी हुई बात को समझ पाए और अपनी बात कह पाए। भाषा सिखाने के बारे में सोचते समय हम भूल जाते हैं कि भाषा बौद्धिक व मानसिक विकास का आधार भी है और माध्यम भी। अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ, साहित्य या शासन के कागजात सभी को समझने के लिए भाषा सीखना जरूरी है। जो भाषा सीखने में पिछड़ गया उसका सामाजिक जीवन के लगभग हर पहलू में पिछड़ना तय है।

लेकिन यह भी एक निर्विवाद सत्य है कि हर बच्चा अपने आसपास बोली जा रही भाषा अच्छी तरह से जानता है। जैसे वह उठना, चलना-फिरना, खाना-पीना आदि सीखता है, वैसे ही वह यह भाषा सीखता है और उसे अपने उपयोग के अनुरूप ढाल लेता है। बच्चा वही भाषा सीखता है जो उसके माता-पिता, सगे-सम्बन्धी, पड़ोसी और मित्र बोलते हैं। इसी भाषा के माध्यम से बच्चा अपनी पहचान बनाता है और परिवार के अलग-अलग कार्यों व गतिविधियों में भाग लेता है। इस भाषा को लिखने-पढ़ने के अलावा सभी तरह से उपयोग करना बच्चा खुद सीख लेता है। यह भाषा, चाहे हम उसे बोली कहें या कुछ और भाषा-विज्ञान की

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

दृष्टि से उतनी ही समृद्ध और नियमबद्ध है जितनी कि कोई भी मानकीकृत भाषा। दोनों की अपनी-अपनी ध्वनि और शब्द संसार होता है। और वाक्य बनाने के अपने अपने नियम। दोनों का अपना-अपना साहित्य भी हो सकता है और अपनी-अपनी परम्परागत कहानियाँ जो पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई जाती हैं। किसी भी बोली को लिपि देकर और विभिन्न गतिविधियों के लिए उपयोग करके हम उसे उस स्तर पर ला सकते हैं जिसे आमतौर पर भाषा कहा जाता है। साफ है कि किसी बोली का भाषा बनना एक भाषिक नहीं बल्कि ऐतिहासिक एवं सामाजिक प्रश्न है। यह समझ भाषा पढ़ाने वाले शिक्षक के लिए आवश्यक है, जिससे कि वह बच्चों की बोली के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण रख पाए और उसे अविकसित या असम्भ्य मान कर नकार न दे।

अभ्यास

-
- भाषा और बोली में क्या फर्क है?
 - अक्सर घर की भाषा व स्कूल की भाषा अलग-अलग होने से भाषा सीखने में बच्चों को समस्याएँ आती हैं? आप बच्चों का अवलोकन कर समस्याओं की सूची बनाइए।
-

यह तो सही है कि हर बोली मानकीकृत भाषा नहीं बन पाती परन्तु बोलने वालों की धारणाओं, मूल्यों एवं दृष्टिकोणों को हर बोली अपने आप में संजोए रहती है। जिस प्रकार इस बोली को बोलने वालों के समाज व संस्कृति को समझने के लिए उनकी बोली ही एक मात्र सहारा है, उसी प्रकार बोली को समझने के लिए बोलने वालों के समाज और उनकी संस्कृति को समझना आवश्यक है। बच्चों को एक मानकीकृत भाषा सिखाते समय, इस बात का अहसास आवश्यक है। यह अहसास होने पर ही हम बच्चों की दुविधा के प्रति संवेदनशील हो पाएँगे और उनके जीने के तरीके से सामंजस्य रखते हुए नई भाषा सिखा पाएँगे। वरना बच्चा इसी समस्या में उलझ कर रह जाएगा, कि जो घर में ठीक है वह स्कूल में क्यों गलत है (विशेषकर उस परिस्थिति में जब उसकी बोली का कोई मान्य स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है)। बोली/भाषा जीवन मूल्यों व संस्कृति से प्रभावित होती है और इसलिए एक ही स्थान पर अलग-अलग वर्ग के लोगों की बोली में भी अन्तर होगा। क्या एक शाला में, जहाँ हर आर्थिक स्तर के बच्चे पढ़ते हैं, इस अहसास का महत्व नहीं है?

यह हमारा दुर्भाग्य है कि शिक्षा प्रणाली में, विद्यालयों और पाठ्यपुस्तकों आदि में प्रयोग होने वाली भाषा घर में और दोस्तों के साथ बोली जाने वाली भाषा से अलग होती है। आम तौर पर तो शालाओं में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा का दफ्तरी काम-काज व शाला की चारदीवारी के बाहर बहुत कम उपयोग होता है। जहाँ शाला और बच्चे की आम जिन्दगी की भाषा को एक ही नाम दे दिया है (जैसा कि मध्य प्रदेश में जहाँ दोनों को हिन्दी कहा जाता है) वहाँ इन दोनों भाषाओं के अन्तर की गम्भीरता समझना और भी कठिन हो जाता है और इस भाषा को सीखने में बच्चों की समस्याओं को समझना लगभग असम्भव ही है।

स्कूल में अक्सर मानकीकृत भाषा का ही प्रयोग होता है। यह मानकीकृत भाषा अपने आप में कोई विशेष गुण नहीं रखती, पर किसी समय समृद्ध और पढ़े-लिखे तबके की भाषा होने के कारण लिपिबद्ध हो जाती है। साहित्य, शब्दकोश व्याकरण आदि भी इसी भाषा में लिखे व छापे जाने लगते हैं। संचार और सम्पर्क के सभी स्थापित माध्यमों (जैसे पाठ्यपुस्तकों, अखबारों, पत्रिकाओं, रेडियो, टेलिविजन आदि) में इसी भाषा का प्रयोग होता है और इसी भाषा में पिछड़े होने के कारण बच्चे अन्य विषयों और समाज में पिछड़ जाते हैं। क्या यह आवश्यक है कि सभी बच्चों को यही भाषा सिखाई जाए? (असल में सिखाने के स्थान पर थोपना कहना आज के भाषा पढ़ाने के ढंग को ठीक से चित्रित करेगा)। क्या आप को ऐसा नहीं लगता कि आज की

सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थिति में यह आवश्यक है कि बच्चों किताबों और अखबारों में लिखी बात को पूरी तरह समझें? क्या यह समाज में परिवर्तन लाने के लिए जरूरी नहीं है? यदि समाज और उसकी गतिविधियों को समझना उसमें परिवर्तन लाने का पहला महत्वपूर्ण कदम है तो क्या समझ हमारे पाठ्यक्रम में नहीं दिखनी चाहिए? खासकर जबकि हम अपने आप को शिक्षा के प्रति प्रतिबद्ध कहते हैं।

इस सबके बाद हम पूछ सकते हैं कि, क्या हम बच्चे को उसकी भाषा में नहीं पढ़ा सकते? क्या उसकी ही भाषा में अखबार व किताबें नहीं उपलब्ध हो सकतीं? शायद वर्तमान में यह व्यावहारिक नहीं है। हम शायद यह तर्क भी दें कि व्यापक स्तर पर संवाद के लिए बच्चों को मानक भाषा पढ़नी आवश्यक है। माना कि एक ऐसी भाषा का होना जिसे समझते, बोलते हों आवश्यक है, परन्तु क्या यह मानकीकृत भाषा उसी तरह से पढ़ाई जानी चाहिए जिस तरह आजकल हम लोग अपने स्कूलों में पढ़ते-पढ़ाते हैं। क्या मानकीकृत भाषा पढ़ाने के लिए बच्चों की बोली को नकारना आवश्यक है? क्या भाषा शिक्षण बच्चे के पर्यावरण और उसकी रुचि से जुड़ा हुआ नहीं हो सकता? आप किसी भी पाठ्यपुस्तक को देखें अक्सर अध्याय ऐसे विषयों पर होंगे जिनमें आमतौर पर बच्चों की कोई रुचि नहीं होती और न ही बातों का बच्चों की जिन्दगी से दूर दराज का कोई संबंध होता है। भाषा ऐसी प्रयोग की जाती है जिसका बच्चों की घर परिवार की भाषा तथा उनकी ग्राह्य क्षमता से कोई तालमेल नहीं होता। इस बात का भी आमतौर पर कोई ध्यान नहीं रखा जाता है कि बच्चों को कैसे रंग, कैसे चित्र एवं कैसे उदाहरण अच्छे लगेंगे और उनके लिए सार्थक होंगे। शायद यह मान्यता है कि पाठ्यपुस्तकों को आकर्षक बनाना अपने आप में कोई महत्व नहीं रखता। क्या हम ऐसी पाठ्यपुस्तकें नहीं बना सकते जिनका आधार बच्चों की बातचीत हो? उनके अध्याय उनकी रुचि के विषयों पर हों, चित्र एवं उदाहरण ऐसे हों जो उन्होंने ही बनाए हों और जो उन्हें आकर्षित करें, जिसमें लिए गए चित्र उनकी समझ व उम्र के अनुरूप हो। भाषा सिखाने के लिए उनकी बोली का इस्तेमाल हो और उनकी बोली के कुछ शब्द भी किताब में हों।

अभ्यास

- हमारी भाषा में अन्य भाषाओं या बोली के शब्द आ जाने से वह अशुद्ध हो जाती है। क्या इस बात से सहमत है? क्यों या क्यों नहीं?

एक नया सवाल जो कि आमतौर पर भाषा की शुद्धता की वकालत करने वालों से है। यदि ऐसी पुस्तकों में बच्चों की भाषा के जिसे हम बोली कहते हैं, कुछ शब्द आ भी जाएँ तो क्या मानकीकृत भाषा बिगड़ जाएगी? क्या अन्य भाषाओं के भाव व अभिव्यक्ति के ढंग लेकर भाषा अशुद्ध हो जाती है? यदि हम ऐसा मान लें तो अन्य समाजों में उभरे नए-नए विचार हमारी भाषा में कैसे आएँगे? शायद अन्य बोलियों के शब्दों को लेने से हमारी भाषा और समृद्ध ही होगी।

क्या हमारे लिए यह सोचना आवश्यक नहीं है कि जब बच्चा कोई गलती करता है तो क्यों करता है? क्या उस गलती का कारण समझ कर उसे सिखाना सही तरीका नहीं है? वैसे कोई भी गलतियाँ किए बिना सीख ही नहीं सकता चाहे वह भाषा हो या और कुछ। गलतियों के आधार पर नई बातें सीखी जाती हैं। भाषा के संदर्भ में जिन्हें हम गलतियाँ कहते हैं, वह इस बात का भी दर्पण है कि बच्चे के चारों तरफ कैसी भाषा प्रयोग की जाती है। जिसे हम आमतौर पर गलतियाँ करना कहते हैं शायद वह भाषा बदलने की प्रक्रिया का आवश्यक अंग भी है। यदि भाषा स्थायी रूप से मानकीकृत हो जाए और कोई नयापन या परिवर्तन न होने दिया जाए तो क्या होगा? जरा सोचिए।

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

वास्तव में हमारे लिए मुख्य सवाल यह है कि भाषा पढ़ाने का उद्देश्य क्या है? भाषा सिखाने का हमारे लिए क्या महत्व है? बच्चे को भाषा सिखाने में हमारी क्या अपेक्षा है? क्या यही कि वह कुछ चुने हुए विषयों पर जटिल और व्यवस्थित शब्दों में निबन्ध इत्यादि लिख पाए जो उसे रटने ही पड़ेंगे, चाहे और किसी विषय पर वह दस लाइन भी न लिख सके? **क्या बच्चे के लिए ज्यादा उपयोगी है कि वह अपनी हर मात्रा और व्याकरण की गलती को सुधारे या यह कि वह शब्दों और वाक्य संरचना के लचीलेपन और विविधता का अहसास करें?** भाषा सीखने, बच्चे की स्वतंत्र अभिव्यक्ति का विकास और भाषा के लचीलेपन का इस्तेमाल करने की क्षमता, मात्रा और व्याकरण की शुद्धता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। क्या यह आवश्यक नहीं है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे को मानकीकृत भाषा सिखाने की अपेक्षा उसे अपनी भाषा में अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए और धीरे-धीरे एक सामंजस्य स्थापित करते हुए मानकीकृत भाषा सिखाई जाए?

अभ्यास

- आप किसको ज्यादा महत्त्व देंगे और क्यों?
 - सही उच्चारण अथवा स्वतंत्र अभिव्यक्ति?
 - मात्रा, व्याकरण की गलतियों अथवा भाषा सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए शुरुआत में इनको केन्द्र बिन्दु बनाना?
 - शुद्ध भाषा अथवा भाषा का उपयोग?
 - बच्चों के भाषा सीखने में किन-किन तत्वों का प्रभाव पड़ता है?
 - बच्चों के भाषा विकास के दौरान हमें किस प्रकार का धैर्य रखना चाहिए?
-



अध्याय 10

प्रारंभिक कक्षा में भाषा शिक्षण से जुड़ी चुनौतियाँ

परिचय:

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि बच्चों की भाषायी पृष्ठभूमि, घरेलू व सामाजिक स्थिति, घर में साक्षरता का परिवेश आदि बच्चों की भाषा और साक्षरता के अर्जन पर गहरा असर डालते हैं। प्रस्तुत पाठ में इन सभी कारकों पर चर्चा की गई है साथ ही इन सभी कारकों का ध्यान रखते हुए भाषा शिक्षण में इन्हें समावेशित करने पर भी बात की गई है।

उद्देश्य:

1. स्कूली भाषा और घर की भाषा में अंतर को समझना।
2. स्कूली भाषा व बच्चों की भाषा में अंतर होने के असर को समझना।
3. विविध पृष्ठभूमि (असाक्षर/साक्षर घरों वाले) बच्चों की समस्याओं को समझना।
4. विविध आयुस्तर के बच्चों की शिक्षण संबंधी चुनौतियों को समझना। बच्चों की समस्याओं को समझना।

भाषा शिक्षण से जुड़ी चुनौतियाँ:

पढ़ना-लिखना सीखने में चुनौतियाँ

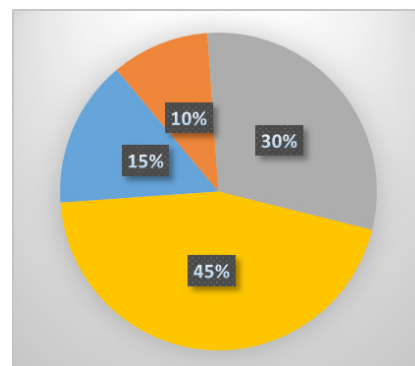
(अ) प्रारंभिक कक्षाओं में निम्न उपलब्धि:-

साक्षरता एक बुनियादी कारक है या कौशल जिसमें शामिल है सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना और इन चारों के केंद्र में है समझना। अगर बच्चे जल्दी और अच्छी तरह साक्षरता के सभी कौशलों को नहीं सीख पाते हैं तो वे अन्य कौशलों व ज्ञान पर महारत हासिल नहीं कर पाता। जो बच्चे कक्षा-1 और 2 में भाषायी कौशल सीखने में पिछड़ जाते हैं वे आगे की कक्षाओं में भी पिछड़ते ही चले जाते हैं और अन्य बच्चों के स्तर से उनका फासला बढ़ता ही चला जाता है लेकिन सामान्यतया प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों का अधिगम स्तर उनके अपेक्षित स्तर से बहुत कम होता है और उपलब्धि निम्न रह जाती है। आइए इसे समझते हैं। यहाँ ई. जी.आर अध्ययन को देखें यह शोध 2012 में हुआ था जिसके अंतर्गत, कक्षा 1 और 2 के 300 से अधिक भाषा कालांशों का अवलोकन किया गया था। आइए इस शोध में सामने आए एक परिणाम को देखें।

कक्षा 2-पठन स्थिति (ई.जी.आर अध्ययन 2012)

- वर्ण नहीं पढ़ सकते हैं
- हिज्जे करते हुए पढ़ते हैं
- थोड़ा समझते हैं
- प्रवाहपूर्वक पठन कर पाते हैं

- इस परिणाम के कई कारण हैं जैसे – 1.भाषा शिक्षण-संबंधित कारण,
2. व्यवस्था- संबंधित कारण और 3.विविधता आइए अब इन्हे समझें आइये समझें इन तरीकों को



भाषा शिक्षण—संबंधित कारण: यह कारण हमारी कक्षाओं में पढ़ना—लिखना सिखाने के प्रचलित तरीकों से जुड़े हैं —

1. चुप्पी की संस्कृति : अक्सर बच्चों को बोलने के बहुत कम अवसर मिलते हैं। इस कारण से बच्चे कक्षा से अच्छे से नहीं जुड़ पाते। साथ ही उन्हें पढ़ाए जा रहे पाठ या गतिविधियाँ उबाऊ लगती हैं। उनके मन में यह बात बैठ जाती है कि कक्षा में बात नहीं करनी होती। बोलने के अवसर से वंचित रखना बच्चों में सोचने और अर्थ—निर्माण की प्रक्रिया को बाधित करता है।

2. सामूहिक दोहरान : ज्यादातर कक्षाओं में पढ़ने के नाम पर बच्चे शिक्षक के पीछे शब्द—दर—शब्द दोहराते हैं। सामूहिक दोहरान पढ़ना सिखाने के लिए जरूरी गतिविधि है पर यह एकमात्र ही सबसे महत्वपूर्ण नहीं बच्चों को पढ़ना सीखने के लिए और भी रणनीतियाँ काम में लेनी होती हैं जिनके बारे में हम आगे के मॉड्यूल में पढ़ेंगे।

3. शब्द—पहचान शिक्षण : कक्षाओं में अधिकांश समय बच्चों को शब्द पहचान सिखाने के नाम पर वर्णमाला रटवाने का कार्य चलता है। यह शिक्षण पूरे साल चलता है और तब भी बच्चे शब्द पढ़ नहीं पाते क्योंकि वे वर्ण और मात्रा रटना सीख लेते हैं, उन्हें पहचानना नहीं साथ ही साथ वर्णों और मात्राओं को जोड़ने का कार्य भी सही ढंग से नहीं होता।

4. लिखना केवल नकल करने के रूप में : बच्चों को ज्यादातर लिखने के नाम पर बोर्ड से वर्णमाला और शब्द नकल करने को दिया जाता है। उन्हें स्वतंत्र रूप से लिखने का कोई अवसर नहीं मिलता। साथ ही बच्चे यह समझ लेते हैं कि लिखना मतलब अच्छी लिखावट और नकल करना होता है। वे लेखन को अभिव्यक्ति का माध्यम ना समझकर, मात्र एक यांत्रिक गतिविधि समझ लेते हैं, और आगे जाकर वे लेखन के प्रति डर विकसित कर लेते हैं।

5. सक्रिय भागीदारी की कमी : लोग तब सीख पाते हैं जब वे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से जुड़े हों। बच्चे तब किसी गतिविधि से सक्रिय रूप से जुड़ पाते हैं जब उन्हें प्रतिक्रिया देने, सोचने एवं बात करने के अवसर मिलें और साथ ही गतिविधियाँ रोचक हों लेकिन कक्षाओं की ऐसी बहुत—सी गतिविधियाँ होती हैं जिनमें दोहराव होता है और शिक्षक सभी बच्चों को भागीदारी का मौका नहीं देते।

गतिविधि: आपके कक्षा में इनमें से कौन—कौन सी गतिविधियाँ की जाती हैं?

1. शिक्षक पढ़ते हैं और बच्चे दुहराते हैं
2. पढ़कर सुनाना
3. चित्र बनवाना
4. बच्चे बोर्ड से देखकर बारहखड़ी लिखते हैं
5. वर्ण पहचान करवाना
6. वर्णमाला याद करवाना
7. बच्चों को किताबें पढ़ने को देना

व्यवस्था—संबंधित कारण जैसे :-

6. केवल पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण : कक्षाओं में ज्यादातर पाठ्यक्रम पूरा करने पर जोर रह जाता है जिससे पढ़ने का रिश्ता सिर्फ पाठ्यपुस्तकों और परीक्षा की तैयारी से ही जुड़कर रह जाता है। साथ ही पाठ्यपुस्तकों के पाठों का स्तर बच्चों के स्तर से ऊंचा होता है और कई पाठ रुचिकर और मजेदार नहीं होते हैं।

7. रोचक पठन सामग्री का अभाव : शिक्षण के लिए अन्य रोचक पठन सामग्री का उपयोग बहुत कम होता है। जैसे चित्रों वाली एवं सरल शब्दों व वाक्यों वाली किताबें, बिग बुक, पठन कार्ड, बालपत्रिकाएँ आदि

विविधता :

इस विविधता को तीन पहलुओं से देखा जा सकता है— भाषायी विविधता और बच्चों की पृष्ठभूमि में विविधता।

8. भाषायी विविधता : हमारे देश में विभिन्न भाषायी परिस्थितियाँ पाई जाती हैं। कई जगह, बच्चों की घर की भाषा स्कूल की भाषा से बहुत भिन्न होती है और बच्चों ने स्कूल की भाषा कभी नहीं सुनी होती। फिर कुछ बच्चों की भाषा क्षेत्रीय भाषा और स्कूल की भाषा से भिन्न होती है और कुछ बच्चों की घर में एक से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं पर स्कूल की भाषा भिन्न होती है। साथ ही स्कूल में अंग्रेजी पर जोर दिया जाता है जबकि अंग्रेजी सुनने और बोलने का माहौल घर पर नहीं होता है।

9. बच्चों की पृष्ठभूमि में विविधता : बहुत से बच्चों के घरों में पढ़ने-लिखने का माहौल नहीं होता जिसके कारण बच्चों को स्कूल के काम करने में मदद नहीं मिलती। साथ ही ऐसे बच्चे जब स्कूल में दाखिला लेते हैं तो वे पठन सामग्री जैसे किताबों एवं लिखित सामग्री से कम परिचित होते हैं। बहुत से बच्चों को प्री-प्राइमरी का अनुभव नहीं होता। इन बच्चों को औपचारिक शिक्षा की तैयारी नहीं मिली होती।

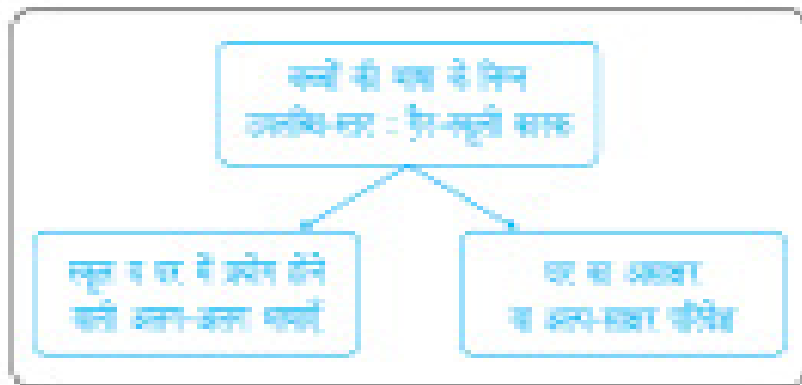
इन सभी कारणों को समझने के बाद यह समझना ज़रूरी है कि

- ✓ सभी बच्चे सीख सकते हैं।
- ✓ सीखना सभी बच्चों का अधिकार है।

इसलिए शिक्षा और स्कूली व्यवस्था का उत्तरदायित्व है यह सुनिश्चित करना कि सभी बच्चे सीखें और सभी में भाषायी कौशल विकसित हों। कक्षा में विविधता ऐसे कारक हैं जिनकी जानकारी हमें बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाती है और उन्हें सीखने के अवसरों और अभ्यास से वंचित रखने से रोकती है। साथ ही हमारे उत्तरदायित्व का एक सबसे ज़रूरी अंग है शिक्षण के तरीकों में बदलाव जिसपर हम विस्तार से आगे चर्चा करते रहेंगे।

(ब) प्रारम्भिक कक्षाओं में विविधता

हमने कक्षा में होने वाले शिक्षण के तरीकों पर बात की और साथ ही कुछ ऐसे व्यवस्था संबंधी कारण भी देखे जिनका आरंभिक भाषा शिक्षण और बच्चों द्वारा भाषा सीखने पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। लेकिन हम यह भी जानते हैं कि बच्चों की शिक्षा में उपलब्धि बहुत से ऐसे कारणों से जुड़ी रहती है जो स्कूल के बाहर के हैं। जैसे— बच्चों की भाषायी पृष्ठभूमि, घरेलू या सामाजिक स्थिति, घर में साक्षरता का परिवेश या उसका अभाव। ये सभी बच्चों की भाषा और साक्षरता के अर्जन पर गहरा असर डालते हैं। इस इकाई में हम इन कारकों में से दो पर ज्यादा ध्यान देंगे। ये हैं —



। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

1. स्कूली भाषा और घर की भाषा में अंतर

जब भी कोई बच्चा स्कूल में आता है तब वह अपने साथ भाषा के प्रयोग के अलग-अलग अनुभव लेकर आता है। असल में, स्कूल की शुरुआत करते समय बच्चों के भाषायी अनुभवों में भारी विविधता होती है। यह विविधता किस-किस प्रकार की हो सकती है। आइए, इस पर गौर करें।

गतिविधि :

नीचे लिखे वाक्यों में से उन वाक्यों को चुनें जो इस संबंध में आपको सही लगते हैं—

1. कई बच्चों के घर की भाषा स्कूल की भाषा से बहुत ज्यादा भिन्न है।
2. कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जिन्होंने स्कूल की भाषा कभी नहीं सुनी।
3. कुछ बच्चों की भाषा स्कूल की भाषा से कमतर होती है।
4. सभी बच्चों ने अपने घर पर लिखित सामग्री देखी होती है।
5. स्कूली भाषा को बच्चों के सामने लगातार बोलने से बच्चे उसे सीख जाते हैं।
6. कमजोर या बिना साक्षरता वाली पृष्ठभूमि से आने वाले सब बच्चों को पढ़ाना संभव नहीं है।

ऊपर दिए कई कथनों के पीछे बच्चे, उनकी भाषा, स्कूली शिक्षा के उत्तरदायित्व आदि के विषय में बड़े महत्वपूर्ण दृष्टिकोण छिपे हुए हैं। इनके बारे में हम आगे पढ़ते हुए धीरे-धीरे विस्तार से चर्चा करेंगे।

1.1 बच्चों की भाषा स्कूली भाषा से अलग होने का असर

आइए, देखें कि स्कूली भाषा और घर की भाषा का क्या असर शिक्षण और बच्चे पर पड़ता है। इसे समझने के लिए हम एक लेख पढ़ें

पढ़ें – अनिवार्य पठन सामग्री लेख संख्या 1, शीर्षक. स्टीरियोटाइप को चुनौती देना, पृष्ठ संख्या 55 पर पढ़ें।

गतिविधि—

लेख के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों पर विचार करें :

1. क्या आपको लगता है कि लमणी भाषा मराठी भाषा से कमतर है ? (हाँ/नहीं)
2. लमणी भाषा स्कूल में इस्तेमाल होने वाली मानक भाषा से किस तरह भिन्न है ? नीचे लिखे वाक्यों में से वे चुनें जो आपको सही लगते हैं—

क) यह भाषा एक खास समूह द्वारा ही बोली जाती है।

ख) यह असल में भाषा नहीं, बोली है।

ग) इस भाषा का केवल बोलचाल से संबंध है, लिखने-पढ़ने से नहीं।

घ) इस भाषा में दूसरों के प्रति सम्मान दिखाने की गुंजाइश नहीं है।

ङ) इस भाषा में बोल-चाल को सुधारना ज़रूरी है।

च) यह भाषा संप्रेषण करने में कमजोर है।

असल में, लेख में यह भी देखा जा सकता है कि समाज में अन्य कई लोग भी इस भाषा के शब्द का प्रयोग

करते हैं। केवल स्कूल में ही इसका उपयोग पूरी तरह वर्जित है।

भाषा के संबंध में कई सामाजिक दृष्टिकोण भी होते हैं। कई ऐसे समूह जो अक्सर सामाजिक या सांस्कृतिक दृष्टि से हाशिए पर होते हैं, उनकी भाषा को कमतर माना जाता है।

जिन भाषाओं की अपनी अलग लिपि या लिखित सामग्री नहीं है, उन्हें नीची समझने की एक पुरानी परंपरा चली आ रही है, चाहे उस भाषा में कितना भी समृद्ध ज्ञान, गीत, कविताएँ, कहानियाँ आदि क्यों न हों। लिखित साहित्य के अभाव में इन्हें बोली कहकर कम दर्जा दिया जाता है। भाषा विज्ञान में होने वाले बहुत सारे शोधों ने दर्शाया कि सभी भाषाएँ अपनी संप्रेषण क्षमता में किसी भी रूप में अन्य भाषाओं से कम नहीं होती।

बहुत से ऐसे अध्यापक हैं जिनकी मातृभाषा हिंदी से अलग है वे अपनी भाषा को हिंदी से कमतर मानकर बोली ही कहते हैं, जिसे कक्षा के अंदर प्रयोग करना उपयुक्त नहीं है। कभी-कभी तो भाषाओं के बारे में पूर्वाग्रह इतने गहरे होते हैं कि 'भिन्न' भाषा बोलने वाले बच्चों को मंदबुद्धि या सीखने में अक्षम माना लिया जाता है।

आइए, नीचे हम अमेरिका के एक अल्पसंख्यक समुदाय की एक लड़की की आप बीती पढ़ें। यह दर्शाती है कि भाषा के उच्चारण का फ़र्क किस प्रकार किसी बच्चे के सीखने के आत्मविश्वास को नष्ट करने का निर्मम हथियार बन जाता है।

केस स्टडी—

भाषा और घरेलू माहौल

जब मैं जूनियर (हाईस्कूल) में थी तो मेरे मम्मी-डैडी ओहायो आकर बस गए थे। मेरे लिए यह बदलाव बड़ा मुश्किल साबित हुआ। मैं नए स्कूल में तो जाने लगी मगर वहाँ फिट नहीं हो पाई। घर पर (केंटकी) में पढ़ाई में काफी अच्छी थी। बल्कि अपनी उम्र के हिसाब से एक साल आगे ही थी। मगर जब मैं वहाँ (ओहायो) आई तो सभी कुछ अलग तरह का था। कभी-कभी मुझे समझ में ही नहीं आता था कि अध्यापिका ने क्या बोला। वे बहुत तेज़ बोलती थी। एक बार मेरी अध्यापिका ने मुझसे कहा कि मैं पूरा कक्षा के सामने बोल-बोलकर पढ़ूँ ताकि मुझे पढ़ने में मदद मिले। मैं पढ़ सकती थी मगर उनके हिसाब से मैं शब्दों को सही ढग से नहीं बोल पाई। जब भी मैं कोई शब्द गलत कहती तो वे मुझे उसी शब्द को बार-बार दोहराने के लिए बोलतीं। मैंने भरपूर कोशिश की, सच में कोशिश की। पर मैं नहीं कर पाई। तकरीबन हर रोज मैं रोती हुई घर लौटती। मेरी अध्यापिका सबके सामने मुझे बेवकूफ़ बुलाती थीं। वे बोलती थीं कि मैं अनपढ़ हूँ, कभी कुछ नहीं सीख सकती, मुझसे कोई उम्मीद नहीं की जा सकती। मैं इस अनुभव को कभी नहीं भूल पाऊँगी। कभी भी नहीं। तब (मम्मी और डैडी ने) मुझे वापस (केंटकी) आ जाने दिया। उनको मालूम था कि मैं उस स्कूल में एक साल और नहीं रह पाऊँगी। मुझे अभी भी पहाड़ों के बाहर जाने से नफ़रत है। वहाँ के बहुत सारे शब्द मैं अब नहीं बोलती क्योंकि मैं उन्हें ठीक से नहीं बोल पाती। जैसे — फ़्र-स्ट्रे-टेड। मैं इस शब्द को बोलने की कभी कोशिश भी नहीं करूँगी।

ऊपर बताई केस स्टडी में हम इस बच्ची के साथ होने वाला अन्याय साफ़-साफ़ देख सकते हैं। क्योंकि यह बच्ची यहाँ पर अपनी भावनाएँ और अनुभव बता रही है। पर असल में हमारे आस-पास ढेरों ऐसे बच्चे हैं जो इसी तरह की स्थितियाँ स्कूल में रोज़ झेलते हैं और अपनी घुटन और पीड़ा किसी को बता नहीं पाते।

1.2 भाषायी विविधता

आइए, हमारे देश के ज्यादातर हिस्सों में दिखने वाली भाषा की विविधता के बारे में सोचें। आपने जिस इलाके में जन्म लिया है वहाँ पर कितनी भाषाएँ या बोलियाँ चलती हैं, इसके बारे में सोचें। असल में भारत में भाषायी स्थिति विविध और लचीली है। थोड़ी-थोड़ी दूर पर बोलचाल का ढंग बदल जाता है।

भारतीय जनगणना के आँकड़ों के अनुसार पूरे देश में कुल मिलाकर लगभग 1600 से अधिक भाषाएँ अथवा बोलियाँ बोली जाती हैं। इनमें से केवल 29 भाषाएँ ही प्राइमरी स्तर पर शिक्षण के माध्यम के रूप में इस्तेमाल की जाती हैं।

किसी भी क्षेत्र में कई भाषाएँ हैं। लोगों के आने-जाने, अन्य जगहों पर जाकर काम करने, और बसने के कारण भाषाओं का लगातार मिश्रण और अंतःक्रिया चलती रहती है। इस बारे में हमारी जानकारी बहुत कम है कि जब पाँच-छह साल के बच्चे स्कूल जाना शुरू करते हैं तो उनकी भाषा की स्थिति क्या होती है ?

बच्चे की प्रथम भाषा या 'L1' वह भाषा होती है जिसे वह सबसे अच्छी तरह बोल पाता है। आमतौर पर यह वह भाषा होती है जो बच्चा जन्म से ही सीखता है। यह जरूरी नहीं है, लेकिन अक्सर यह भाषा उसके सामाजिक समूह की मातृभाषा के रूप में भी जानी जाती है।

बच्चों के भाषायी भंडार में ऐसी भाषाएँ हो सकती हैं जो वे धाराप्रवाह बोल सकते हैं: ऐसी भी हो सकती हैं जिन्हें वे काफी हद तक समझ सकते हैं और ऐसी भी जिन्हें वे बहुत कम समझ पाते हैं। शुरुआती वर्षों में पढ़ना-लिखना सीखने के तरीके तय करने के लिए यह जानकारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। फिर भी कुछ सामान्य बातें सहज रूप में दिखाई पड़ती हैं। ये निम्न हैं –

1 भाषाविद् इस बात पर सहमत हैं कि ज्यादातर बच्चे बहुभाषी होते हैं, यानी वे एक से ज्यादा भाषाएँ बोल सकते हैं।

2 बहुत से सर्वेक्षण यह दिखाते हैं कि स्कूल में दाखिल होने वाले बहुत से बच्चों के पास स्कूल की मानक भाषा की समझ बहुत कम होती है।

3 भाषायी स्थिति का एक अन्य पहलू यह है कि बहुत-सी कक्षाओं में कई प्रथम भाषाओं वाले बच्चे होते हैं।

1.3 पाठ्यक्रम एवं शिक्षण में भाषा संबंधी मान्यताएँ

हमारे देश में कक्षा 1 और 2 का भाषा-पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें नीचे लिखी मान्यताओं के अनुसार बनी होती हैं –

1 यह मान लिया जाता है कि पाठ्यपुस्तक की मानक भाषा ही सभी या ज्यादातर बच्चों की प्रथम भाषा है। यह धारणा है कि स्कूल में दाखिला लेते समय सब बच्चे मानक भाषा को जानते हैं और अच्छी तरह बोल सकते हैं। इस धारणा के कारण भाषा शिक्षण का उद्देश्य केवल बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाना माना जाता है और मानक भाषा से परिचय की जरूरत नहीं मानी जाती।

2 एक अन्य धारणा यह भी कि कक्षाएँ एक-भाषी हैं, यानी कक्षा के सभी बच्चों की प्रथम भाषा एक जैसी है और वे उसे अच्छी तरह बोलना जानते हैं

इन दोनों गलत धारणाओं के कारण भाषा शिक्षण में गंभीर दोष पैदा हो जाते हैं। भाषा पढ़ाने के लिए जो तरीके अपनाए जाते हैं, वे किसी नई या अपरिचित भाषा सीखने के लिए उपयुक्त नहीं हैं। कक्षाओं में सामूहिक दोहरान तथा नकल करके उतारने पर पूरा जोर होता है, जो नई भाषा की सीखने में कोई मदद नहीं करता। शिक्षक से भी केवल यही उम्मीद होती है कि वह भाषा की पाठ्यपुस्तक को पहले पन्ने से आखिरी पन्ने तक पूरी करवा दें।

गतिविधि –

- प्रश्न 1. आपके अनुसार कक्षा में बच्चों की भाषा/भाषाओं का प्रयोग करना क्या सही है ? (हाँ/नहीं)
- प्रश्न 2. क्या आपने ऐसी कक्षाएँ देखी हैं जिनमें मानक भाषा के अलावा कुछ अन्य भाषा का प्रयोग होता है? (हाँ/नहीं)
- प्रश्न 3. क्या बच्चों की भाषा के प्रयोग से बच्चों के हिंदी सीखने पर बुरा असर पड़ सकता है ?
- प्रश्न 4. क्या बच्चों की भाषा की सहायता लेने से बच्चे बेहतर हिंदी अथवा अंग्रेजी सीख सकते हैं ?
- प्रश्न 5. जिन बच्चों की प्रथम भाषा स्कूल की भाषा से अलग हो, वे किस भाषा में सोचत होंगे ?
(उनकी प्रथम भाषा या फिर स्कूल की भाषा जो वे अच्छी तरह नहीं जानते)

हम देख सकते हैं कि बहुभाषी कक्षाओं को पढ़ाना अध्यापक के लिए आसान नहीं है, खास करके तब, जब अध्यापक खुद बच्चों की भाषाएँ नहीं समझते। ऐसे में अध्यापक की कठिनाई उस पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए और ज्यादा बढ़ जाती है जो केवल एक मानक भाषा के अनुसार ही बना होता है और वास्तव में बच्चों की भाषा इस 'मानक भाषा' से बहुत अलग है।

इन अनुभवों में हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि बच्चों और शिक्षक के बीच भाषायी दूरी शिक्षण को लगभग पूरी तरह व्यर्थ कर सकती है। दूसरी ओर भाषायी दूरी को पाटने की शिक्षिका की थोड़ी कोशिश से भी बच्चे शिक्षिका के साथ पूरी तरह जुड़ने लगते हैं। इस लेख में यह बहुत साफ दिखता है कि बच्चों की प्रथम भाषा को बोलने देने का अनुभव बच्चों के लिए बिल्कुल नया और आश्चर्यजनक था, अन्यथा अपनी प्रथम भाषा की उपेक्षा को वे एक कड़वी सच्चाई के रूप में स्वीकार करके सीखने की आशा खो चुके थे।

जहाँ तक हो सके, प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षण का माध्यम बच्चों की प्रथम भाषा ही होनी चाहिए। जो बच्चे पहले अपनी भाषा में पढ़ना –लिखना सीखते हैं और अन्य विषयों की पढ़ाई भी परिचित भाषा में करते हैं, उनका संज्ञानात्मक विकास बेहतर होता है, यह कई अध्ययनों में पाया गया है। शायद हर परिस्थिति में यह संभव नहीं हो। यदि बच्चे अपनी पढ़ाई एक अपरिचित भाषा से शुरू करते हैं, तो उन्हें स्कूली भाषा सीखने के लिए समय और भाषा शिक्षण के अच्छे तरीके मिलने चाहिए।

अपरिचित भाषा को सीखने के प्रयास में बच्चों की प्रथम भाषा में प्रयोग करना बहुत जरूरी है। एक नई भाषा सीखने के लिए उस भाषा को सुनने और उसमें बातचीत के समृद्ध और सार्थक अवसर मिलने चाहिए जिससे बच्चे स्वाभाविक परिवेश में, बिना डरे हुए, धीरे-धीरे उस भाषा की सीख सकें। बच्चों की प्रथम भाषा का प्रयोग कक्षा में बच्चों को सोचने और तर्क करने जैसे उच्च-स्तरीय कौशलों के विकास के लिए बहुत जरूरी है।

2. असाक्षर या अल्प-साक्षर घरों से आने वाले बच्चे

स्कूल में दाखिला लेते समय सभी बच्चों की मौखिक भाषा समृद्ध होती है और वे अपनी भाषा में धारा प्रवाह रूप में बोल सकते हैं। फिर अल्प-साक्षर परिवारों के बच्चों को स्कूल में पढ़ना-लिखना सीखने में समस्याएँ क्यों आती है ?

गतिविधि –

नीचे लिखे कारणों में से जो भी आपको सही लगते हैं, चुनें –

1. कमजोर पृष्ठभूमि के बच्चों को घर में छपी सामग्री का कोई अनुभव नहीं मिलता।
2. कमजोर भाषायी पृष्ठभूमि के कारण बच्चों के पास शब्दों का भंडार कम होता है।
3. घर में इन बच्चों के पास स्कूल के काम में मदद देने वाले लोग नहीं होते।
4. स्कूल में दाखिले के समय ये बच्चें औपचारिक या किताबी शब्दों से कम परिचित होते हैं।
5. कमजोर सामाजिक पृष्ठभूमि के बच्चों को पढ़ाई में कोई रूचि नहीं होती।

विक्टोरिया परसेल गेट्स एक सुप्रसिद्ध चिंतक है, जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साक्षरता एवं भाषा शिक्षा के लिए बेहतरीन काम किया है।

नीचे हम उनके एक लेख के प्रमुख विचार दे रहे हैं: गैर-साक्षर परिवारों में न लिखित सामग्री होती है और न पढ़ने-लिखने का कोई अनुभव। ये बच्चे जब स्कूल आते हैं तो लिखित सामग्री से परिचय करवाने या उससे कोई लगाव बनाने के लिए कुछ खास समय नहीं दिया जाता। शुरुआती शिक्षण सीधे-सीधे अक्षर – ध्वनि संबंध बनाने पर होता है जिसे ये बच्चे बिलकुल नहीं समझ पाते।

इस तरह के गैर-साक्षर और भिन्न परिवारों से आने वाले बच्चों को किन प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है, आइए. देखें:

- 1 स्कूल से पहले इन बच्चों को पढ़ने और लिखने के उद्देश्य के बारे में बिलकुल पता नहीं होता।
- 2 उन्हें लिखित सामग्री से उनका बिलकुल परिचय नहीं होता।
- 3 अक्सर स्कूल में इस्तेमाल होने वाली मानक भाषा से लिखित भाषा में इस्तेमाल होने वाली शब्दावली और वाक्य संरचना से वे परिचित नहीं होते, जैसे कि लिखित कहानी के रूप से। यह बात समझना बहुत जरूरी है कि लिखित भाषा केवल मौखिक भाषा को लिख भर देने से नहीं बनती। लिखित भाषा मौखिक भाषा से अलग होती है। इसके बारे में हमने मॉड्यूल-1 से पृष्ठ 17 पर पढ़ा था।

2.1 स्कूल से पहले पढ़ने और लिखने के अनुभव

मध्यम वर्गीय घरों से आने वाले बहुत से बच्चों को घर पर साक्षरता का भरपूर माहौल मिलता है। उनके पास घर में रोचक कहानियों की किताबें होती हैं। उनकी दुनिया में छपी सामग्री की भरमार होती है, जैसे – कैलेंडर, खत, फोन, डायरेक्टरी, संदेश, मैनुआल आदि। ये वे परिवार हैं, जहाँ लिखित सामग्री परिवार के जीवन के ताने-बाने का अभिन्न हिस्सा होता है। बच्चे अपने माँ-बाप को अखबार या पत्रिकाएँ पढ़ते, कुछ लिखते हुए यानी जिदगी के कई कामों के लिए अक्षर ज्ञान का इस्तेमाल करते देखते हैं। कई अभिभावक बच्चों को कुछ पढ़कर सुनाते भी हैं। इस तरह इन बच्चों को लिखित भाषा के बारे में कई बातें सहज ही पता लग जाती हैं।

उन्हें पता लग जाता है कि हम जो बोल रहे हैं उसे लिखा भी जा सकता है। कई बार वे बच्चे कहानी की किताबों के पन्ने पलटते हुए पढ़ने का नाटक भी करते हैं। वे अपनी बनाई तस्वीरों पर नाम लिखने का या अपना नाम लिखने का अभिनय करते हैं, जिस पर माँ-बाप उन्हें शाबाशी देते हैं। उन्हें अस्पष्ट या प्रतिनिधि लेखन का भी मौका मिलता है। ये बच्चे लिखित भाषा की दुनिया में जन्म लेते हैं। इस प्रकार मध्यवर्गीय बच्चे स्कूल से पहले ही प्रिंट के बारे में जान जाते हैं। घर में लिखने के कारण वे ये बातें समझ चुके होते हैं :

1. बोलचाल और प्रिंट का संबंध

2. लिखाई के नियम, जैसे – सीधे लाइन में लिखना, लिखाई की दिशा, शब्दों और पंक्तियों के बीच दूरी आदि।

3. लेखन संबंधी शब्दावली, जैसे– अक्षर, वाक्य और शब्द लिखाई की ऐसी अव्यक्त समझ होने से उन्हें स्कूल में सीखने में स्पष्ट लाभ मिलता है। खासकर यह समझ कि लिखित भाषा हमारी मौखिक भाषा को लिपि बद्ध करने का एक तरीका है।

उन्हें समझ आता है कि पढ़ना-लिखना जीवन का एक हिस्सा है। यह ऐसी चीज है जिसे वे चलने-भागने जैसी क्रिया की तरह जल्दी ही सीख लेंगे। इन सब कारणों से उनके लिए डिकोडिंग का नया कौशल सीखना ज्यादा आसान होता है। कई बच्चे तो घर पर या फिर प्री-स्कूल में अक्षर भी सीख चुके होते हैं।

इसके विपरीत असाक्षर या अल्प-साक्षरता वाले घरों में लिखित सामग्री से कोई नियमित संबंध नहीं होता। ये बच्चे व्यस्कों को पढ़ते लिखते भी नहीं देखते। यदि घर में कुछ प्रिंट सामग्री होती भी है, जैसे-डिब्बों, बोतलों पर छपे लेबल आदि, बच्चे उनका इस्तेमाल घर पर होते हुए नहीं देखते, ज्यादातर ये बच्चे प्राथमिक स्कूल से पहले प्री-स्कूल भी नहीं जाते।

इस प्रकार अल्पसाक्षर संस्कृतियों में जन्मे बच्चों की कक्षा में स्थिति एक प्रवासी जैसी होती है। लिखना पढ़ना सीखना उनके लिए इतना स्वभाविक नहीं है। शुरु से ही उन्हें ऐसे चिह्नों से जूझना पड़ता है। इसके लिए उन्हें कहीं ज्यादा प्रयास, समय और ध्यान देने की जरूरत होती है। दूसरी ओर, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन इसमें कोई मदद नहीं करता, उल्टे बाधा डालता है।

जब ये बच्चे पहली बार स्कूल आते हैं तो यह महसूस करते हैं कि लिखित भाषा के उद्देश्य उनके लिए पराए हैं, शब्दावली बहुत कठिन और उनके दैनिक जीवन से बहुत दूर है। कहानियों का जटिल वाक्य विन्यास समझना आसान नहीं है। बहुत सारी मदद, प्रोत्साहन और प्रयास के बिना उनकी प्रगति अपने उन सहपाठियों के मुकाबले कम रहती है जो कि एक शिक्षित और साक्षर दुनिया के निवासी हैं स्कूल असल में पढ़े-लिखे मध्यवर्गीय परिवारों के बच्चों की जरूरत के अनुसार बनाया गया है और इस वातावरण में गरीब तथा साँस्कृतिक व भाषा की दृष्टि से भिन्न समुदायों के बच्चों को पढ़ना-लिखना सीखने में कहीं अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

3. बच्चों में विविधता का एक और मुद्दा

प्रारंभिक कक्षाओं में अलग-अलग उम्र के बच्चे होते हैं। अस्सर (2013) के सर्वेक्षण में पाया गया कि कक्षा 1 में पढ़ रहे एक चौथाई से ज्यादा बच्चों की उम्र 5 साल या उससे कम थी। कक्षा 1 के बहुत से बच्चे

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

बिना प्री-प्राइमरी शिक्षा (1-3 साल की) किये हुए कक्षा 1 में दाखिला लेते हैं। इन बच्चों की औपचारिक शिक्षा प्रक्रिया में शामिल होने की तैयारी बहुत कम होती है। इस तैयारी की कमी की वजह से इन बच्चों को, शुरुआती महीनों में और पहली कक्षा में सीखने-सिखाने के औपचारिक तरीकों और पढ़ाई-लिखाई की रफ्तार और विषयवस्तु को समझने में बहुत मुश्किल होती है। इसका नतीजा यह होता है कि बहुत सारे बच्चे शुरु करने से पहले ही पीछे छूट जाते हैं।

4. इस स्थिति को कैसे संभालें?

हमने ऊपर चर्चा की कि कैसे और किस तरह भिन्न भाषायी परिवेश और गैर-साक्षर अथवा अल्प-साक्षर पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को शुरुआती सालों में स्कूल में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ये बच्चे पढ़ना और लिखना सीखने में पीछे रह जाते हैं। अवश्य ही यह हम सभी के लिए एक गंभीर चुनौती है और समस्या भी। एक देश या समाज के रूप में हमारे पास कुछ अलग-अलग रास्ते हैं।

1. क्योंकि स्कूल के बाहर के कारकों को स्कूल नहीं बदल सकता, तो हमें भाषायी भिन्नता वाले बच्चों की चिंता करनी छोड़नी होगी। जितना 'अभाव' या 'गैप' इन बच्चों की भाषा, प्रिंट की समझ आदि में स्कूल की शुरुआत में होता है, उसे एक शिक्षक के लिए पाटना बहुत मुश्किल है। स्कूल को तो बनाए पाठ्यक्रम के हिसाब से ही चलना पड़ता है।

2. स्कूल और शिक्षा व्यवस्था का दायित्व हर बच्चे को शिक्षित करने का है, स्कूल को इस समस्या का हल करने के लिए खुद को बदलना होगा। हमें यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि स्कूली व्यवस्था में सब कुछ (किताबें, भाषा, शिक्षा का तरीका, बच्चों की भाषा का प्रयोग, स्कूल का टाइम टेबल) पूर्णतः निश्चित हैं, जिन्हें बदला नहीं जा सकता। अब यदि हमारे स्कूलों में जिस पृष्ठभूमि वाले बच्चे हैं उनके लिए हमारा पाठ्यक्रम और शिक्षण के तरीके उपयुक्त नहीं हैं तो इनके लिए हमें कुछ 'विशेष' और 'अधिक' करना होगा।

कुछ प्रश्न

1. "बच्चों की भाषा, स्कूली भाषा से अलग होने का असर नकारात्मक होता है"। कथन के पक्ष या विपक्ष में अपने तर्क रखिए ?
2. "भाषायी विविधता को संसाधन के रूप में उपयोग करना शिक्षक के सर्वोच्च हित में रहता है"। इस कथन के परिप्रेक्ष्य में अपने विचार उदाहरण सहित रखिए ?
3. "भाषा संबंधी मान्यताएं" बच्चों के सीखने पर किस प्रकार अपना असर दिखाती है। समझाइए ?
4. "स्कूल से पहले के पढ़ने लिखने के अनुभव" औपचारिक शिक्षा की दशा दिशा और गति तय करने के महत्वपूर्ण तत्व है" कथन की विवेचना कीजिए ?
5. "क्या आपको भी लगता है कि बच्चों की मातृभाषा स्कूल की भाषा से कमतर होती है।" अपने विचार तर्क सहित रखिए ?
6. लेखन क्या है ?
7. 'चुप्पी की संस्कृति' से क्या तात्पर्य है ?



बातें, पढ़ना, निजी संसार गढ़ना

अध्याय : 11. बातें करना :

अध्याय : 12. पढ़ना यानी एक सृजनात्मक अनुभव :

अध्याय : 13. पढ़ना कैसे सिखाया जाए? :

कहते हैं :

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ

पंडित हुआ न कोय,

ढाई आखर प्रेम का

पढ़े सो पंडित होय।

जब खुदा ने पहली बार हजरत मुहम्मद से बात की, उन्होंने जिब्रील के हाथ संदेश भेजा। संदेश था : 'पढ़'। हजरत मुहम्मद ने कहा कि लेकिन वे तो 'उम्मी' (निरक्षर) थे, फिर कैसे पढ़ सकते हैं? खुदा गलत नहीं हो सकते। सो जिब्रील ने तीन बार जोर देकर कहा 'पढ़'। फिर हजरत मुहम्मद ने 'पढ़ा', और बात आगे बढ़ी।

इन सब में पढ़ने का मतलब क्या है? नल, जल, जग, कर, सर, या फिर सड़क, कमल, मबर, रहट, वगैरह? जब टीचर यह सब 'पढ़ा' रहा होता है बच्चे बोर होकर आपस में बातें करने लगते हैं। खामोश। आपस में बातें करना जुर्म है, टाइम जाया होता है, बच्चा नालायक रहता है, माँ-बाप परेशान होते हैं, डिसिप्लिन खराब होता है। कोहराम मच जाता है। हेडमास्टर आकर देखता है, समझता है कि टीचर ढीला है। कमाल है।

रटना या पढ़ना? रटने की परम्परा पुरानी है, मगर अब साबित हो गया है कि रटना समझकर पढ़ने का दुश्मन है। क्लास में बच्चों की आपसी बातचीत से पढ़ाई बेहतर सीखी जाती है, बनिस्बत किताबी रटत से। बच्चों की बातचीत सुनना, फिर बारीक सवाल करके बातचीत आगे बढ़ाना, फिर बातों से बच्चों को कहानी सुनाना, फिर उन्हीं को कहानी बनाने पर शाबासी देना – इन सब से बच्चे बढ़िया पढ़ाई करना सीखते हैं।

हर बच्चे का, इंसान का, अपना निजी संसार होता है जिसमें उसके जीवन भर के अनुभवों, भावनाओं, कल्पनाओं, आइडियाओं, जानकारीयों, आदि का बना एक महाकंप्यूटर होता है। और पढ़ते वक्त पढ़े जा रहे शब्दा, वाक्यों का इस निजी महाकंप्यूटर के साथ आमना-सामना होता है। एक जटिल गुत्थम-गुत्था होती है जिससे 'समझ' पैदा होती है – निजी और बाहरी संसार मिलकर एक हो जाते हैं। पढ़ना अनोखी चीज़ है। तोता पंडित नहीं होता, सिर्फ नकल करता है।

इस अनोखी चीज़ को सिखाया कैसे जाए? टीचर कैसे बच्चे का महाकंप्यूटर बाहरी दुनिया से जोड़ सकता है? पढ़ना सिखाने में क्या-क्या रूकावटें आ सकती हैं? गतिविधियों का इस्तेमाल कैसे किया जाना चाहिए?

इन सवालों के जवाब अब हमें हासिल हैं। 'पढ़ के' देखो।

अध्याय – 11

बातें करना

परिचय :

हम सभी का प्राथमिक शालाओं के बारे में शुरुआती अनुभव यह बताता है कि हम अपनी कक्षाओं में बच्चों का एक-दूसरे से बातचीत करना पसंद नहीं करते हैं। हम यह सोचते हैं कि हमारी कक्षाएँ ऐसी हो जहाँ बच्चे शांत बैठे हों, अनुशासित हों आपस में बात करने की बजाए चुपचाप बैठकर शिक्षक की सुनें। जबकि हमें प्राथमिक शालाओं में आने वाले बच्चों की रुचि के विषयों के बारे में उनके किस्से, कहानियों को जानकर उन पर कक्षा में ढेरों बातचीत के अवसर देना चाहिए ताकि बच्चे कक्षा में अपनापन महसूस कर सकें और पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में सहजतापूर्वक भाग ले सकें। साथ ही हमें बातचीत के ऐसे अवसर जानने या पता करने होंगे जो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाते हों। हम लेख में कक्षा में बातचीत क्यों जरूरी हैं या क्या फायदे हैं इसके बारे में और गहराई से पढ़ेंगे।

उद्देश्य :

- शिक्षक यह समझ पाएँगे कि प्राथमिक शालाओं में बच्चों का आपस में बातचीत करना सीखने का माध्यम है।
- शिक्षक ऐसी गतिविधियों को पहचान पाएँगे जहाँ बच्चे एक-दूसरे से बात कर सकें।
- शिक्षक कक्षा-कक्ष में ऐसी गतिविधियों का संचालन कर पाएँगे जो बच्चों को बातचीत के लिए प्रेरित कर पाएँ?

हमारे स्कूलों में 'बात करना' प्रायः गलत समझा जाता है। यह माना जाता है कि यदि कोई बात कर रहा है तो ठीक से पढ़ाई नहीं कर रहा होगा। इसलिए जैसे ही अध्यापक बच्चों को बात करता हुआ देखता है, वह तुरंत उन्हें रोकता है। बात करने की छूट बच्चों को सिर्फ आधी छुट्टी में रहती है जब अध्यापक कोई खास काम नहीं कर रहा होता है।

बातचीत के प्रति उपेक्षा की वजह से हम शिक्षा में बातचीत के उपयोगों की अवहेलना करते आ रहे हैं। यह स्थिति सभी स्तरों पर है, पर प्रारंभिक स्तर पर यह सबसे ज़्यादा है। नर्सरी व प्राइमरी स्कूल के बच्चों के लिए बातचीत करना सीखने और सीखी हुई चीज को सुदृढ़ बनाने का एक बुनियादी माध्यम है। सच तो यह है कि ऐसे अध्यापक, जो बच्चों को बात नहीं करने देते, वे किताबों व अन्य सामग्री के लिए पैसे की कमी की शिकायत करने के हकदार नहीं हैं। वे पहले ही एक ऐसा बेशकीमती साधन बेकार जाने दे रहे हैं जिसके लिए कोई पैसा नहीं खर्च करना पड़ता। इसलिए ऐसा स्कूल जहाँ छोटे बच्चे बात करने को स्वतंत्र नहीं, बड़ा फिजूलखर्च स्कूल कहलाएगा।

यह सही है कि बच्चे तरह-तरह के उद्देश्य लेकर बातचीत करते हैं और ये सभी उद्देश्य अध्यापक के लिए उपयोगी नहीं कहे जा सकते। उदाहरण के लिए बोरियत के मारे बात करने और दूसरे की निगाह से चूकी हुई चीज उसे दिखाने के लिए बात करने में फर्क है। दूसरी किस्म की बात बच्चे की सीखने की प्रक्रिया को बल देती है, जैसा कि दो बच्चों के इस संवाद में हो रहा है। ये बच्चे अध्यापिका की मेज के पास इंतजार

में खड़े फुसफुसा रहे हैं और अध्यापिका रजिस्टर भरने में लगी है:

यदि आप इस छोटे-से संवाद का विश्लेषण करें तो सीखने की उन संभावनाओं को पहचान सकेंगे जो बातचीत के जरिए ही इन दो बच्चों को उपलब्ध हुई। यदि पहले बच्चे न अध्यापिका की अंगूठी देखकर बात नहीं छोड़ी होती तो उसे यह **याद करने** का मौका न मिलता कि बहन जी पहले भी अँगूठी पहनती थी। यदि यह बातचीत न हुई होती तो दूसरे बच्चे को पुरानी और नई अँगूठी में **फर्क देखने** का अवसर न मिलता, न ही यह समझने का अवसर मिलता कि 'छोटी' और 'पतली' में क्या भिन्नता है। बातचीत के इन उपयोगों के प्रति सचेत होने के लिए जरूरी है कि हम बच्चों की बात सुनने की आदत डालें। यह कहना आसान है, पर इसे करना इसलिए मुश्किल है क्योंकि बड़े यह मानकर चलते हैं कि उनका काम बच्चों को हुकम देना है और बच्चों का काम हुकम सुनना है। बच्चों की बातचीत के अच्छे श्रोता बनने के रास्ते में यह मान्यता अड़चन पैदा करती है। अच्छे श्रोता से मेरा आशय एक ऐसे व्यक्ति से है जो बात के सूक्ष्म उद्देश्य और बातचीत के कारण पैदा हुई सीखने की संभावनाओं को धैर्यपूर्वक पहचान सके।



किसी भी आम स्थिति में बातचीत में मस्त बच्चे ये दस क्रियाएँ करते नजर आ सकते हैं:

1. जिस चीज पर अभी तक ध्यान नहीं दिया, उस पर ध्यान देना,
2. उसे मोटे तौर पर या बारीकी से देखना,
3. अपने-अपने निरीक्षणों का आदान-प्रदान करना,
4. निरीक्षणों को तरतीब से लगाना,
5. दूसरे के निरीक्षण को चुनौती देना,
6. निरीक्षण के आधार पर तर्क करना,
7. भविष्यवाणी करना,
8. पिछले किसी अनुभव को याद करना,
9. दूसरे की भावनाओं या उसके अनुभवों की कल्पना करना,
10. किसी काल्पनिक स्थिति में अपनी भावनाओं की कल्पना करना।

1. डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

अगर आप बच्चों की बातचीत को ध्यानपूर्वक सुनने की आदत डाल लें तो आप जल्दी ही इन दस और कई अन्य संभावनाओं में फर्क करने में समर्थ हो जाएंगे। आप यह भी समझने लगेंगे कि ये संभावनाएँ किस तरह विश्लेषण और तर्क करने की क्षमताओं के विकास से जुड़ी हैं। इस अध्याय में आगे चलकर दी गई गतिविधियाँ आपको इन क्षमताओं का विकास करने वाली परिस्थितियाँ बनाने में मदद देंगी।

अभ्यास

- बातचीत में मस्त बच्चे कौन-कौन सी क्रियाएँ करते नज़र आते हैं? नाम लिखिए एवं दो उदाहरण दीजिए।

बच्चों की बातचीत को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने के इच्छुक अध्यापक को पहले **बातचीत के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करना** होगा। अपने कामकाज और टीका-टिप्पणियों के जरिए अध्यापक को बच्चों में यह विश्वास पैदा करना होगा कि वे बात करने के लिए स्वतंत्र हैं। इसका आशय अराजकता को न्यौता देना नहीं है। उल्टे, जरूरत इस बात की है कि:

- हर बच्चा यह महसूस करे कि जब वह कुछ कहेगा तो उसे सुना जाएगा और
- सभी बच्चे यह महसूस करें कि अध्यापक को उनका बोलना अच्छा लगता है।

कक्षा में बच्चों को बातचीत के लिए प्रोत्साहित करने वाले मौकों को हम पाँच किस्मों में रख सकते हैं:

1. अपने बारे में बात करने के अवसर देना

सब बच्चे अपनी जिंदगी के बारे में— उन घटनाओं के बारे में जो हो चुकी हैं और उनके बारे में भी जो अभी नहीं हुई हैं— बात करने को उत्सुक रहते हैं बशर्ते कि उन्हें इसके लिए प्रोत्साहन और मौका दिया जाए। कई अध्यापक बच्चों की व्यक्तिगत जिंदगी और स्कूल में उनकी पढ़ाई के बीच कोई संबंध नहीं देख पाते। वे इस बात पर जोर देते हैं कि कक्षा में सिर्फ पाठ्यपुस्तकों में दी गई सामग्री पर ही चर्चा हो। अध्यापक की इस मान्यता के कारण कई बच्चे कक्षा में किसी भी किस्म की हिस्सेदारी नहीं निभा पाते। अध्यापक जिन चीजों पर चर्चा करते हैं, वे बच्चों को आकर्षित नहीं कर पातीं, और बच्चों के व्यक्तिगत अनुभव (जैसे किसी रिश्तेदार का आना, आंधी और बारिश में घर की हालत, या बीमार पड़ना) अध्यापक को रास नहीं आते।

ऐसी स्थिति बच्चों को पाठ्यक्रम से एकदम काट देती है। अध्यापक चाहें तो उनके इस अलगाव को रोक सकते हैं। इसके लिए उन्हें बच्चों की घरेलू जिंदगी और उनके पिछले अनुभवों की चर्चा के अवसर पैदा करने होंगे। यदि बच्चों को इन चीजों पर बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए तो धीरे-धीरे वे कई तरह के अनुभवों से जुड़े भावों और विचारों को प्रकट करने में समर्थ हो जाएंगे। साथ ही वे स्कूल के पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों (जैसे विज्ञान, भूगोल, नागरिक शास्त्र) में शामिल ज्ञान से एक गहरे, व्यक्तिगत स्तर पर संबंध बना सकेंगे।

2. स्कूली अनुभवों पर बात करने के अवसर देना

स्कूल का परिवेश खोजबीन और निरीक्षण का एक शानदार माध्यम है। स्कूल कहीं भी हो उसके इर्दगिर्द ऐसी कई छोटी-छोटी चीजें होती हैं जिनसे विस्तृत जांच और बहस की सामग्री मिलती है। दुकानें, पेड़, पत्थर, मकान, सड़क, बाड़, मिट्टी, फाटक, घोंसले, छत्ते, फूल, तितलियाँ, खुली नाली, नल और तमाम चीजें स्कूल के पड़ोस में ढूँढी जा सकती हैं, और बारीक अवलोकन, अवलोकनों के आदान-प्रदान, सच के निर्धारण और दूसरी चीजों से उसके संबंध की खोज के लिए काम में लाई जा सकती हैं।

छोटे बच्चों के साथ यह सब करने के लिए बातचीत एक उम्दा माध्यम है। जैसा कि आगे दी गई

गतिविधियों से स्पष्ट होगा, यह कतई जरूरी नहीं कि अध्यापक बहुत सारे बच्चों को औपचारिक रूप से भ्रमण के लिए ले जाए। दरअसल तीन-चार बच्चों को किसी चीज की रपट लिखने के लिए भेजना उपयोगी हो सकता है। यह जरूर है कि भ्रमण में खूब मजा आता है, अतः जो अध्यापक बच्चों को स्कूल से दूर किसी जगह पर ले जाने का खर्च उठा सकते हों, उन्हें ऐसा अवश्य करना चाहिए। पर जो अध्यापक बच्चों को किसी संग्रहालय या डाकखाने तक नहीं ले जा सकते, उन्हें इस बात का बहाना नहीं बनाना चाहिए कि वे बच्चों को स्कूल के करीब एक टूटी पुलिया या स्कूल के पिछवाड़े गंदे पानी की निकासी तक भी नहीं ले जा सकते। महत्वपूर्ण चीज यह है कि सभी बच्चों को भ्रमण में देखी गई सब चीजों पर बात करने का पर्याप्त अवसर मिले।

3. तस्वीरों पर चर्चा करना

ऐसी बातचीत जो सर्जना और विश्लेषण को प्रोत्साहित करती हो, तस्वीरों के जरिए अच्छी तरह की जा सकती है। तस्वीरें कैसी भी हो सकती हैं— अखबारों और पत्रिकाओं के विज्ञापनों या खबरों के साथ छपे चित्र, कैलेंडरों, टिकटों, लेबलों और पोस्टरों पर छपे चित्र। ये सभी काम में लाए जा सकते हैं। इस प्रकार तस्वीरों के स्रोत बहुत व्यापक हैं और किसी छोटे गाँव में भी ढूँढे जा सकते हैं। अध्यापक साल दर साल अपने इस्तेमाल के लिए तस्वीरों का एक संग्रह बना सकता है।

इन स्रोतों के अलावा स्कूलों को थोड़ा अतिरिक्त पैसा खर्च करके तस्वीरों वाला बाल-साहित्य खरीदने की कोशिश करनी चाहिए। सुरुचिपूर्वक छापा गया बाल-साहित्य भारत की सभी भाषाओं में उपलब्ध है लेकिन अक्सर देखा गया है कि अध्यापकों का इस साहित्य से कोई वास्ता नहीं होता। स्कूल में यदि कुछ बाल साहित्य है भी तो उसका दैनिक इस्तेमाल इस डर से नहीं किया जाता कि किताबें खराब हो जाएँगी। बाल साहित्य का अपने शिक्षण में प्रयोग करने के इच्छुक अध्यापकों को चाहिए कि किताबों की देखरेख के काम में बच्चों को शामिल करें और उन्हें इसकी ट्रेनिंग दें कि किताब को कैसे उठाना-रखना है, कोने मोड़े या थूक लगाए बिना पन्ना कैसे पलटना है। ऐसी छोटी बातें ध्यानपूर्वक ट्रेनिंग देकर सिखाई जा सकती है। ये छोटी-छोटी चीजें आगे जाकर बच्चों में किताबों के प्रति आदर पैदा करेंगी और उन्हें सीखने का साधन मानने की प्रवृत्ति विकसित करेंगी। ये चीजें बच्चे में चीजों को सहेज कर रखने की प्रवृत्ति का विकास करने में भी मदद देंगी।

बच्चों के बीच बैठकर बगैर किसी तैयारी के, बिलकुल अनौपचारिक ढंग से किसी तस्वीर के बारे में बातचीत करना भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। लेकिन यदि हम देखने के विभिन्न पहलुओं के बारे में सचेत हो जाएं तो बच्चों की भाषा के विकास की दृष्टि से हम ऐसी बातचीत को और भी अधिक उपयोगी बना सकते हैं। अध्यापक का हर प्रश्न बच्चों की प्रतिक्रिया को एक निश्चित ढंग से प्रभावित करता है। सवालियों के जरिए बच्चों की निगाह और प्रतिक्रिया को विस्तार देने की क्षमता हम किस प्रकार हासिल कर सकते हैं? प्रतिक्रिया के स्तर, जिनकी तरफ बच्चों का ध्यान हम प्रश्नों की मदद से मोड़ सकते हैं, ये हैं :

- (i) **ढूँढना** : इस स्तर पर हम बच्चों से केवल इतना कहेंगे कि वे चित्र में दिखाई गई चीजों को ढूँढें। हम इस तरह के प्रश्न पूछ सकते हैं: 'इस चित्र में क्या है?' 'क्या इस चित्र में एक चूहा है?' 'साइकिल पर कौन बैठा है?' 'लड़का कितना बड़ा है?'
- (ii) **तर्क करना** : प्रतिक्रिया के इस स्तर का संबंध कारण बताने की क्षमता से है। चित्र में दिखाई गई किसी बात का जो भी कारण बच्चा बताए, अध्यापक को उसे स्वीकार करना चाहिए। अध्यापक स्वयं भी कारण बता सकता है— पर केवल एक संभव उत्तर के तौर पर, अंतिम उत्तर के तौर पर नहीं। प्रश्नों के उदाहरण : 'नन्ही लड़की क्यों रो रही है?' 'मोटर साइकिल का पिछला हिस्सा हमें दिखाई क्यों नहीं दे रहा?' 'चूहा क्यों छिपा है?'

- (iii) **आरोपण** : इस स्तर पर हम बच्चे से खुद को चित्र में आरोपित करने को कहते हैं। अतः इस स्तर पर प्रश्न पूछने का उद्देश्य बच्चे को एक कल्पित स्थिति में स्वयं को डालने, कौन क्या कहेगा यह कल्पना करने, और उन्हें कैसा लगेगा यह सोचने को प्रोत्साहित करना है। प्रश्नों के उदाहरण : 'यदि तुम इस पेड़ पर बैठे होते तो तुम्हें कैसा-क्या दिखाई देता?' 'छोटी लड़की साइकिल पर बैठे आदमी से क्या कह रही है?' 'चूहा क्या सोच रहा है?'
- (iv) **भविष्यवाणी** : इस स्तर का संबंध चित्र में दिखाई गई स्थिति के बाद की घटनाओं का अनुमान करने से है। बच्चों को यह सोचने के लिए प्रेरित करना है कि अब आगे क्या होगा। प्रश्नों के उदाहरण: 'यह आदमी अब कहाँ जाएगा?' 'नहीं लड़की घर पर क्या करेगी?' 'वह घर कैसे पहुँचेगी?'
- (v) **संबंध बैठाना** : अब हम ऐसे प्रश्न पूछेंगे जो बच्चों को चित्र में दिखाई गई स्थिति से मिलती-जुलती कोई चीज अपनी जिंदगी में ढूँढ़ने को प्रेरित करें। प्रश्नों के उदाहरण : 'तुम कभी मोटर-साइकिल पर बैठे हो?' 'बैठकर कैसा लगता है?' 'क्या तुम कभी किसी अजनबी के साथ रहे हो?' 'उस दिन फिर क्या हुआ?'

अभ्यास

- कौन-सी बातचीत पर सर्जना एवं विश्लेषण को प्रोत्साहित करते हैं? तर्क देकर समझाइए।
- तस्वीरों पर बातचीत के क्या-क्या मौके होंगे समझाइए।

4. कहानियाँ सुनना और उन पर चर्चा करना

कोई कहानी सुनते वक्त हमारा ध्यान उसमें चित्रित घटनाओं और चरित्रों की तरफ भागता है। कई कहानियों का संबंध हमारी देखी हुई घटनाओं से नहीं होता, पर हम उनकी कल्पना कर लेते हैं। इसी तरह भले ही हमने कहानी के चरित्रों जैसे लोग कभी न देखे हों, फिर भी हम उनकी तस्वीर मन में बना लेते हैं। इस प्रकार अपरिचित घटनाएँ और लोग दुनिया के उस नक्शे में शामिल हो जाते हैं जो हमने अपने दिमाग में बना रखा है। बाद में इन घटनाओं की हम ठीक उसी तरह चर्चा कर सकते हैं जिस तरह अपनी जिंदगी में सचमुच घटी घटनाओं की चर्चा करते हैं। **फिल्मों, किताबों और अखबारों में छपी अधिकांश खबरों की चर्चा लोग इसी तरीके से करते हैं।** कहानी चाहे किसी असली घटना के बारे में हो या किसी के द्वारा कल्पित घटना के बारे में, वह एक नई सामग्री हमारे ध्यान में लाती है और हम इस सामग्री को बगैर ज्यादा कोशिश या परेशानी के अपने मन में जगह दे देते हैं।

कहानी सुनते समय हम घटनाक्रम और चरित्रों के व्यवहार की कल्पना करते चलते हैं। दूसरी तरफ जब हम स्वयं कोई कहानी सुनाते हैं तो उसमें शामिल अनुभवों को व्यवस्थित करते चलते हैं। ये अनुभव वास्तविक हो तो उन्हें ज्यों का त्यों रखने की कुछ चिंता अवश्य होती है। पर ऐसा कम ही होता है कि कोई अपने अनुभव को एकदम हू-ब-हू सुना सके। छोटी-मोटी फेरबदल हो ही जाती है क्योंकि कुछ बातें हमें दूसरी बातों से ज्यादा महत्वपूर्ण लगती हैं। यदि हमारी कहानी वास्तविक अनुभवों के बारे में न हो तो हम उसे कुछ ज्यादा आजादी से प्रस्तुत करते हैं। शायद तब हमारा मुख्य उद्देश्य अपने श्रोता की दिलचस्पी जगाना होता है। कहानी चाहे असली हो या काल्पनिक, उसमें दो चीजें अवश्य रहती हैं :

1. जीवन की घटनाओं, चरित्रों आदि का पुनर्योजन, और
2. सुनने वाले का ध्यानाकर्षण।

ये दोनों बातें भाषा के कुशल इस्तेमाल पर निर्भर हैं। दरअसल हरेक कहानी हमसे भाषा की चतुरता की माँग करती है और कहानियाँ सुनने का अनुभव हमें भाषा के चतुर कौशल के नमूने देता है। इसी कारण कहानी कहना नन्हें बच्चों के अध्यापक के लिए एक बढ़िया साधन है।

कुछ अध्यापक कहानी सुनाने को एक कला मानते हैं। वे सोचते हैं कि इनेगिने लोग ही अच्छी तरह कहानियाँ सुना सकते हैं। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण मान्यता है क्योंकि इसकी वजह से बच्चे कहानियाँ सुनने के आनंद से वंचित रह जाते हैं। यदि कोई कहानी अच्छी है तो बच्चे उसे सुनकर जरूर खुश होंगे। कहने का कौशल तो समय और अभ्यास से ही आएगा। असली बात है अच्छी कहानियाँ चुनना और उन्हें बार-बार सुनाना। **कोई कहानी सिर्फ एक बार सुनाने के लिए नहीं होती और अच्छी कहानियाँ तो ढेरों बार सुनाने लायक होती हैं।**

अभ्यास

- कोई कहानी सिर्फ एक बार सुनाने के लिए नहीं होती और अच्छी कहानियाँ तो ढेरों बार सुनाने व सुनने लायक होती है? क्या आप इस बात से सहमत हैं क्यों?
- अपने पसंद की एक कहानी लिखिए जो आपको बहुत अच्छी लगती है और यह भी बताइए कि यह कहानी आपको क्यों पसंद है?

कहानी सुनाकर उस पर चर्चा करना जरा टेढ़ा मामला है। अनेक अध्यापक जो कहानी से मिलने वाली सीख की चर्चा करने को उत्सुक रहते हैं। कहानी समाप्त होते ही वे पूछ उठते हैं : 'इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिली?' एक सार्थक संवाद की शुरुआत के लिए यह प्रश्न बिलकुल बेकार है। कहानी के नैतिक मूल्य का (यदि कहानी में ऐसा कोई मूल्य है) बच्चों के लिए कोई विशेष आकर्षण नहीं होता। उनके लिए तो कहानी का ही महत्व होता है। **नैतिक मूल्य के बारे में पूछने वाला अध्यापक अपनी ही मेहनत को गुड़गोबर कर देता है। इतनी ही फिजूल उन अध्यापकों की माँग होती है जो कहानी ज्यों की त्यों याद करने पर जोर देते हैं।** वे चाहते हैं कि बच्चे पूरी कहानी हू-ब-हू सुना दें। वे यह माँग इतने नियमित रूप से करते हैं कि बच्चे कहानी का आनंद लेना छोड़ अपने ऊपर लादी जाने वाली माँग की चिंता में डूब जाते हैं।

कहानी सुनाते वक्त श्रोता के लिए महत्वपूर्ण चीज कहानी से अपना संबंध स्थापित करना है, और हमें यह समझना चाहिए कि हर बच्चा यह संबंध एक अलग ढंग से स्थापित करता है। उसका व्यक्तित्व और उसके पिछले अनुभव कहानी के प्रति बच्चे की प्रतिक्रिया को प्रभावित करते हैं। हो सकता है कि बच्चा किसी चरित्र की कल्पना कहानी में दिए विवरण से एकदम अलग रूप में करे। संभव है कि उसे कोई घटना भावनात्मक रूप से बाकी सब घटनाओं से ज्यादा सार्थक लगे। कहानी और उसके चरित्रों की ऐसी पुनर्चना करना, जो खुद को सार्थक लगे, हर बच्चे का मौलिक अधिकार है। ऐसा अध्यापक, जो चरित्रों की कल्पना किसी भी ढंग से करने के बच्चे के अधिकार को स्वीकार करता है, बच्चों को इस बात की पूरी आजादी और अवसर देगा कि वे कहानी के बारे में किसी भी तरह से बात करें— उसे तोड़े—म रोड़ें उसे बढ़ाएँ, उसके चरित्रों की अदला-बदली करें या स्वयं कहानियाँ गढ़ें। ऐसे अवसर कहानी कहने के फौरन बाद देना जरूरी नहीं है। प्रायः ठीक यही रहता है कि कहानी सुनाने के बाद कोई और एकदम अलग गतिविधि शुरू की जाए।

अभ्यास

- नैतिक मूल्य के बारे में पूछने वाला अध्यापक अपनी ही मेहनत को गुड़गोबर कर देता है। लेखक ने यह बात क्यों कही होगी?

कहानी कोष

कई शिक्षक बच्चों को सुनाने लायक कहानियों की कमी महसूस करते हैं। कभी-कभी वे पत्रिकाओं या अखबारों में छपी छोटी-मोटी कहानीनुमा रचनाएँ सुनाकर संतोष कर लेते हैं। पचास-साठ अच्छी यानी सुनाने लायक कहानियों का व्यक्तिगत कोष बनाने के लिए कहानियों का चयन इन स्रोतों से किया जा सकता है:

- पंचतंत्र, कथासरित्सागर, जातक, महाभारत, बेताल पच्चीसी, सिंहासन बत्तीसी और पौराणिक कहानियाँ;
- देश और दुनिया के विभिन्न हिस्सों की लोककथाओं के संग्रह;
- अपने इलाके की लोककथाएँ—इन्हें इकट्ठा करने के लिए बड़े-बूढ़े लोगों की मदद ली जा सकती है;
- ऐतिहासिक कहानियाँ;
- कहानी बनाने लायक पुरानी स्थानीय घटनाएँ।

5. अभिनय करना

कहानी और नाटक में संबंध है, इसलिए अध्यापक आसानी से एक को दूसरे से जोड़ सकता है। कहानी को ध्यानपूर्वक सुन रहा बच्चा उसमें चित्रित भूमिकाओं को चुपचाप ग्रहण कर रहा होता है। यही चीज नाटक में होती है, पर अधिक मुखर रूप में। नाटक में बच्चों को विभिन्न भूमिकाओं को बातचीत, हाव-भाव और शरीर के जरिए प्रस्तुत करने का मौका मिलता है। कहानी के श्रोता की तरह नाटक में भाग लेते वक्त भी उन्हें स्वयं को किसी दूसरे पर आरोपित करना होता है और उसकी निगाह से चीजों को देखना होता है। फर्क यही है कि नाटक में यह ज्यादा सक्रियता पूर्वक करना होता है, कल्पित स्थिति और चरित्रों के अनुभव शब्द और हाव-भाव ढूंढने पड़ते हैं। इस सबमें तुरतबुद्धि से अभिनय करने के लिए सुनहरा मौका रहता है जो नाटक को बातचीत के विस्तार के लिए इस्तेमाल करने का मुख्य आधार है।

दुर्भाग्यवश स्कूलों में होने वाली ज्यादातर गतिविधियों में तुरतबुद्धि के लिए जगह नहीं होती। बच्चों को निश्चित भूमिकाएँ दे दी जाती हैं और उन्हें संवाद याद करने को कह दिया जाता है। नाटक का उपयोग किसी त्योहार या अतिथि के आगमन जैसे खास अवसरों के लिए किया जाता है। नाटक के इस उपयोग के भी कुछ न कुछ फायदे तो होंगे ही, पर इससे बच्चों की भाषा के विकास में कोई खास मदद नहीं मिलती। थोड़े से बच्चे ही नाटक में हिस्सा लेते हैं, बाकी सिर्फ देखते हैं। तैयारी और अंतिम प्रदर्शन के दौरान लगातार सबको यह डर बना रहता है कि कोई गलती न हो जाए। ऐसे नाटकों में आजादी और आनंद की गुंजाइश नहीं रह जाती। एक भाषायी गतिविधि के रूप में नाटक के इस्तेमाल के लिए ये दो चीजें: आजादी और आनंद बहुत जरूरी हैं।

जो अध्यापक नाटक का भाषा शिक्षण में उपयोग करना चाहते हैं, उन्हें याद रखना चाहिए कि नाटक बच्चों के लिए कोई विशेष या निराली चीज नहीं है— वह तो उनकी जिंदगी का भाग है। नकल उतारना, किसी चीज को बढ़ा-चढ़ाकर बताना, स्वांग करना जैसी नाटकीय युक्तियों का प्रयोग बच्चे करते ही रहते हैं। बच्चों के अपने पारंपरिक खेलों में भी नाटक का एक विशेष स्थान रहता है। ऐसा बच्चा मुश्किल से मिलेगा जिसमें नाटकीय कौशल न हो। पर अनेक बच्चे अपने नाटकीय कौशल का कक्षा में प्रयोग करने को उत्सुक नहीं होते। उन्हें लगता है कि कक्षा इसके लिए ठीक जगह नहीं है। ऐसा माहौल बनाने की कोई एक तकनीक नहीं है।

आप इसके लिए धीरे-धीरे प्रयास कर सकते हैं। और इसके लिए जरूरी है कि आप बच्चों को स्वाभाविक रूप से यथार्थ जिंदगी के बारे में बात करने को प्रोत्साहित करें, बच्चों की बातचीत को ध्यान लगाकर सुनें और मधुर व्यवहार करें।

दूसरी खास बात यह है कि प्रदर्शन के लिए नाटक करने और नाटक के रोजमर्रा के इस्तेमाल में अंतर है। हमारा विषय रोजमर्रा का नाटक है और उसके लिए पहले से तैयार पटकथा, संवाद, पोशाकें, रिहर्सल और रोशनी की व्यवस्था बेमानी है। अभिनय के लिए किसी भी घटना की कहानी पर्याप्त है। **नाटकीय कहानियों के सबसे अच्छे उदाहरण आपको प्रायः बच्चों की बातों से मिल सकते हैं, बशर्ते कि बच्चे जो रोज देखते, महसूस करते हैं उसके बारे में बात करने की स्वतंत्रता वे अनुभव करते हों।**

बस कैसे रुकी, कुछ लोग उतरे, कुछ चढ़े, बस फिर से कैसे चली और इस समय उसके अंदर क्या हो रहा है— यह कक्षा के पूरे 40 बच्चों के अभिनय करने लायक बढ़िया कथानक है। दूसरी तरफ अध्यापक द्वारा या पढ़ी गई कहानियाँ भी नाटक के लिए जोरदार सामग्री दे सकती हैं। यदि कहानी में थोड़े से चरित्र हैं तो पाँच-पाँच बच्चों की टोलियाँ उस पर अलग अलग काम कर सकती हैं या उन्हें अलग अलग कहानियाँ दे दी जाएँ। **टोलियों में प्रतियोगिता करवाने का कोई तुक नहीं है।** इससे अनावश्यक बेचैनी और अध्यापक पर निर्भरता पैदा होगी।

यदि आप छोटी उम्र से ही स्वतःस्फूर्त नाटक का इस्तेमाल शुरू कर देते हैं तो वह पढ़ने के कौशल के विकास की नींव का काम करेगा। **नाटक करने तथा पढ़ने में सीधा रिश्ता न हो, पर रिश्ता है।** नाटक शब्दों और शरीर की भंगिमाओं (हाव-भाव, झुकना आदि) को सचेत होकर प्रतीकों की तरह उपयोग करने का एक विशिष्ट मौका देता है कहानी सुनने की तरह अभिनय करते समय भी बच्चे दुनिया की दिनचर्या में प्रतीक रूप से हिस्सा लेते हैं— यानी वे घटनाओं में सीधे उपस्थित हुए बगैर उनमें हिस्सा लेते हैं। यही क्षमता एक अच्छे पाठक में होती है। जो चीजें उसकी आँखों के आगे मौजूद नहीं हैं, उन्हें वह 'देखता' चलता है और उस पर इस तरह प्रतिक्रिया करता चलता है मानो वे उसके सामने मौजूद हों।

अभ्यास

- बच्चों की बातचीत को प्रोत्साहित करने वाली पाँच विधियों का उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
- कहानी और नाटक में क्या अन्तर है?
- रोजमर्रा की जिन्दगी में बच्चे जो नाटक करते हैं और शालाओं या कक्षाओं में जो नाटक करते हैं उन दोनों में क्या-क्या फर्क होते हैं।

अध्यापक की प्रतिक्रिया

स्कूल में दाखिल होने तक बच्चे अपनी मातृभाषा की बुनियादी संरचनाओं पर अच्छा-खासा अधिकार पा चुके होते हैं। उन्हें न केवल तमाम तरह के कार्यों के लिए भाषा का प्रयोग करना होता है, बल्कि वे यह भी खूब समझ चुके होते हैं कि भिन्न-भिन्न संदर्भों और श्रोताओं के हिसाब से भाषा को संभालना करना कितना जरूरी है। पाँच वर्ष का बच्चा संदेशों को कार्य में बदलना (जैसे, कहने पर पानी का गिलास लाना और उसे वापस सही जगह रखना) जानता है। वह लोगों की बातचीत की सहायता से उनके चरित्र और आपसी रिश्तों का अनुमान भी कर लेता है। छोटे बच्चे को ये क्षमताएँ किसी के सिखाने से नहीं, रोजाना के जीवन से प्राप्त होती हैं। बच्चे के आस-पास जो कुछ हो रहा होता है, वह उसे अपनी सोच-विचार की छलनी से छानकर अपने भाषा-संयंत्र का हिस्सा बना लेता है।

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

हमें ये क्षमताएँ स्वयं हासिल करने का श्रेय बच्चे को देना चाहिए। हम बच्चे को कोई बिल्कुल नई चीज नहीं दे सकते। केवल ऐसी परिस्थितियाँ बना सकते हैं जिनमें बच्चा अपनी मौजूदा क्षमताओं का और विकास कर सके। बातचीत के संदर्भ में ऐसी परिस्थितियाँ रचने की मुख्य शर्त है बच्चे की बात पर अपनी प्रतिक्रिया के प्रति सचेत होना। हर बार बच्चे की बात सुनते समय हमें चाहिए कि:

1. उसे पूरी बात कहने दें,
2. वह जो कह रहा है उसमें रुचि लें,
3. मतभेद व्यक्त करने की इच्छा हो तो उस पर काबू करें,
4. बच्चे ने जो कहा है उस पर अपनी, प्रतिक्रिया विस्तार से यानी, अधिक शब्दों में और ज्यादा समृद्ध वाक्य रचना का प्रयोग करते हुए दें। इतना कहना काफी नहीं है कि 'अच्छा' या यह अच्छा है। उदाहरण के लिए यदि बच्चे ने कहा, गिलहरी पेड़ पर तो अध्यापक की प्रतिक्रिया हो सकती है— उसने गिलहरी को पेड़ पर चढ़ते देखा?
5. घटना और जानकारी माँगे या बच्चे का ध्यान विषय के किसी नए पहलू की तरफ खींचें।

बच्चों से इस तरह बात करने के लिए काफी अभ्यास जरूरी है। सबसे जरूरी यह महसूस करना है कि बातचीत बच्चे के लिए सीखने का एक महत्वपूर्ण साधन है और उसका बच्चे के सामाजिक व्यवहार और व्यक्तित्व पर गहरा असर पड़ता है।

अक्सर चुप रहने वाले बच्चे अध्यापक के लिए दिक्कत पेश कर सकते हैं। संभव है कि आपकी कक्षा के कुछ बच्चे बात करने की अपेक्षा खेलने या चीजें बनाने में, ज्यादा दिलचस्पी दिखाएँ। लेकिन यदि कोई बच्चा अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने, सवाल पूछने और दूसरों को यह बताने के लिए कि वह क्या कर रहा है, बिल्कुल उत्सुक न हो तो ऐसे बच्चे की ओर कुछ विशेष ध्यान देना बुद्धिमानी का काम होगा। मुमकिन है कि उसे घर पर नाना प्रकार से हतोत्साहित किया गया हो या उस पर दबाव डाले गए हों। चुप्पी उसके व्यक्तित्व, विशेषतया दूसरों के संदर्भ में उसकी आत्मछवि को पहुँची चोट की एक अभिव्यक्ति हो सकती है। घर के दमघोंटू माहौल का असर काफी गहरा होता है पर उसे दूर करना असंभव नहीं है। एक संवेदनशील अध्यापक, जो समस्या की जड़ को समझता हो, दुनिया के साथ बच्चे के संबंधों में चमत्कारपूर्ण परिवर्तन ला सकता है।

कुछ गतिविधियाँ

यहाँ केवल थोड़ी सी गतिविधियाँ दी गई हैं जिन्हें कोई भी अध्यापक एक साधारण कक्षा में आयोजित कर सकता है। हर बार किसी गतिविधि में थोड़ी सी फेरबदल करने से बच्चे पिछली बार के मुकाबले और ज्यादा उत्साह महसूस करेंगे। इसलिए इन गतिविधियों को बार-बार कीजिए और हर बार इनमें कुछ नया जोड़िए। आप जो चीजें जोड़े उनका ब्यौरा रखिए ताकि आप किसी नए सहयोगी को अपने प्रयोगों की जानकारी दे सकें। यहाँ दी गई लगभग हरेक गतिविधि दर्जनों नई संभावनाओं की शुरुआत बन सकती है।

एक

क्या देखा?

पहला चरण : एक बच्चे से कहिए कि वह बाहर जाए, देखे कि बाहर क्या-क्या हो रहा है और लौटकर दूसरों को बताए। उदाहरण के लिए वह बताएगा कि उसने एक टेला, दो दुकानें और एक साइकिल देखी।

दूसरा चरण : अब बाकी बच्चे उससे सवाल पूछेंगे। बच्चे गोल घरे में बैठें और एक बच्चा एक ही सवाल पूछे। उदाहरण के लिए एक बच्चा पूछ सकता है, 'साइकिल के हैंडिल से क्या लटका था?' जवाब है, एक टोकरी लटकी थी। अगला सवाल टोकरी का रंग कैसा था?

तीसरा चरण : जब सारे बच्चे एक-एक सवाल पूछ लें तो अध्यापक उस बच्चे से पूछे जो बाहर गया था कि उसे कौन सा प्रश्न सबसे अच्छा लगा। मान लीजिए कि उसका जवाब हो— 'शशि का सवाल सबसे अच्छा था'— तो अगला सवाल पूछिए: वह सवाल क्या था?

चौथा सवाल : अब खेल के अगले दौर की शुरुआत शशि से होगी। उससे कोई ऐसी चीज देखने को कहिए जो पहले बच्चे ने नहीं देखी थीं शशि के वापस आने पर बच्चों से कहें कि वे नए सवाल पूछें ऐसे सवाल जो पहले किसी ने नहीं पूछे।

दो

खोजियों की खबर

पाँच या छह बच्चों की टोली को स्कूल की इमारत के आस-पास या भीतर किसी निश्चित चीज या जगह का अध्ययन करने के लिए भेजिए जैसे वे पेड़ों के एक झुंड, चाय की गुमटी, टूटे हुए पुल या घोंसले का मुआयना करने जा सकते हैं। उनसे कहिए कि वे सावधानी से उस चीज की खोजबीन करें और अपने निरीक्षणों की आपस में चर्चा करें।

जिस समय खोजी दल बाहर गया हो, बाकी बच्चों को उस चीज के बारे में विस्तार से बताएँ। जैसे यदि खोजी-दल चाय की गुमटी का अध्ययन करने गया है तो बच्चों को बताएँ कि वहाँ क्या-क्या चीजें उपलब्ध हैं (बच्चों से पूछें भी), उसे कौन चलाता है, वहाँ उपलब्ध चीजें, कहाँ-कहाँ से आती हैं, आदि।

वापस आने पर खोजी दल कक्षा के सवालियों का सामना करे। प्रश्न पूछने में अध्यापक की बारी भी आनी चाहिए।

अगली बार किन्हीं और बच्चों का खोजी-दल बनाइए।

तीन

बूझो, मैंने क्या देखा?

एक बच्चा बाहर जाए, दरवाजें पर या कक्षा से कुछ दूर खड़े होकर आस-पास दिखाई दे रही सैकड़ों चीजों में से कोई एक चुन ले। वह चीज कुछ भी हो सकती है— पेड़, पत्ता, गिलहरी, चिड़िया, तार, खंभा, पत्थर। लौटकर वह उस चीज के बारे में सिर्फ एक वाक्य बोले, जैसे, मैंने एक भूरी चीज देखी।

अब इस बच्चे से एक प्रश्न पूछकर उस चीज का अनुमान लगाने का मौका कक्षा के हर बच्चे को मिलेगा। उदाहरण के लिए —

पहला बच्चा	:	'क्या वह पतली है?'
उत्तर	:	'नहीं'।
दूसरा बच्चा	:	'वह कितनी बड़ी है?'
उत्तर	:	'वह काफी बड़ी है।'

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

- तीसरा बच्चा : 'क्या वह कुर्सी जितनी बड़ी है?'
उत्तर : 'नहीं, कुर्सी से छोटी है।'
चौथा बच्चा : 'क्या वह मुड़ सकती है?'

अंत में सही अनुमान लग चुकने के बाद कुछ बच्चों को अपने प्रश्नों के उत्तरों से आपत्ति हो सकती है। उदाहरण के लिए किसी को यह आपत्ति हो सकती है कि रंग भूरा नहीं, मिट्टी जैसा था। ऐसी स्थिति में बारीक अंतर देख पाने में अध्यापक को बच्चों की मदद करनी होगी।

चार

जो कहा सो करना

बच्चों से कहिए कि वे ध्यान से सुने और जो बताया जाए उसे करें। पहले एकदम सरल निर्देश दीजिए और पूरी कक्षा से निर्देश का एक साथ पालन करने को कहिए।

उदाहरण : 'अपना सिर छुओ।'

'अपनी दाहिनी आँख बंद करो।'

'सिर पर ताली बजाओ।'

कक्षा को दो समूहों में बाँट दीजिए। आप पहले समूह को निर्देश देंगे और इस समूह के बच्चे दूसरे समूह को वही या मिलते-जुलते निर्देश देंगे।

धीरे-धीरे निर्देश को जटिल बनाइए। उदाहरण:

'दोनों हाथों से अपना सिर छुओ, फिर दाहिने हाथ से दाहिना कान छुओ।'

'दोनों आँखे मींचो, अपने पड़ोसी को छुओ, उससे कहो कि अपना बायाँ हाथ तुम्हें दे।' जब एक समूह के बच्चे दूसरे समूह को निर्देश दे रहे हों तो यह जरूरी नहीं कि वे अध्यापक के निर्देशों को ज्यों का त्यों दुहराएँ। उन्हें ताजे निर्देश रचने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

पाँच

तुलना

एक जैसी दिखने वाली चीजों के जोड़े बनाइए, जैसे दो पेड़ों की पत्तियाँ, अलग-अलग पौधों के फूल, पत्थर, अलग अलग आकार में काटे गए कागज के टुकड़े।

बच्चों को बताइए कि आप जोड़े की एक चीज का वर्णन करेंगे और वर्णन ध्यान से सुनकर उन्हें यह अनुमान लगाना है कि आप किस चीज की चर्चा कर रहे थे। उदाहरण : 'मैं जिस पत्ती के बारे में सोच रहा हूँ वह लंबी और चिकनी है और उसकी किनार सीधी है।'

यह गतिविधि आठ-दस बार करने के बाद वर्णन करने का काम बच्चों को सौंप दीजिए। हर बार यह गतिविधि करते वक्त चीजें, बदल दीजिए। हर बार वर्णन के लिए और बारीक बातें चुनिए।

छह

यह कैसे बनाया?

बच्चों को कागज, कपड़े, या अन्य उपलब्ध सामग्री से चीजें बनाना सिखाइए। कागज की नाव, हाथ की कठपुतली, और धागे की आकृतियाँ बढ़िया रहेंगी। इन्हें बनाने का प्रदर्शन करते समय खूब विस्तार से विवरण देते जाइए और बच्चों को कहिए कि वे साथ-साथ खुद भी वहीं चीज बनाते जाएँ। जैसे यदि आप कागज की नाव बना रहे हैं तो एक-एक कदम स्पष्ट करते जाइए— कागज को आधा मोड़ो। अब कोनों को अंदर की तरफ मोड़ दो। बची हुई कागज की पट्टी को उठा दो आदि।'

सात

करके दिखाना

पहला चरण : ऐसे दस-पंद्रह क्रियाकलाप चुन लीजिए जिन्हें बच्चे रोज देखते हों। उदाहरण झाड़ू लगाना, केला छीलना, बर्तन माँजना, सब्जी काटना, दो भरी बाल्टियाँ उठाकर चलना। हर बच्चे के कान में फुसफुसा दीजिए कि आपने उसके लिए कौन सा काम चुना है। हर बच्चा बारी से सामने आए और चुपचाप अपना काम करके दिखाए। बाकी बच्चों को यह अनुमान लगाना है कि उसने क्या करके दिखाया।

दूसरा चरण : इस गतिविधि को थोड़ा जटिल बनाइए। ऐसे क्रियाकलाप चुनिए जिनमें पाँच-सात बच्चों की जरूरत हो। बच्चों की टोलियाँ बना दीजिए और प्रत्येक टोली को एक सामूहिक अभिनय करने को दीजिए। बड़े बच्चों के साथ यह गतिविधि करते वक्त कागज के टुकड़ों पर लिख दीजिए कि उन्हें क्या करना है।

आठ

तस्वीर की छानबीन

पाँच-पाँच बच्चों की टोलियाँ बनाइए और हर टोली को एक चित्र दे दीजिए। यह गतिविधि शुरू करने से पहले आपको सारे चित्रों का ध्यान से अध्ययन कर लेना चाहिए और पृष्ठ 90 पर सुझाए गए सभी स्तरों के प्रश्न तैयार कर लेने चाहिए। इस तरह हरेक टोली के लिए पाँच प्रश्न आपके पास होंगे।

तस्वीर का विश्लेषण करने और आपस में चर्चा करने के लिए कम से कम पाँच मिनट बच्चों को दीजिए। टोली के सदस्यों को एक से पांच की क्रम संख्या में रख दीजिए और इस क्रम से पांचों प्रश्न पूछिए।

ये प्रश्न बच्चों से अलग-अलग, अनौपचारिक बातचीत के लिए भी उपयोगी हैं। इस गतिविधि को दो-चार बार आयोजित करने के बाद आप नए नए प्रश्न आसानी से बना सकेंगे, लेकिन शुरू में पहले से पूरी तैयारी करके रखना ही ठीक रहेगा।

नौ

सही तस्वीर कौन सी है?

यह गतिविधि तभी की जा सकती है जब आपके पास बाल साहित्य की कई किताबें खास तौर से चित्रों वाली किताबें हों।

बच्चों के जोड़े बना दीजिए। वे आमने-सामने दो पंक्तियों में बैठें। एक पंक्ति के बच्चे किताबों को उलट-पुलट कर कोई एक तस्वीर चुन लें। अब इस पंक्ति का हर बच्चा अपने सामने बैठे बच्चे को तस्वीर दिखाए बिना तस्वीर का विवरण देगा। विवरण देकर किताब बंद करके वह सामने वाले बच्चे को दे देगा और अब इस बच्चे को सुने हुए विवरण के आधार पर तस्वीर ढूँढनी होगी।

दोनों पंक्तियाँ किताबों की अदला-बदली करती रहें। यह गतिविधि दीवार पर टंगे चित्रों की मदद से भी की जा सकती है।

दस

कहानी बनाना

बोतलों और डिब्बों के ढक्कन, कपड़े के टुकड़े, चूड़ी के टुकड़े, छोटे-छोटे पत्थर, पत्तियाँ, निबें, और इस तरह की तमाम चीजें इकट्ठी कर लीजिए। पाँच-पाँच या छह चीजों की ढेरियाँ बनाकर पाँच-पाँच की हरेक टोली को एक ढेरी दे दीजिए। हर टोली को एक जगह बैठकर चीजों पर चर्चा करनी है और लगभग पंद्रह-बीस मिनट में एक कहानी गढ़नी है। सारी टोलियों के लौटने पर हर टोली में से एक बच्चा कहानी सुनाएगा। यदि टोली के अन्य सदस्य कोई फेरबदल करना चाहें, तो उन्हें खुशी से ऐसा करने दीजिए।

इस गतिविधि की सफलता इस बात पर निर्भर है कि आपके बच्चों को कहानियाँ सुनाने का कितना

अनुभव है? साथ ही यह इस बात पर भी निर्भर है कि क्या वे किसी भी घटना को कहानी की तरह सुना सकते हैं? कोई भी घटना या वस्तु एक दिलचस्प कहानी की बुनियाद बन सकती है। यदि आप कल्पना और सूझबूझ से काम लेंगे तो यह आदत शीघ्र ही आपके बच्चों में भी पड़ जाएगी।

ग्यारह

तुम कहाँ रहते हो?

बच्चे दो पंक्तियों में आमने – सामने बैठते हैं। एक पंक्ति 'बताने वालों' की है, दूसरी 'सुनने वालों' की। पहली पंक्ति में बैठे हर बच्चे को अपने सामने बैठे बच्चे को समझाना है कि वह अपने घर कैसे जाता है। रास्ते को अच्छी तरह समझने के लिए सुनने वाला कितने ही सवाल पूछ सकता है। उदाहरण:

बताने वाला : सीधे जाकर मुड़ जाओ।

सुनने वाला : कितनी दूर तक सीधे जाना है?

बताने वाला : कूड़े के ढेर तक। वहाँ से मुड़ना है।

सुनने वाला : दाहिने मुड़ना है कि बाएँ।

बताने वाला : दाहिने ... नहीं, नहीं, बाएँ।

जब सभी बताने वालों की बारी आ चुके तब सुनने वाले बताने वाले बन जाएँ और खेल फिर शुरू।

इस सबसे क्या होगा?

यहाँ दी गई सभी गतिविधियों का लक्ष्य यह है कि अपने आस-पास की दुनिया से संबंध स्थापित करने की बच्चे की क्षमता का विकास हो। यद्यपि इन गतिविधियों का केंद्र बातचीत है, दरअसल बच्चों के विकास की दृष्टि से उनका संदर्भ बहुत व्यापक है। इस व्यापक संदर्भ में ये चीजें शामिल हैं:

- सीमित जानकारी के आधार पर होशियारी से अनुमान लगाना
- चीजों से एक से अधिक स्तर पर संबंध स्थापित करना
- मौलिक व्याख्या करना
- नई जानकारी पाने के लिए प्रश्न पूछना

कुछ गतिविधियाँ ऐसी हैं जो एक से अधिक माध्यम में काम करने का मौका देती हैं— एक माध्यम शब्दों का और दूसरा चित्रों का। यह संभावना अमूर्त और मूर्त प्रतीकों को जोड़ने की सामर्थ्य का विकास करने में सहायक हो सकती है। एक पाठक के रूप में बच्चे के विकास में यह महत्वपूर्ण योगदान होगा।

बातचीत हमेशा दुनिया से रिश्ता जोड़ने का बुनियादी माध्यम रहेगी। इसलिए बच्चे जब पढ़ना—लिखना सीख लें, तब भी बातचीत पर आधारित गतिविधियाँ जारी रहनी चाहिए।



अध्याय – 12

पढ़ना यानि एक सृजनात्मक अनुभव

परिचय :

प्राथमिक कक्षाओं में जब बच्चा आता है तो यह मुख्य उद्देश्य होता है कि वह पढ़ना सीख जाए। यह उद्देश्य अच्छा है लेकिन सोचने वाली बात यह है कि हम पढ़ने का मतलब क्या समझ रहे हैं और उसके लिए किन तरीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं। सामान्यतः शिक्षक यह सोचते हैं कि बच्चा किताब में लिखी बातों को उसी रूप में पढ़ दे चाहे लिखी बातों का अर्थ उसे समझ में आए या नहीं। इसी तरह सिखाने के तरीके भी वर्णमाला याद करने, ध्वनि, अक्षर पहचान तक ही सीमित रहते हैं। लेकिन इससे उलट पढ़ने का क्या मतलब हो सकता है और सिखाने के क्या तरीके हो सकते हैं; इसकी बात इस अध्याय में की गई है साथ ही यह अध्याय यह भी बताता है कि पढ़ना एक सृजनात्मक कार्य है क्योंकि पाठक सामने लिखी बातों को हू-ब-हू उच्चारण नहीं करता है बल्कि अपने अनुभवों से उनका अर्थ भी गढ़ता जाता है।

उद्देश्य :

- सही अर्थों में पढ़ना क्या है? इसे समझ पाएँगे।
- पढ़ाना सिखाने के संभावित कारगर तरीकों का इस्तेमाल कर पाएँगे।
- पढ़ाना सिखाने की कारगर गतिविधियों के बारे में जान पाएँगे व उनका इस्तेमाल कर पाएँगे।
- लिखी हुई बात को पढ़ने का पाठक के निजी अनुभवों से क्या सम्बन्ध है इसे समझ पाएँगे।

हम सब यह अच्छी तरह जानते हैं कि पढ़ना आने का महत्त्व क्या होता है। स्कूल की गतिविधियों में सबसे महत्त्वपूर्ण है— पढ़ना सिखाना और सीखना। हमारे लिए यह जान लेना भी जरूरी है कि बच्चे पढ़ने की शुरुआत स्कूल आने से पहले ही कर लेते हैं। हो सकता है यह उपस्थिति प्रिंट पढ़ने की समझ बनाने में महत्त्वपूर्ण रही हो। समझकर पढ़ना हमारे व्यक्तित्व को सुदृढ़ बनाता है और हमें आत्मविश्वास देता है। पढ़ने की प्रक्रिया में हम न केवल इस सजीव संसार बल्कि उस लोक में भी पहुँच जाते हैं जो हमसे परे है, हमसे कोसों दूर है। साहित्य इसका मुख्य उदाहरण है।

फ्रेंक स्मिथ ने पढ़ने को लेकर किए गए अनुसंधान/सर्वेक्षण इत्यादि द्वारा एक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके विचारों ने पढ़ने के संसार में खलबली ही नहीं मचाई बल्कि शिक्षकों को चौंकाया और उत्साहित भी किया। वे मानते हैं कि पढ़ने की प्रक्रिया उच्चस्तरीय सोचने और सीखने की प्रक्रिया से एक जंजीर की तरह जुड़ी हुई है। स्मिथ मानते हैं कि पढ़ना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जो पाठक को छपी सामग्री से कहीं आगे ले जाती है।

पढ़ना और पाठक

पढ़ने की प्रक्रिया में पाठक मुख्य भूमिका निभाते हैं या ऐसा कहा जा सकता है कि पढ़ने का सारा

दारोमदार पढ़नेवाले पर ही होता है। दूसरी ओर, वर्ण पहचानना ही पढ़ने का महत्वपूर्ण कार्य नहीं है और वर्ण की पहचान एक आसान प्रक्रिया भी नहीं है। ध्वनियों और वर्णों में कई बार पूरा तालमेल नहीं होता है। ऐसे में पढ़ने की प्रक्रिया का पहला कदम काफी जटिल माना जाता है। अंग्रेजी पढ़ने में यह समस्या काफी उभरकर आती है। स्मिथ शिक्षकों और विशेषज्ञों का ध्यान इस समस्या की ओर खींचते हैं जो काफी हद तक सही भी है। पढ़ना केवल वर्ण या शब्दों को पढ़ लेना ही नहीं है, पढ़ना है समझकर पढ़ना, शब्दों में एक ऐसा अर्थ ढूँढ़ना जिसका पाठक के साथ एक आत्मीय रिश्ता हो। वास्तव में पढ़ना बेहद ही सृजनात्मक और संरचनात्मक काम है। पढ़ना एक ऐसी क्षमता है जिसमें पाठक के अपने पूर्व अनुभव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जो पाठक दी गई पढ़ने की सामग्री को समझ नहीं पाता उसके लिए केवल वर्णों और शब्दों की पहचान एक अर्थहीन क्रिया है।

पढ़ना और निजी संसार

पढ़ने का सीधा संबंध पाठक के साथ होता है। यह कुछ आश्चर्यजनक लग सकता है परन्तु स्मिथ इस तथ्य को बहुत खूबसूरती से प्रस्तुत करते हैं। हम सब अपने अनुभव से जानते हैं कि हम, यहाँ तक कि एक छोटा बच्चा भी, अपनी समझ के अनुसार अपने संसार का ताना-बाना बुनता रहता है। अपने अनुभव, यादें जो नितांत हमारी अपनी हैं, शायद किसी के साथ बाँटी भी नहीं गई हों वे हमारे दिमाग में कहीं-न-कहीं अपनी जगह बनाते हैं। और यही अनुभवों का खट्टा-मीठा भंडार पढ़ते समय पढ़ने की प्रक्रिया में मदद करता है और उसे सुंदर व सजीव भी बनाता है। स्मिथ बताते हैं जो कुछ भी हम जानते हैं तथा जिन तथ्यों और अनुभवों पर हम विश्वास करते हैं, हमारी आशाएँ, और संभावनाएँ, सभी एक सिद्धान्त के रूप में हमारे मस्तिष्क में समाहित हो जाते हैं और पढ़ने की प्रक्रिया में लिखित सामग्री को समझने में हमारी सहायता करते हैं। इसीलिए स्मिथ का कहना है कि पढ़ना केवल लिखित सामग्री को पढ़ लेना मात्र नहीं होता बल्कि उसे समझना होता है और मुख्य बात यह है कि पाठक अपने पूर्व अनुभवों की भरपूर मदद लेता है।

फ्रेंक स्मिथ नए और रोचक तथ्यों को उजागर करते हैं जैसे कि पढ़ने का सम्बन्ध न्यूरो-बायोलॉजिकल पक्ष से भी होता है। हमारी आँखें पठन सामग्री को देखती हैं और हमारा मस्तिष्क उस सामग्री का अवलोकन करता है। यदि पठन सामग्री की संरचना इस तरह की गई हो कि पाठक के पास उसको समझने के लिए पिछले अनुभव ही नहीं हैं, तो ऐसा मानना उचित होगा कि उस विषय में पाठक की रुचि जगाने के लिए हमें कुछ और तरीकों की जरूरत है। ऐसी बहुत सी पठन सामग्री यदि एकत्रित हो जाती है और पाठक उसे समझने में असमर्थ रहता है तो एक किस्म की tunnel vision की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें पाठक पढ़कर समझने में असमर्थ रहता है और अँधेरे में ही हाथ-पाँव मार रहा है।

अपरिचित शब्द

हमारे अपने पढ़ने के अनुभव यह बताते हैं कि पढ़ना एक व्यक्तिगत अनुभव है। पाठकों की अपनी रुचियाँ होती हैं। पठन सामग्री को लेकर, पुस्तकों का चुनाव हमारी अपनी पसंद पर निर्भर करता है। फ्रेंक स्मिथ इस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि हमारे पास पढ़ने के मुख्यतः दो उद्देश्य होते हैं— हम या तो जानकारी के लिए पढ़ते हैं या फिर अपने ज्ञान के विस्तार के लिए। वर्णों को पहचानना ज्ञान पर आधारित प्रक्रिया है और यह अपने आपमें एक पूर्ण क्रिया है, जबकि पढ़ना होता है समझ के साथ, अपने पूर्व अनुभवों

और अनुमान की मदद से पढ़ना और समझना। वे अपनी पुस्तक में पढ़ने की प्रक्रिया में वर्तनी, अर्थ, शब्द पहचान के महत्त्व को भी विस्तार से बताते हैं। इसके साथ स्मिथ इस बात पर भी ज़ोर देते हैं कि एक कुशल पाठक पढ़ते समय अपरिचित शब्दों पर ज़्यादा ध्यान नहीं देते और पढ़ने की धारा को टूटने नहीं देते और अपनी एकाग्रता, रुचि को कोई भीबाधा नहीं पहुँचाते। अपरिचित शब्द की समझ या तो संदर्भ से निकाल लेते हैं या अपनी सुविधा से शब्दकोश से उसका सही अर्थ देख लेते हैं। इस सारी प्रक्रिया में यह ध्यान में रखना जरूरी है कि कुशल पाठक पढ़कर समझने में अपना सारा ध्यान लगाते हैं।

पढ़ाने के तरीके

उनका यह कहना बिलकुल वाज़िब है कि कोई भी कृत्रिम तरीके से बनाया गया कार्यक्रम समझकर पढ़ने के कौशल को बढ़ावा नहीं देता। यदि हम अपने आस-पास के स्कूलों की पहली और दूसरी की कक्षाओं को ध्यान से देखें तो पाएँगे कि इस स्तर पर अध्यापक पढ़ना सिखाने के कुछ तरीके इस्तेमाल करते हैं। सही गलत की पहचान किए बिना, आँख मूँदकर उन पर विश्वास कर लिया जाता है, उदाहरण के लिए वर्णमाला का रटना, ध्वनि, अक्षर की पहचान, शुद्ध उच्चारण इत्यादि। ये सब क्रियाएँ यांत्रिक कौशलों के वर्ग में आती हैं। समझना यह है कि यह पढ़ना सीखने की क्रिया का आधार नहीं है। समझ के साथ पढ़ना एक कला है, पाठक के व्यक्तित्व का एक अंग है जिसे संवेदनशील शिक्षक ही समझ सकते हैं। इस तथ्य के सबूत मौजूद हैं कि एक नन्हा बच्चा जब स्कूल में प्रवेश करता है तो वह अपने अनुभवों के भंडार के साथ ही कक्षा में पढ़ना आरम्भ करता है। शिक्षक एवं हमारी शिक्षा प्रणाली को चाहिए कि इस अनुभव के भंडार को व्यर्थ न जाने दें बल्कि समझकर पढ़ने की प्रक्रिया में इसका उपयोग करें। क्योंकि ऐसा करने से पढ़ने की प्रक्रिया सरल हो जाती है और नन्हा पाठक एक नए आत्मविश्वास का अनुभव करता है।

कक्षा में छपे शब्दों से सम्पन्न वातावरण बनाने के लिए निम्नलिखित काम किए जा सकते हैं—

- (1) **शब्द-दीवार** : कक्षा में दीवार पर चार्ट लगाकर शब्द लिखे जाएँ। ये शब्द बच्चे की दृष्टि में रहेंगे तो वे इनसे घुल-मिल जाएँगे। ये शब्द पाठ्यपुस्तक से हो सकते हैं, रोजमर्रा में उपयोग होने वाले शब्द हो सकते हैं, छोटे बच्चों के लिए सरल शब्द हो सकते हैं।
- (2) **पहेली का कोना** : कक्षा में एक कोने में चार्ट पर पहेलियाँ लिखकर लगा सकते हैं और उसके साथ ही एक चार्ट बच्चों के जवाब के लिए लगा दे। बच्चे पहेलियाँ पढ़कर उनके जवाब लिखने की कोशिश करेंगे व कुछ समय बाद खुद भी पहेलियाँ बनाएँगे।
- (3) **कविता का कोना** : बच्चों को कविताएँ, गाना व सबको सुनाना अच्छा लगता है। चार्ट पर कविताएँ लिखकर या फोटो कॉपी को दीवार पर लगा दे। शुरुआत में ये कविताएँ बच्चों को पढ़कर सुनाई जाए व उन्हें साथ में गाने के लिए कहें। ध्यान रहे जब आप कविता पढ़ें तब प्रत्येक शब्द पर उंगली रखते जाए जिससे बच्चों को शब्द आकृति व उसकी ध्वनि में तालमेल बिठाने में आसानी रहेगी। कुछ समय बाद बच्चे स्वयं कविताएँ पढ़ने को प्रेरित होंगे।

गतिविधियाँ

स्मिथ यह सुझाव भी देते हैं कि पढ़ने की संस्कृति बनाने के लिए, बच्चों का पढ़ने को लेकर उत्साह बनाए रखने के लिए कुछ गतिविधियों का होना ज़रूरी है। हमें पढ़ने का एक ऐसा माहौल बनाना होगा जहाँ बच्चे सहज तरीके से पढ़ना सीख पाएँ। ऐसे में बच्चों को एक **छपे शब्दों से सम्पन्न वातावरण** देना बहुत जरूरी है। कक्षा में पुस्तकों की मौजूदगी, दीवारों पर सोच-समझकर करीने से लगाई छपी/लिखी सामग्री, बैठने की व्यवस्था में बदलाव और अध्यापक का पाठ्यपुस्तक की सीमाएँ लाँघना भी अति आवश्यक है। हमारे लिए यह मानना जरूरी है कि पढ़ने की प्रक्रिया स्कूल आने से पहले और स्कूल के बाद भी चलती रहती है। इससे कक्षा में पढ़ने का माहौल ठोस बनता है। पढ़ने का माहौल स्कूलों या कक्षाओं में पठन क्लब गठित कर बनाया जा सकता है। बच्चों को पढ़ने के लिए उत्साहित करने के लिए शिक्षकों को हर संभव चेष्टा करनी चाहिए।

अभ्यास

- एक कुशल पाठक पढ़ते समय अपरिचित शब्द आ जाने पर क्या करता है? और क्यों?
 - पढ़ने का सम्बन्ध न्यूरो-बायोलॉजिकल पक्ष से भी होता है। इस कथन का क्या मतलब है?
 - पढ़ना सीखने में किस प्रकार की गतिविधियाँ मददगार हो सकती हैं?
-



अध्याय – 13

पढ़ना कैसे सिखाया जाए?

परिचय :

पढ़ना सिखाना एक चुनौतीपूर्ण काम है। कई बच्चे हर साल पढ़ना सीखते हैं, लेकिन अधिकांश बच्चे पढ़ने का टिकाऊ कौशल प्राप्त नहीं कर पाते। पढ़ना सिखाने की कोई एक अचूक विधि नहीं है। इस पाठ में हम वर्तमान स्थिति के बारे में नज़र दौड़ाएँगे और उसका विश्लेषण करके पढ़ना सिखाने के नए तरीके के बारे में विचार करेंगे। पढ़ने की शुरुआत की सामग्री क्या होगी? शिक्षक की भूमिका क्या होगी, पढ़ाना सिखाने के संदर्भ में शिक्षक बच्चे के लिए नई-नई गतिविधियाँ क्या होगी? बच्चों की सामग्री का उपयोग कक्षा-कक्ष में कैसे करें? इन सारी बातों पर हम इस अध्याय में विचार करेंगे।

उद्देश्य :

- पढ़ने की परिभाषा गढ़ सकेंगे।
- वर्तमान पठन-प्रक्रिया पर टीका टिप्पणी कर सकेंगे।
- पढ़ना सिखाने की शुरुआत किताबों से करने के फायदे बता सकेंगे।
- पढ़ना सिखाने के समय अपनी और बच्चों की भूमिका समझ सकेंगे।
- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त बच्चों के लिए पठन सामग्री का निर्माण करके उसका उपयोग कर सकेंगे।
- पढ़ना सिखाने से संबंधित नई-नई गतिविधियाँ बना सकेंगे।
- पढ़ने की ललक और रुचि विकसित कर सकेंगे।
- पठन से संबंधित विविध क्रियाकलापों से परिचित हो सकेंगे।

छोटे बच्चों के अध्यापक को जो तमाम चुनौतियाँ झेलनी पड़ती हैं, पढ़ना सिखाना शायद उनमें सबसे बड़ी और कठिन चुनौती है। वह सबसे कठिन इसलिए है क्योंकि पढ़ना एक सहज कौशल नहीं है। उसमें कई कौशल और बोध-क्षमताएँ शामिल हैं। पढ़ना सिखाने की कोई एक अचूक विधि नहीं है। हर विधि की अपनी सीमाएँ हैं और अध्यापक को यह कोई नहीं सुझा सकता कि उसकी परिस्थिति में सही उपाय क्या है। फिर भी, पढ़ने का शिक्षण एक स्फूर्तिवान काम है क्योंकि बच्चे के जीवन का बहुत कुछ उस पर निर्भर है। यदि एक बार आप बच्चे को पढ़ने और पुस्तकों से सफलतापूर्वक जोड़ सकें तो फिर उसके लिए संभावित उपलब्धियों का कोई अंत नहीं है।

तो असली बात यह है कि पढ़ने का शिक्षण 'सफलतापूर्वक' कैसे किया जाए? यहाँ हमें दो क्षण रुक कर अपने इर्द-गिर्द फैली भीषण विफलता पर विचार करना चाहिए। लाखों बच्चे हर साल पढ़ना सीखते हैं, लेकिन, इनमें से बहुतेरे पढ़ने का टिकाऊ कौशल प्राप्त नहीं कर पाते। बहुत से स्कूल की परीक्षा पास कर लेते हैं, लेकिन पढ़ने में रुचि का विकास नहीं कर पाते। कई बच्चे आराम-से पढ़ते दिखते हैं, पर वास्तव में पढ़े हुए को ज्यादा समझ नहीं पाते। काफी हद तक विफलताओं का दोष हम पढ़ने के कमज़ोर शिक्षण को दे सकते हैं।

पढ़ने का स्वस्थ कौशल बच्चे के समग्र विकास में क्या भूमिका निभाता है, यह किसी अध्यापक को याद

दिलाने की जरूरत नहीं। लेकिन ऐसा लगता है कि बहुत कम अध्यापक यह जानते हैं कि 'पढ़ने का स्वस्थ कौशल' किसे कहेंगे और उसका विकास कैसे किया जा सकता है? इस अध्याय में पढ़ने का स्वस्थ कौशल हम उन कौशलों के समूह को मानेंगे जो लिखी या छपी भाषा को अर्थ से जोड़ने में बच्चे की मदद करते हैं। जब तक एक बच्चा पढ़ी हुई सामग्री को समझने या पहले से ज्ञात किसी चीज से जोड़ने में असमर्थ रहता है तब तक हम उसकी पढ़ने की क्षमता को स्वस्थ नहीं कह सकते। **पढ़ने की परिभाषा हम 'लिखे हुए शब्दों में अर्थ ढूँढ़ने की प्रक्रिया' के रूप में कहेंगे।**

अभ्यास

- बच्चे के समग्र विकास में पठन कौशल किस प्रकार सहायक है?

स्थिति फिलहाल यह है

यदि हम यह परिभाषा मंजूर कर लें तो जल्दी ही यह देख सकेंगे कि आँगनवाड़ियों (या किंडरगार्टनों) और प्राइमरी स्कूलों में हो रही अनेक चीजें उचित नहीं हैं। उदाहरण के लिए वर्णमाला को रटना या कहानी को शब्दशः जोर से दुहराना, हमारी परिभाषा के हिसाब से सही गतिविधियाँ नहीं हैं। ऐसा करते समय बच्चे लिखित भाषा को किसी अर्थ से नहीं जोड़ पाते। वर्णमाला के अक्षरों का अलग से कोई अर्थ नहीं होता। कई स्कूलों में अक्षरों को 'कमल' और 'खरगोश' जैसे रूढ़ शब्दों से इस तरह बाँध दिया जाता है कि फिर बच्चे इन अक्षरों को किसी भी शब्द में पाकर 'कमल' का 'क' कहकर पहचान पाते हैं। यदि कहानी हरेक शब्द को तोड़कर पढ़ी जाए तो उसका कोई खास अर्थ नहीं निकलेगा— इस तरह कहानी से संबंध बनाना भी संभव नहीं है। कुछ लोग यह दलील दे सकते हैं कि ये गतिविधियाँ भले तत्काल सार्थक न हों पर आगे चलकर अर्थग्रहण के साथ पढ़ने की बुनियाद बन सकती है। शायद इस दलील में थोड़ी-बहुत सच्चाई हो, पर यह सच्चाई तभी लागू हो सकती है जब सारे बच्चे स्कूल में इतने वर्ष टिकें कि वे सार्थक रूप से पढ़ना सीख लेने का अवसर पा सकें। उन बच्चों के बारे में भी सोचना ज़रूरी है जो एक ध्वनि को दर्जनों बार दुहराने, अक्षर की नकल उतारने, शब्दों को अलग करके जोर-जोर से बोलने की कवायद से बुरी तरह निराश और कुंठित हो जाते हैं। हम सब जानते हैं कि बच्चों को ऐसी गतिविधियाँ भाती हैं, जिनका फल तुरंत मिलता हो। बहुत आगे चलकर लाभ मिलने की उम्मीद थोड़े ही बच्चों को प्रेरित कर सकती है। और कई बच्चों के लिए तो भविष्य स्कूल में रहने की भी गारंटी नहीं देता। तमाम अन्य कारणों के साथ-साथ शुरू से मिली विफलता और निराशा स्कूल से इन बच्चों को विदा कर देती है।

अतः हमें इन बुनियादी सवालों का सामना करना ही पड़ेगा कि पढ़ने की आरंभिक शिक्षा को सार्थक कैसे बनाएँ? आगे के पृष्ठों में अध्यापकों के करने लायक कुछ चीजें सुझाई गई हैं। जो लोग पुरानी विधियों के आदी हैं, उन्हें ये चीजें एकदम चकरा देने वाली या असंभव लग सकती हैं। पर यदि पुरानी विधियाँ ठीक-ठाक होतीं तो हमें नई विधियों की जरूरत ही न पड़ती। हमें न केवल नई विधियों की बल्कि संपूर्णतया नए परिप्रेक्ष्य की जरूरत इसलिए है क्योंकि पुरानी विधियाँ ठीक से काम नहीं दे रही हैं।

शुरुआत किताबों से

'लैश कार्ड', चार्ट या लकड़ी के अक्षरों जैसी प्रचलित सामग्री की तुलना में पढ़ने की शुरुआत किताबों से करना कहीं अच्छा और ज़रूरी है। हमारा उद्देश्य तो आखिर यही है न कि बच्चे आगे चलकर किताबें पढ़ सकें! चार्टों और कार्डों जैसी चीजें कभी-कभी काम आ सकती हैं पर वे पढ़ना सीखने की वैसी तेज और स्थायी इच्छा पैदा नहीं कर सकतीं जैसी किताबें कर सकती हैं। न की उन्हें पढ़कर बच्चे को अपनी उपलब्धि का वैसा आभास मिल सकता है जैसा कोई किताब दे सकती है। लेकिन पहले हमें यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि हम किस तरह की किताबों की चर्चा कर रहे हैं और उन्हें किस तरह इस्तेमाल करना है?

पढ़ना सिखाने के लिए उपयोगी पुस्तकें वे ही हैं जिनकी चर्चा पिछले अध्याय 'बातें करना' के अंतर्गत हो चुकी है। किताबें आप खुद भी बना सकते हैं। साफ अक्षरों में हाथ से लिखी और रेखाचित्रों या तस्वीरों (जिन्हें बच्चे बना सकते हैं) से सजाई गई कोई भी कहानी आपके संग्रह में स्थायी रूप से शामिल हो सकती है। इसी तरह आप कविताओं, गीतों और बच्चों के अपने खेलगीतों के संग्रह बना सकते हैं।

किताब पढ़कर सुनाना

इस बात का हमेशा ध्यान रखिए कि बच्चे दस से ज्यादा न हों और फर्श पर आपके गिर्द बैठे हों। बाकी बच्चों को इस वक्त कोई अन्य काम देना जरूरी है। आपके गिर्द बैठे बच्चों में से हरेक को किताब के पन्ने आसानी से नज़र आने चाहिए। किताब में जो लिखा है उसे पढ़ते वक्त आप उसमें अपना पुट अवश्य देते जाइए। कुछ किताबों में कहानी या कोई सामग्री खूब विस्तार से प्रस्तुत की गई होती है। एक लंबी कहानी को ज्यों-त्यों पढ़ देने से काम नहीं चलेगा। कहानी आपको इतनी अच्छी तरह आनी चाहिए कि आप उसे छोटा करके अपने शब्दों में सुना सकें। इसके विपरीत यदि हर पृष्ठ पर एक या दो पंक्तियाँ ही लिखी हैं तो आप कुछ विवरण जोड़ सकते हैं। यह भी आवश्यक है कि आप चित्र में दिए गए विवरण बच्चों को दिखाइए और उन पर इत्मीनान से बात कीजिए।

'पढ़ना' क्या है?

जो लोग पढ़ नहीं सकते उनके लिए पढ़ना एक पहेली है। तीस साल पहले विशेषज्ञों को भी यह नहीं मालूम था कि जब बच्चा पढ़ना सीखता है तो वह दरअसल करता क्या है? अपने अनुभव और परंपरा के आधार पर अध्यापकों ने कुछ 'विधियाँ' खोज रखी थीं, जैसे 'वर्णमाला' विधि, 'उच्चारण' विधि, 'शब्द' विधि आदि। इनमें से कोई 'विधि' पढ़ने की प्रक्रिया की जानकारी पर आधारित नहीं थी। ये 'विधियाँ' आज तक लोकप्रिय बनी हुई हैं।

अब यह माना जाता है कि पढ़ने की प्रक्रिया में अंकित सूचना की बानगी ग्रहण करना महत्वपूर्ण है। हमारी आँखें जब अक्षरों, विराम चिह्नों, शब्दों और शब्दों के बीच छोड़ी गई जगहों का मुआयना करती हैं तो हमारा मस्तिष्क इस ग्राफिक (हाथ से लिखी गई या छपी हुई) सामग्री की संपूर्ण मात्रा पर नहीं देता यदि ऐसा होता तो छोटी-छोटी सूचना पर गौर करने की मस्तिष्क की क्षमता पर अत्यधिक बोझ पड़ता और अधिकांश लोग जिस रफ्तार से पढ़ते हैं वह असंभव हो जाती। पारंपरिक विधियों से पढ़ना सीखने वाले कई बच्चों के साथ यही होता है। वे हर शब्द को अक्षरों की छोटी इकाइयों में तोड़ते हैं और इस तरह शब्दों का अर्थ ग्रहण करने की मस्तिष्क की क्षमता पर बहुत ज्यादा बोझ डाल देते हैं। एक प्रवीण पाठक की आँखें ऐसा बोझ नहीं पड़ने देती क्योंकि वे पन्ने पर अंकित ग्राफिक सूचनाओं के एक सीमित, चुने हुए अंश से जुड़ती हैं। प्रवीण पाठक किसी अक्षर के पूरे आकार पर ध्यान नहीं देता है, न ही वह एक शब्द के सारे अक्षरों या एक वाक्य के सारे शब्दों पर ध्यान देता है। पढ़ते समय उसकी आँखें अंकित सामग्री के एक छोटे-से अंश पर गौर करती हैं। शेष भाग वह समझदार अनुमान के जरिए ग्रहण करता है। अनुमान का आधार होता है अक्षरों की आकृतियाँ, शब्द, उनके अर्थ उनके संयोजन और आम दुनिया से पाठक का पहले से मौजूद परिचय।

पढ़ना एक एकाकी प्रक्रिया नहीं है, उसमें कई प्रक्रियाएँ शामिल हैं। पढ़ते वक्त भाषा के उपयोग से जुड़े तीन तरह के संकेत हमारे ध्यान में आते हैं

1. अक्षरों की आकृतियाँ और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ;

2. वाक्य विन्यास (जैसे विशेषण का संज्ञा से पहले आना);
3. शब्दों के अर्थ।

भाषा का इस्तेमाल करते-करते हम इन तीनों तरह के संकेतों से जुड़ी कुछ अपेक्षाओं के आदी हो जाते हैं। ये अपेक्षाएँ ही अनुमान या भविष्यवाणी के आधार पर छपी हुई सामग्री का वह अंश पूरा करने में हमारी मदद करती हैं जिसे हमारी तेज रफ्तार आँखों ने छोड़ दिया था।

इस तरह किताब पढ़ते वक्त प्रश्न पूछना या किसी दूसरी तरह से परीक्षा लेना ठीक नहीं है। कहानी पूरी हुई तो हुई, अब कोई और गतिविधि शुरू कीजिए। बच्चे स्वयं कुछ कहना या पूछना चाहें तो दूसरी बात है, लेकिन एक अध्यापक के तौर पर आप किताब पढ़कर सुनाने के अवसरों को प्रश्नों से दूर रखें।

यदि हर बच्चे को हर हफ्ते तीन बार इस तरह किताब सुनने को मिले तो आप पाएँगे कि बच्चे जल्दी ही आपकी पढ़ी किताबों पर बात करना शुरू कर देंगे। कुछ ही समय में वे चित्रों और कहानी से इतने परिचित हो जाएँगे कि वे आपके पढ़ने का अनुमान लगा सकेंगे। इसी अनुमान के सहारे वे एक दिन किताब को स्वयं पढ़ सकेंगे तब तक उन्हें किताब की सारी बातें ज्ञात हो चुकी होंगी और वे चीजों से तरह-तरह के संबंध बना चुके होंगे। जब वे किताब को पढ़ेंगे— एक पृष्ठ पर दिए गए सारे शब्द या शब्दों के सारे अक्षर जाने बगैर—तो वे उससे अर्थ के कई स्तरों पर जुड़ सकेंगे।

कविता सुनाना और गाना

यदि आपने पिछले पृष्ठ पर दिया गया छोटा सा लेख 'पढ़ना क्या है?' पढ़ा है, तो आपने यह समझ लिया होगा कि पढ़ने की कुंजी अनुमान लगाने का कौशल है। इस कौशल के विकास में कविता आश्चर्यजनक योगदान कर सकती है। नियमित रूप से कविताएँ सुनकर छोटे बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएँ ग्रहण कर लेते हैं। कविता इसके लिए विशेष रूप से उपयोगी इसलिए है क्योंकि उसे याद रखना आसान होता है। कविता याद रखने के लिए छोटे बच्चों को कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता। बार-बार सुनने, मजा लेने और दुहराने से कविता अपने आप याद हो जाती है।

अध्यापक के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि अच्छी कविताओं का चुनाव कैसे करें और उन्हें कहाँ तलाश करें। अधिकांश पाठ्यपुस्तकों में दी गई कविताएँ प्रायः बच्चों के स्तर की नहीं होती हैं और भाषा के विकास की दृष्टि से उनकी उपयोगिता बहुत कम होती है। इसी तरह हिंदी की मासिक पत्रिकाओं में छपने वाली अधिकांश कविताएँ कठिन होती हैं। **पाठ्यपुस्तकों और पत्रिकाओं की ज्यादातर कविताएँ उबाऊ और एक सतही अर्थ में आदर्शवादी होती हैं। उनकी वाक्य रचना और शब्दावली कृत्रिम होती है। उनमें रोजमर्रा की भाषा का पुट नहीं होता। यही कारण है कि वे भाषा सीखने के साधन के रूप में विशेष उपयोगी नहीं होतीं।**

बच्चों में पढ़ने के कौशल की नींव डालने के लिए एकदम अलग किस्म की कविताएँ चाहिए। ऐसी कुछ कविताएँ अगले पृष्ठों पर दी गई हैं। निश्चय ही अध्यापक स्वयं ऐसी अन्य कविताएँ तलाश सकते हैं पर इसके लिए उन्हें काफी मेहनत करनी होगी। भाषा के स्वाभाविक और खेल जैसे प्रयोग के लिए अपनी दृष्टि दौड़ानी होगी। महज नैतिक सीख देने वाली कविताओं से दूर रहना होगा।

एक काम कोई भी अध्यापक आसानी से कर सकता है— यह है बच्चों के उन गीतों को लिखकर रखना जिन्हें वे कूदते, फाँदते, रस्सी कूदते और गेंद से खेलते समय गाते हैं ये खेलगीत पारंपरिक हैं और इन्हें शहर में ढूँढ़ना कुछ कठिन होगा, पर थोड़ा प्रयास करके हम ऐसे गीतों का संग्रह तैयार कर सकते हैं। संग्रह एक या कई छोटी किताबों की शकल ले सकता है जिनमें हर पृष्ठ पर एक गीत सुंदर अक्षरों में लिखा हो और साथ में हाथ से बनाई या पत्रिका से काटी गई कोई तस्वीर हो। यह जरूरी नहीं कि तस्वीर गीत

में कही गई बात को हू-ब-हू पेश करती हो। इतना काफी है कि तस्वीर में गीत का भाव या उससे किसी प्रकार जुड़ा दृश्य प्रकट होता हो। आप इस तरह की कई पुस्तकें तैयार कर सकते हैं। लगभग 16 पेज की ये पुस्तकें सादे कागज से बन सकती हैं। यदि आप खर्चा उठा सकें तो ड्रॉइंग के कागज से बनी किताब ज्यादा चलेगी और आपको हर साल वही किताब फिर से नहीं बनानी पड़ेगी।

कविता की किताब पढ़ने का ढंग वही है जो अन्य किताबें पढ़ने का है— यानी बच्चों को अपने चारों ओर बैठाएँ और किताब को बीच में रखें। दो-तीन बार पढ़ने के बाद आप किताब के बगैर कविता गाकर सुनाएँ और बच्चे आपके साथ गाएँ। यदि कविता अच्छे स्तर की हुई तो वे जल्दी ही उसे याद करके गा सकेंगे। बाद में जब वे उसे किताब से पढ़ेंगे तो शब्दों का आसानी से अनुमान लगा सकेंगे। छह वर्ष के बच्चे एक पूरी कविता कागज या स्लेट पर मजे से उतार सकते हैं, अगर तब तक वह उन्हें याद हो चुकी हो तो कुछ ही दिनों में कविता के शब्द पहचानने में कोई खास कठिनाई नहीं होगी।

अभ्यास

2. बच्चों को कविताओं के माध्यम से सिखाना क्यों आसान है?

1. ईलम डील खेलो
आओ खेलो ईलम डील।
गेंद जो उछाली ले के
भाग गई चील।
रस्ते में पड़ी एक
बहुत बड़ी झील।
जिसके बीचों बीच में थी
ऊँची सी कील।
चील ज्यों ही बैठी उस पर
टूट गई कील।
औंधे मुँह पानी में
जाके गिरी चील।
गेंद रही तैरती और
डूब गई चील।
ईलम डील खेलो आओ
खेलो ईलम डील।

—निरंकार देव सेवक

2. बहुत जुकाम हुआ नन्दू को
एक रोज वह इतना छींका
इतना छींका इतना छींका
इतना छींका इतना छींका
सब पत्ते गिर गए पेड़ के
धोखा हुआ उन्हें आँधी का

— राम नरेश त्रिपाठी

1. डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

3. नारंगी रंग की नारंगी
बेच रहा फलवाला गाकर
और बजाता है सारंगी

— नंदू क्यों छींका?
— पेड़ के पत्ते क्यों
गिर पड़े?

चमक रहा है छिलका पीला
सुंदर फल है बड़ा रसीला
प्यास बुझे मन खुश हो जाता
ढीली तबियत होती चंगी

— सुधा चौहान

4. कितनी लंबी है सड़क
कितना ऊँचा है पहाड़
कितनी छोटी है चिड़िया
पेड़ है कितना बड़ा

तेज कितनी है नदी
पत्थर कितना गोल है
घास है कितनी हरी
फूल कितना लाल है

—कृष्ण कुमार

5. लड़कों इस झाड़ी के भीतर
छिपा हुआ है जोड़ा तीतर
फिरते थे यह अभी यहीं पर
चारा चुगते हुए जमीं पर
एक तीतरी है इक तीतर
हमें देख कर भागे भीतर
आओ इनको जरा डरा कर
हा, हूँ करके निकालें बाहर



यह देखो वह दोनों भागे
खड़े रहो चुप बढो न आगे

अब सुन लो इनकी गिटकारी
एक अनोखे ढंग की प्यारी
तीइत्तड़ तीइत्तड़ तीइत्तड़ तीइत्तड़
नाम इसी से इनका तीतर

—श्रीधर पाठक

6. लाल टमाटर लाल टमाटर, मैं तो तुमको खाऊँगा।
अभी न खाओ मैं कुछ दिन में और अधिक पक जाऊँगा

लाल टमाटर लाल टमाटर, मुझको भूख लगी
भूख लगी है तो तुम खा लो यह गाजर, मूली सारी।।
लाल टमाटर लाल टमाटर, मुझको तो तुम भाते हो।
तुमको जो अच्छा लगता है उसको तुम क्यों खाते हो।।

लाल टमाटर लाल टमाटर, अच्छा तुम्हें न खाऊँगा।
मगर तोड़ कर डाली पर से अपने घर ले जाऊँगा।।

—निरंकार देव सेवक

7. एक, दो तीन चार।
आओ चलें कुतुबमीनार।
पाँच, छ सात, आठ
देखें चल के राजघाट
नौ, दस, ग्यारा, बारा
चलें चाँदनी चौक फव्वारा।
तेरा चौदा, पन्द्रा, सोला
कनाट प्लेस में मुर्गा बोला।

—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

8. आओ एक बनाएँ चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
और बनाते जाएँ जब तक
ऊब न जाएँ थककर

फिर सबसे छोटे चक्कर में
म्याऊँ एक बिटाएँ
और बाहरी हर चक्कर में
चूहों को दौड़ाएँ।
दौड़-दौड़कर सभी थकें
हम बैठे मारे मक्कर,
नींद लगे हम सो जाएँ
वे देखें उझक-उझककर।
आओ एक बनाएँ चक्कर

— सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

9. कितनी बड़ी दीखती होंगी मक्खी को चीजें छोटी
सागर-सा प्याला भर जल, पर्वत-सी एक कौर रोटी।

खिला फूल गुलदस्ते जैसा काँटा भारी भाला-सा
तालों का सूराख उसे होगा बैरगिया नाला-सा

हरे-भरे मैदान की तरह होगा एक पीपल का पात
पेड़ों के समूह-सा होगा बचा खुचा थाली का भात।
ओस बूँद दरपन-सी होगी सरसों होगी बेल समान
साँस मनुज की आँधी-सी करती होगी उसको हैरान

— ठाकुर श्रीनाथ सिंह

10. गोलू के मामा, आए
सब देख रहे मुँह बाए

मुँह उनका है गुब्बारा
था किसने उन्हें पुकारा,
नारंगी उनको भाए
गोलू के मामा आए।
वे पूरब से हैं आते
गोलू से गप्प लड़ाते

हौले से उसे सुलाकर
फिर पच्छिम को उड़ जाते।
सच बात अगर मैं बोलूँ
तो पोल पुरानी खोलूँ
सूरज का फटा पजामा
सिलते गोलू के मामा।

पर जाने क्या जादू है
रहते हैं सब पर छाए,
सब देख रहे मुँह बाए
गोलू के मामा आए

ये बड़े दिनों में आए
झोले में हैं कुछ लाए
हमको तो पता चले तब
जब गोलू हमें खिलाए।

लो दिखा—दिखा नारंगी

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

बन जाते एक बताशा,
यूँ सबको देते झाँसा
करते ये खूब तमाशा।

हर पंद्रह दिन में कैसे
आ जाते बिना बुलाए
मैं देख रहा मुँह बाए
गोलू के मामा आए।

—रमेश चन्द्र शाह

अभ्यास

- कविताओं से बच्चों में किन-किन कौशलों का विकास होता है?
- कविताओं में आए पशु-पक्षियों, पेड़-पौधे, फल-सब्जियाँ, रंग संबंध एवं वस्तुओं की सूची बनाए।
- इसी तरह के व्यंग्य बाल गीतों का संग्रह करें।

यहाँ दी गई सभी कविताएँ और इनकी तरह की कई और कविताएँ नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'महके सारी गली-गली' में संकलित हैं।

किताबें बनाना

कक्षा में (स्कूल में ही नहीं) किताबें रखना अच्छी बात है पर किताबें 'बनाना' भी जरूरी है। बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए सबसे अच्छी सामग्री अध्यापक ही बना सकता है। यह सामग्री हर बच्चे के लिए अलग से भी बनाई जा सकती है और सामूहिक रूप से भी। इस सामग्री का मुख्य स्रोत वे तमाम गतिविधियाँ हैं जिनकी चर्चा हम कर चुके हैं, जैसे कहानियाँ सुनाना व पढ़ना, चित्रों पर चर्चा करना, कविता गाकर सुनाना आदि। कागज कैसा भी हो सकता है। यदि बच्चों के पास कापियाँ हैं तो उन्हें ही नीचे समझाए गए तरीके से किताबों में बदला जा सकता है। यदि अध्यापक या स्कूल कागज खरीदने की स्थिति में हों— सादा भी और ड्राइंग का भी—तो कई और चीजें संभव हैं।

शुरुआत पाँच वर्ष के आसपास कभी भी हो सकती है। यह याद रखना जरूरी है कि 'कक्षा के सारे बच्चे कभी एक साथ या एक रफ्तार से पढ़ना शुरू नहीं कर सकते।' अंतर काफी बड़ा हो सकता है। कुछ बच्चों में पाँच वर्ष की आयु में ही बहुत रुचि और सामर्थ्य हो सकती है। ये बच्चे सात वर्ष की आयु तक पढ़ने के कौशल अच्छी तरह प्राप्त कर लेंगे। दूसरी ओर कुछ बच्चों को आठ वर्ष की आयु में भी दिक्कत महसूस हो सकती है। इन पृथक रफ्तारों की चिंता ऐसे अध्यापक को नहीं सताएगी जो अपने बच्चों को निकट से जानता हो। उसे इतना भर करना होगा कि हर बच्चे की प्रगति पर विचार करे और कुछ बच्चों की विशेष कठिनाइयों का ध्यान रखे। **यह एक चुनौती भरा काम है और जहाँ बच्चों की संख्या अधिक हो, वहाँ तो यह असंभव है।** वहाँ केवल सीमित सफलता की उम्मीद की जा सकती है।

कहानियों, कविताओं और तस्वीरों आदि से संबंधित गतिविधियों से उपजी बातचीत से हरेक बच्चे के लिए एक शब्द या वाक्य चुन लीजिए और उसे बच्चे की कापी या एक कागज पर साफ-साफ लिख दीजिए। यह जरूरी है कि शब्द या वाक्य उस कहानी या चित्र का प्रतिनिधित्व करता हो जिसके संदर्भ में बातचीत हुई थी। तभी उसका बच्चों के लिए कोई तात्कालिक अर्थ होगा। आपने हर बच्चे के लिए जो लिखा है उसे पढ़ कर सुनाएँ। फिर बच्चे से कहें कि वह आपकी लिखावट को नीचे उतारे या उसी पर लिखे।

रोज जब आप बच्चे को एक नया शब्द या वाक्य लिख कर दें तो पिछली सामग्री को जरूर दुहराएँ। बच्चे से कहिए कि पिछले शब्दों या वाक्यों को पढ़कर सुनाए और जब उसे दिक्कत हो तो आप पढ़कर सुनाइए। साथ ही जब 'रोज नया वाक्य लिखने और पुराने वाक्य सुनने के लिए बच्चे के साथ बैठें तो वाक्यों को थोड़ा विस्तार देकर उन पर बातचीत करना ना भूलें।' उदाहरण के लिए यदि एक पिछला वाक्य कुत्ते के बारे में है तो इस तरह के एक-दो प्रश्न और पूछिए कि वह कहाँ गया था, आज सुबह वह कहाँ है? आखिरी बात यह है कि बच्चे के पढ़ने में छोटी-छोटी गलतियाँ न निकालिए। यदि वाक्य है 'बारिश आई' और बच्चे ने पढ़ा, 'बारिश हुई' तो इस गलती को ठीक करने की जरूरत नहीं है क्योंकि उससे वाक्य के अर्थ का कोई नुकसान नहीं हुआ।

कक्षा की हर कापी धीरे-धीरे कहानियों या सोच-विचार की एक किताब बन जाएगी आप जब बच्चे की लिखाई रोज देखेंगे तो पाएँगे कि अलग-अलग अक्षरों में उसे एक बराबर कठिनाई नहीं होती। कुछ अक्षर या चिह्न ज्यादा अभ्यास माँगते हैं और उनका अभ्यास उसी पृष्ठ पर जितनी बार चाहे किया जा सकता है। लक्ष्य यह है कि जो भी भाषा आप सिखा रहे हैं उसकी वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को लिखने और पहचानने में बच्चा प्रवीण हो जाए।

कुछ लोग सोचते हैं, और शायद उन्होंने आपको बताया भी हो, कि हिन्दी वर्णमाला अंग्रेजी से एकदम भिन्न है। वे कहते हैं कि हिन्दी की मात्राएँ अलग से सीखना जरूरी है और शुरू में बच्चों को केवल ऐसे थोड़े-से शब्द दिए जाने चाहिए जिनमें कोई मात्रा नहीं लगती। यह दृष्टिकोण एक मान्यता पर आधारित है और यह कतई जरूरी नहीं कि हर अध्यापक इस मान्यता से सहमत हो। इस मान्यता के कारण प्रवेशिकाओं के लेखक मात्राओं से परहेज करते हुए प्रायः बड़ी अजीबोगरीब रचना कर बैठते हैं। उदाहरण के तौर पर ये दो वाक्य जिनमें अर्थ की तलाश करना व्यर्थ है, हिन्दी की प्रवेशिकाओं में बहुत लोकप्रिय रहे हैं :

थप रतन। घर थप । घर थप रतन।

मगर इधर मत रख। खबर उधर मत रख।

'इस बात का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है कि छोटे बच्चों को मात्राओं से दूर रखा जाए।' पढ़ने की सार्थक सामग्री में मात्राएँ हो तो इसका बच्चों की प्रगति पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा। हाँ, मात्राओं को लिखने या आगे चलकर लेखन में मात्राओं के इस्तेमाल का विशेष अभ्यास कराना दूसरी बात है।

अभ्यास

- बच्चों द्वारा खेल-खेल में गाए जाने वाले गीतों, कविताओं का एक संकलन तैयार कीजिए। साथ-ही-साथ यह भी बताइए कि इस सामग्री का उपयोग पढ़ना सिखाने के लिए कैसे करेंगे?

कुछ गतिविधियाँ

फिर से कहना जरूरी है कि ये गतिविधियाँ सुझाव मात्र हैं। पढ़ना सीखने की प्रक्रिया को मजेदार



। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

बनाने के लिए आप क्या-क्या चीजें कर सकते हैं, इसकी ओर संकेत करने के लिए ये गतिविधियाँ यहाँ दी गई हैं। इनकी उपयोगिता बच्चों की प्रगति के भिन्न-भिन्न स्तरों के हिसाब से आपको तय करनी होगी उनमें थोड़ा-सा परिवर्तन करके उन्हें किसी भी आयु या क्षमता के अनुरूप बनाया जा सकता है।

एक

फर्श पर नक्शा

अगर आपकी कक्षा में फर्नीचर नहीं है तो अच्छा है, नहीं तो बच्चों को बरामदे, पिछवाड़े या किसी और खुली जगह में ले जाइए जहाँ वे आसानी से घूम-फिर सकें।

दौड़ने, चलने, एक पैर से कूदने, एक कदम छोड़कर कूदने, घोड़े की तरह कूदने, लंबे उग भरने, आधे कदम लेने, उल्टे चलते, और बगल चाल के लिए अलग-अलग प्रतीक चुन लीजिए। ध्यान रखें कि प्रतीक बहुत सरल हों और आसानी से याद किए जा सकें। जैसे दौड़ने के लिए :  एक कदम छोड़कर कूदने के लिए: 

अब जिस जगह आप यह गतिविधि कर रहे हैं उसके हर कोने के लिए प्रतीक नियत कर दीजिए। बच्चों को समझा दीजिए कि किस प्रतीक का क्या अर्थ है। पहली बार यह गतिविधि करते वक्त तीन या चार से ज्यादा प्रतीक न लीजिए, वरना बच्चे कुछ दिक्कत महसूस करेंगे।

शुरू करने के लिए कोई सा कोना चुन लीजिए। बच्चों को बताइए कि उस कोने में पहुँचकर उन्हें फर्श पर बने प्रतीक के अनुसार काम करना है। प्रतीक मिट्टी में हाथ से बनाए जा सकते हैं या वहाँ गत्ते या पत्थर का टुकड़ा रखकर रंग से बनाए जा सकते हैं।

जब हर बच्चे को तीन-चार बार भाग लेने का मौका मिल चुका हो तब प्रतीक की जगह उस गतिविधि का नाम साफ अक्षरों में लिख दीजिए— 'दौड़ो'। इसके बाद गतिविधि पहले की तरह चालू रखिए।

धीरे-धीरे प्रतीकों की संख्या बढ़ाते जाइए। कक्षा में वापस आकर बाहर की जगह का नक्शा ब्लैकबोर्ड पर बनाइए और उसमें सही जगहों पर गतिविधियों के नाम लिखिए।

दो

वर्णमाला के टुकड़े

वर्णमाला को तीन भागों में बाँटिए और हर भाग के अक्षर बड़े आकार में कागज की एक लंबी पट्टी पर लिख दीजिए। तीनों भागों को दीवार पर कुछ-कुछ दूरी पर चिपका दीजिए— ऐसी जगह जहाँ वह सब बच्चों को साफ व आसानी से दिखाई दे। मात्राओं को एक चौथी पट्टी पर लिखिए।

अब बोर्ड पर एक शब्द लिखिए। बच्चों से कहिए कि उस शब्द के अक्षर और मात्राएँ ध्यान से देखकर उन्हें दीवार पर चिपकी पट्टियों में पहचानें।

तीन

विज्ञान की शुरुआत

रोजमर्रा की चीजों की चर्चा के लिए उनका वर्गीकरण कीजिए। उदाहरणतया 'उड़ने वाली चीजें', 'गोल चीजें', 'चपटी चीजें', और 'तैरने वाली चीजें'।

इस तरह बनाए गए किसी एक समूह का नाम बोर्ड पर लिखिए, फिर उसे पढ़कर सुनाइए और बच्चों

से कहिए कि वे उस समूह में शामिल की जा सकने वाली तीन चीजों के नाम सुझाएँ। जैसे, 'उड़ने वाली चीजों', में बच्चे पतंग, हवाई जहाज और बादल सुझा सकते हैं। इन्हें बोर्ड पर साफ-साफ लिखिए।

बच्चों से कहिए कि चीजों के नाम अपनी कापी पर उतारें और इन चीजों के छोटे-छोटे चित्र भी बनाएँ।

चार

शब्दों का नागिन टापू

जमीन पर एक या कई नागिन टापू के खेल जैसे चौखाने बनाइए। हरेक घर में रोजमर्रा की चीजों जैसे गिलास, चम्मच, घर, पेड़ के नाम लिख दीजिए और साथ में उस चीज का एक छोटा-सा प्रतीक बना दीजिए।

बच्चों को पाँच-पाँच के समूह में बाँटकर हर समूह में एक रैफरी नियुक्त कर दीजिए। रैफरी का काम है गप्पी फेंकना और हर बच्चे की चाल का निरीक्षण करना। खेलने वालों को हर घर में पैर रखते समय उस पर लिखी चीज का नाम पढ़कर सुनाना है और गप्पी वाले घर के ऊपर से गुजर जाना है।

यह खेल खिलाते वक्त रैफरी का काम हर बार किसी नए बच्चे को दीजिए।

पाँच

जो पढ़ा वह करो

जो बच्चे सीख चुके हैं उन्हें यह भी सीखना जरूरी है कि पढ़ने का संबंध करने से है। इस गतिविधि में अध्यापक बोर्ड के पास चुपचाप खड़ा रहता है और बोलने के स्थान पर छोटे-छोटे निर्देश बोर्ड पर लिखता जाता है।

हरेक बच्चे को उसकी क्रम संख्या पता होनी चाहिए। बोर्ड पर निर्देश लिखते समय साथ में किसी बच्चे की क्रम संख्या भी लिख दें। जैसे— 'उठकर बाहर जाओ, एक पत्थर लाओ-10'। इस निर्देश का मतलब है कि 10 नंबर के बच्चे को उठकर बाहर जाना है और एक पत्थर लाना है। अब अगला निर्देश हो सकता है—'10 नंबर पत्थर लेकर उसे अपने दाहिने घुटने पर रखो-5'।

धीरे-धीरे निर्देशों को और जटिल बनाते जाएँ। जटिल निर्देश इस तरह के हो सकते हैं कि बच्चा दीवार पर टँगा पोस्टर देखकर कोई खास चीज ढूँढ़े या अस्पताल का रास्ता बताए, या स्कूल के बाहर लगे पेड़ों की संख्या गिनकर बताए, आदि।

छह

पिछला शब्द, अगला शब्द

इस गतिविधि के लिए बाल साहित्य की किताबें पर्याप्त संख्या में होना जरूरी हैं। किताबें बच्चों में इस तरह बाँटिए कि हर बच्चे को कोई ऐसी किताब मिले जिसे वह आसानी से पढ़ सके। बच्चों से कहिए कि वे किताब के किसी भी पन्ने को खोलें और दाहिना पेज देखें। क्या इस पेज के अंत में पूर्ण विराम आता है? यदि हाँ तो कोई और पन्ना खोलें।

अब पूरा दाहिना पन्ना चुपचाप पढ़ डालें। अंत तक पहुँचकर रुक जाएँ और अगला पन्ना न पलटें।

प्रत्येक बच्चे से पूछिए कि वह अंदाज से बताए कि अगले पृष्ठ का पहला शब्द क्या होगा? जब वह अपना अनुमान बता दे तब उससे पन्ना पलटकर यह देखने के लिए कहिए कि अनुमान सही था कि नहीं?

सही अनुमान पर बाकी बच्चे ताली बजाने की परंपरा डाल सकते हैं।

जब सबकी बारी आ चुके और सब बच्चे अगला पन्ना पलट चुके हों तो फिर पहले बच्चे से शुरू कीजिए। इस बार हर बच्चे को याददाश्त के आधार पर यह बताना है कि पिछले पेज का आखिरी शब्द क्या था?

सात

तीन प्रश्न

बच्चों को दो पंक्तियों में आमने-सामने बैठाएँ। हर बच्चे को एक किताब देकर उसे कहीं से भी खोलने को कहिए। दाहिना पेज पूरा पढ़कर बच्चा अपने सामने बैठे बच्चे को किताब दे। अब इस बच्चे को वही पेज पढ़ना है। पढ़कर वह अपने सामने बैठे बच्चे से, जो पहले ही यह पेज पढ़ चुका है, तीन प्रश्न पूछे।

शुरू-शुरू में बच्चे कुछ पूछने में दिक्कत या झिझक महसूस करें तो उन्हें प्रश्नों के उदाहरण बताइए।

आठ

गड़बड़ कविता

यह बहुत जटिल गतिविधि है, इसकी तैयारी बहुत ध्यान से और काफी पहले से करनी होगी। पर एक बार तैयारी करके आप उसी सामग्री को बार-बार प्रयोग में ला सकते हैं। यह भरोसा रखिए कि इस गतिविधि में अपार आनंद आता है।

चार-चार पंक्तियों की कई कविताएँ चुनिए। कोशिश यह कीजिए कि चारों पंक्तियों की तुक मिलती हो। जितने बच्चे हैं उतनी ही कविताएँ चाहिए। अब मान लीजिए कि आप 20 बच्चों में यह गतिविधि करने वाले हैं तो 20 कविताओं की पहली पंक्ति अलग-अलग कागज पर लिख लीजिए। अब हर कागज पर दूसरी पंक्ति किसी और कविता की लिखिए और इसी तरह तीसरी और चौथी पंक्ति अलग-अलग कविताओं की लिखिए। अंततः आपके पास 20 कागज होंगे जिन पर अलग-अलग कविताओं से ली गई चारों पंक्तियाँ इस तरह लिखी हुई होंगी:

1. दूध जलेबी रक्खी है।
2. तू लगता है बिल्कुल भालू
3. तब मैं खाना खाऊँगा
4. पानी में ही सोती मछली

बच्चे गोल घेरे में बैठेंगे। बच्चों को बताइए कि उनके कागज पर लिखी कविता की पंक्तियाँ गड़बड़गड़बड़ हो गई हैं। हर बच्चे को तीन पंक्तियाँ ढूँढनी है जो उसके कागज पर दी गई पहली पंक्ति से मेल खाती हैं।

पहले बच्चे से कहिए कि वह अपने कागज पर लिखी दूसरी पंक्ति पढ़कर सुनाए। बाकी बच्चे ध्यान से सुनें और सोचें कि क्या यह पंक्ति उनके कागज पर दी गई पहली पंक्ति से मेल खाती है। जिस बच्चे को ऐसा लगे वह अपना हाथ खड़ा करे और पंक्ति माँगे। यदि अध्यापक को लगे कि माँग सही है तो बच्चा यह पंक्ति लिख ले और जिस बच्चे ने यह पंक्ति दी है वह अपने कागज पर यह पंक्ति काट दे। अब अगला बच्चा अपनी दूसरी पंक्ति पढ़े। इस तरह यह क्रम तब तक चलता रहे जब तक हर बच्चे को सही दूसरी पंक्ति नहीं मिल जाती। इसके बाद तीसरी पंक्ति की खोज शुरू हो।

नौ

प्रतिक्रिया

चित्र देखकर पैदा होने वाली प्रतिक्रिया के स्तर और इन स्तरों से जुड़े हुए सवाल, जिनकी चर्चा 'बातें करना' लेख में हो चुकी है, कहानियों और कविताओं जैसी साहित्यिक सामग्री पर भी लागू होते हैं।

जब आप बच्चों को कहानियाँ, पत्रिकाएँ या किताबें पढ़ने को दें, इन सामग्रियों के आधार पर प्रश्न भी बना लें। जब बच्चे आपकी दी हुई सामग्री पढ़ चुकें तो आप इन प्रश्नों की मदद से बच्चों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित एक बहस आयोजित कर सकते हैं। पर हर बार कोई चीज पढ़ने के लिए देते समय ऐसा न करें। संभवतया हफ्ते में एक दिन ऐसा रखा जा सकता है जब उस हफ्ते में पढ़ी गई सामग्री पर चर्चा हो।

बच्चों की प्रतिक्रियाओं का माप-जोख न कीजिए। न ही कभी यह आभास दीजिए कि कोई प्रतिक्रिया गलत थी। हर प्रतिक्रिया अपनी जगह सही है। ऐसी प्रतिक्रिया भी सार्थक हो सकती है जो विषयवस्तु से खींचतान करती हो। प्रतिक्रिया कैसी भी हो, वह पढ़ी हुई सामग्री से सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा दिखाती है। एक ही चीज को बार-बार पढ़कर बच्चा उस पर हर बार अलग प्रतिक्रिया देना चाहे तो इसकी पूरी छूट रहनी चाहिए।

शुरुआत के बाद

यहाँ प्रस्तुत गतिविधियों के आधार पर आप कई और नई गतिविधियाँ और नई सामग्री गढ़ सकते हैं। आप पाएँगे कि जिन बच्चों ने यहाँ दिए गए तरीकों से पढ़ना सीखा है वे हर तरह की सामग्री में दिलचस्पी लेंगे और उसे समझने की कोशिश करने के योग्य पाएँगे। यहाँ तक कि अखबार का एक पुराना फटा हुआ टुकड़ा भी एक पहेली की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़कर और बच्चों से यह कहकर कि इन टुकड़ों में दिए अधूरे वाक्य पढ़कर सारे टुकड़ों को जोड़ें, आप पुराने अखबार का इस्तेमाल पढ़ने के कौशल का विकास करने के लिए कर सकते हैं। इस कौशल में होशियारी से अनुमान करना, छुपे हुए शब्द को अर्थ से जोड़ना और अपने अनुमान का परीक्षण करना शामिल है।

बच्चे के पढ़ना सीख लेने के बाद अध्यापक का काम यह है कि बच्चे को अपने इस नए कौशल का इस्तेमाल अलग-अलग किस्म के कामों को करने की प्रेरणा दे। हमारे कई प्राइमरी स्कूलों में पढ़ने के कौशल का प्रयोग विविध उद्देश्यों के लिए करने को प्रोत्साहित नहीं किया जाता। पढ़ने का रिश्ता सिर्फ पाठ्यपुस्तकों और परीक्षा से जुड़कर रह जाता है। नई जानकारी ढूँढने के लिए पढ़ने, निजी रुचियों के विकास के लिए पढ़ने, और आनंद की खातिर पढ़ने की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। पढ़ना बच्चे के व्यक्तित्व के समग्र विकास का हिस्सा नहीं बन पाता। परिणाम स्वरूप बच्चे पढ़ना सीखकर भी पाठक नहीं बन पाते। यह एक बड़ी विफलता है और अध्यापक चाहे तो इसका निवारण कर सकता है।

यह लेख कृष्ण कुमार की पुस्तक 'बच्चे की भाषा और अध्यापक : एक निर्देशिका' से संकलित है।

अभ्यास

- पढ़ना सिखाने का शिक्षण सफलतापूर्वक कैसे किया जाए? तर्क दीजिए।
- पढ़ने की आरम्भिक शिक्षा को सार्थक कैसे बनाया जावे।
- पढ़ना क्या है स्पष्ट कीजिए और हम कब कहेंगे कि बच्चे को पढ़ना आ गया?
- पढ़ना सिखाने के लिए एक गतिविधि बनाइए।
- पढ़ने को आनन्ददायी बनाने के लिए क्या-क्या प्रयास किया जाना चाहिए?
- पढ़ना व्यक्तित्व विकास में किस तरह सहायक होता है?



पढ़वाना किस चिड़िया का नाम?

अध्याय : 14. उभरता पठन और प्रिंट चेतना:

अध्याय : 15. पढ़ाई पहली कक्षा की :

अध्याय : 16. पढ़ने के अभ्यास की गतिविधियां :

अध्याय : 17. पढ़ाने का आकलन कैसे करें :

कुछ बड़े-बूढ़े टीचर मिल बैठकर गुज़रे जमाने को बड़ी हसरत से याद करते हैं। भई, क्या जमाना था। क्लास में मास्टर राजा होता था। एक बार ब्लैक बोर्ड में लिखकर रटने को कह दिया, बस, फिर बेंत लेकर बैठ जाना होता था। दम साध के बैठे रहते थे। परीक्षा में सुलेख लिखकर पास हो जाते थे— मैट्रिक तक। बाद में भी वो ही रोब रहता था— रास्ते में गुज़रते हुए मिलते थे तो झुककर बोलते थे नमस्ते, मास्साब। सब हवा हो गया है आजकल। अब तो शिक्षाविद् छा गए हैं। बच्चे नाजुक हैं, कोमल हैं, संवेदनशील हैं। उनको कहानी सुनाओ, गाना सुनाओ, नाटक करवाओ, सैर करवाओ। टीचर ना हुए, नौटंकी के जमूरे हो गए। कलियुग है, भाईसाहब, कलियुग।

एक और किस्सा है : एकलव्य की कहानी। रजवाड़ों का टीचर था, द्रोणाचार्य नाम का। राजमहलों में राजकुमारों को पढ़ाता था। पढ़ाई में धनुर्विद्या शामिल थी, जंगलों में सिखाई जाती थी। राजकुमारों की पार्टी के पीछे-पीछे एक कबीलाई लड़का घूमता रहता था, देखता रहता था धनुर्विद्या। वो द्रोणाचार्य के पास आकर बोला मुझे भी सिखाइए। द्रोणाचार्य ने देखा, समझा। कहाँ राजकुमार, कहाँ ये जंगली लड़का। टालने के लिए कह दिया कि अलग से अकेले-अकेले सीखो। एकलव्य गुरुमंत्र मानकर चला गया। एक द्रोणाचार्य की मूर्ति बनायी, और मूर्ति के सामने जंगल में अकेला धनुर्विद्या के अभ्यास करता गया। साल बीते। राजकुमारों के खेल में एक गेंद कुएँ में गिर गई। कोई निकाल नहीं सका। एकलव्य ने तीर-पर-तीर मारकर निकाल दी। कुछ दिन बाद तीर मारकर एक कुत्ते का मुँह बाँध दिया। द्रोणाचार्य आसमान से टपका। लगा मेरी तो नौकरी गई, साख गई – इस लड़के को किसने शिक्षा दी? चालाकी से गुरुदक्षिणा माँगी – एकलव्य का अँगूठा। सब जानते हैं यह कहानी।

ये दो किस्से पढ़ना सिखाने के तरीकों के दो विपरीत छोर हैं। पहले में बच्चों को मार-डॉट कर पढ़ने की काबिलियत को ही कुचल दिया जाता है। दूसरे में बच्चे को अपनी लगन के बूते पर ही पढ़ना सीखने के लिए छोड़ दिया जाता है। दोनों ही बच्चों के लिए नाकाफी हैं। सब एकलव्य नहीं हो सकते। एकलव्य एक ही था।

जब से आम जनता के बच्चों की शिक्षा का चलन शुरू हुआ है— यानि लगभग पिछले डेढ़-दो सौ सालों से – तब से पढ़ाना बेहतर ढंग से सिखाने के लिए वैज्ञानिक नज़रियों की खोज चल रही है। इधर-उधर गलतियों के बावजूद पढ़ाने के तरीकों में बेशक बेहतरी आई है। पढ़ाने के तरीकों में पढ़ाई की परीक्षाओं का आतंक घटाने की कोशिश शामिल है— ताकि बच्चों का हौसला हमेशा के लिए न टूट जाए। फिर आगे मंजिलें और भी चलकर तय करनी हैं। पढ़ के सीखो।

उभरती पठन और प्रिंट चेतना

परिचय—

उभरती साक्षरता यानी पढ़ने-लिखने के औपचारिक परिचय से पहले पढ़ने-लिखने के बारे में बच्चों की समझ पर विस्तार से चर्चा की गई है। उभरते पठन, लेखन के बारीक बिन्दुओं तथा बच्चों के पढ़ने-लिखने में इसके योगदान तथा महत्व पर भी चर्चा की गई है। अक्सर यह माना जाता है कि बच्चों का पढ़ने-लिखने से परिचय शिक्षक द्वारा स्कूल के औपचारिक माहौल में ही होता है परंतु ऐसे बहुत-से शोध हुए हैं जिनसे यह बात साफ़ हुई है कि बच्चे लिखित चिह्नों को पहचानने और अलग-अलग चिह्नों द्वारा खुद को व्यक्त करने की प्रक्रिया 2 या 3 साल की उम्र से शुरू कर देते हैं।

उद्देश्य

- उभरती साक्षरता को सही मायनों में समझना
- लेखन /पठन पूर्व बच्चों की गतिविधियों मनोभावो को समझना
- उभरती साक्षरता के महत्व को समझना

‘उभरती साक्षरता’ किसे कहते हैं?

परंपरागत रूप से पढ़ने से पहले

आपने देखा होगा कि 3-4 साल के बच्चे भी बड़ी आसानी से दुकान में रखे मैगी के पीले पैकेट को अनेक पीले पैकेटों के बीच में से भी पहचान लेते हैं। असल में, वे ‘मैगी’ शब्द को एक फोटो या अर्थपूर्ण चिह्न की तरह पहचानने लगते हैं। इसके अलावा, कई बार बच्चे किताबों को हाथ में लेकर उसमें दी गई कहानी पढ़ने का अभिनय भी करते हैं। ये बच्चे समझ चुके होते हैं कि जो बोला जा रहा है, उसका एक लिखित चिह्न भी है और यह उनके पठन की शुरुआत है।

परंपरागत रूप से लिखने से पहले

छोटे बच्चों के हाथ में पेंसिल या चॉक हो तो अक्सर आड़ी-तिरछी लकीरें खींचते या चित्र बनाते नज़र आते हैं। वास्तव में ये आड़ी-तिरछी लकीरें और अलग-अलग आकार के चित्र उनके लिए चिह्नों के द्वारा अपनी बात व्यक्त करने का माध्यम हैं और यह उनके जीवन में लेखन की शुरुआत है।

पढ़ने-लिखने के इस शुरुआती दौर को, जब औपचारिक रूप से बच्चे को पढ़ना-लिखना नहीं सिखाया जा रहा, को एक खास दौर माना गया है। इस दौर में बच्चा पढ़ने-लिखने के बारे में जिन अवधारणाओं का सृजन करता है, उसे उभरती साक्षरता का नाम दिया गया है।

कई सुप्रसिद्ध चिंतकों और शोधकर्ताओं ने यह स्थापित किया है कि जो बच्चे उभरती साक्षरता के कौशल ग्रहण कर लेते हैं, उनका पढ़ने-लिखने से एक रिश्ता कायम हो जाता है। यह उन्हें औपचारिक साक्षरता शिक्षण में मदद करता है। परन्तु हमारे देश में कई बच्चे संसाधन एवं अवसर की कमी के कारण उभरती साक्षरता के कौशल ग्रहण नहीं कर पाते हैं इसलिए उन्हें कक्षा 1 के प्रारंभिक दिनों में ही इस कौशल को व्यवस्थित रूप से सिखाए जाने की आवश्यकता है। आइए, अब इनके बारे में और विस्तार से जानें।

उभरता पठन—

इसमें निम्नलिखित घटक शामिल हैं:

- लिखित पाठ को सुन कर समझना
- पठन अभिनय (किताबें उटलना-पलटना)
- लोगोग्राफिक पठन (शब्द को चित्र की तरह पढ़ना)
- प्रिंट चेतना

1. लिखित पाठ को सुन कर समझना

बच्चों को जब कहानी पढ़ कर सुनाई जाती है तो उनका शब्द भंडार बढ़ता है, उन्हें वाक्यों की संरचना समझ आती है और उनके समझने की क्षमता विकसित होती है। साथ ही साथ, कहानियाँ सुनने से बच्चों में पढ़ने को लेकर रुचि बढ़ती है, जो आगे चल कर उनके पढ़ कर समझने की क्षमता को विकसित करने में भी मदद करती है।

2. पठन अभिनय (किताबें उटलना-पलटना)

बच्चे जब किसी किताब से कहानी बार-बार सुनते हैं, तो थोड़ी ही देर में वे स्वयं उन्हीं किताबों को उलट-पलट कर पढ़ने का अभिनय करने लगते हैं। वे चित्रों को देख-देख कर कहानी ऐसे सुनाते हैं मानो सच में पढ़ ही रहे हों। वास्तव में होता यह है कि कक्षा में बार-बार पढ़े जाने के कारण कहानी/कविता उन्हें कुछ हद तक याद हो जाती है, कुछ शब्द वे सीधे-सीधे पहचानना शुरू कर देते हैं (लोगोग्राफिक पठन) और कुछ उन्हें तस्वीरों से मदद मिल जाती है।

3. लोगोग्राफिक पठन

जब बच्चे लिखे हुए शब्दों को अर्थपूर्ण चित्रों की तरह पहचानने लगते हैं, तो वह लोगोग्राफिक पठन कहलाता है। प्रारंभिक कक्षाओं में उनके सामने अलग-अलग प्रकार की लिखित सामग्री आती है, जैसे- कहानियों की किताबें, कविताएँ आदि। जब शिक्षक इस सामग्री का उपयोग करते हुए अलग-अलग गतिविधियाँ करवाते हैं, तब धीरे-धीरे बच्चे उनमें लिखे गए कुछ चुनिंदा शब्द तस्वीर की तरह पहचानने लगते हैं। उदाहरण के लिए, अगर शिक्षिका ने बच्चों के साथ कई बार 'पक पक कविता गाई हो, उसके शब्दों पर हाथ रखते हुए कई बार पढ़ कर सुनाया हो,

उसमें आए शब्दों की ओर ध्यान आकर्षित किया हो, तो धीरे-धीरे बच्चे कुछ शब्द, जैसे 'पक', 'मुर्गी' 'गाया' 'कक' आदि पहचानना शुरू कर देते हैं। ध्यान दें कि यहाँ बच्चे शब्दों में आ रहे वर्ण/अक्षर को जोड़-जोड़ कर नहीं पढ़ रहे, बल्कि उन्हें चित्रों की तरह पहचान रहे हैं।

4. प्रिंट चेतना

बच्चों में यह समझ कि जो वे बोल रहे हैं, उसे लिखा भी जा सकता है और जो लिखा गया है, उसे पढ़ा जा सकता है, प्रिंट चेतना का हिस्सा है। वे मौखिक और लिखित भाषा के संबंध को समझने लगते हैं तथा वाक्यों और उनमें आए शब्दों में अंतर पहचानना शुरू कर देते हैं। वे किताबों और उनकी विशेषताओं को भी समझने लगते हैं।

प्रिंट चेतना में निम्नलिखित तत्व शामिल हैं:-

प्रिंट के कार्य	प्रिंट की खासियतें	किताब की खासियतें	शब्द की अवधारणा
1. प्रिंट का कोई अर्थ होता है। 2. जो लिखा है, उसे शब्द-दर-शब्द बोला जा सकता है।	1. प्रिंट को कई रूपों में पाया जाता है- कैलेंडर, अखबार, विज्ञापन, किताब आदि में। 2. शब्दों के बीच जगह होती है। 3. लिखित सामग्री बाएँ से दाएँ, पंक्तियों को ऊपर से नीचे की ओर पृष्ठ को एक के बाद एक पढ़ा जाता है।	1. किताब का कवर, मुख्य पृष्ठ और अंतिम पृष्ठ होता है। 2. किताब का एक शीर्षक और एक लेखक या लेखन मंडल होता है। 3. लिखित सामग्री बाएँ से दाएँ, पंक्तियों को ऊपर से नीचे की ओर पृष्ठ को एक के बाद एक पढ़ा जाता है।	1. हर शब्द की अलग ध्वनि और अलग अर्थ होता है। 2. कुछ शब्द लंबे और कुछ शब्द छोटे होते हैं।

उभरता लेखन -

बच्चे जब चित्र बनाते हैं या आड़ी-तिरछी लकीरें खींचते हैं, तो उसके पीछे उनकी खुद को व्यक्त करने और अपनी बात कहने की इच्छा तथा चिह्नों के उपयोग की बढ़ती जानकारी होती है। शुरुआत में, स्वयं को व्यक्त करने के लिए बच्चे केवल कुछ लकीरें बनाते हैं। फिर धीरे-धीरे वे कुछ आकृतियों द्वारा 'शब्द' बनाने का प्रयास करते हैं। इस शुरुआती लेखन को 'अनगढ़' लेखन भी कहा जाता है। लेखन के मौके मिलते रहने पर आगे चल कर वे लिखित सामग्री के

नियमानुसार कहानियाँ या अपने अनुभव का प्रयास करते हैं जिसके लिए वे कुछ स्वयं से बनाई वर्तनी का प्रयोग भी करते हैं।

आइए देखें, बच्चे कैसे आडी-तिरछी लकीरों से शुरू होकर विस्तृत लेखन में बदल जाते हैं।

चार साल के एक बच्चे ने बताया कि यह उसने अपना और अपने दोस्तों के नाम लिखे हैं। गौर कीजिए कि उसने शब्दों के जैसे इन चिह्नों के ऊपर रेखा खींची है और उन्हें ऊपर से नीचे एक के बाद एक लिखा है। इससे यह स्पष्ट है कि वह लेखन के कुछ नियम समझने लगा है।

पाँच साल की एक बच्ची ने यह समझ लिया है कि चित्र और अक्षरों में अंतर है। उसने चित्र बना कर कुछ लिखने की कोशिश की है। पूछने पर उसने बताया कि उसने नीचे फूल का नाम लिखा है।

4 और 5 साल के दो बच्चों के लेखन को तदानुसार देखें। इन्हें देख कर आप क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं?

बच्चों के चित्रों में स्पष्टता, समय और अवसर मिलने पर खुद ब खुद आ जाती है। शिक्षकों को यह समझना जरूरी है कि इस प्रकार के लेखन द्वारा बच्चे अपने आप से और दूसरों से बात कर रहे हैं। वे अपनी भावनाओं, विचारों और अनुभवों को दर्शा रहे हैं। उनके लिए दुनिया पर टिप्पणी करने का एक नया रास्ता खुला है और वे जैसे दुनिया को देख रहे हैं, समझा रहे हैं, महसूस कर रहे हैं, उसे लेखन द्वारा प्रकट करने का प्रयास कर रहे हैं। इसलिए इस समय लेखन की शुद्धता पर ध्यान नहीं देना चाहिए। इसके साथ-साथ कुछ रूढ़िगत प्रथाएँ, जैसे-डॉट पर पेंसिल चला कर चित्र बनवाना, उनके हाथ पकड़ कर चित्र बनवाना और लाइन के बाहर रंग भरने पर टोकना, आदि नहीं किए जाने चाहिए।

क्या आप जानते हैं?

तो आप देख सकते हैं, इससे पहले कि बच्चे परंपरागत रूप से (वर्णों और अक्षरों के द्वारा) पढ़ना सीखें, पढ़ने-लिखने से जुड़ी क्षमताएँ और लिखित भाषा (प्रिंट) के बारे में उनकी समझ विकसित होने लगती है। पारंपरिक पद्धति में इस दौर पर खास ध्यान नहीं दिया जाता और अक्सर बच्चों को आँगनवाड़ी और कक्षा 1 में सबसे पहले वर्ण और अक्षर सिखाए जाते हैं। उभरती साक्षरता के कौशलों का जिक्र शायद ही कहीं सुनने को मिलता है।

बच्चों को अक्षर ज्ञान सिखाने से पहले प्रिंट से परिचय करवाने का बहुत-सा काम करना जरूरी है। उन्हें ढेर सारे पढ़ने और लिखने के मौके भी देने होंगे। ऐसे पठन-लेखन में बच्चे के साक्षरता विकास की शक्तिशाली संभावनाएँ छिपी हैं, परंतु इसकी समझ न होने से अक्सर प्राथमिक कक्षाओं में इस पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता। शिक्षकों को लगता है कि प्राथमिक कक्षाओं

में केवल वर्णमाला पढ़ने-लिखने का अभ्यास होना चाहिए जो आगे जाकर शब्द या वाक्य लिखने के लिए जरूरी है। बच्चों के लिए शिक्षक की यह सोच बहुत नुकसानदेह है और यह अभिव्यक्ति के लिए लिखने की सारी संभावनाओं को नष्ट कर देती है।

उभरती साक्षरता में परिवेश का महत्व

बच्चे जिस भी परिवेश से आते हैं, उसके अनुसार वे 'पढ़ने-लिखने के सार्थक एवं जीवंत उपयोग से अवगत होते हैं। उनकी लिखित दुनिया के बारे में समझ और अवधारणाएँ मज़बूत होती हैं। उदाहरण के लिए— जब बच्चे आसपास उपस्थित लोगों को अख़बार पढ़ते हुए देखते हैं, या खरीददारी के समय किसी सूची से सामग्री के नाम पढ़ते हुए सुनते हैं, तो वे समझते हैं कि किसी उद्देश्य की पूर्ति लिखने एवं पढ़ने से संभव हुई है। जब माँ किताब से कहानी पढ़ कर सुनाती है तो बच्चों को मौखिक और लिखित भाषा के संबंध समझ आने लगते हैं परन्तु सरकारी स्कूलों में कक्षा 1 में दाखिला लेने वाले बहुत-से ऐसे बच्चे भी होते हैं, जिन्हें लिखित भाषा के उपयोग के बारे में कोई जानकारी नहीं होती, क्योंकि न तो उनके घर में कहानी की किताबें होती हैं और न ही उन्हें कभी किताबें पढ़ कर सुनाई जाती हैं।

गतिविधि —

छोटे समूहों में चर्चा:—

आइए, अब दो बच्चों के परिवेश की परिस्थितियों को समझने की कोशिश करें। उपरांत छोटे समूहों में निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करें और बाद में पूरी कक्षा में साझा करें:—

1. अदिति और नम्रता के परिवेश से उनमें उभरती साक्षरता के कौन-से कौशल विकसित होने की संभावना है?
2. आपके अनुसार साक्षरता शिक्षण के लिए इनमें से कौन-सी बच्ची ज्यादा तैयारी के साथ स्कूल आ रही है?

अदिति (उम्र – साढ़े पाँच वर्ष)	नम्रता (उम्र – पाँच वर्ष)
अदिति ऑगनवाडी जाती है जहाँ किताबें उपलब्ध नहीं हैं। मौखिक रूप से गीत और कविताएँ सिखाई जाती हैं।	प्री स्कूल में कहानियों की किताबें, कविताओं के चार्ट, लिखने और रंग भरने के लिए कापियाँ तथा रंग हैं। मौखिक गाने भी सिखाए जाते हैं।
घर में एक कैलेंडर है, अखबार के टुकड़े हैं, जिनमें खाना लपेटा जाता है।	सुबह पिताजी अखबार पढ़ते हैं और नम्रता की माँ को कोई एक दिलचस्प खबर बताते हैं।
अलग से खेलने की सामग्री खरीद नहीं सकते। पास की दुकान से कभी-कभी माँ चॉक ला देती हैं।	मम्मी शाम को अक्षर के ब्लॉक खेलने को देती हैं तथा स्लेट पर लिखने के लिए भी प्रोत्साहित करती हैं।
घर में कोई भी किताब नहीं है, लेकिन रात को सोने से पहले दादी अपने बचपन के किस्से या कहानियाँ सुनाती हैं।	बड़ी बहन कहानी की किताब लेकर शबाना को उसकी मनपसंद कहानियाँ सुनाती हैं। कभी-कभी नम्रता भी 'टीचर' बन अपनी बहन को चित्रों द्वारा वही – कहानी सुनाती है।

यह अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं कि अदिति और नम्रता प्रिंट की दुनिया के बारे में एक जैसी समझ लेकर स्कूल नहीं आएंगी। इसलिए, औपचारिक भाषा शिक्षण और स्कूल के माहौल में उनकी भागीदारी में अंतर होगा। सामान्यतः सभी बच्चे शुरुआती वर्षों में भाषायी स्तर पर एक जैसी क्षमता रखते हैं। मगर उनके घर और आसपास के माहौल से उनके पढ़ने-लिखने की क्षमता प्रभावित होती है।

कुछ प्रश्न –

1. "उभरती साक्षरता – साक्षरता की ओर चला गया पहला कदम है" कथन की समीक्षा कीजिए ?
2. "साक्षरता" की तैयारी परिवार समाज व आर्थिक स्थितियों पर भी निर्भर करती है।" कथन से आप सहमत हैं / असहमत। तर्क सहित बताइए ?
3. लोगोग्राफिक पठन को ध्यान में रखते हुए एक गतिविधि का निर्माण कीजिए ?
4. लेखन कौशल के विकास में "उभरता लेखन" का उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है। किसी गतिविधि द्वारा स्पष्ट कीजिए ?



अध्याय – 15

पढ़ाई पहली कक्षा की

परिचय :

आमतौर पर सरकारी स्कूलों में बच्चों पर कई लेबल चिपका दिए जाते हैं। लेकिन यदि हमें इन बच्चों को पढ़ाना हो तो क्या हमें इन मान्यताओं की जाँच करनी चाहिए या उसी में ढल जाना चाहिए। पहली कक्षा में पढ़ना लिखना सिखाने के लिए बच्चों के संबंध में बनी मान्यताओं को लेखक ने तोड़ा है। कई सारी गतिविधियों के माध्यम से पढ़ना लिखना बच्चों के लिए रोचक बनाया है। इस पाठ में हम इन गतिविधियों के माध्यम से पढ़ना लिखना सिखाने के बारे में पढ़ेंगे जो बच्चों के लिए सार्थक है।

उद्देश्य :

- बच्चों के बारे में अपनी मान्यताओं को बदल सकना।
- बच्चों की पसंद के आधार पर शिक्षण कर सकना।
- पहली कक्षा में शिक्षण का उद्देश्य जान सकना।
- पढ़ना लिखना सिखाने के लिए ऐसी गतिविधियाँ सोचना और खोजना जो बच्चों के लिए आनंददायी तथा सार्थक हों।
- बच्चों को अभिव्यक्ति के मौके देने के लिए उपयुक्त माहौल का निर्माण कर सकना।
- जवाब पता नहीं होने पर बच्चों की मदद करना ताकि पढ़ना लिखना सिखाने में उनकी रुचि बढ़ सके।

जब मुझे पहली कक्षा के बच्चों को पढ़ाने का अवसर मिला तो मुझे विशेष प्रसन्नता का एहसास हुआ। वर्षों से मैं सरकारी स्कूलों के बच्चों को विभिन्न 'लेबलों' में बाँटे जाने की प्रवृत्ति का सामना करता रहा हूँ। "सरकारी स्कूलों में तो ऐसे ही बच्चे आते हैं", "इन्हें पढ़ना सिखाना तो लोहे के चने चबाना है", "साल भर इन्हें क ख ग घ ही आ जाए, यही गनीमत है" इस तरह के जुमले कई बार मैं सुन चुका था। मुझे पहली कक्षा को पढ़ाना इन्हीं मायनों में चुनौतीपूर्ण भी लगा।

मैंने सोचना-विचारना शुरू किया कि पहली कक्षा को पढ़ना-लिखना कैसे सिखाया जाना चाहिए। सदियों पुराना जाना-पहचाना रास्ता मेरे सामने था। मैंने भी शायद इसी तरीके से पढ़ना-लिखना सीखा था। पहले वर्णमाला, फिर बारहखड़ी, बिना मात्राओं वाले शब्द, मात्रा सहित शब्द, और ढेर सारा अभ्यास। पर मुझे एहसास था कि यह रास्ता बच्चों के लिए बहुत नीरस और कठिन रहेगा।

केवल पढ़ना-लिखना सिखा देना पहली कक्षा के शिक्षण का उद्देश्य नहीं हो सकता। पहली कक्षा तो बच्चे के स्कूली जीवन की बुनियाद है। यहीं से बच्चे स्कूली पढ़ाई तथा अनुभवों के बारे में अपनी पसंद या राय बनाते हैं। यदि कोई काम बच्चों की पसंद या उनके लिए महत्वपूर्ण नहीं है, तो वह निरर्थक है। बस, मुझे समझ में आ गया कि मुझे कैसे आगे बढ़ना है। **मुझे वे गतिविधियाँ या काम सोचने या खोजने होंगे जो मेरे लिए ही नहीं, बच्चों के लिए भी आनंददायक तथा सार्थक हों, तभी बच्चों की जिज्ञासा को संतुष्ट किया जा सकेगा।**

अभ्यास

- आप कक्षा में पहली बार गए तो आपने क्या महसूस किया? विस्तारपूर्वक लिखें।
- केवल पढ़ना लिखना सिखा देना ही पहली कक्षा का शिक्षण उद्देश्य नहीं हो सकता है बल्कि बच्चों की पसंद उनके अनुभव के आधार पर स्कूल की पढ़ाई हो तो बच्चे नवीन गतिविधियों से ज्यादा आनन्दपूर्वक पढ़ना सीख सकते हैं इसका विश्लेषण करें?

आखिर वह दिन आ पहुँचा जब मुझे पहली कक्षा के बच्चों से रू-ब-रू होने का सौभाग्य मिला। कुछ बच्चे उदासीन से लगे। कुछ उत्सुकता से मेरी ओर देख रहे थे। कुछ की आँखों में डर भी रहा होगा शायद। मैंने बच्चों से बातचीत शुरू की। अपना परिचय दिया, बच्चों से परिचय लिया। धीरे-धीरे बातचीत को उनकी पसंद/नापसंद की ओर मोड़ दिया। अवसर मिलते ही एक सवाल मैंने हवा में छोड़ दिया, “अच्छा ये तो बताओ, खाने में कौन-सा फल सबसे अच्छा लगता है?”

तुरन्त जवाबों की रिमझिम होने लगी। “आम, केला, अमरूद, सेब,” आदि। कुछ ने हलवा, आइसक्रीम आदि का नाम भी लिया। जो बच्चे चुप थे, उनसे मैंने स्वयं पूछ लिया। आखिरकार यह बात उभरकर आई कि ‘आम’ सबसे अधिक बच्चों को अच्छा लगता है। मैंने सुझाव दिया, “चलो, आम का चित्र बनाते हैं।” जब मैंने ब्लैकबोर्ड पर आम बनाने का प्रस्ताव रखा तो कुछ बच्चे तुरन्त तैयार हो गए। ब्लैकबोर्ड पर तरह-तरह के आम बन गए। फिर मैंने अगला सुझाव दिया, “जब आप सब लोग आम बना लो, तो आम के नीचे उसका नाम भी लिख देना।”

“हमें तो लिखना नहीं आता,” एक-दो बच्चों ने बताया। “कोई बात नहीं। मैं बता देता हूँ”, यह कहकर मैंने ब्लैकबोर्ड पर बने आमों के नीचे ‘आम’ लिखा और कहा कि ब्लैकबोर्ड पर से देखकर आम का नाम लिखा जा सकता है। सभी बच्चों के चेहरों का तनाव गायब हो गया।

मेरा उद्देश्य केवल ‘आम’ शब्द लिखवाना नहीं था। इस काम से यह अपेक्षा बिलकुल नहीं थी कि बच्चे बिलकुल सुडौल अक्षरों में सही-सही ‘आम’ लिख देंगे। पर इसके पीछे मेरी मंशा यह थी कि बच्चों को इस बात का एहसास हो कि लिखे हुए शब्द का एक अर्थ होता है और बोले जाने वाले तथा लिखे जाने वाले ‘चित्र’ में कुछ संबंध होता है। जो शब्द या चित्र बच्चा पहली बार लिखे या बनाए, वह बच्चों की पसंद का हो, उनके लिए उसका अस्तित्व तथा महत्व हो।

जब बच्चे चित्र बनाकर मुझे दिखाने लगे, तो मैंने उनके सामने एक ‘जटिल’ समस्या रख दी।

“मुझे तुम्हारा नाम तो पता ही नहीं है। तुम जब अपना-अपना चित्र मुझे दिखाओगे, तो मुझे कैसे पता चलेगा कि यह किसका चित्र है? ऐसा करो, अपने चित्र के ऊपर अपना नाम भी लिख दो।”

दो-चार बच्चों को अपना नाम लिखना आता था, वे तुरन्त खुश हो गए, उन्हें समस्या का बड़ा आसान हल मिल गया था। पर कुछ बच्चों ने कह दिया “मुझे अपना नाम लिखना नहीं आता” जो बच्चे चुपचाप बैठे थे, संभवतः उन्हें भी अपना नाम लिखना नहीं आता था। मैंने तुरन्त आश्वासन दिया, “कोई बात नहीं, जिन बच्चों को अपना नाम लिखना नहीं आता, उनके चित्र पर उनका नाम मैं लिख दूँगा, पर देखो, अगली बार मैं नाम नहीं लिखूँगा। अपना नाम याद कर लेना।”

इस तरह मैंने लगभग सभी बच्चों को उनके नाम लिखकर दे दिए। बच्चे खुश थे और एक-दूसरे को अपने-अपने चित्र और नाम दिखा रहे थे। मैंने उनके सामने जो समस्या रखी थी, वह शायद बड़ों के लिए बहुत हलकी या छोटी समस्या हो—“मुझे कैसे पता चलेगा कि यह चित्र किसने बनाया है?” पर बच्चों के लिए यह एक गंभीर और वास्तविक समस्या थी। अतः उसका हल खोजने में उनकी दिलचस्पी भी गंभीर थी। इस

बात के दो प्रमाण मुझे बाद में देखने को मिले। पहला, अगले दिन जब मैंने यहीं गतिविधि फिर करवाई तो मुझे केवल तीन-चार बच्चों के नाम उनके चित्र पर लिखने पड़े। अधिकतर बच्चों ने अपने नाम याद कर लिए थे। जिन बच्चों ने याद नहीं किए थे, उन्होंने पिछले चित्र से देखकर अपना नाम लिख लिया था अर्थात् उन्हें अपने नाम के अस्तित्व तथा उसे उचित रूप से इस्तेमाल करने की समझ थी।

दूसरा प्रमाण मुझे काफी समय बाद तक मिलता रहा। कई बच्चे बाद में अनेक महीनों तक जब भी कुछ लिखते या चित्र बनाते, उस पर अपना नाम लिख देते ताकि मुझे पता चल जाए कि वह कार्य किसने किया है। अंत में मुझे कहना पड़ा “अब तो मुझे तुम सबके नाम याद हो गए हैं। अब तुम्हें हर बार अपना नाम लिखने की जरूरत नहीं है।”

अभ्यास

- विद्यालय में अपने द्वारा की गई कोई ऐसी गतिविधि बताएँ जिससे बच्चों की पढ़ने की इच्छा बलवती हुई हो?

इन सब गतिविधियों और समस्या-समाधानों के द्वारा अनेक उद्देश्य पूरे हुए परन्तु सबसे बड़ा लाभ मुझे अगले चरण की गतिविधि में हुआ। उसमें इस बात की आवश्यकता थी कि प्रत्येक बच्चे को उसका नाम लिखना आता हो। मैंने उस गतिविधि का नाम रखा, “आज का राजा या रानी।” इस दौरान मैंने बच्चों को रोज़ कहानी सुनाना, नए-नए खेल खिलवाना भी जारी रखा। हर रोज़ बच्चे नए-नए शब्दों का इस्तेमाल करते, नए शब्द गढ़ते, खोजते और लिखते।

एक दिन मैंने एक मजेदार खेल खेलने का प्रस्ताव रखा। उस खेल का नाम बता दिया। हर बच्चे को एक-एक पर्ची दे दी गई। मैंने बताया, “इस पर्ची पर हर बच्चे को अपना-अपना नाम लिखना है।” नाम लिखने के बाद एक बच्चे ने सबकी पर्चियाँ एक थैली में इकट्ठी कर लीं। इसके बाद सबकी सहमति के बाद कक्षा की सबसे छोटी लड़की से एक पर्ची का चुनाव करवाया गया। मैंने पर्ची पर लिखा नाम पढ़ा और उसे “आज का राजा” घोषित कर दिया। ब्लैकबोर्ड पर उसका नाम लिख दिया और पढ़ दिया। उस बच्चे को आमंत्रित किया गया और सबके सामने उसे कुर्सी पर बैठने को कहा गया। उसके सिर पर कागज़ का बना मुकुट भी रख दिया गया। मैंने सबको बताया, “सुमित जी आज हमारी कक्षा के राजा हैं। तुम सुमित जी से कोई भी सवाल पूछ सकते हो। शिकायत कर सकते हो। सुमित जी उसका जवाब देंगे।” मैंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यदि किसी सवाल का जवाब मालूम न हो तो राजा कह सकते हैं, “मुझे नहीं पता।”

सब बहुत उत्साहित थे। शुरू में तो राजा जी कुछ शर्माए पर बाद में बहुत तत्परता से सवालों के जवाब देने लगे। कुछ सवाल और शिकायतें मैंने भी कीं। बीच-बीच में ब्लैकबोर्ड पर लिखे नाम की ओर भी मैं सबका ध्यान आकर्षित करता रहा। सबको बहुत मज़ा आया।

अब तो रोज़ कोई न कोई बच्चा “आज का राजा” या “रानी” बनता। मैं ब्लैकबोर्ड पर उनके नाम लिखता। साथ-साथ पिछले “राजा” या “रानियों” के नाम भी लिखता। कुछ हफ्तों के बाद मैंने इस गतिविधि को कुछ विस्तार देने का प्रयास किया। मैंने कुछ ‘राजा-रानियों’ के नाम ब्लैकबोर्ड पर लिख दिए जिनमें ‘स’ वर्ण स्वाभाविक रूप से आ रहा था। सुरेश, सुमित, संतोष, असलम, मानसी आदि मैंने उन सब नामों को पढ़ा। जिन बच्चों के नाम ब्लैकबोर्ड पर लिखे थे, उन्हें आमंत्रित किया कि वे सब बच्चों को दिखाएँ कि उनका नाम कहाँ लिखा है। इसके बाद अन्य बच्चों को मौका दिया कि वे बताएँ कि उनके मित्र या सहेली का नाम कहाँ लिखा है। उद्देश्य यह था कि सब बच्चों को उनके या उनके मित्र के नामों की पहचान हो जाए।

इसके बाद मैंने उस ध्वनि की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित किया जो सभी नामों में मौजूद थी। मैंने शुरूआत इस तरह की थी। “कौन सी चीज़ इन सब नामों में एक जैसी है?” कई जवाब आए पर अंत में हम ‘स’ पर पहुँच ही गए। फिर मैंने ‘स’ से शुरू होने वाली व ‘स’ अक्षर वाली अन्य चीज़ों के नामों की ओर

बच्चों का ध्यान आकर्षित करवाया और जैसे-जैसे वे नाम लेते गए, मैं ब्लैकबोर्ड पर लिखता गया— पेंसिल, बस, सड़क, स्कूल, सब्जी और भी न जाने क्या-क्या।

अभ्यास

- स, प, ब, ह, ल से शुरू होने वाले 5 शब्दों के नाम लिखो।
- पहली कक्षा के बच्चों को नाम लिखने की कला का ज्ञान जल्दी एवं आनन्ददायी विधि से कैसे हो सकता है?

मेरा उद्देश्य था सार्थक संदर्भों द्वारा बच्चों को उनके परिचित व्यक्तियों और वस्तुओं के नामों से परिचित करवाना। कुछ समय ध्वनियों की पहचान में भी लगाया। अब यह हमारा नियमित कार्यक्रम हो गया। कुछ ही समय में बच्चों का शब्द भंडार आश्चर्यजनक रूप से बढ़ गया। अनेक अक्षरों की पहचान और उनके सार्थक उपयोग की क्षमता भी लगभग सभी बच्चों में उपस्थित थी। इस कार्य में पाठ्यपुस्तक में मौजूद रोचक तथा बालसुलभ कविताओं ने मेरी बहुत मदद की। हम सब मिलकर कविताएँ गाते। मैं बच्चों से उनकी राय पूछता। जो कविता बच्चों को बहुत अच्छी लगती, बच्चे बार-बार उसे गाना चाहते। एक बार गा लेने भर से उनका मन नहीं भरता, वे कह उठते “सर, एक बार और।” कुछ बच्चे कविता गाते-गाते अपने को रोक न पाते और खड़े होकर कविता के हिसाब से अभिनय तक करने लगते। कई बार मैं मजे-मजे में सुझाव देता, “मैं कविता की एक पंक्ति बोलूँगा, तुम दूसरी बोलना।” मैं बाद में क्रम उलट देता, “पहली पंक्ति तुम बोलो, दूसरी मैं बोलूँगा।” कभी-कभी बच्चे कविता की एक पंक्ति बोलते, मैं उनके पीछे-पीछे दुहराता।

मैं आज भी यही करता हूँ। बच्चों को बहुत आनंद आता है जब उनके ‘सर’ उनके पीछे-पीछे कविता दोहराते हैं। कविता उन्हें स्वतः याद हो जाती है। यह सब कार्य उनके लिए सार्थक बन जाता है। उनके अंदर नया उत्साह तथा आत्मविश्वास जाग्रत हो जाता है कि वे बड़ों का ‘मार्गदर्शन’ करने में समर्थ हैं। इससे पता चलता है कि जरा-सी सूझ से किस प्रकार एक नीरस काम सरस बन जाता है। कविता अनेक बार गाने के बाद हम जब उसको “पढ़ते” तो यह काम लगभग सभी बच्चों के बाएँ हाथ का खेल बन चुका होता था। कई बच्चे स्वयं पुस्तक खोलकर अपने साथी को ‘पढ़ाते’ दिखाई पड़ते : “देख, यहाँ लिखी है यह कविता...” वे अँगुली रखकर अपने साथी को बताते। कई बार कुछ समझ न आने पर या भूल जाने पर पंक्ति को अपने मन से शब्द जोड़कर पूरा कर देते, ठीक उसी तरह जिस तरह हम कोई गाना भूल जाने पर अपने मन से शब्द जोड़कर गाना पूरा कर लेते हैं। मैंने गौर किया, यह बदलाव हमेशा ठीक-ठीक या सटीक होता। उदाहरण के लिए, एक बार एक बच्चा अपने साथी को कविता दिखा रहा था,

“पत्ता बोले खड़-खड़-खड़।

कहें पटाखे भड़-भड़-भड़।

छुर-छुर-छुर बोलें – फुलझड़ियाँ।

रॉकेट बोले – तड़-तड़-तड़

बच्चे ने पूरी कविता अपने आप-अपने साथी को पढ़कर बताई और फुलझड़ियाँ की जगह “छुरछुरियाँ” बदल दिया। स्वाभाविक-सी बात है कि उसके परिवेश या घर में फुलझड़ी को छुरछुरी बोलते होंगे। मैं चुपचाप यह सब देख रहा था। मैंने उसे टोकने या ‘ठीक करने’ की जरूरत महसूस ही नहीं की क्योंकि उसने कोई गलती की ही नहीं थी। बल्कि मुझे अवसर मिला एक नया शब्द और संदर्भ अगली गतिविधि के लिए। हमने अगली गतिविधि में “छुरछुरी” शब्द के बारे में ही बातचीत की।

अभ्यास

- पहली कक्षा के बच्चों की पढाई को आनन्ददायी बनाने के लिए अपनी तरफ से एक गतिविधि सोचकर बनाइए।
 - यदि कक्षा में बच्चे गीत, कविता आदि बोलते समय आम बोलचाल के शब्दों का काफी इस्तेमाल करते हैं तो उस समय आपकी रणनीति उन्हें मना करने की होगी या ज्यादा-से-ज्यादा आम बोलचाल के शब्दों के इस्तेमाल की छूट देने वाली होगी? अपने विचार कारण सहित लिखिए।
 - बच्चा जब पहली बार विद्यालय आता है तब वह घर से क्या-क्या सीखकर आता है, सूची बनाएँ।
-



अध्याय – 16

पढ़ने के अभ्यास की गतिविधियां

परिचय :

पढ़ने-लिखने के लिए अत्यावश्यक है कि बच्चों को पठन के अधिक से अधिक अवसर दिये जाएँ। प्रस्तुत पाठ में पठन की रणनीतियों पर विस्तार से चर्चा की गई है साथ ही प्रत्येक रणनीति को व्यवस्थित तरीके से कैसे उपयोग किया जाए उन बिन्दुओं पर बातचीत की गई है। कुल मिलाकर यह पाठ पठन रणनीतियाँ तथा उनके कक्षा में इस्तेमाल के बारे में है।

उद्देश्य :

- पठन रणनीतियों को समझना
- पठन रणनीतियों का कक्षा में इस्तेमाल के तरीके समझना
- विभिन्न रणनीतियों में शिक्षक की भूमिका समझना

पठन अभ्यास की रणनीतियाँ –

प्रवाहपूर्ण व समझ के साथ पढ़ना सिखाने का एकमात्र तरीका होता है कि बच्चों को पठन के अधिक से अधिक अवसर दिए जाएँ। इसमें शामिल है, शिक्षक को पढ़ने हुए सुनाना, शिक्षक के साथ पढ़ना और स्वयं पढ़ना। कई बार ऐसा गया है कि बच्चे फर्फटे से अलग-अलग शब्द तो पढ़ लेते हैं, लेकिन वहीं बच्चे पाठ पढ़ने में लड़खड़ाते हैं। उनके लिए शब्दों की डिकोडिंग से सीधे पाठ पढ़ पाना एक बड़ी छलांग होती है। इसलिए, बच्चों को पढ़ने के बहुत से मौके देकर उसी दौरान शिक्षक की मदद से पढ़ना सिखाया जाना चाहिए।

स्कूलों में अक्सर शिक्षक या किसी एक बच्चे द्वारा पाठ पढ़कर सुनाने और बाकी बच्चों द्वारा पीछे-पीछे दोहराने का काम होता है। ऐसे में बच्चों को खुद पढ़ने के बहुत कम मौके मिलते हैं। इस खंड में हम देखेंगे कि शिक्षक कैसे विभिन्न रणनीतियों का इस्तेमाल कर, बच्चों को पढ़ने का अभ्यास करवा सकते हैं।

पठन अभ्यास की कुल 6 रणनीतियों की चर्चा यहाँ की गई है, जिन्हें निम्नलिखित तीन वर्गों में बाँटा है:

1. शिक्षक द्वारा पढ़कर सुनाना
2. बच्चों द्वारा पढ़ने का अभ्यास
3. बच्चों द्वारा स्वतंत्र पठन

शिक्षक द्वारा पढ़कर सुनाना	बच्चों द्वारा पढ़ने का अभ्यास				बच्चों द्वारा स्वतंत्र पठन
1. अध्यापक द्वारा पढ़कर सुनाना	2. साझा पठन	3. समवेत पठन	4. मार्गदर्शन युक्त पठन	5. जोड़ों में पठन	6. स्वतंत्र पठन

शिक्षक का सहयोग (घटता हुआ)...

बच्चों की भागीदारी (बढ़ती हुई)...

अध्यापक द्वारा पढ़कर सुनाना

कहानी पढ़कर सुनाने की रणनीति को दो तरीकों से कक्षा में इस्तेमाल किया जा सकता है:

अध्यापक द्वारा प्रवाहपूर्ण पढ़कर सुनाना (वाचन): अध्यापक द्वारा पढ़कर सुनाना अर्थात् किसी पाठ या कहानी को उत्साह व हाव-भाव के साथ आदर्श पठन का प्रस्तुतीकरण करना है। इस पद्धति में अध्यापक पढ़कर सुनाते हैं और बच्चे उन्हें ध्यान से सुनते हैं। किसी रोचक कहानी की किताब के सहारे इस तरह का पठन कराया जा सकता है।

अध्यापक द्वारा संवाद सहित पढ़कर सुनाना: जैसा कि नाम से जाहिर है, यह वह पद्धति है, जिसमें शिक्षक कहानी को पूरे हाव-भाव के साथ बच्चों को पढ़कर सुनाते हैं और साथ में पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद संवाद और अन्य गतिविधियाँ करवाते हैं।

मुख्य उद्देश्य

अध्यापक द्वारा प्रवाहपूर्ण पढ़कर सुनाना	अध्यापक द्वारा संवाद सहित पढ़कर सुनाना
<ul style="list-style-type: none"> • किताबों के प्रति लगाव पैदा हो और पढ़ने में रूचि जाग्रत हो • स्कूल की औपचारिक भाषा से परिचय हो • लिखित भाषा का स्वरूप समझ में आना • प्रिंट चेतना सशक्त होना • प्रवाहपूर्ण पठन कैसा होता है, यह समझ पाना 	<p>प्रवाह पूर्वक पढ़कर सुनाने के उद्देश्य के साथ-साथ संवाद पढ़कर सुनाने के कुछ अतिरिक्त उद्देश्य भी होते हैं। ये हैं –</p> <ul style="list-style-type: none"> • सुनकर समझने की क्षमता विकसित होना • उच्च-स्तरीय चिंतन कौशल विकसित होना • मौखिक अभिव्यक्ति के मौके • नई शब्दावली सीखना
पठन सामग्री	
<p>रोचक कहानियों की किताबें, जिन्हें सुनने में बच्चों को आनंद आए। ऐसे किताबों में बड़े चित्र हों तो बच्चों को ज्यादा मजा आता है। उदाहरण – नाव चली, बिल्ली के बच्चे</p>	<p>ऐसा कोई भी पाठ, जो बच्चों की समझ के स्तर का हो। शुरुआती समय में कहानियों का प्रयोग ज्यादा उचित है।</p>

गतिविधि –

जोड़ों में चर्चा:—

आपने कहानी पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद की जाने वाली गतिविधियों के बारे में पढ़ा है। जोड़ों में चर्चा कर, नीचे दी गई तालिका में लिखें:

कहानी पढ़ने से पहले	
कहानी पढ़ने से दौरान	
कहानी पढ़ने से बाद	

क्या आप जानते हैं ?

विभिन्न शोधों से यह साबित हो चुका है कि संवाद सहित पढ़कर सुनाने की रणनीति सबसे प्रभावशाली तभी होती है, जब बच्चे उसमें सक्रिय रूप से हिस्सा लेते हैं, सवाल-जवाब करते हैं और चुपचाप सुनते रहने के बजाय अपने अनुमान व अनुभव व्यक्त करते जाते हैं। (डिकिन्सन, 2001)।

साझा पठन

साझा पठन में बच्चे और शिक्षक दोनों एक ही पाठ को देख सकते हैं— बड़ी पुस्तकों का इस्तेमाल करके या पाठ को बोर्ड/चार्ट पर लिखकर। शिक्षक पाठ पढ़ते हैं बीच-बीच में बच्चों को पढ़ने में शामिल करने का प्रयास करते हैं। साझा पठन प्रारंभिक पाठक के लिए बहुत मददगार साबित हो सकता है। इससे बच्चों को पढ़ना न जानते हुए भी यह एहसास होता है कि वे पढ़ रहे हैं, जिससे उनका पाठक के रूप में आत्मविश्वास बढ़ता है। ध्यान दें कि जहाँ संवाद सहित पठन में शिक्षक द्वारा पढ़ा जा रहा था, यहाँ बच्चों को पठन में शामिल करने की कोशिश हो रही है। इस रणनीति में हम शिक्षक द्वारा पठन से शिक्षक के साथ पठन करने की ओर बढ़ रहे हैं।

समवेत पठन

समवेत पठन बच्चों को पढ़ने का अभ्यास करवाने के लिए उपयोगी रणनीति है। इस पद्धति में अध्यापक और बच्चे किसी पाठशं को, एक साथ एक आवाज में पढ़ते हैं, न कि अध्यापक के बाद एक-एक शब्द दोहराते हुए। अध्यापक दोहरान की तरह नहीं, बल्कि एक प्रवाहपूर्ण पाठक की तरह पढ़ते हैं। कभी-कभी अध्यापक किसी शब्द को छोड़ देते हैं या अपनी आवाज धीमी कर लेते हैं, जिससे बच्चों को उस शब्द को खुद पढ़ने का मौका मिले। जो बच्चे पढ़ने में हिचकिचाते हैं उनका शिक्षक और दूसरे बच्चों के साथ पढ़ने से आत्मविश्वास बढ़ता है। उन्हें दूसरों की आवाज मिलाकर पढ़ने से मदद मिलती है।

मुख्य उद्देश्य

पठन प्रवाह विकसित करने के लिए

पठन सामग्री

- पाठ का स्तर बच्चों के पठन स्तर के लगभग बराबर अथवा स्वतंत्र पठन स्तर का होना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक के सभी पाठ उचित स्तर के नहीं होते, इसलिए स्तर के अनुसार सरल किताबें आवश्यक हैं।

मार्गदर्शन युक्त पठन

बच्चों द्वारा पढ़ने का अभ्यास, पढ़ना-सीखने के लिए और पठन कौशलों के विकास के लिए बहुत जरूरी है। जब उनके कौशल विकसित ही हो रहे हैं और वे पूरी तरह खुद पढ़ नहीं सकते, ऐसे में शिक्षक की सहायता से पढ़ने का प्रयत्न बहुत प्रभावी होता है। आपको याद होगा कि जेड.पी.डी. (Zone of proximal development) के अनुसार, मदद के साथ बच्चे अपने स्तर से अधिक ऊपर जाने में सक्षम होते हैं। मार्गदर्शनयुक्त पठन में बच्चे पढ़ते हैं और शिक्षक उन्हें फीडबैक के ज़रिए सहायता देते रहते हैं। यह धीरे-धीरे उनके वास्तविक पठन स्तर से अगले स्तर पर ले जाने में मदद करता है। आदर्श रूप में, इसके लिए स्तरबद्ध किताबों का इस्तेमाल होता है। इससे शिक्षक बच्चों के बढ़ते स्तर के अनुसार पाठ पर अभ्यास करवाते हैं।

शिक्षक की भूमिका	बच्चों की भूमिका
पढ़ने से पहले : पढ़ने से पहले शिक्षक और बच्चे चर्चा करते हैं – पाठ का परिचय, शब्दावली अनुमान लगाना आदि ।	
पढ़ने के दौरान: <ul style="list-style-type: none"> ● पहले अध्यापक पूरे हाव-भाव सहित पाठ पढ़कर सुनाते हैं । ● अब अध्यापक बच्चों को अपने साथ पढ़ने के लिए कहते हैं । वे धीरे-धीरे मगर प्रवाह के साथ पढ़ते हैं (यानी हाव-भाव के साथ और वाक्यों को सार्थक अंशों में पढ़ते हैं) ● अध्यापक बीच-बीच में अपनी आवाज़ धीमी कर लेते हैं या शब्द छोड़ देते हैं । 	<ul style="list-style-type: none"> ● बच्चे उँगली रख कर, आँखों से अनुसरण करते हैं और ध्यान से सुनते हैं । ● बच्चे उँगली रख, उनके साथ-साथ पढ़ते हैं । ● अध्यापक द्वारा धीमी आवाज़ में बोले शब्दों या छोड़े हुए शब्द को बच्चे खुद पढ़ते हैं ।
पढ़ने के बाद: पढ़ने के बाद की गतिविधियाँ/चर्चा करते हैं ताकि अर्थ पर जोर बना रहे ।	

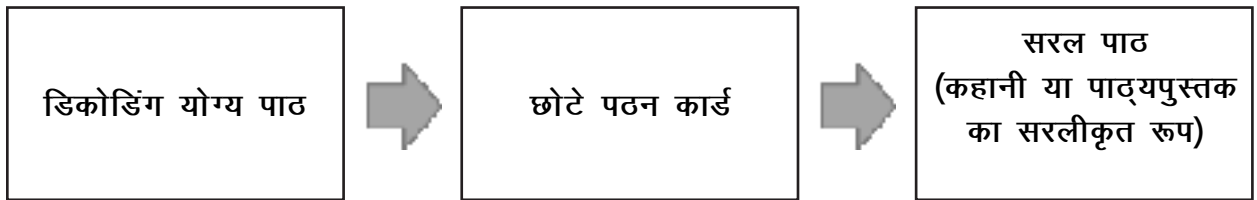
मुख्य उद्देश्य

बच्चों को पढ़ने के दौरान, सीखे गए कौशल को प्रयोग करने का मौका मिले और उनके सुधार के लिए शिक्षक द्वारा फीडबैक मिले ।

पठन सामग्री

- पाठ का स्तर बच्चों के लिए शिक्षण स्तर का होना चाहिए । इसके लिए सरल स्तरबद्ध किताबों या पाठों का इस्तेमाल सबसे उपयोगी रहता है ।
- शुरुआती पाठकों के लिए डिकोडेबल पाठ का इस्तेमाल किया जा सकता है । मुख्य बात यह है कि बच्चे के पठन स्तर से पाठ का स्तर मिलाया जाए । कक्षा में विभिन्नता को ध्यान में रखते हुए 2-3 स्तर के लिए पठन सामग्री की ज़रूरत होगी ।

पठन सामग्री का उपयोग इस क्रम में लाभदायक रहता है



- पठन कार्ड कई स्तर पर बन सकते हैं । शुरुआती स्तर पर सरल शब्द जिसमें 15-20 शब्द ही हों और जिसके चित्रों से बच्चों को मदद मिले । आगे के स्तरों में शब्दों की संख्या बढ़े और कुछ कठिन शब्द आ सकें ।

शिक्षक की भूमिका	बच्चों की भूमिका
<ul style="list-style-type: none"> ● शिक्षक बच्चों को उनके पठन स्तर के अनुसार 2-3 के समूह में बाँट कर बिठाते हैं (एक समूह में मिलते-जुलते स्तर के बच्चे हों) और उनके स्तर के अनुसार चयनित पाठ देते हैं। ● शिक्षक हरेक समूह के साथ बैठ कर उन्हें पढ़ते हुए सुनते हैं और उचित मार्गदर्शन देते हैं। बच्चों को किस प्रकार की मुश्किलें आ रही हैं, उसे नोट करते रहते हैं। ● शिक्षक ऐसी योजना बना सकते हैं कि एक दिन में एक समूह के साथ मार्गदर्शनयुक्त पठन करें और बाकी समूहों को दूसरी गतिविधियाँ दे दें। ● शिक्षक जिस समूह के साथ मार्गदर्शनयुक्त पठन करवाते हैं, उनके साथ पढ़ने से पहले पढ़ने के दौरान और बाद में, समझ के पढ़ने की रणनीतियाँ इस्तेमाल करने के लिए भी कहते हैं, ताकि अर्थ पर जोर बना रहे। 	<ul style="list-style-type: none"> ● समूह में बैठे बच्चों के पास पाठ की अपनी-अपनी प्रति होती है और वे बोल-बोल कर पढ़ते हैं (सामूहिक रूप से नहीं)। ● बच्चों को पठन और समझ के पढ़ने की सभी रणनीतियों के अभ्यास का मौका मिलता है। ● समूह में बच्चे अपनी गति से पढ़ते हैं, पढ़ते हुए सोचते हैं और बात भी करते हैं।
<p>पढ़ने के बाद की गतिविधियाँ करते हैं, ताकि अर्थ पर जोर बना रहे।</p>	

मगर ध्यान रहे कि मार्गदर्शनयुक्त पठन तभी लाभदायक होगा जब—

1. बच्चे बुनियादी डिकोडिंग कौशल सीख चुके हों (यानी कुछ वर्णों/अक्षरों के साथ छोटे वाक्य पढ़ सकते हों)
2. बच्चे नियमित रूप से संवादयुक्त और साझा पठन में शामिल होकर निम्नांकित बातें समझते हों:
 - प्रिंट सामग्री की बनावट व स्वरूप
 - लिखित पाठ की संरचना
 - समझने की रणनीतियाँ

किसी भी पाठ को सीधा बच्चों को पढ़ने को न दें। पहले उन्हें पढ़कर सुनाएँ। फिर शिक्षक अपने साथ पठन करवाएँ और उसके बाद बच्चे पढ़ें। किस पर कितना समय बिताना है, यह आप पाठ के अनुसार तय करें।

जोड़ों में पढ़ना

जोड़ों में पढ़ना बच्चों के पठन के अभ्यास के लिए अत्यंत लाभदायक है। इसमें बच्चे जोड़ों में बैठकर एक-दूसरे को जोर-जोर से पढ़कर सुनाते हैं। जोड़ों में पठन स्वतंत्र पठन से पहले की एक अच्छी तैयारी है। इससे बच्चों को एक-दूसरे को, पाठ पढ़ते हुए सुनने का मौका मिलता है और उस दौरान अपनी त्रुटियों पर भी ध्यान जाता है।

मुख्य उद्देश्य

बच्चे प्रवाह के साथ पढ़ने का अभ्यास करें।

पठन सामग्री

ऐसे पाठ, जो बच्चों के स्तर के हों और जिसमें शिक्षक की मदद की जरूरत न पड़े।

शिक्षक की भूमिका	बच्चों की भूमिका
पढ़ने से पहले चर्चा या अन्य गतिविधियाँ करवा सकते हैं, ताकि अर्थ पर ध्यान बना रहे।	
<p>पढ़ने के दौरान:</p> <ul style="list-style-type: none"> ● शिक्षक बच्चों को जोड़ियों में बाँटते हैं। अक्सर एक कम प्रवाह वाले पाठक की जोड़ी बेहतर प्रवाह वाले पाठक के साथ बनाते हैं। 	<ul style="list-style-type: none"> ● बच्चे एक-एक करके अपना पाठ अपने जोड़ीदार को जोर-जोर से पढ़कर सुनाते हैं। ● शिक्षक जोड़ी में बेहतर पढ़ने वाले बच्चे को पहले पढ़ने को कह सकते हैं। ● प्रत्यक्ष रूप से कक्षा में यह कहने के बजाय कि कौन बेहतर पाठक है, आप बोर्ड पर एक सूची बना सकते हैं कि जोड़ी में पहले कौन पढ़ेगा, अगली बार यह क्रम उल्टा कर दें। ● एक बच्चा जब पढ़ रहा हो तब दूसरा बच्चा पाठ पर उँगली रख कर अनुसरण करता है।
पढ़ने के बाद की गतिविधियाँ करते हैं, ताकि अर्थ पर जोर बना रहे।	

स्वतंत्र पठन

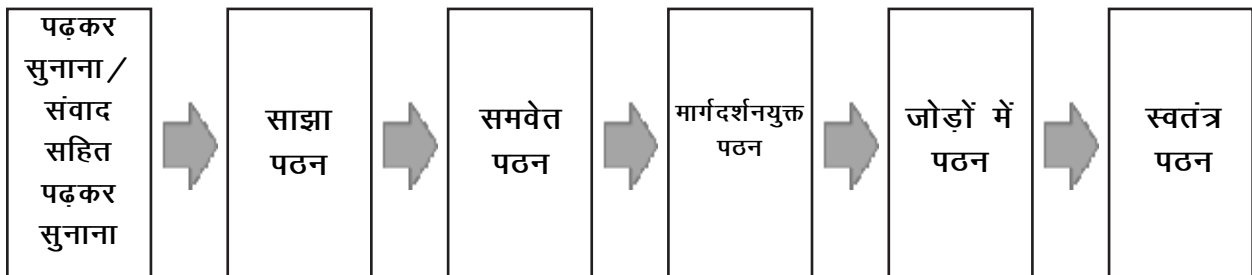
स्वतंत्र पठन के समय बच्चे अपने पठन स्तर के अनुकूल पाठों को स्वयं पढ़ते हैं। स्वतंत्र पठन का उद्देश्य केवल यह नहीं कि वे पढ़ने और समझने के कौशलों का प्रयोग करें, बल्कि यह भी है कि बच्चों में पढ़ने की रुचि और पढ़ने की आदत विकसित हो। यह केवल अभ्यास देने की दृष्टि से नहीं, बल्कि बच्चों में उत्साह बढ़ाने के लिए और भाषा कक्षा में पठन का एक आनंदमयी माहौल बनाने के लिए आवश्यक है। कक्षा में दो तरह से स्वतंत्र पठन होते हैं –

बच्चों द्वारा खुद पढ़ने का अभ्यास

मुक्त पठन

1. बच्चों द्वारा खुद पढ़ने का अभ्यास—इसमें शामिल है— कक्षा में पढ़े जा रहे पाठ (पाठ्यपुस्तक या स्तर अनुसार पाठ) के साथ स्वतंत्र पठन करवाना। किसी पाठ को स्वतंत्र पठन के लिए देने से पहले, पाठ को निम्नलिखित रणनीतियों से गुजरना होगा –

इसमें शामिल है— कक्षा में पढ़े जा रहे पाठ (पाठ्यपुस्तक या स्तर अनुसार पाठ) के साथ स्वतंत्र पठन करवाना। किसी पाठ को स्वतंत्र पठन के लिए देने से पहले, पाठ को निम्नलिखित रणनीतियों से गुजरना होगा –



1. डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

पाठ्यपुस्तकों के अलावा हमें बच्चों को सरल व स्तर अनुसार बनी किताबों के साथ भी स्वतंत्र पठन का अभ्यास करवाना होगा। मगर इससे पहले, इन किताबों के साथ बहुत सारा काम हो जाना चाहिए। यानी कई बार उन्हें संवाद सहित पढ़कर सुनाना, ज़रूरत पड़ने पर साझा पठन, समवेत पठन, मार्गदर्शनयुक्त पठन, जोड़ों में पढ़ना और फिर जब लगे कि बच्चे अब पाठ को खुद पढ़ पाएँगे, तब उन्हें स्वतंत्र पठन के लिए देना। यहाँ शिक्षक का उद्देश्य केवल रुचि और आनंद के लिए पढ़ने देना नहीं, बल्कि साझा पठन कौशलों का सुनिश्चित अभ्यास करवाना भी है। साथ ही, शिक्षक इसमें पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद के अर्थ समझने पर जोर देते हैं।

2. मुक्त पठन –

वहीं दूसरे प्रकार का स्वतंत्र पठन है, मुक्त पढ़ने के मौके देना। कक्षा में पठन कोना बनाया जाए, जहाँ बच्चों की मनपसंद कहानियों की किताबें (उनके स्वतंत्र पठन स्तर की) हों और बच्चे स्वतः उन्हें लेकर पढ़ सकें। कक्षा में पठन कोना, बच्चों में पढ़ने के प्रति बेहद उत्साह पैदा करता है। यहाँ उन्हें अपनी पसंद से, आज़ादी चुनने का मौका मिलता है। पाठ्यपुस्तक की कहानियों में चित्र छोटे होते हैं और बच्चे उन्हें अक्सर शिक्षक द्वारा संचालित कार्य के रूप में देखते हैं। किताबों के चयन में शिक्षक बच्चों की मदद भी कर सकते हैं। कक्षा में पठन कोने से किताब लेकर पढ़ने का निर्धारित समय बनाया जा सकता है। जैसे—कुछ स्कूलों में हर रोज़ पढ़ने का समय (रीडिंग टाइम) होता है। एक तरीका यह भी है कि बच्चों को प्रोत्साहित किया जाए कि वे अपने खाली समय में किताब खुद लेकर पढ़ें। लाइब्रेरी की देखरेख के नियम बनाएँ, उसे सँभालने के लिए अलग-अलग बच्चों को ज़िम्मेदारी दी जा सकती है। यह कक्षा का मजेदार कोना बन सकता है, जहाँ कहानी से जुड़ी चीज़ें, बच्चों द्वारा बनाए कहानी के चित्र वगैरह लगा कर, इसे आकर्षक बनाया जा सकता है। मुक्त पठन हफ्ते में कम से कम 2–3 बार होना चाहिए और इसके लिए निर्धारित समय हो।

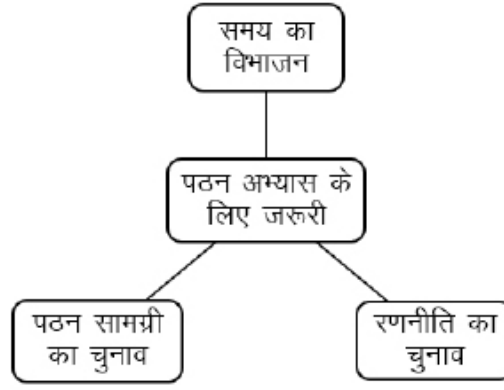
गतिविधि –

आपने ऊपर बहुत-सी रणनीतियों के बारे में पढ़ा। इस जानकारी को व्यवस्थित करने के लिए आप इस टेबल को भरें:

अध्यापक द्वारा पढ़ कर सुनाना	साझा पठन	समवेत पठन	मार्गदर्शन युक्त पठन	जोड़ों में पढ़ना	स्वतंत्र पठन
उद्देश्य	उद्देश्य	उद्देश्य	उद्देश्य	उद्देश्य	उद्देश्य
पठन सामग्री	पठन सामग्री	पठन सामग्री	पठन सामग्री	पठन सामग्री	पठन सामग्री

रणनीतियों का कक्षा में इस्तेमाल—

कक्षा में इन रणनीतियों के इस्तेमाल के लिए शिक्षक को योजना बनाने की आवश्यकता होगी। इस योजना में तीन मुख्य बिंदुओं का ध्यान रखना होगा :—



1. समय का विभाजन: हर रोज कक्षा में बच्चों के पढ़ने के अभ्यास के लिए समय निर्धारित करें। अभ्यास के लिए विभिन्न रणनीतियों (समवेत/ मार्गदर्शनयुक्त/ जोड़ों में/ स्वतंत्र पठन) का चुनाव पाठ और अपने उद्देश्य के अनुसार करें।

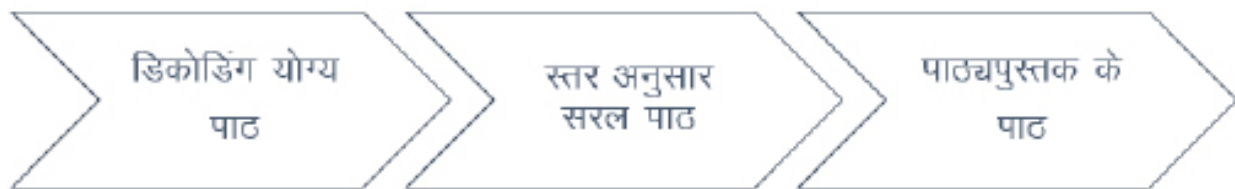
2 रणनीति का चुनाव: आपके द्वारा चुने शिक्षण उद्देश्य पर निर्भर है। उदाहरण के तौर पर, मान लें कि बहुत-सा डिकोडिंग शिक्षण हो चुका है और आप चाहते हैं कि बच्चे सीखे हुए कौशल का प्रयोग कर, खुद पढ़ने की कोशिश करें। ऐसे में, मार्गदर्शनयुक्त पठन एक अच्छी रणनीति है, जहाँ आप डिकोडिंग योग्य या सरल पाठ बना कर, बच्चों को पढ़ने दे सकते हैं।

3. पठन सामग्री का चुनाव: पढ़ने का अभ्यास केवल पाठ्यपुस्तकों के साथ नहीं हो सकता क्योंकि कई पाठों का स्तर बच्चों के पठन स्तर से काफी ऊपर होता है। पठन सामग्रियों का उचित इस्तेमाल कभी-कभी जटिल लग सकता है। निम्नलिखित कुछ बातें इस संदर्भ में ध्यान रखें:-

- पढ़ने की शुरुआत संवाद सहित पढ़कर सुनाने से करनी होगी और बच्चों को पढ़ने में सहायता धीरे-धीरे कम करनी होगी।
- जब बच्चे डिकोडिंग सीख रहे हैं, तब पढ़ने के अभ्यास के लिए डिकोडिंग योग्य पाठ या पठन कार्ड का इस्तेमाल ज्यादा उचित होता है।
- धीरे-धीरे उन्हें सरल कहानियों की किताबों के साथ अभ्यास करवाना चाहिए।
- उसके बाद वे पाठ्यपुस्तकों के पाठ के साथ अभ्यास कर पाएँगे।
- ज़रूरी नहीं कि यह क्रम हमेशा इस्तेमाल किया जाए। यदि पाठ्यपुस्तक के कोई पाठ हैं जो पठन अभ्यास के काम आ सकते हैं तो अवश्य इस्तेमाल करें।

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

- पठन अभ्यास के लिए नीचे दिया यह क्रम ज्यादातर स्थितियों में उपयोगी रहता है।



- रणनीतियों का चयन बच्चों के पठन स्तरानुसार ही करें। जब बच्चे कक्षा 1 में आएँ, तब बच्चों को पढ़कर सुनाना और संवाद सहित पढ़कर सुनाना बहुत उपयोगी रहता है। धीरे-धीरे अभ्यास होने पर साझा पठन और समवेत पठन करवाया जाना चाहिए। एक बार बच्चे थोड़ा-थोड़ा पढ़ना शुरू कर दें, तो शिक्षक मार्गदर्शनयुक्त पठन द्वारा उनका अभ्यास करवाएँ। इसके उपरांत ही बच्चों को जोड़ों में पढ़ने के लिए प्रेरित करें और अंत में स्वतंत्र पठन करने को दें।
- जो बच्चे किसी विशेष स्तर की किताबों के साथ स्वतंत्र पठन के स्तर पर आ जाएँ, उनके साथ फिर उसी स्तर की किताबों को लेकर समवेत या मार्गदर्शनयुक्त पठन की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे में, उन्हें थोड़े ऊपर के स्तर की किताबें दें और फिर यहीं रणनीतियों की प्रक्रिया दोहराएँ।

कुछ प्रश्न—

1. "सक्रिय भागीदारी" से क्या तात्पर्य है ?
2. "व्यवस्था संबंधित कारणों" से आप सहमत हैं या असहमत। अपने विचार तर्क सहित रखिये ?
3. "भाषाई" और "पृष्ठभूमि" संबंधित विविधता को अपने स्थानीय परिवेश के उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए ?
4. भाषा संबंधित कारणों में से कौन सा कारण आपके अनुसार सार्वधिक प्रभावशाली कारण है ? कारण सहित स्पष्ट कीजिए ?



अध्याय – 17

पढ़ने का आकलन कैसे करें

परिचय :

पढ़ने का कौशल आ जाने पर हम परी लोक की सैर कर सकते हैं, किस्से-कहानियों की दुनिया से अपने को जोड़ सकते हैं, इतिहास से रू-ब-रू हो सकते हैं लेकिन हमें सही तरीके से पढ़ना आना चाहिये। अक्षर-दर-अक्षर जोड़कर शब्द पढ़ने की क्षमता से क्या हम किस्से-कहानियों का आनन्द उठा पाएँगे? नहीं न, इसलिए हम पढ़ने में कितने कुशल हैं इसका आकलन जरूरी है और तदनुसार बच्चे के लिए गतिविधियाँ बनाकर उसे पढ़ने में कुशल बनाने के तरीके पर हम इस अध्याय में पढ़ेंगे।

उद्देश्य :

- किस तरह के पढ़ने को पढ़ने का कौशल मानेंगे इसकी समझ विकसित कर सकेंगे।
- पढ़ने का आकलन कैसे करेंगे इसके बारे में अपनी राय दे सकेंगे।
- पढ़ने का मकसद बता सकेंगे।
- पढ़ने के आकलन का पैमाना सोच सकेंगे।
- दी गयी चित्रित सामग्री का उपयोग पढ़ने का कौशल विकसित करने में कर सकेंगे।
- पाठ्यपुस्तकों से इतर पसंद की पुस्तकों, चित्र कक्षाओं आदि पढ़ने की ललक पैदा कर सकेंगे।
- बच्चे भी अपनी प्रगति का आकलन कर सकेंगे।

दुनिया के किसी भी कोने में रहने वाले किसी भी उम्र के व्यक्ति के पास अगर कोई सबसे रोमांचकारी और अनोखी चीज़ है तो वह है 'पढ़ने' का कौशल। यह वह तिलस्मी दरवाज़ा है जिसे खोल कभी हम परी लोक हो आते हैं, न जाने कितने किस्से-कहानियों का मज़ा लूटते हैं तो कभी ज्ञान की अतुल अपार संपदा समेटे रहस्यमयी दुनिया की सैर कर आते हैं, और तो और इतिहास बन चुके नज़ारों से भी रू-ब-रू हो लेते हैं। स्कूली दुनिया में तो उस करिश्मे के बिना किसी की कोई बिसात ही नहीं। गणित हो या विज्ञान या फिर भाषा सभी विषयों की नैया का खेवनहार 'पढ़ना' ही

- बच्चे को हर अक्षर की पहचान बहुत अच्छे से है। वे अक्षरों को जोड़-जोड़ कर शब्द पढ़ पा रहे हैं। क्या इसी तरह का 'पढ़ना' उन्हें किस्से-कहानियों की दुनिया में ले जाएगा?
- बच्चे लिखित या मुद्रित सामग्री के एक-एक शब्द को पढ़कर आगे बढ़ रहे हैं। क्या इसी तरह से 'पढ़ना' उन्हें उस सामग्री से रोमांचित होने के मौके दे पाएगा?
- बच्चे केवल वही सामग्री पढ़ पा रहे हैं जिसे शिक्षक या अभिभावक द्वारा बच्चे के सामने कई बार पढ़ा गया है। ज़ाहिर सी बात है पाठ्यपुस्तक के पाठ ही होंगे और वह भी भाषा की पुस्तक के, पर जब पाठ्यपुस्तक से बाहर कोई पठन सामग्री उनके सामने आती है, वे उसका आनंद नहीं उठा पाते। क्या हम इसी तरह के 'पढ़ने' की बात कर रहे थे? बिल्कुल नहीं।

1. डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

हम 'पढ़ने' को करिश्माई कौशल तभी मान सकेंगे, जब हम लिखे हुए में से अर्थ ढूँढ़ सकें।

शब्दों, अक्षरों की पहचान मात्र 'पढ़ना' नहीं है। बहुत से बच्चे गणित के तमाम जटिल से जटिल सवाल चुटकियों में हल कर लेते हैं बशर्ते सवाल की इबारत ज़बानी बोली जाए या सिर्फ संख्याएँ दे दी जाएँ। वे अपने इर्द-गिर्द हो रही हर घटना की जानकारी रखते हैं, अपने से बड़ों को उन घटनाओं से अवगत करवाते रहते हैं। पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, चाँद-सूरज, दिन-रात आदि से जुड़ी उनके पास अपनी जानकारियों का खज़ाना है, जिसे उन्होंने अपनी अद्भुत अवलोकन क्षमता से हासिल किया है पर विज्ञान की पुस्तक में लिखे खज़ाने से वे कुछ भी नहीं ले पाते। दोनों जगह उन्हें एक ही चीज़ मात दे रही है वह है 'ठीक से न पढ़ पाना'। यह 'ठीक से न पढ़ पाना' सिर्फ भाषा की घंटी से ही सरोकार नहीं रखता बल्कि पूरी विद्यालयी गतिविधियों जैसे- दूसरे विषयों की पढ़ाई, बुलेटिन बोर्ड तैयार करना, परियोजना कार्यों की रिपोर्ट तैयार करने के लिए सामग्री का चयन करना, यह सब 'पढ़ना आने' पर ही निर्भर करता है। और अब तो ऐसा दौर आ गया है कि विद्यालय से बाहर की दुनिया को समझने के लिए भी 'पढ़ना आना' जरूरी है।

अभ्यास

- पढ़ने के करिश्माई कौशल कौन-कौन से हो सकते हैं?
- पढ़ने में हमारे आस-पास का वातावरण किस प्रकार सहायक होता है?

आकलन

इस 'पढ़ने' का आकलन कैसे किया जाए। असल बात हमें इसी पर करनी है। हम सभी जानते हैं कि 'पढ़ना' भाषा का अर्जित किया जाने वाला कौशल (Acquired skill) है। इस आधार पर यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि 'पठन कौशल' यानी कि 'पढ़ने' का आकलन करने के लिए समझना बहुत जरूरी है कि यह कौशल अर्जित कैसे किया जा रहा है, अर्थात् बच्चे किस तरह से 'पढ़ना' सीख रहे हैं। 'पढ़ना सीखने' के प्रति समझ बनना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि 'पढ़ना सीखना' और उसका 'आकलन करना' ये अलग-अलग घटने वाली प्रक्रियाएँ नहीं हैं बल्कि दोनों ही साथ-साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं। इस संदर्भ में कुछ और भी बिन्दु हैं जिन पर ध्यान देना जरूरी होगा जैसे-

- आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा है। यह एक सतत् प्रक्रिया है।
- आकलन से मतलब है तरह-तरह के तरीकों का इस्तेमाल करते हुए बच्चों के सीखने की प्रगति संबंधी सूचनाएँ हासिल करते रहना और उस आधार पर उन्हें रचनात्मक पृष्ठपोषण देना।
- आकलन सिर्फ इसलिए नहीं किया जाता कि हम पता लगाएँ कि बच्चों ने क्या किया और कितना सीखा है बल्कि 'कैसे' सीख रहे हैं, इसे भी समझा जाता है। उनकी सफलताओं या कठिनाइयों और आत्मविश्वास के स्तर को पहचानना भी जरूरी होता है।
- आकलन बच्चों की जरूरतों, रुचियों और पूर्व अनुभवों का पता लगाने के लिए भी किया जाता है। वे पहले से क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं, आकलन की प्रक्रिया हमें यह जानने में भी मदद मिलती है।
- गतिविधियों और पद्धतियों की प्रभावशीलता मापने तथा अपनी अध्यापन पद्धतियों को परखने में भी आकलन मदद करता है।
- आखिरकार, आकलन द्वारा बच्चे के सीखने की गुणवत्ता सुनिश्चित करना भी अनिवार्य है।
- आकलन सम्बन्धी पद्धतियाँ एवं दृष्टिकोण पिछड़े बच्चों की जरूरतों का भी ख्याल रखने वाला हो और निश्चित रूप से पूर्वाग्रहों से दूर हो।

- एक बात और। आकलन चाहे पढ़ने की क्षमता का हो या फिर किसी अन्य कौशल का, आकलन करना अकेले शिक्षक/अध्यापक की एकाधिकार नहीं, इस प्रक्रिया में सामुदायिक सहभागिता भी जरूरी है। 'स्व' और 'साथी आकलन' के लिए भी तमाम गुंजाइशें हैं।
- आकलन के माध्यम से किसी प्रविधि की सफलता अथवा असफलता का ज्ञान होता है ताकि असफलता की स्थिति में शिक्षक अन्य प्रविधियों का भी उपयोग करे।

अभ्यास

- आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा है। कैसे?
- निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर सही अथवा गलत का चिह्न लगाएँ—
 - सीखना एवं सिखाना एक सतत प्रक्रिया है। ()
 - आकलन से आशय बच्चे के सीखने की प्रगति की सूचना हासिल करना है। ()
 - आकलन से सिर्फ बच्चा क्या नहीं जानता इसका पता लगाया जाता है। ()
 - आकलन को सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त होना चाहिए। ()
 - आकलन से बच्चे की गुणवत्ता बाधित होती है। ()
- आकलन की प्रक्रिया में किन-किन लोगों की भागीदारी ली जा सकती है?
- आकलन से बच्चे की गुणवत्ता किस प्रकार प्रभावित होती है।
- आकलन में समुदाय की सहभागिता बच्चों के सीखने की प्रगति में सहायक है, कैसे?

पढ़ने का मकसद

उपर्युक्त बिन्दुओं के प्रति समझ और सहमति बनने के बाद अगले पायदान पर चढ़ने से पहले एक छोटा-सा पड़ाव और पड़ता है, वह है भाषायी कौशलों के सन्दर्भ में 'पठन कौशल के उद्देश्य'। जब तक हमें यह ही नहीं पता कि प्राथमिक स्तर पर 'पढ़ने' से जुड़े क्या-क्या उद्देश्य हैं तो हम आकलन किस आधार पर करेंगे? इसलिए हम उद्देश्यों पर भी निगाह डाल लेते हैं—

- परिवेश में उपलब्ध संदर्भों, चित्रों एवं अन्य मुद्रित/लिखी सामग्री से परिचित होना और अनुमान से पढ़ने का प्रयास करना।
- 'पढ़ने' को दैनिक जीवन की जरूरतों से जोड़ना, घर और बाहर दोनों ही।
- लिपि चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियाँ सुन और समझकर उनमें सहसम्बन्ध बनाते हुए पढ़ने की कोशिश करना।
- सुनी हुई कहानियों, कविताओं को लिखित/मुद्रित रूप में देखने पर उनसे अपने अनुभव जोड़ पाना।
- विषय सामग्री के माध्यम से नए शब्दों के अर्थ जानने की कोशिश करना।
- मुख्य बिन्दु/विचार को ढूँढ़ने के लिए विषय सामग्री की बारीकी से जाँच करना।
- पाठ्यपुस्तक की विधाओं से परिचित होना और उन विधाओं की दूसरी पुस्तकें/रचनाएँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित होना।

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

- दूसरों के विचारों को पढ़कर समझने की योग्यता का विकास करना।
- पुस्तकों के प्रति रुचि जाग्रत करना/पढ़ने के प्रति एक ललक पैदा करना।
- पढ़कर ज्ञानार्जन और आनंद पाना।

हाँ, इन उद्देश्यों के साथ-साथ कक्षा में विराजी भाषायी सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता के प्रति सहिष्णुता होना तो शामिल है ही।

आकलन

अब बात करते हैं कि आकलन कैसे करें? मान लीजिए कि हमने बच्चों के सामने एक चित्र प्रस्तुत किया। चित्र में एक बस है। उस बस से कुछ दूरी पर बच्चे हैं। उनकी मुद्रा दौड़ने की सी है और बस पर चढ़ने की है।

चित्र के साथ मोटे अक्षरों में लिखा है— “बच्चे दौड़कर बस में चढ़ गए।” जिन बच्चों के सामने हमने चित्र प्रस्तुत किया उन्हें लिपि चिह्नों, अक्षरों, शब्दों, वर्णों की पहचान है यानी कि आम भाषा में कहें तो वे ‘पढ़ना’ जानते हैं। हमने इन बच्चों से कहा कि चित्र देखें और लिखा हुआ वाक्य पढ़कर बताएँ। कुछ बच्चे पढ़ते हैं— “बच्चे दौड़कर बस पर चढ़ गए।” कुछ बच्चों ने वाक्य को इस तरह से पढ़ा — “ब-च्-चे द औ की मात्रा ड, दौड़ कर ब-स म ए की मात्रा मस्ते में, च-ढ़ ग-ए।”

कुछ बच्चों ने वाक्य को इस तरह से पढ़ा— “बच्चे द ड क र ब स में च ढ ग ए।” कुछ बच्चों ने वाक्य को इस तरह से पढ़ा— “बच्चे भागकर बस में चढ़ गए।” यहाँ पर ‘पढ़ने’ की चार बानगियाँ प्रस्तुत हैं।

- पहली बानगी में बच्चों ने ‘में’ की जगह ‘पर’ बोला है या ऐसे भी कह सकते हैं पढ़ा है।
- दूसरे से साफ़ जाहिर है कि बच्चे हर अक्षर को अलग-अलग पढ़ रहे हैं यानी कि तोड़-तोड़ कर पढ़ रहे हैं और निश्चित रूप से उनका आपस में कोई सम्बन्ध नहीं जोड़ पा रहे हैं।
- तीसरी शैली से पता चलता है कि वाक्य के कुछ शब्द तो सही-तरीके से पढ़ लिए गए हैं पर ‘दौड़’ में औ की मात्रा एक व्यवधान बन गई और उसे ‘द ड’ पढ़ा गया।
- चौथे में तो ‘दौड़ कर’ उड़ा ही दिया गया और पढ़ा गया ‘भागकर’ आपको क्या लगता है — यह शब्द ‘भागकर’ कहाँ से आया होगा? निश्चित रूप से उस सामग्री में तो कहीं भी नहीं लिखा या छपा जो उन्हें पढ़ने के लिए दिया गया है। उस पर सिर्फ़ एक ही वाक्य लिखा है— “बच्चे दौड़कर बस में चढ़ गए।” और साथ में एक चित्र है जिसमें बस है और दौड़कर बस पकड़ते बच्चे।

अब यदि आपके पास पाँच बिन्दुओं वाली मापनी है—

1. बहुत मदद चाहिए।
2. मदद चाहिए।
3. औसत
4. उत्तम/अच्छा
5. उत्कृष्ट

और ‘पढ़ने’ के संदर्भ में आपकी परिभाषा है— “लिखे हुए में से अर्थ ग्रहण करना।” तो आप चारों में किसको किस श्रेणी में रखेंगे?

आपका उत्तर ‘पढ़ने’ का आकलन करने की दिशा तय करेगा।

अभ्यास

- नीचे एक वाक्य दिया गया है। "बच्चे फूटबॉल खेल रहे हैं?" इस वाक्य को पूरी कक्षा को पढ़ने को दें फिर उनकी प्रतिक्रियाओं को ऊपर दी गई मापनी के आधार वर्गीकृत करें।
- प्राथमिक स्तर पर पढ़ने के क्या उद्देश्य हैं?

गतिविधियाँ

अब 'पढ़ने का आकलन' से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ प्रस्तुत हैं जो यह समझ बनाने में सहायता करेंगी कि 'पढ़ने' का आकलन कैसे करें, किस तकनीक का इस्तेमाल करें, सूचनाएँ दर्ज कैसे की जाएँ और पीठ किसकी और की जाए। पहले 'चित्र पढ़ने' की बात करते हैं।

शुरुआती तैयारी

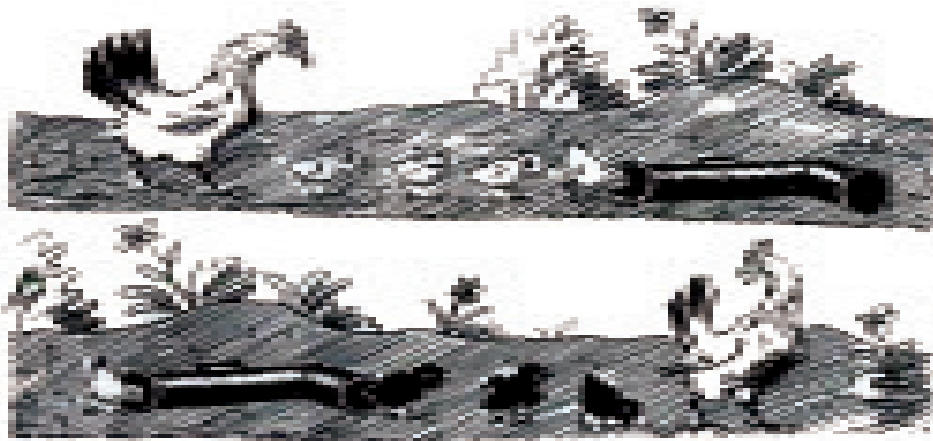
पूर्व तैयार – हमारे पास बच्चों को दिखाने के लिए चित्र है। (क) चित्र का आकार इतना तो जरूर है कि बच्चे ध्यान से देख सकें, पढ़ सकें, अनुमान लगा सकें। संभवतः उस चित्र की 6-7 प्रतिलिपियाँ हैं और पाँच-पाँच बच्चों (स्थिति के अनुसार) के समूह बनाकर चित्र को देखने के लिए भी दिया जा सकता है। (ख) चित्र का चयन बच्चों के पूर्व अनुभवों, स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के अनुसार ही किया गया है।

- हमारे पास एक रजिस्टर है जिसमें सभी बच्चों के नाम लिखे हैं और हम उसमें हर बच्चे के संबंध में विवरणात्मक टिप्पणियाँ लिखने के लिए मानसिक रूप से तैयार हैं।

भरी हुई कक्षाओं (एक कक्षा में अधिक संख्या में बच्चे होना) के साथ निर्वाह करने वाले शिक्षक भी इस तैयारी का हिस्सा हो सकते हैं। जरूरी नहीं है कि साठ से सत्तर सभी बच्चों का अवलोकन और टीपें दर्ज होना 'आज एक ही दिन' में किया जाए। आज समूह-1 के सात बच्चे तो कल समूह-2 के। इस तरह 15 दिन में हर बच्चे के कौशल का स्तर हमारी मापनी पर अंकित हो सकता है। पूर्व तैयारी में ही शामिल होगा चित्र सम्बन्धी प्रश्नों का निर्माण। ऐसे प्रश्न जो ये पता लगा सकें कि बच्चे चित्र को पढ़ पा रहे हैं या नहीं।

मेरे बच्चे गए कहाँ?

Where Are My Childrens?



। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

प्रस्तुत चित्र के सम्बन्ध में प्रश्न हो सकते हैं –

1. इस चित्र में क्या-क्या चीजें दिखाई दे रही हैं?
2. आगे-आगे कौन चल रहा है?
3. चूजों के पीछे कौन चल रहा है?
4. सभी चूजों के अपनी पसंद से नाम रखो।
5. उनकी माँ मुर्गी का भी नाम रखो।
6. चूजे उस पाइप के अंदर से क्यों जाना चाहते हैं?
7. माँ उन्हें मना करे या नहीं?
8. जब चूजे पाइप के रास्ते बाहर आए तो उनकी माँ हैरान क्यों हुई?
9. कितने चूजे पहले बाहर निकले। कितने चूजे पीछे रह गए।
10. यह चूजा पीछे क्यों रह गया होगा?
11. पाइप के अन्दर क्या चीज़ हो सकती है, जिससे चूजों का रंग बदल गया?
12. इसे देखकर कोई कहानी सूझती होगी, सुनाओ?
13. पहले क्या हुआ, फिर क्या हुआ?
14. अब चूजे क्या करेंगे?
15. इनकी माँ इन्हें क्या कहेगी?
16. इस चित्र को कोई नाम दे सकते हो?
17. इससे मिलता-जुलता कोई चित्र पहले भी देखा था?
18. अगर चूजे पाइप के अंदर ही फँस जाते तो?
19. ये पाइप रास्ते में किसने रखे होंगे?
20. तुम्हारे घर के आस-पास भी ऐसे ही चीजें पड़ी होती हैं क्या?
21. तुम इस मुर्गी और चूजों से कोई सवाल करना चाहोगे, कोई भी सवाल इनसे पूछो।

निश्चित रूप से इतने सवाल नहीं पूछे जाँएँगे। ये केवल उदाहरण के लिए हैं कि कल्पना को विस्तार देने वाले, अनुमान लगाने वाले, विश्लेषण करने का मौका देने वाले और तार्किक क्षमता का विकास करने में मदद देने वाले ही सवाल पूछना बेहतर होगा। मात्र कौन हैं? क्या-क्या है? जैसे प्रश्न पूरी तरह से चित्र पढ़ने में मदद नहीं करते।

अब तक हमने क्या किया? तस्वीर का चयन, संबंधित प्रश्नों का निर्माण, एकल या समूह में बच्चों को चित्र दिया गया और अब प्रश्न पूछने की बारी है और टीपें दर्ज करने का समय। (इस समय टीपें रजिस्टर में नहीं हमारे मस्तिष्क/स्मृति में दर्ज हो रही हैं। सवाल-जवाब करते समय रजिस्टर में टिप्पणियाँ लिखना बच्चों को व्याकुल कर सकता है। उनकी सहजता के आड़े आ सकता है।) यहाँ हमें एक बहुत ही अहम बात ध्यान में रखनी होगी –

“सभी बच्चे अपने-आप में अद्वितीय हैं। उनके सीखने-समझने की गति भिन्न-भिन्न है।”
यानी हर बच्चे को अलग-अलग समय दिया जाना चाहिए।

एक बहुत ही सहज से माहौल में बच्चों से प्रश्न पूछे गए। उत्तर पाने में शीघ्रता का भाव नहीं दिखाया गया। सवाल की भाषा सरल थी। ज़रूरत पड़ने पर सवाल दोहराया भी गया। बच्चों के उत्तर स्वीकार किए गए। जिस बच्चे ने जवाब देने में झिझक/कठिनाई प्रदर्शित की, उसे विवश नहीं किया गया बल्कि कहा गया—
“चलो, कोई बात नहीं। बाद में बता देना।”

एक बार में पाँच बच्चों के पढ़ने के बारे में ही याद रह पाया। उनकी टिप्पणियाँ कैसी होंगी, नमूना प्रस्तुत है—

1. अनुश्री – उत्कृष्ट

पिछली बार की तुलना में कहीं अधिक सहज और सजग है। चित्र देखते हुए मुस्कुरा रही थी और अंत में तो हँस ही पड़ी। फटाफट बच्चों के नाम रख दिए पर मुर्गी का नाम नहीं रखा यह कहकर कि यह तो ‘मम्मी’ है। मम्मी का नाम नहीं होता। (घर पर कभी मम्मी का नाम लिया जाता होगा।)

पूछे गए प्रश्नों की जगह अपने ही प्रश्न बना डाले और उनके उत्तर भी दे दिए। जैसे— चारों चूजे आपस में क्या कह रहे हैं? ये एक लाइन में क्यों चल रहे हैं? ये आपस में कब-कब लड़ते होंगे?

2. शांतनु – मदद की ज़रूरत है

चित्र को देखने में कुछ अधिक समय लिया। क्या है? कितने हैं? कौन हैं? के उत्तर फटाफट दे दिए। पिछली बार से तुलना करें तो कोई विशेष प्रगति नहीं है। “मुर्गी कैसी है” का वर्णन अच्छे से किया पर अनुमान वाली बात में हिचकिचाहट थी। सवालों का जवाब एक या दो शब्दों में दे पा रहा था। बिना उतार-चढ़ाव के पाँच वाक्यों की कहानी सुनाई।

3. आयुष – औसत

पिछली बार की तुलना में इस बार अधिक ऊर्जावान और प्रफुल्लित नज़र आ रहा है। उत्तर देने के लिए तत्पर है। घटनाक्रम बहुत सहजता से बता पाया है परन्तु कल्पना तथा अनुमान लगाने वाले सवालों का उत्तर देने में हिचकिचाहट थी। प्रोत्साहित करने पर एक दो वाक्य रूक-रूक कर कह पाया है।

इसी तरह से बाकी बच्चों के सम्बन्ध में भी टीपें दर्ज की गईं।

अभ्यास

- उपर्युक्त चित्र पर जो प्रश्न पूछे गए हैं क्या आप इससे सहमत हैं या असहमत हैं और क्यों?
- “प्रत्येक बच्चे के सोचने व समझने की गति भिन्न-भिन्न होती है” इस कथन की पुष्टि में अपना अनुभव और उदाहरण प्रस्तुत करें।

‘पठन कौशल’ के आकलन के संदर्भ में अभी हमने ‘चित्र पढ़ने’ का आकलन किया था। चित्र के बाद छोटी-छोटी कविताओं, कहानियों और पाँच-छह वाक्यों वाले रुचिकर अनुच्छेदों को पढ़ने की बात आती है। धीरे-धीरे स्तर बढ़ता जाएगा और हम बच्चे को भिन्न-भिन्न विधाओं के पठन की ओर ले जाएँगे। यहाँ पर आकलन के लिए हमें कुछ सुरागों को ध्यान में रखना होगा। पठन सम्बन्धी मुख्य सुराग इस प्रकार हो सकते हैं—

1. आनंद लेते हुए कविता को पढ़ना।
2. आवश्यकतानुसार शब्दों पर बल देना।
3. पढ़ी गई कविता को अनुमान से आगे बढ़ाना।
4. कविता-कहानी का अर्थ समझते हुए पढ़ पाना।
5. कविता या कहानी के घटनाक्रम को अपनी कल्पना से आगे बढ़ाना और आगे-पीछे होने वाली घटनाओं में अंतर कर पाना।
6. पढ़ी जा रही सामग्री में आए अपरिचित शब्दों का संदर्भ के आधार पर मतलब ढूँढ़ना।
7. पढ़ी गई सामग्री को अपनी तरह से प्रस्तुत कर पाना।
8. परिवेश में उपलब्ध पठन सामग्री जैसे पोस्टर, विज्ञापन बोर्ड, सड़क संकेतों, स्कूल, सड़क, दुकानों के नाम, स्कूल में लिखी इबारतों आदि को पढ़ पाना और उनके प्रति समझ बनाना।
9. आवश्यक सूचनाओं और संदेशों को समझकर पढ़ पाना।
10. चित्रों को लिखित सामग्री से जोड़ते हुए घटनाओं के बारे में अनुमान लगाना और अपने अनुमान के लिए तर्क भी सुझाना।
11. पोस्टर, विज्ञापन, साइन बोर्डों से अब पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने की तरफ प्रोत्साहित होना।
12. पाठ्यपुस्तकों से इतर अपनी पसंद की पुस्तकों, चित्रकथाओं, कॉमिक्स आदि पढ़ना और उन्हें पढ़ने के लिए ललक पैदा होना।
13. नए तथा अपरिचित शब्दों के अर्थ ढूँढ़ने के लिए सिर्फ अनुमानों पर या फिर बड़ों की मदद पर ही निर्भर नहीं रहते अपितु शब्दकोश की सहायता भी लेते हैं।

14. भिन्न-भिन्न विधाओं को पढ़ने में रुचि दिखाना और किसी खास विधा के प्रति आकर्षण प्रदर्शित करना।
15. तरह-तरह की पठन सामग्री का संकलन करना और उन्हें पढ़ने के लिए लालायित रहना।

इन सभी संकेतकों के आधार पर बच्चों के पठन कौशल एवं क्षमता का आकलन किया जा सकता है। यद्यपि ये सभी संकेत एक बढ़ते हुए क्रम में हैं पर यह दावा नहीं किया जा सकता कि सभी बच्चे क्रमानुसार ही इन्हें प्रदर्शित करेंगे। हो सकता है कोई बच्ची अभी पूरी तरह से पढ़ना नहीं सीख पाई है, पर वह तरह-तरह की पठन सामग्री का संकलन करने में रुचि रखती हो और अनुमान के आधार पर उन्हें पढ़ती हो। यह भी हो सकता है कि किसी बच्चे ने अभी प्रवाह के साथ पढ़ना नहीं सीखा पर घर में या विद्यालय में देखकर शब्दकोश के प्रति रुचि जाग्रत हो आई हो और उसका इस्तेमाल करना शुरू कर दिया हो।

उपर्युक्त सुरागों को आधार बनाकर तरह-तरह की विधियों के माध्यम से जिनमें अवलोकन सर्वोपरि है, बच्चों के पढ़ने की प्रगति से जुड़ी सूचनाएँ और प्रमाण संग्रहित किए जा सकते हैं। ध्यान यह रखना है कि इन सूचनाओं के आधार पर हम प्रत्येक बच्चे की प्रगति की तुलना उसकी अपनी पिछली स्थिति से करेंगे, दूसरे बच्चों की प्रगति से नहीं। इनका इस्तेमाल बच्चों के अधिगम और निष्पादन को उन्नत करने के लिए करेंगे न कि निर्णयात्मक टिप्पणी देने के लिए कि अमुक बच्ची पढ़ने में तेज़ है और अमुक कमज़ोर या असफल। ये सूचनाएँ हमें अपनी शिक्षण विधियों, सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को उन्नत करने में भी मददगार होंगी। इन सूचनाओं को दूसरे साथी शिक्षकों तथा अभिभावकों से साँझा करना भी जरूरी होगा। आकलन संबंधी पृष्ठपोषण बच्चों को भी देना बहुत जरूरी है। बच्चों को यह आभास होता रहे कि अधिगम प्रक्रिया के कौन-से हिस्से पर वे अभी हैं और किन क्षेत्रों में अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है।

पढ़ने की उत्सुकता

‘पढ़ने’ का आकलन करने से जुड़े बहुत से मुद्दों की बात की गई। चलते-चलते एक और बात। वह यह कि पठन कौशल को अगर वास्तव में ‘निपुणता’ के स्तर पर लाना है तो पढ़ने का माहौल तो बनाना ही होगा। कक्षा में, कक्षा के बाहर, यहाँ तक कि अभिभावकों से संवाद स्थापित कर उनके घर में भी अपेक्षित माहौल बनाया जा सकता है। यह माहौल बनेगा रुचिकर पठन सामग्री की उपलब्धता से। आपने जरूर गौर किया होगा कि उन बच्चों पर जिन्होंने अभी-अभी पढ़ना सीखा है, कोई भी कागज़ उनके हाथ लगता है जिस पर कुछ लिखा या छपा हो चाहे वह कोई लिफाफा हो या चने-मूँगफली को लपेटे कोई पुराना सा कागज़, वे उसे उलट-पुलट कर पढ़ते ज़रूर हैं। सड़कों के किनारे लगे इशतहार पर भी उनकी नज़रें घूमती रहती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वे पढ़ने के लिए उत्सुक हैं। इस उत्सुकता को बरकरार रखना या खत्म कर देना, दोनों बहुत कुछ हमारे हाथ में है।

अभ्यास

- इस लेख में ‘चित्र पठन’ पर जिस तरह से काम हुआ है, ऐसा ही काम आप कहानी या कविता के साथ करें और अपने अनुभवों को लिखें।



अब लिखना किस चिड़िया का नाम है?

अध्याय : 18. लिखना—क्या और कैसे? : उभरता हुआ कौशल है छात्रों की आँखों से लेखन के अंग सामाजिक प्रभाव — बेहतर लेखन के लिए।

अध्याय : 19. लिखना सिखाने के उभरते आयाम : लेखन क्या है? लेखन कौशल क्या है? लेखन सिखाया जा सकता है? समस्याएँ, लिखना सिखाने के अलग-अलग तरीके, लिखना सिखाने के नमूने।

अध्याय : 20. लेखन के विविध प्रकार : लिखने की अलग-अलग किस्में, इनमें फर्क कहाँ-कहाँ है? विभिन्न प्रकारों को सिखाने के अभ्यास।

अध्याय : 21. लिखना — बातचीत : लिखना एक तरह की बातचीत, लिखने की शुरुआत शुरुआत, के बाद का कदम टीचर की प्रतिक्रिया कुछ गतिविधियाँ।

अगर बोलने से बात हो जाती है तो लिखने की जरूरत क्या है? हज़ारों सालों से वेद लिखे नहीं गए, सिर्फ याद करके गाए गए। इनको लिखने की जरूरत क्यों नहीं समझ गया? ऐसा नहीं है कि भारत में लिखने की कला ही नहीं थी, या फिर लिखने के साधन नहीं थे।

वेदों की बात फिलहाल छोड़कर, ज़रा देखते हैं कि हमारे इतिहास में लिखना क्यों शुरू किया गया। सबसे पुराने लिखने के निशान पाए जाते हैं, हड़प्पा सभ्यता के खंडहरों में। उसके बाद के काल में फिर आते हैं सम्राट अशोक के शिलालेख। इन सब में क्या लिखा गया है?

हड़प्पा की भाषा तो अब तक नहीं पहचानी गई है, लेकिन वहाँ की लिखाई जिस-जिस चीज़ों पर की गई है उनसे यह बात साफ है कि लिखाई का इस्तेमाल खासकर व्यापार के लिए किया जाता था। जैसे इस बोरे/कलश में कितना सामान रखा है? जैसे पिछले महीने कितने बोरे या डब्बे माल भेजा गया या मिला? जैसे लेन-देन का हिसाब क्या है? साफ है, व्यापार में बोलना काफी नहीं जिससे बात करनी है वह कोसों दूर है। या फिर, जो बात है उसका परमानेंट सुबूत रखना है ताकि बाद में कोई मुकर न जाए। अब कुछ कुछ समझ आती है लिखने की जरूरत।

आगे देखें। सम्राट अशोक ने अपने शिलालेख कहाँ-कहाँ लगवाए थे? अपने साम्राज्य की सरहदों पर, ताकि बाहर से आने वाला हर इंसान इनको पढ़े। शिलालेख अन्दरूनी विशाल साम्राज्य के खास खास चौरास्तों, शहरों, और तीर्थों में भी लगवाये गये थे। खैर, इन शिलालेखों पर सम्राट ने लिखा क्या था? क्या वे साम्राज्य के नियम-कानून थे? जैसे क्या-क्या शिकार करना जायज़ या नाजायज़ है, जैसे क्या-क्या करना अपराध है, अलग-अलग जुर्मों की सज़ा क्या है, टैक्स कितना देना है, और किसको देना है, विदेशियों से कैसे बर्ताव करना है, वगैरह।

जाहिर है : चूँकि इंसान का सामाजिक फैलाव जब बड़ा हो जाता है और दूर-दूर तक फैल जाता है, तब समाज को ठीक से बाँधे रखने के लिए लिखाई की जरूरत पड़ती है।

इन सब से बाद में उपजती है लिखने की अन्य जरूरतें — कथा-कहानी, पत्र, विज्ञान, इतिहास, आदि।

सुनने की दूसरी ओर है बोलना। और पढ़ने की दूसरी ओर है लिखना। पूरी इमारत कुछ ऐसी है:

सुनना	बोलना
पढ़ना	लिखना

लिखना कैसे सिखाया जाए, सिखाने में क्या दिक्कतें आती हैं, उनको कैसे आसान किया जाए, लिखने का कौशल कैसे बेहतर बनाया जाए, लिखने की शुरुआत के बाद का क्या काम होगा? शिक्षक की प्रतिक्रियाएँ क्या व कैसी हो? आदि पर हम इस इकाई में पढ़कर देखेंगे।

अध्याय – 18

लिखना – क्या और कैसे?

परिचय :

लिखने की कला भी शिक्षण का एक प्रमुख अंग है। इस लेख में लिखने की कला कैसे विकसित होती है? उसमें ऐसे कौन से ज्ञानवर्धक और सामाजिक रचनात्मक तरीके हैं? अभ्यास कैसे हो? आदि पर बातचीत की गई है। लिखने वालों के लिए मौके ऐसे हो जहाँ वे अपने विचार दूसरों तक पहुँचा पाने व दूसरे के विचार समझ पाने की व्यापक संदर्भों व अनुभवों के साथ विभिन्न प्रकार की किताबों से जुड़ पाने की एक सार्थक कोशिश कर सके। लिखने की गलतियाँ भी बच्चों के सीखने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। इनको नजर अन्दाज करना लिखने के कौशल की वृद्धि करता है। साथ ही लेखन के पूर्व की प्रक्रिया क्या होनी चाहिए इस पर भी बात करेंगे।

उद्देश्य :

- यह समझ पाएँगे कि लिखना सिखाने में सामाजिक, रचनात्मक तरीकों का क्या मतलब है।
- यह समझ पाएँगे कि लिखना सिखाने के बेहतर तरीके क्या हो सकते हैं।

विकासशील बदलाव :

बच्चों में लिखने की क्षमता दो से तीन वर्ष की उम्र में घसीटों (आड़ी तिरछी रेखाएँ) द्वारा आरम्भ होती है।

बचपन में motor skills अच्छी तरह विकसित हो जाती है और वे अपना नाम अथवा अक्षरों को छाप सकते हैं। अमरीका में अधिकतर चार वर्ष के बच्चे अपना पहला नाम लिख सकते हैं। पाँच वर्ष के बच्चे अक्षरों और छोटे शब्दों का भी पुनर्निर्माण कर सकते हैं। जैसे-जैसे वे अपने लिखने की कला विकसित करते हैं, वैसे ही वे यह पहचानना भी सीख जाते हैं कि अलग-अलग अक्षर किस प्रकार बनते हैं एवं इसके विशेष गुण जानने लगते हैं। जैसे विभिन्न अक्षरों में रेखाएँ किस प्रकार से बनती है, अगर घुमावदार है तो कैसी है, बन्द है या खुले आकार की है इत्यादि। प्रारम्भिक कक्षाओं में कई बच्चे b और d तथा p और q में गड़बड़ी करते हैं (टेम्पल और अन्य, 1993) परन्तु विकास के इस पायदान पर अगर उनका अन्य आयामों में विकास सही चल रहा हो तो इस तरह की अक्षरों की गड़बड़ियाँ उनकी समझ शक्ति का आकलन करने की भविष्यवाणी नहीं मानी जा सकती।

जब बच्चे लिखना शुरू करते हैं तो कई बार वे अपने खुद के हिज्जे (Spellings) बनाते हैं, वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे शब्दों के उच्चारण को उसके बनावट का आधार मानते हैं।

शिक्षकों और अभिभावकों को चाहिए कि वे इनके लिखने की आदत को प्रोत्साहन दें बिना इस बात की ज्यादा चिंता करे कि उनकी अक्षरों की बनावट या उनके शब्दों को लिखने में अशुद्धियाँ हो रही है। इसी संदर्भ में मैंने (आपका लेखक) अपनी सबसे छोटी बेटी जेनिफर की पहली कक्षा की शिक्षिका से चर्चा की क्योंकि उन्होंने उसके गृहकार्य के लिखे हुए कई कागज़ लौटा दिए तथा उन पर उन्होंने उसकी गलती पर कई टिप्पणियाँ और रोते हुए चेहरे बना दिए थे। मैंने उन्हें समझाया कि ऐसा करना उसके (जेनिफर) लिए लाभदायक नहीं रहेगा। भाग्यवश शिक्षिका ने इस तरह की टिप्पणियाँ देना बन्द किया।

अभ्यास

- बच्चों के शुरुआती लेखन के बारे में क्या कहा गया है?

गलतियाँ

इस तरह लिखने की गलतियाँ बच्चों के सीखने का एक प्राकृतिक हिस्सा माना गया है और हर पल उस पर सूक्ष्म निरीक्षण कर लताड़ना नहीं चाहिए। हिज्जे और लिखने की गलतियों को सुधारने के लिए कई सकारात्मक और न्यायसंगत तरीके हैं जो लिखने की स्वच्छन्दता और आनन्द रोके बिना अपनाये जा सकते हैं, जिससे लिखने की कला उत्साहहीन न बने (ह्यूले और स्लॉक, 2001)। जैसे अच्छा पाठक बनने के लिए बहुत अभ्यास की आवश्यकता होती है वैसे ही अच्छा लेखक बनने के लिए भी उसी प्रकार कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है (ब्रूनीज और होर्न 2001, स्पन्दन 2005)। बच्चों के प्राथमिक और सेकेण्डरी स्तर पर लिखने के बहुत से अवसर देने की आवश्यकता है। जैसे-जैसे उनकी भाषा तथा ज्ञान (cognitive) बोध सही मार्गदर्शन से बढ़ेगा है वैसे-वैसे उनकी लिखने की कुशलता भी बढ़ेगी।

उदाहरण के तौर पर सही वाक्य रचना तथा व्याकरण की उच्च स्तरीय समझ असरदार और उम्दा लेखन के लिए आधार बनती है।

उसी तरह से तार्किक सोच का निर्माण करने जैसी ज्ञानवर्धक कलाएँ भी इसमें मददगार होती हैं। बच्चे अपने प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय में विचारों के संगठन के कई अच्छे तरीके सीखते हैं। प्राथमिक स्तर में वे कई छोटी कविताओं का उच्चारण समझाने और लिखने का काम करते हैं। प्राथमिक से माध्यमिक स्तर में वे किताबों के बारे में वृत्तान्त उपस्थित करना—जिसमें वर्णन के साथ निक्षेप तथा विश्लेषण का समावेश होता है— तथा उच्च माध्यमिक स्तर में वे विवरण के और अच्छे तरीकों का उपयोग करना सीखते हैं जो केवल वर्णन को आधार नहीं बनाते।

और मुझे लिखना बहुत अच्छा लगने लगा है पर कभी-कभी मेरे बुरे हिज्जों पर मुझे गुस्सा आता है। मुझे एक चीज़ मेरे लिखने के बारे में अच्छी लगती है कि मैं हमेशा एक उत्साह से लिखती हूँ इसलिए उनमें खूब चंचलता होती है। मुझे लगता है कि अगर मैं अपना लेख बिना सही कराए पढ़ने दूँ तो कोई पढ़ ही नहीं पाएँगा। और अगर सही करके पढ़ने दिया जाए तो पढ़ने में मेरी कहानी अच्छी लगेगी।

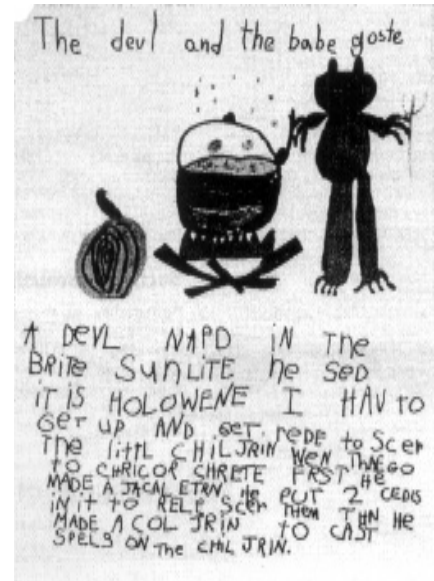
— जेनिफर

The Devil and the Babe Goste

वह छह साल की है और वह दो साल से कहानियाँ लिख रही है। उसकी कहानियों में कविताई की छटाएँ, उच्च स्तर की वाक्य रचनाएँ, और शब्दावली का समावेश होता है जो एक अच्छे भाषा वृद्धि का आभास देते हैं।

छात्रों की आँखों से – (स्वमूल्यांकन लिखना)

सैन फ्रान्सिस्को की पाँचवीं कक्षा की शिक्षिका केरेन एब्रा समय-समय पर अपने छात्रों को अपने लिखने के संगठन में अपना



खुद का मूल्यांकन खुद करने को कहती है। साल के अन्त में कुछ बच्चों ने जो समालोचना की वह नीचे दी गई है —

मैं पाँचवी कक्षा में हूँ और मुझे लिखना बहुत अच्छा लगता है। जब भी मौका मिले मैं लिखूँगी और जहाँ तक मुझे याद है मुझे लिखना बहुत पसंद है। मुझे लगता है कि मेरे लिखने में वृद्धि हुई है चौथी कक्षा से और मैं अपने लेखन से बहुत खुश हूँ। कुछ लेखकों को अपना लेख अच्छा नहीं लगता होगा पर मुझे नहीं, मैंने अपना कोई भी लेख आज तक फेंका नहीं है। मुझे अपना लिखा लेख दूसरे लेखकों को दिखाना तथा उनको नए सुझाव देना या उनसे सुझाव लेना अच्छा लगता है। अगर मुझे अपने खुद की लिखाई पर कहना हो तो मैं कहूँगी कि मेरा लिखना विस्तृत, कल्पनापूर्वक और और लुभावना होता है (मैं अपनी बड़ाई खुद नहीं कर रही)।

— मिशेल

मुझे लगता है कि कहानी लिखना बहुत आसान है क्योंकि इतना कुछ लिखने के लिए है और अगर मुझे किसी एक चीज़ के बारे में लिखना हो तो भी बहुत कुछ किया जा सकता है। कोई अगर मेरा लेख पढ़े तो वे अनुमान लगाएँगे कि मैं बहुत खुश और स्फूर्त हूँ। उन्हें ऐसा लगेगा क्योंकि मेरा लेख हमेशा उत्साहित करता है।

— सारा

जब भी मैं लिखती हूँ, मुझे लगता है कि मैं और अच्छा कर सकती हूँ। खास तौर पर मेरे हिज्जों में। जब मैं किन्डर गार्डन में थी तब हम बहुत लिखते नहीं थे। तीसरी कक्षा में तो मुझे लिखना अच्छा भी नहीं लगता था। लिखने के बारे में नई चीज़ें सीखने में मुझे डर लगता था। अब मैं पाँचवी कक्षा में हूँ।

ज्ञान बोध के तरीके

ज्ञान बोध के तरीकों में लेखन में भी उन्हीं बातों पर चर्चा करते हैं जो पढ़ने के साथ जुड़े हुए हैं, जैसे शब्दार्थ जानकर विस्तार करने की व्यूह रचना करना। (Kellogg 2000, D Olson 2001) योजना बनाना, प्रश्नों को सुलझाना (सवाल का हल निकालना), पुनर्निरीक्षण करना और Meta-cognitive व्यूहरचना बनाना छात्रों के लिखने में अत्यन्त महत्त्व के तरीके पाए गए हैं।

योजना बनाने के अन्तर्गत

योजना बनाना — इनमें समावेश होता है, रूपरेखा बनाना और विषयवस्तु की सही ढंग से जानकारी प्राप्त कर संगठित करना। यह लेखन लिखने का बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है। (Levy & Randsel 1996, Mayer 2004)

छात्रों को यह मार्गदर्शन देना जरूरी है कि कैसे लेख की रूपरेखा बनाई जाए और उसे कैसे संगठित किया जाए। तथा उनके लेख की गुणवत्ता की जानकारी भी इन्हें देना जरूरी है (Houston, 2004)। एक अध्ययन में यह पता चला कि लिखने से पहले की गतिविधियों का लिखने पर क्या असर होता है। (Kallogg, 1994) जैसे — आकृति 1 से स्पष्ट है कि रूपरेखा बनाने से सबसे अधिक प्रभाव लेखन पर होता है। आकृति 2 दर्शाती है कि शिक्षक छात्रों की लेखन की योजना बनाने में कैसे मददगार साबित हो सकते हैं? जब कि उन्हें एक सीमा रेखा तय करनी है।

समस्या को सुलझाना

जो निर्देश विद्यालयों में लिखना सिखाने के लिए दिए जाते हैं वे उन्हें सही वाक्य निर्माण तथा परिच्छेद

लिखने में मदद करते हैं। परन्तु लेखन कोई माँग करने वाले वाक्यों को लिखना या इस बात पर ध्यान देना कि परिच्छेद विषय से जुड़ा हुआ है या नहीं? माँग यही नहीं है। (Mayer 1999) अधिक मूल रूप से लिखना एक विस्तृत प्रश्न या समस्या को सुलझाना माना गया है। एक मानस शास्त्री ने लिखने में प्रश्न सुलझाने की प्रक्रिया को 'शब्दार्थ बनाना' बताया है (Kellogg, 1994)।

प्रश्नों को सुलझाने वालों के रूप में लेखकों को एक लक्ष्य रखकर उस तक पहुँचने के लिए सतत कार्य करना पड़ता है। यह सोचा जा सकता है कि जब एक लेखक पर दबाव रहता है तो वह उस विषय के बारे में पूर्ण ज्ञान रखता है तथा यह ज्ञात भी रखे कि भाषा कैसे काम आती है? तथा लेखन में आने वाली समस्याओं के बारे में विचार करे। लिखने के प्रश्न में समावेश होता है कि यह लेख क्यों लिखा जा रहा है? उसे सुनने या पढ़ने वाले कौन है? और लेखक की इस लेख बनाने में भूमिका क्या है? (Flower and Hayes, 1981)।

पुनर्निरीक्षण

पुनर्निरीक्षण अच्छे लेखन का एक महत्वपूर्ण अंग है। (Mayer, 1999) पुनर्निरीक्षण का मतलब होता है कि लेख के दो या तीन पुर्जे बने, उस पर लेखन में जानकार लोगों की प्रतिक्रियाएँ मिले और फिर इस समालोचना से भरी प्रतिक्रिया का उपयोग अपने लेख के सुधार के लिए करें। इसको गलतियों को पहचानने और उनका सुधार करने को एक जरूरी हिस्सा माना गया है। अनुसंधान करने वालों ने पाया है कि वयस्क और ज्यादा कुशल लेखक अपने लेखों का पुनर्निरीक्षण छोटी उम्र से और कम कुशल लेखकों से ज्यादा करते हैं। (Bailett, 19, Hayes and Flower 1986)।

लेखन पूर्व की प्रक्रिया

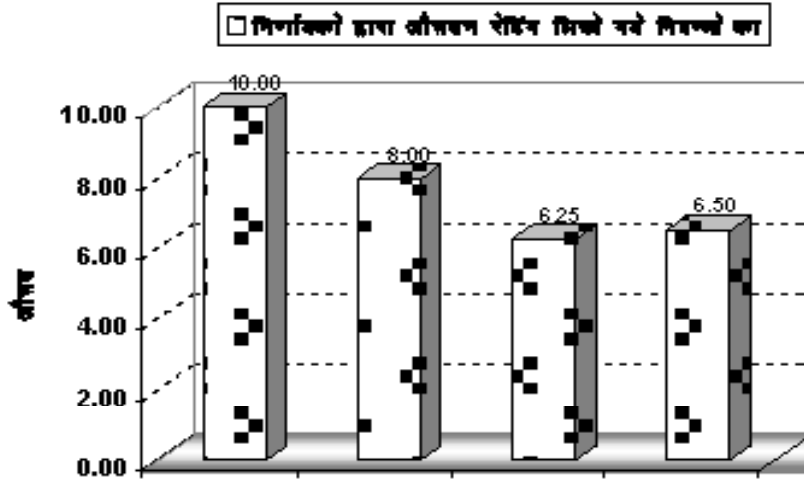
लेखन पूर्व की प्रक्रिया और लेख की गुणवत्ता से संबंधित, एक अभ्यास किया गया जिसमें कुछ कॉलेज के छात्रों के चार समूह बनाए गए और उन्हें इस प्रकार की प्रक्रिया सौंपी –

- (1) पहले समूह को जिस बारे में लिखना था, उससे संबंधित विचारों को क्रमबद्ध करना तथा उसकी रूपरेखा बनानी थी।
- (2) दूसरे समूह को उससे संबंधित जो अनुरूप विचार है उनकी एक सूची बनाना।
- (3) तीसरे समूह को केवल इससे संबंधित विचार एकत्रित करते थे बगैर किसी मूल्यांकन या क्रम के।
- (4) चौथे समूह को लेखन पूर्व की कोई भी गतिविधि नहीं दी गई।

फिर उनके लिखे लेखों का आकलन किया गया जिसमें 1 (सबसे निचला स्तर) से 10 तक (सबसे उत्कृष्ट स्तर) (केल्लोग, 1994) के अंक दिए जाने का निर्णय लिया।

निर्णायकों के दिए गए अंकों से यह निष्कर्ष निकला कि जिनको रूपरेखा बनाकर विचारों को संगठित करने को दिया गया था, उनके लेख सबसे अच्छे रहे। इससे यह सिद्ध होता है कि जब छात्रों को अपने लिखने से पूर्व एक रूपरेखा बनाने को कहा जाए। तो वे उसे बनाने के लिए एक सूचीबद्ध और रचनात्मक तरीका अपनाते हैं।

इसलिए लिखने से पहले रूपरेखा बनवा लेना एक अच्छी गतिविधि मानी गई है।



आकृति 1. रूपरेखा बनाना सूची बनाना विचार निर्माण कुछ भी नहीं

मेटाकोग्निशन (ज्ञान बोध की विधि अथवा प्रक्रिया)

जब हम लेखन बोध की व्यूह रचना पर प्रकाश डालते हैं तो हम मेटाकोग्निशन के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। एक अध्ययन में दस से चौदह साल के बच्चों को ऐसा कुछ लिखने को कहा गया जो उनकी उम्र के बच्चों को अच्छा लगे। (Scardam, 1981)। इसे पूरा करने में अवरोध यह रहा कि वे योजना नहीं बना पाए, उनके विचारों को कहीं नहीं लिख पाए और न ही उन्होंने कार्य किस तरह से हो रहा है उसकी सही जानकारी रखी – फलस्वरूप उनको अपने लेखों को दुबारा पढ़कर सुधार कर सकते ऐसा मौका नहीं उपलब्ध हो पाया। इन बातों से यह निष्कर्ष निकला कि ज्यादातर माध्यमिक स्तर के बच्चों में योजना बनाना तथा ज्ञान संगठित करने का कौशल कम होता है जो एक अच्छे लेखक बनने में काम आते हैं और ये कौशल उन्हें सिखाए जाने चाहिए।

स्वयं के काम का निरीक्षण करना एक अच्छे लेखक के लिए अतिआवश्यक है (ग्रहाम और हेटिस, 2001) – इसमें सम्मिलित है कि वह उसे मिली प्रतिक्रियाओं को सकारात्मक रूप से देखें और अलग लेख लिखते समय जो सुधार बनाए उनको भी ध्यान में रखें ताकि उसका अगला लेख सही हो।

अभ्यास

- बेहतर ढंग से लिख पाएँ इसके लिए क्या प्रक्रिया बताई गई है?
- किसी भी एक विषय पर लिखने के लिए रूपरेखा बनाइए और विचारों को लिखिए—
(1) प्यारा दोस्त (2) मेरा प्रिय शिक्षक (3) अगर पाँच रुपए का नोट मिलता

सामाजिक रचनात्मक तरीके (Social Constructive Approaches)

जिस प्रकार सामाजिक रचनात्मक तरीके का प्रभाव पढ़ने में पाया गया है, उसी प्रकार लिखने की कला तभी बढ़ती है जब वह समाज एवं संस्कृति द्वारा निर्मित हो और अपने से उत्पन्न हुई हो न कि मनगढ़ंत हो।

पढ़ने के इस तरीके में शिक्षक की मुख्य भूमिका ज्ञान देना नहीं बल्कि बच्चों के अपने ज्ञान को सही दिशा देना है। इस सम्बन्ध में शिक्षक और छात्र दोनों ही ज्यादा विद्वान माने गए हैं।

यही सामाजिक रचनात्मक तरीका लिखने में भी अपनाया जा सकता है (Dauite 2001, Schultz and Fecho 2001)।

	विषय को चुनना
एक या दो महीने पूर्व की तैयारी	<ul style="list-style-type: none"> ● विचारों का खाका तैयार करना। ● लिखने के लिए एक योजना बनाना। ● एक पूर्व पक्ष के लिए कथन का निर्माण करना। ● अनुसंधान आरम्भ करना।
समय सीमा के दो हफ्ते पूर्व तक	<ul style="list-style-type: none"> ● अलग-अलग खाके बनाना। ● उत्साहपूर्वक पुनर्निरीक्षण करना। ● अनुसंधान पूरा करना। ● पूर्व पक्ष के कथन को अन्तिम रूप देना।
समय सीमा से एक हफ्ता पूर्व	<ul style="list-style-type: none"> ● अलग-अलग पेपर के हिस्सों को अन्तिम रूप देना। ● एक रोचक शीर्षक देना। ● उसकी सच्चाई को जाँचने के लिए उसके संदर्भ साहित्य को देखना। ● किसी से पढ़वाकर उनसे समालोचना करवाना।
समय सीमा से एक रात पूर्व	<ul style="list-style-type: none"> ● पेपर के अलग-अलग हिस्सों को जोड़ना। ● अन्तिम खाका तैयार करना। ● उसमें पाई गई त्रुटियाँ हटाना। ● पेपर को एक साथ प्रस्तुत करना।

आकृति 2. समयबद्ध समय विभाजन का नमूना।

लिखने का सामाजिक परिवेश

लेखन का सामाजिक रचनात्मक तरीका उस सामाजिक हिस्से पर अधिक ध्यान देता है जिस परिवेश में यह लेख लिखा गया है। यह महत्वपूर्ण है कि छात्र इस समाज के पाठक व लेखकों से मिले तथा जानकारी ले और पहचाने कि उनकी समझ किस प्रकार औरों की समझ से अलग हो सकती है (Hicbat 1996)।

इसका महत्व समझने के लिए दो उदाहरण प्रस्तुत है –

पहला – एन्थनी, एक नौ साल का बच्चा जो अपनी पूरी जिन्दगी न्यूयार्क के मेन्हेट्टन क्षेत्र में गुजार चुका है (McCarthy, 1994)। वह खूब पढ़ता और लिखता है, वह विज्ञान के समाचार पत्र रखता है और अनेक प्रतियोगिताओं में भाग ले चुका है, जिसमें लिखने पर जोर दिया गया था। उसे अपने विषय में बहुत रुचि है, क्योंकि वह अपनी दादी के बारे में लिख रहा है जिनकी हाल ही में मौत हुई है।

शिक्षिका उसे प्रोत्साहन देती है कि वह दादी के बारे में, किस वजह से उनकी मौत हुई उनके बारे में लिखे और उसे पेश करने के अलग-अलग तरीकों पर वे दोनों चर्चा करते हैं और उसे लिखने के सबसे अच्छे तरीके की एक योजना बनाते हैं।

उसका अन्तिम लेख उसकी दादी के जीवन और मरण का एक बहुत ही प्रभावपूर्ण लेख बनता है।

एन्थनी की शिक्षिका का मानना है कि लिखने की कला शिक्षण का एक महत्वपूर्ण अंग है और वह इसको बच्चों में उत्साहपूर्वक देने की कोशिश करती है। इसके विपरीत अनुभव है एक लेटिनों के छात्र कार्लोस का, जिसके अभिभावक हाल ही न्यूयार्क के ब्रॉक्स क्षेत्र में रहने आए हैं।

इसके बावजूद कि कार्लोस की अंग्रेजी में पकड़ अच्छी है, उसे अपनी कक्षा के बाहर के अपने अनुभवों के बारे में अपने आप लिखने का अनुभव बिलकुल नहीं है। छात्र—शिक्षक चर्चा से वह अपने भावों को व्यक्त करने में संकोच करता है। कार्लोस की शिक्षिका को जिले में विभिन्न विषयों पर लिखवा लेने का जिम्मा सौंपा गया। उसे ऐसा करने में उत्साह नहीं है और इसलिए वह कार्लोस का लेख सुधारने में बहुत कम समय दे पाती है।

जैसे इन दो छात्रों के अनुभवों से पाया गया कि सामाजिक परिवेश लिखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कुछ छात्र अपने परिपूर्ण वातावरण से अनेक अनुभवों का भण्डार लिये लिखने का सही मार्गदर्शन पाकर उसे प्रभावी ढंग से लिख पाते हैं, जबकि कुछ को कोई भी प्रोत्साहन और सही मार्गदर्शन नहीं मिलने से उनका लिखना उतना प्रभावी नहीं हो पाता।

कुछ कक्षाओं में लिखने की कला को अधिक महत्व मिलता है जबकि कुछ कक्षाओं में इन्हें इतना ज़रूरी नहीं माना जाता है।

अभ्यास

- सामाजिक परिवेश किस तरह लेखन को प्रभावित करता है।

प्रभावी लेख और छात्र—शिक्षक चर्चा

सामाजिक रचनात्मक तरीके के अनुसार छात्रों के लिखने में ऐसे विषयों को चुनना ज़रूरी है, जिनमें उनके आसपास के अनुभवों का समावेश होता हो।

उदाहरणार्थ— एन्थोनी की शिक्षिका ने उसे अपनी दादी के जीवन और मरण पर लिखने के लिए प्रेरित किया और इसे लिखने में उसकी मदद भी की। इसमें छात्र—शिक्षक चर्चा अच्छे लेखक बनने का एक असरदार माध्यम है।

सहकर्मियों से सहयोग (Peer collaboration)

समूह में काम करते समय लेखकों को कई अलग—अलग अनुभव होते हैं, जैसे पूछताछ करना, जानकारी या सत्यापन करना, किसी विषय का विस्तार करवाना जो अच्छे लेखक बनने में आवश्यक है (Webb & Palincsar)। जब एक से अधिक बच्चे मिलकर पेपर लिखते हैं तो वे अपने विभिन्न अनुभव एक—दूसरे के साथ बाँटकर अपने ज्ञान का विस्तार करते हैं। सही सहयोग से ही इस परिज्ञान का निर्माण होता है कि हमें क्या लिखना है? और कैसे लिखना है?



इसके विपरीत अगर लेख केवल अपने शिक्षक की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिखे गये हो तो वह तनावपूर्ण तथा अप्रभावी लेख होगा। जब छात्र आपस में मिलकर लिखते हैं तो शिक्षक की अपेक्षाओं की झलक उनमें कम होती है (Kearney, 1991)।

विद्यालय/परिवार/आपसी मित्रों से सम्बन्ध

एक प्रायोजन में शिक्षकों को प्रोत्साहित किया गया कि वे लेटिनो समाज की विविधता और अस्तित्व

को पहचाने और अपने विद्यालय के पाठ्यक्रम में उसका समावेश करे (Moll, Tapia & Whitmore, 1993)। इसके अन्तर्गत –

1. इसका विश्लेषण हो कि— ज्ञान अर्जन इन परिवारों में कैसे होता है।
2. विद्यालय समय के बाद एक प्रयोगशाला (लेबोरेट्री) जिसमें शिक्षक और छात्र उस भाषा का प्रयोग करते हैं जो उनके आसपास के समाज में अपनाई जाती हो और उसको लिखते भी हैं।
3. प्रयोगशाला में किए गए प्रयोगों को कक्षा के परिप्रेक्ष्य में कुछ गतिविधियों द्वारा लाना।

मुख्य लक्ष्य था इन तीन अंगों को किसी तरह से जोड़ना।

उदाहरण के लिए बच्चों ने समाज में लिखने के तौर तरीकों का उपयोग किया जैसे वे अन्य परिवारजनों से पत्र व्यवहार द्वारा कैसे सम्पर्क रखते हैं और अपने हिसाब-किताब कैसे रखते हैं। फिर आपस में मिलकर उन्होंने ऐसे विषयों पर प्रोजेक्ट बनाए जो उन समाज के लोगों की विशेषताएँ दिखाते हैं। जैसे यन्त्र विद्या में निपुणता या किसी चीज़ को ठीक करने में निपुणता, कागज़ों का रख-रखाव। इसके लिए उन्होंने लेटिनो समाज के लोगों के साक्षात्कार लिए और जो लोग यू.एस.ए. में दूसरी जगह जा बसे थे, उनसे भी ई-मेल द्वारा सम्पर्क साधा।

आप भी कक्षा के साथ लेखकों को मिलाओ, अपने आसपास समाज में जो भी अच्छे लेखक हो उन्हें अपनी कक्षा में आमन्त्रित करके उनके कार्य के विषय में बातचीत कर सकते हो। कई समाजों में ऐसे कुशल लेखक या सम्पादक या पत्रकार होते हैं। जोन लिपिब्ल (1984) ने यू.एस.ए. में चार में से एक सबसे सफल माध्यमिक पाठशाला को पहचाना जिसमें उन्होंने लेखक सप्ताह को अपने पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया हुआ था। छात्रों के अलग-अलग रुचि, प्राप्ति तथा विविधता के आधार पर लेखक उनकी कला के बारे में उनसे बात करते हैं। छात्रों को अलग-अलग लेखक के साथ अकेले काम करने का मौका मिलता है। पर इनसे मिलने से पहले उन्हें उस लेखक की लिखी हुई कम से कम एक पुस्तक पढ़ना जरूरी होता है। लेखकों को पूछने के लिए छात्रों को कुछ प्रश्नों की तैयारी करनी पड़ती है। कभी-कभी लेखक कक्षा में आकर कुछ दिनों तक उनके साथ काम करते हैं और उन्हें लिखने में मदद करते हैं। जैसे देखा गया है कि लिखने की कला कई तरीकों से विकसित होती है।

पढ़ने और लिखने के बारे में बात करते समय हमने कई विचार दिए हैं कि कक्षा में क्या किया जा सकता है।

अध्ययन की व्यूह रचना

लेखन को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के लिए अध्ययन की व्यूह रचना :

लिखने को पाठ्यक्रम में जोड़ने के आपको कई मौके मिलेंगे, यहाँ पर कुछ उदाहरण दिये हैं, (Bruning & Holn 2001, Halonen, 2002) मेरे पढ़ने और लिखने के अनुभवों का आकलन – स्वआकलन इसको न देखते हुए कि आप किस विषय या किस कक्षा को पढ़ा रहे हैं, आपका एक ध्येय यह होना चाहिए कि आपके छात्र न केवल कुशलता से पढ़ें या लिखें बल्कि उनमें उन्हें आनन्द भी प्राप्त हो। अपने खुद के लिखने या पढ़ने के अनुभवों के बारे में सोचिये।

1. पढ़ने में आनन्द आने का क्या कारण रहा?

2. ऐसा क्या हुआ कि पढ़ना आपके लिए मुश्किल या आनन्ददायी नहीं रहा?

3. अब आपके पढ़ने के बारे में क्या विचार है?

4. आपको पुस्तकालय अच्छा लगता है या नहीं?

5. क्या आपको लगता है कि आपके पढ़ने के कौशल को सुधारना जरूरी है?

6. आपको लिखने में रुचि कैसे उत्पन्न हुई?

7. ऐसा क्या हुआ कि आपको लिखना मुश्किल या मजेदार नहीं लगता?

8. अब आपका लिखने के बारे में क्या विचार है?

9. क्या ऐसा कुछ है जो आपके लिखने में सुधार कर सकते हैं?

अनुभवों के आधार पर आप अपने छात्रों के लिए पढ़ना और लिखना कैसे अधिक सफल तथा आनंद से पूर्ण बना सकते हैं?

बेहतर लिखने के लिए

1. लिखने के बारे में सकारात्मक विचार पैदा कीजिए – ऐसा करने के लिए छात्रों को कई मौके लिखने के देने चाहिए जिससे छात्रों को सफलता प्राप्त हो लिखने के कई विकल्प देना भी जरूरी है।

2. छात्रों को लिखने से बाँधे रखने के लिए, उनको लिखने के ऐसे मौके देने चाहिये जो उनके जीवन से जुड़े हुए हो। छात्रों को प्रोत्साहित कीजिए, लिखने के लिये उन विषयों पर जिनमें इनको अभिरुचि हो। उन्हें अलग-अलग लोगों के लिये लिखने पर विवश करना चाहिये जो दूसरे क्षेत्रों से जुड़े हो जैसे विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि।

3. लिखते वक्त उनके लिए एक आधार बने ऐसा माहौल बनाइए – इन्हें प्रोत्साहित कीजिए कि वे अपने लक्ष्य निर्धारित करें और फिर योजनाबद्ध उस तक पहुँचे तथा उनके वहाँ पहुँचने में जो मदद चाहिये वो प्रदान करें। उनके लक्ष्य बहुत मुश्किल भी न हो और बहुत आसान भी न हो। उन्हें लिखने के कुछ गुर बतायें और वे उन्हें कैसे काम में लेते हैं, उस पर निगरानी रखें। उन्हें उनकी प्रगति पर प्रतिक्रियाएँ भी दें। उन्हें साथ में काम करने के लिए प्रेरित करें।

4. सीखने के लिए छात्रों से लिखवा लें – यह आप किसी भी विषय में कर सकते हैं। उदाहरणतः जीव

विज्ञान में जब वे पढ़ते हैं कि कैसे अलग प्रजातियाँ अपने वातावरण से अनुकूलित होती हैं। उन्हें उसके बारे में संक्षेप में लिखने तथा अपने आप कुछ उदाहरण बताने को कहा जाए जो उन्होंने देखा हो।

5. स्वतंत्र रूप से लिखने के अवसर देना – स्वतंत्र प्रकार से उन्हें किसी भी विषय में लिखने की आज़ादी दें। ऐसे कार्यों का कोई आकार नहीं होता परन्तु उनकी समय सीमा होती है। उदाहरणतः एक कार्य अमेरिकन इतिहास में ऐसा हो सकता है कि 'अमेरिकन क्रान्ति के बारे में पाँच मिनट में कुछ लिखिए।' स्वतंत्र लेखन से उन्हें कई नए विचार मिलते हैं, नए संबंध और प्रश्न उत्पन्न होते हैं जो दूसरे तरीकों से नहीं हो पाते।
6. छात्रों को रचनात्मक लेखन कार्य दें – ऐसे कार्य उन्हें अपने जीवन और अपने आप के नये आयाम ढूँढ़ने में मददगार साबित होते हैं। इनको करने के लिए वे रचनात्मक और परिज्ञानात्मक तरीकों को अपनाते हैं। जिनमें समाविष्ट हो कविताएँ, लघु कहानियाँ या अपने खुद के अनुभवों पर लेख।
7. कुछ विधिवत लिखने के कार्य भी दें – इसके अन्तर्गत छात्रों को ऐसे मौके दें जिनमें वे अपने आपको एक लक्ष्य के साथ व्यक्त कर सकें, लिखने में सही तरीका हो तथा उनके लेख के तथ्यों का कोई ठोस आधार हो। ऐसे विधिवत लेख से उन्हें विधिवत तर्क-वितर्क करना आता है। उदाहरणतः उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों को ऐसे विषयों पर लिखने को दिया जा सकता है जैसे ग्लोबल वॉर्मिंग – भय उचित या बढ़ा-चढ़ा हुआ; 'एक निरीक्षण-फाल्कनर के लिखने के तरीके पर; या 'क्यों अधिकतर लोग पक्षपात करते हैं' ऐसे लेख छात्रों को विश्लेषण करना सिखाते हैं तथा उससे जुड़ी सामग्री का सही उपयोग और उससे जुड़े लेख या साहित्य भी बता सकते हैं।

छात्रों के साथ मिलकर उनको विषय पर किस प्रकार से लिखना है? कैसे योजना बनानी है? और समय का उपयोग कैसे करना है? ताकि ये अपना कार्य समय से पूरा कर सकें तथा उसका खाका बनाकर उसे दुबारा पढ़ें और उसकी हिज्जे और व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों को हटा सकें।

अभ्यास

- प्रभावी लेखन के लिए क्या-क्या सुझाव दिए गए हैं?
- लिखने के बारे में सामाजिक रचनात्मक तरीके के मूलभूत विचार क्या हैं?
- प्राथमिक व माध्यमिक कक्षाओं के बच्चों में लिखने के कौशल को विकसित करने हेतु क्या-क्या गतिविधियाँ करवायी जा सकती हैं? दो गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताइए?
- स्वतंत्र लेखन का क्या महत्त्व है?
- लिखने के दौरान समूह कार्य की क्या महत्ता है?
- अपने पुस्तकालय में उपलब्ध अच्छे लेखकों की पुस्तकें पढ़िए व बताइए उनके लेखन में आपको क्या अच्छा लगा?



लिखना सिखाने के उभरते आयाम

परिचय :

जब हम अपने विद्यालय के बीते हुए दिनों को देखते हैं, हम में से अधिकतर लोग सम्मिलित कक्षाओं की सुखद स्मृतियाँ नहीं रखते। हमने हमेशा उन्हें एक 'आवश्यक बुराई' समझा है या फिर एक ऐसा कार्य जिससे बचा नहीं जा सकता। जैसा कि Tricia Hedge कहती है, "अधिकतर विद्यार्थी व अध्यापक उदासपूर्वक यह स्वीकार करेंगे कि लेखन अवधि की प्रकृति कुछ ऐसी है कि वह दुख भरा, पेन्सिल चबाने वाला, पैर संचालन व पीड़ा का समय बन जाता है। अध्यापक की यादें भी लेखन को लुभावने रंगों में प्रस्तुत नहीं करती। अधिकतर सम्मिश्रण सबसे जूनियर अध्यापक द्वारा पढ़ाया जाता है और स्थायी रूप से सम्मिश्रण कार्य दिन की अंतिम अवधि में कराया जाता है जब बच्चे पूर्ण रूप से थक चुके होते हैं और घर वापस जाने को उतावले हो रहे होते हैं। सम्मिश्रण कक्षाओं को गद्य काव्य अथवा व्याकरण कक्षाओं परिवर्तित कर देने की रीति सी बन गई है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि यह महसूस किया जाता है कि "सम्मिश्रण सिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है" एक ओर तो लेखन कौशल को निष्कासित या अनदेखा कर दिया जाता है, दूसरी ओर यह जानकर विरोधाभास होता है कि परीक्षाओं में केवल दो से तीन घंटे तक निरन्तर लिख पाने के कौशल को जाँचा जाता है। आमतौर से यह माना जाता है कि लेखन को 'सिखाया' नहीं जाता बल्कि कुदरती पकड़ा (caught) जाता है। परन्तु यह लगता है कि ऐसा होता नहीं है क्योंकि अध्यापक सदैव सीखने वाले की निम्न स्तरीय क्षमता, विशेष रूप से लेखन कौशल से संबंधित क्षमता को लेकर शिकायत करते हैं।

इस प्रकार की स्थिति अनेक प्रश्न उठाती है, जिनका जल्द-से-जल्द उत्तर देना आवश्यक हो गया है। जैसे – लेखन की प्रकृति क्या है? भाषा पाठ्यचर्या में लेखन की, सुनने, पढ़ने व बोलने के कौशलों के संबंध में क्या भूमिका है? क्या लेखन सिखाया जा सकता है? क्या लेखन सिखाया जाना चाहिए? वह कौनसा सर्वश्रेष्ठ उपागम है, जिससे लेखन कौशल का विकास हो सकता है, इनमें से किसी भी प्रश्न के बिल्कुल सही उत्तर तक पहुँचना शायद संभव नहीं है, परन्तु हम यह आशा करते हैं कि इन उत्तरों को खोजने की प्रक्रिया में हम लेखन को बेहतर रूप से समझ पाएंगे।

उद्देश्य :

- यह समझ पायेंगे कि लिखना सिखाने का कोई आसान या अचूक तरीका नहीं है।
- यह समझ पायेंगे कि लिखना सिखाने के कारगर अभ्यास क्या-क्या हो सकते हैं।
- लिखना सिखाने की नई गतिविधियाँ बना पायेंगे।

लेखन की प्रकृति :

सिंगापोर की तृतीय वर्षीय डिग्री छात्रा ने लेखन को इस प्रकार व्याख्यित किया है :

"लेखन एक संरचनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें लेखक स्वयं को जान पाता है... यह अपने विचारों तक पहुँचने व उनके आविष्कार की प्रक्रिया है। लेखन, एक प्रकार से, अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है।" लेखन सीखने की प्रक्रिया जीवनपर्यन्त चलती रहती है। लेखन हमें हर्षोन्नाद एवं पीड़ा से भरे, दोनों ही प्रकार के क्षण प्रदान करता है। हम लेखन के प्रति एक प्रेम-घृणा का संबंध विकसित कर लेते हैं क्योंकि लेखन एक कष्टकर सुख है।

प्रायः यह गलत मान्यता प्रचलित है कि 'एक अच्छा वाचक, एक अच्छा लेखक भी होता है।' परन्तु यह आवश्यक नहीं क्योंकि बोलना व लिखना सम्प्रेषण की भिन्न विधियाँ हैं। लेखन बोली की नकल से कहीं बढ़कर है। बोली/भाषा प्राकृतिक एवं मूल प्रवृत्तिक होती है। प्रत्येक सामान्य व्यक्ति अपनी मातृभाषा बोलना सीखता है; परन्तु हर कोई अपनी मातृभाषा तक में, लिखने में निपुणता प्राप्त नहीं कर पाता। प्रायः लेखक के पास सम्प्रेषण के वे साधन नहीं होते जो एक वक्ता को प्राप्य होते हैं। हेरॉल्ड रोसेन के अनुसार – लेखक एक अकेला व्यक्ति है... लिखते समय उसका एक हाथ उसके पीछे रहता है, क्योंकि उससे शारीरिक हाव-भाव छीन लिए जाते हैं। उससे उसकी वाणी की तान भी छीन ली जाती है... उसे एकालाप करने पर मजबूर कर दिया जाता है, उसकी सहायता के लिए कोई नहीं होता जो निशब्दताओं को पूरित करे, जो उसके मुख में शब्द डाल दे या जो प्रोत्साहक आवाजें निकाले।

लेखन की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती हैं :

लेखन के पक्ष

- क्या
 - विषयवस्तु/प्रकार्य
- कैसे
 - संगठन
 - ताल
 - खाका
 - शैली

“अच्छे लेखक कौन से कौशल प्रदर्शित करते हैं?” इस प्रश्न का उत्तर देते वक्त, Tricia Hedge लेखन की 'कला' व लेखन के 'कौशल' (Craft) के बीच अंतर करती हैं जिसे नीचे विस्तार पूर्वक विवरण दिया गया है :

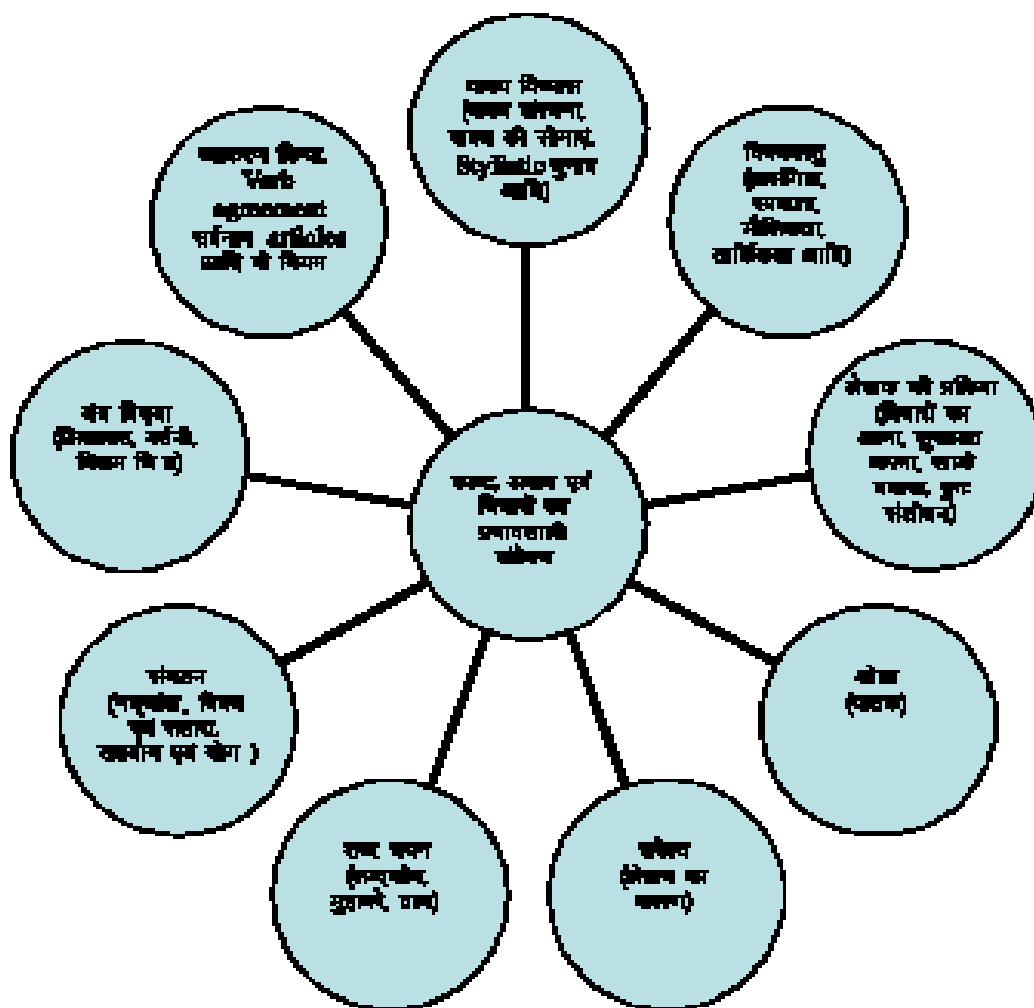
लेखन की कला : उत्पादन कौशल

1. कहने के लिए कुछ होना (उद्देश्य की समझ)
2. पाठक से परिचित होना (श्रोता की समझ)
3. प्रथम से अन्तिम खाका बनाने तक कार्यशील रहना (प्रक्रिया की समझ)
4. विचारों को विकसित करना (दिशा की समझ)

लेखन का कौशल

5. विषयवस्तु को स्पष्ट व तार्किक रूप से संगठित करना।
6. लेख को कुशलतापूर्वक हाथों से लिखना (लिखावट)
7. लेखन की परिपाटियों का प्रयोग करना, वर्तनी, खाका
8. व्याकरण का सही उपयोग
9. वाक्य संरचना का विकास करना
10. विचारों के बीच संबंध स्थापित करना।
11. बड़े हुए शब्दकोष का प्रयोग करना।

Ann Raimes लेखन के विभिन्न पक्षों को रेखाचित्र द्वारा प्रस्तुत करती है :



लेखन का उद्देश्य तीन प्रमुख चरणों से बना है जिन्हें इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :

लेखन की प्रक्रिया

पूर्व लेखन (योजना अवस्था)	लेखन और पुनर्लेखन (पहला खाका)	लेख का शोध करना (अन्तिम अवस्था)
------------------------------	----------------------------------	------------------------------------

पूर्व लेखन अथवा योजना अवस्था में, लेखक विषय को पहचानता है, विचारों को उत्पन्न करता है और उनका चयन व संगठन करता है इस प्रक्रिया के दौरान वह दो प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करता/करती है।

मैं यह क्यों लिख रही हूँ? मैं यह किसके लिए लिख रही हूँ? प्रश्नों के उत्तर से वह विषयवस्तु को संगठित कर, श्रोता व उद्देश्य की समझ प्राप्त कर पाती है।

लेखन व पहले खाके के पुनर्लेखन की दूसरी अवस्था बहुत जटिल होती है। यह प्रायः विघ्नपूर्ण होता है। लेखक रूकता है, उसने जो लिखा है उसे फिर पढ़कर देखता है, उसमें संशोधन करता है, नए विचारों को लाता है व उन्हें व्यवस्थित करता है पहले चरण का केन्द्र यह था कि लेखक क्या कहना चाहता है जबकि दूसरे चरण का केन्द्र यह बन जाता है कि उस बात को किस प्रकार प्रभावशाली रूप से कहा जा सकता है।

लेख के शोध के तीसरे चरण में, लेखक अपने लेख का पाठक के परिप्रेक्ष्य से मूल्यांकन करने का प्रयास करता है। वह अन्तिम व्यवस्था करता/करती है और वर्तनी, व्याकरण व punctuation आदि की शुद्धता का संशोधन करता/करती है।

अपनी प्रगति जाँचिए

1. अपने विद्यालय/कॉलेज के किन्हीं पाँच विद्यार्थियों अथवा अध्यापकों से बातचीत कर, उनके लेखन को सीखने/सिखाने की अवधारणा को समझिए?
2. लेखन को परिभाषित करने का प्रयास कीजिए (एक वाक्य में)। आप पुस्तकों से सूचना ले सकते हैं परन्तु नकल न कीजिए।
3. भाषण व लेखन के बीच क्या अन्तर है? सारणी बनाकर, इस अन्तर को स्पष्ट कीजिए।
4. अच्छे लेखक कौन से कौशल प्रदर्शित करते हैं? किसी विद्यार्थी के सम्मिश्रण का नमूना लेकर, उन कौशलों को पहचानने (identify) का प्रयास कीजिए, जिनमें उसने निपुणता प्राप्त नहीं की है।
5. अपने किसी सहकर्मी/मित्र की सम्मिश्रण कक्षा का अवलोकन करें और देखिए यदि सीखने वाले लेखन की तीन अवस्थाओं – पूर्व लेखन, लेखन व पुनर्लेखन व संशोधन, से गुजरते हैं? उनकी कक्षा पर एक संक्षिप्त रपट लिखिए (200 शब्दों में)।

क्या लेखन सिखाया जाना चाहिए?

भाषण व लेखन के बीच के अन्तर की चर्चा करते वक्त, Raines कहते हैं : “हम यह देख सकते हैं कि हमारे विद्यार्थी, लेखन को, English as a Second Language कक्षाओं के अन्य कौशलों की तरह स्वयं नहीं सीख पाते। हमें उन्हें लेखन सिखाना पड़ता है।” असल में, श्रवण भाषा (audio-lingualism) जिसका प्राथमिक केन्द्र भाषण था, के आगमन ने लेखन को पिछले स्थान पर पहुँचा दिया। एक सीखने वाला जो अपने लेखन कौशलों को विकसित करना चाहता है, उसे भी सुनने, बोलने व पढ़ने की परिश्रमपूर्ण प्रक्रियाओं से पहले गुजरना पड़ता है। हमारे संदर्भ में अधिकतर अध्यापकों का यह मानना है कि सम्मिश्रण सिखाने की कोई आवश्यकता नहीं। वे हर सप्ताह विद्यार्थियों से कुछ लिखवाते हैं और समझते हैं कि यही उनके लेखन कौशलों के विकास के लिए पर्याप्त है। परन्तु उचित प्रशिक्षण व मार्गदर्शन के अभाव में, विद्यार्थी अंधेरे में ही टटोलते रह जाते हैं और लेखन के कौशल में निपुणता प्राप्त करने में असफल रहते हैं। पर्याप्त मार्गदर्शन व टिप्पणी (feedback) के अभाव में, लेखन का गहन अभ्यास भी कोई उद्देश्य पूरा नहीं करता।

“क्या लेखन सिखाया जा सकता है?” हाँ, सिखाया जा सकता है, परन्तु “कैसे लिखना चाहिए?” इस पर व्याख्यानों की शृंखला द्वारा नहीं; परन्तु कक्षा में ‘लिखना सीखने’ के लिए, अनुकूल परिस्थितियाँ बनाने से।

अधिक महत्त्वपूर्ण व प्रासंगिक प्रश्न यह है कि “क्या लेखन सिखाया जाना चाहिए?” दूसरे शब्दों में, हम लिखना क्यों सिखाएँ? Raines, लिखना सिखाने के तीन प्रमुख उद्देश्य बताती/बताते हैं:

अ) लोग अक्सर, लेखन द्वारा, सम्प्रेषण करते हैं।

ब) लेखन, हमारे विद्यार्थियों की सीखने में दो प्रकार से सहायता करते हैं : वह, विद्यार्थी द्वारा, पहले से ही

सीखे हुए व्याकरणिक संरचनाएँ, शब्दकोष व मुहावरों को पुष्ट (reinforce) करता है। (It enables them to be adventurous with language of take risks).

स) लेखन, सीखने को पुष्ट बनाने में सहायक होता है : लेखन व सोच के बीच का निकट संबंध, इसे किसी भी भाषायी क्रियाविधि का मूल्यांकन भाग बना देता है।

लेखन सिखाने में आने वाली समस्याएँ

लेखन सिखाना बहुत अच्छा लग सकता है परन्तु हमारे संदर्भ में अध्यापक इसकी साध्यता/संभवता के विस्तार पर प्रश्न उठाते हैं। हमारे संदर्भ में अनेक समस्याएँ हैं जो लेखन सिखाने के विरुद्ध कार्य करती हैं। हम इन पर तीन परिप्रेक्ष्यों से नज़र डालते हैं :

सीखने वाले के परिप्रेक्ष्य से, अध्यापक के परिप्रेक्ष्य से, प्रबन्धकर्ता के परिप्रेक्ष्य से सीखने वाले अप्रेरित होते हैं, वे सम्मिश्रण कक्षाओं को अर्थहीन और अप्रासंगिक समझते हैं। उनके अनुसार ये कक्षाएँ उन्हें परिक्षाओं की तैयारी में किसी प्रकार की सहायता प्रदान नहीं करती। यदि उन्हें चुनाव का मौका मिले तो मैं अपने समय को अधिक 'उपयोगी' बनाते हुए सहायता-पुस्तकों में दिये गए सारांशों को रटने में प्रयोग करेंगे। वे लिखने में किसी प्रकार के रोमांच का अनुभव नहीं करते। उनके लिए अध्यापक ही एक मात्र उद्देश्यपरक पाठक (intended reader) है, जो पूरी स्वतंत्रता से सीखने वाले की त्रुटियों की रेखांकित करने में संपूर्ण सुख प्राप्त करते हैं। यदि लेखन विनोदहीन हो तो मूल्यांकित लेखों का वापस मिलना अत्यधिक निराशाजनक होता है और बच्चे खुचे उत्साह को भी दबा देता है।

अधिकतर अध्यापकों को लेखन द्वारा संप्रेषण का कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता : वे नवीन तकनीकों का प्रयोग करने में असुरक्षित महसूस करते हैं। इसके अलावा पाठ्यक्रम इतना भारी होता है कि वे उसे पूरा कराने की उत्सुकता में प्रायः सम्मिश्रण कक्षाओं को काव्य व गद्य कक्षाओं में परिवर्तन करने पर मजबूर हो जाते हैं। इन सभी समस्याओं को परे रखकर जो अध्यापक सम्मिश्रण सिखाना जारी रखते हैं उनके लिए भी लेखों का समय-समय पर मूल्यांकन करना कठिन हो जाता है। बहुत बड़ी कक्षाओं में, जहाँ लगभग 100 विद्यार्थियों की संख्या आती है, अध्यापकों के लिए न्यायपूर्वक मूल्यांकन करना असंभव हो जाता है। अतः वे बच्चों को न लिखवाने के आसान तरीके को अपनाने पर मजबूर हो जाते हैं।

ये समस्याएँ ऐसी नहीं हैं जिन पर विजय प्राप्त करना असंभव है। लेखन में वर्तमान शोध में सीखने वाले-केन्द्रित उपागमों का अन्वेषण किया है। अध्यापक-केन्द्रित कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है जिससे अध्यापक अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण अपना सके और यदि अध्यापक व बच्चे हाथ मिला ले तो वे बड़ी आसानी से प्रबंधकर्ता को विश्वास में ले सकते हैं।

लेखन सिखाने के विभिन्न रास्ते

पारंपरिक रास्ते

पिछले दशक में सम्मिश्रण सिखाने व विश्लेषण करने के संदर्भ में गंभीर शोध हुए हैं। उससे पहले अधिकतर अध्यापकों का यह मानना था कि लेखन को सिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है। असल में वे अध्यापक भी जिन्होंने लेखन सिखाने का प्रयास किया, उनका ध्यान मुख्यतः फारमेट व नियमों पर ही था। आज भी अधिकतर भारतीय स्कूलों में यह नज़रिया प्रचलित है। उदाहरण के लिए, यदि एक अध्यापिका पत्र लिखना सिखाती है तो वह विद्यार्थियों को पत्र के खाके के बारे में बताती है – पता कहां लिखना है, अभिवादन, समाप्ति आदि, परन्तु पत्र का प्रमुख भाग किस प्रकार लिखा जाए, इस पर बहुत कम मार्गदर्शन दिया जाता है। इसी प्रकार संक्षिप्त लेखन में, अध्यापक संक्षेप लिखने के नियमों पर व्याख्यान दे देते हैं।

पारंपरिक रास्ते के अन्तर्गत, सीखने वाले पत्र लेखन व संक्षिप्त लेखन के नियमों पर निपुणता प्राप्त करते हैं; परन्तु वे इस ज्ञान का स्वयं के पत्र व सारांश लेखन में प्रयोग रास्ते नहीं कर पाते। वह बहुत उलझन में पड़ जाती है जब उसे निम्न ग्रेड व लाल रंग से रेखांकित अपना सम्मिश्रण वापस मिलता है। वहीं दूसरी ओर, यह रास्ता अध्यापक से बहुत कम परिश्रम की मांग करता है। वह बिना किसी तैयारी के सम्मिश्रण कक्षाओं का प्रबंध कर सकती है। वह कक्षा में सामान्य रूप से चली जाती है और उसी वक्त बच्चों के लिए कोई अभ्यास कार्य तैयार कर लेती है ऐसी स्थिति में, बच्चे, जो कुछ उन्हें आता है या जो कुछ उन्हें नहीं भी आता, सब लिख डालते हैं, और इसी प्रकार निराशा और प्रेरणाहीनता का दुष्चक्र चलता ही रहता है।

नमूना-आधारित रास्ता (The Model Based Approach)

इस रास्ते के अन्तर्गत, बच्चों को एक नमूना लेख दिया जाता है। वे लेख के तत्त्वों का विश्लेषण करते और फिर एक समानान्तर गद्य लिखते हैं। कुछ सीखने वाले के लिए यह नमूना बहुत सहायक होता है। वे स्वयं से लिखना नहीं जानते और ये प्रतिरूप उन्हें बहुत सहारा प्रदान करते हैं। परन्तु कुछ अन्य बच्चे नमूने से प्रायः नाखुश रहते हैं, क्योंकि इसमें उन्हें अपनी मौलिकता व सृजनात्मकता के प्रदर्शन का अवसर नहीं मिलता। अतः नमूनों का उचित रूप से प्रयोग होना चाहिए। असल में, प्रतिरूपों को पहले प्रस्तुत किया जाता है और इस उपागम को इस प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है :

प्रतिरूप का अध्ययन – तत्त्वों का विश्लेषण – समरूप लेख की उत्पत्ति

हम इस आगम को, नीचे दी गई रीति को अपनाकर, अधिक चुनौती भरा बना सकते हैं :

कार्य	→	सीखने वाले को वो	→	प्रतिरूप	→	सीखने वाले	→	के संशोधन
स्पष्टीकरण		लिखने देना		का		लेख से		
		जो वे लिख		अध्ययन		तुलना करना		
		सकते हैं						

बच्चों के लिए लेखन में, उसके शुरुआती संघर्ष के पश्चात्, अपने लेखन के संदर्भ में ही प्रतिरूप का प्रस्तुतीकरण अत्यधिक अर्थपूर्ण व उपयोगी होता है।

प्रक्रिया आधारित उपागम (The process-oriented approach)

लेखन को प्रायः एक चिंतन प्रक्रिया माना जाता है। सम्मिश्रण लिखते वक्त, एक लेखक विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरता/गुजरती है : सोचना, विचारों का संगठन, संदर्भ का ध्यान रखना व पुनर्लेखन (redrafting), परन्तु जैसा कि प्रायः माना जाता है, यह एक सीधी रेखा में चलने वाली (Linear) प्रक्रिया नहीं है। यह एक श्रेणीबद्ध प्रक्रिया है जिसमें यह आवश्यक नहीं कि विभिन्न प्रक्रियाएँ क्रमानुसार चले क्योंकि लेखक आगे पीछे जाता रहता है। उदाहरणतः – पुनः खाका बनाने की प्रक्रिया में लेखक को कोई नया विचार आ सकता है। कुशल लेखकों के पास एक लचीली योजना होती है जिसमें लिखते वक्त परिवर्तन आता रहता है।

अन्तिम उत्पादन (Final Product) – “निबन्ध, लेख-तक पहुँचने के लिए कुशल लेखक विभिन्न प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हैं। वे योजना बनाते हैं, विचारों की उत्पत्ति करते हैं, खाके बनाते हैं, पढ़ते हैं, संशोधन व पुनर्लेखन करते हैं। हमारे बच्चे बेहतर लिखना सीख सकते हैं यदि हम इन विभिन्न प्रक्रियाएँ को समझते हुए उनका मार्गदर्शन करें। (प्रक्रिया उपागम एक अधिगमकर्ता-केन्द्रित उपागम है। यह लेखन उत्पादन का नहीं बल्कि लेखन प्रक्रिया का साया है।) इसमें शिक्षार्थियों की सक्रिय भागीदारी शामिल है और इस उपागम का केन्द्र यह नहीं है कि क्या लिखा जाए बल्कि यह है कि कैसे लिखा जाए।

चर्चा आधारित रास्ता (The interactive approach)

भाषा सिखाने का एक प्रमुख उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी में, सिखाई जाने वाली भाषा में संप्रेषण करने की क्षमता का विकास किया जाए और संप्रेषण के अन्तर्गत चर्चा शामिल है। जब तक अंतःक्रिया न हो, तब तक उचित संप्रेषण नहीं हो सकता। चर्चा को बढ़ावा देने के लिए, हमें यह निश्चित करना होगा कि विद्यार्थी सजीव रूप से ध्यान दें और उनकी सक्रिय भागीदारी हो। चर्चा की गतिविधियाँ युगल कार्य, सामूहिक कार्य आदि का रूप ले सकती है। हम ऐसी क्रियाओं का ढाँचा भी तैयार कर सकते हैं, जिसमें अधिगमकर्ता किसी लेख के साथ चर्चा कर स्वयं काम करें। पारंपरिक कक्षाओं में केवल एक प्रकार की चर्चा होती है— जहाँ अध्यापक पूरी कक्षा के साथ चर्चा करता है, जिसमें अध्यापक का अत्यधिक प्रभुत्व होता है, क्योंकि सीखने वालों से यह उम्मीद की जाती है कि वे तभी बोलें जब अध्यापक उन्हें बोलने को कहें। चर्चा की कार्यो से कक्षा में आरामदायक (relaxed) वातावरण बन जाता है और सीखने वाले अपने आपको अकेला व डरा हुआ महसूस नहीं करते। उन्हें सम्मिश्रण कक्षाओं में आनंद आने लगता है। वे एक दूसरे से सीखते हैं और वे बिना किसी रूकावट के काम करते हैं। अंतःक्रिया की प्रक्रिया में, वे संप्रेषण में अबाधता हासिल कर पाते हैं। उन्हें भाषा के विभिन्न कौशलों—सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने में अभ्यास मिलता है या फिर दूसरे शब्दों में वे सुनने—बोलने और पढ़ने से लिखना सीख जाते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें – 2

1. लेखन क्यों सिखाया जाना चाहिए?

2. आपके स्कूल के बच्चे लेखन में किन समस्याओं का सामना करते हैं?

3. आप सम्मिश्रण (Composition) कैसे सिखाते हैं? आपका तरीका किस प्रकार पारंपरिक उपागम के समान है? और किस प्रकार उससे भिन्न है?

4. किस प्रकार प्रक्रिया उपागम, प्रतिरूप केन्द्रित उपागम से अच्छा है?

चर्चा –आधारित लेखन (नमूने)

लिखना सिखाने के लिए कारगर अभ्यासों के नमूने (Sample Tasks for Teaching Writing Effectively)

इस इकाई से पहले यह सूचित किया जा चुका है कि लेखन सिखाया जा सकता है और सिखाया जाना चाहिए, हमने लेखन सिखाने के विभिन्न उपागमों पर भी दृष्टि डाली। इस भाग में हमने कक्षा में पढ़ाने के लिए कुछ व्यावहारिक मार्गदर्शन दिए हैं, किस प्रकार से अधिगमकर्ता के लेखन कौशल को विकसित करने में सहायता की जा सके। हम विभिन्न प्रकार के मार्गदर्शकों (guidance) का, जिन्हें विभिन्न स्तरों पर दिया जा सकता है, भाषायी, मनोवैज्ञानिक और संज्ञानात्मक उनका विश्लेषण करेंगे। भाषायी स्तर पर, यह आवश्यक है कि हम सीखने वालों की शब्दकोष वृद्धि में, व्याकरणिक सटीकता प्राप्त करने में व लेख निर्माण में संबंध बनाने में सहायता करें। मनोवैज्ञानिक स्तर पर, हमें सीखने वालों को श्रोता, उद्देश्य व निर्देश की समझ प्रदान कर प्रेरित करना चाहिए। संज्ञानात्मक स्तर पर हमें विचार, संकेत, रूपरेखा आदि का सहारा प्रदान कर सीखाने

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

वालों को सहायता देनी चाहिए। निम्नलिखित भाग में हम, उदाहरण सहित, कक्षा में लेखन सिखाने के कुछ आधारभूत मार्गदर्शकों पर चर्चा करेंगे।

पहला सिद्धान्त (The first Principle)

इसमें लिखने में मदद के लिए शुरुआती तस्वीर के लिए तालिका प्रक्रिया चिह्न आदि दिए जाते हैं। नीचे कुछ अलग-अलग स्तर के लिखने के कार्य दिए गए हैं जो सीखने वाले को एक विवरणात्मक पैराग्राफ लिखने के लिए तैयार करता है।

कार्य 1 (Task 1)

आगे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के आधार पर, डाकिए का एक विवरण दीजिए—

- (अ) डाकिया क्या पहनता है?
- (ब) वह पत्र कहाँ रखता है?
- (स) वह यात्रा कैसे करता है?
- (द) वह तुम्हें कैसे सूचित करता है कि तुम्हारे लिए पत्र आया है?
- (य) वह कौन-कौन सी विभिन्न वस्तुएँ लाता है।
- (र) डाकिए का कार्य आसान होता है या कठिन?

कार्य 2 (Task 2)

नीचे दिए गए चित्र को देखकर, चित्र में बने व्यक्ति का विस्तृत विवरण दीजिए। आप निम्नलिखित बातें सम्मिलित कर सकते हैं:

- (अ) कद
- (ब) रंग-ढंग (Complexion)
- (स) पहनावा
- (द) लक्षण (features)
- (य) मुख के भाव
- (र) कोई भी ऐसी चीज़ जो आपको strike करें

कार्य 3 (Task 3)

आपके दादाजी पिछले तीन दिनों से गुमशुदा है। इसके संदर्भ में टेलीविज़न के लिए अपने दादाजी का विस्तृत विवरण दीजिए। निम्नलिखित संकेतों का प्रयोग कीजिए:

नाम, आय, Physical appearance, पहचान चिह्न पहनावा, आदतें (Mannerism) आदि।

कार्य 4 (Task 4)

एक प्रसिद्ध व्यक्ति— जो राजनीति, खेल या अभिनय जगत से संबंध रखता हो, उसका विवरण दीजिए—

हम यह देख सकते हैं कि मार्गदर्शन या सहायता प्रदान करने के संदर्भ में ये चार कार्य श्रेणीबद्ध हैं। पहला कार्य सीखने वालों को बहुत अधिक मार्गदर्शन प्रदान करता है, जबकि अंतिम कार्य बहुत चुनौतीपूर्ण क्योंकि इनमें सीखने वालों को बहुत कम सहायता प्रदान की जा रही है।



अभ्यास

- आपकी लिखने की कक्षाओं में कौन-सी विभिन्न प्रकार की अंतक्रियाएँ होती हैं? प्रत्येक का एक उदाहरण दें।



अध्याय – 20

लेखन के विविध प्रकार

परिचय :

पिछली इकाई में हमने लेखन प्रक्रिया का सामान्य रूप से अध्ययन किया। अब हम लेखन के विशिष्ट रूपों का अध्ययन करेंगे, जिनकी जरूरत हमें स्कूल में पढ़ाते समय होती है। लेखन के संदर्भ में आज शोध काफी उन्नत है, आए दिन सम्मिश्रण पढ़ाने के नयी रुचिकर सामग्री प्रकाशित होती रहती है। उपयुक्त मार्गदर्शन के साथ इस सामग्री को आप कक्षा में प्रयोग कर सकते हैं। यह निश्चित है कि इनके माध्यम से कक्षाओं को जीवंत व उपयोगी बनाया जा सकता है।

उन दिनों जब मैं स्कूल में पढ़ती थी, सम्मिश्रण कक्षाएँ काफी भयावह (डरा देने वाली) होती थीं। वह सब कुछ जो हमें लिखने को कहा जाता था उनमें मुख्य था निबंध, सार, कविताओं की विस्तृत व्याख्या। यह स्वाभाविक था कि रोजमर्रा के जीवन में हम इनका उपयोग नहीं कर पाते। जो भी हमने कक्षा में सीखा, बाहरी जीवन में उसकी बहुत कम प्रासंगिकता है। और तो और हमारे अध्यापक इस कहावत में विश्वास रखते थे कि “जितना ज्यादा लिखोगे, उतना बेहतर तुम लिख पाओगे।” बहुत कम मार्गदर्शन दिया जाता था, दरअसल किसी ने भी सम्मिश्रणी को गंभीरता से नहीं लिया। “सम्मिश्रण सिखाने” के विचार पर अध्यापक हँसते थे। अन्ततः लिखना कैसे सिखाया जाए? क्या कोई लिखना स्वयं ही सीखता है? परन्तु वर्तमान समय में परिदृश्य (scenario) में बहुत परिवर्तन हुआ है। वर्तमान में ELT विशेषज्ञ मानते हैं कि लिखना सिखाया जा सकता है और लिखना सिखाया जाना चाहिए।

इस इकाई में, हम लेखन के गैर-पारम्परिक शैलियों (प्रकारों) पर चर्चा करेंगे – डायरियाँ, फार्म भरना, सूचना हस्तांतरण आदि के साथ-साथ पारम्परिक शैलियों (प्रकारों) जैसे गद्यांश, निबंध और पत्र आदि के बारे में भी चर्चा करेंगे। सर्वप्रथम हम लेखन के इन प्रकारों या शैलियों के मुख्य अभिलक्षणों की बात करेंगे फिर हम कार्यों के नए प्रकारों के प्रतिरूपों (Sample) को प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद में आप इसी प्रकार के (task) कार्यों की रचना स्वयं भी कर सकते हैं। इस इकाई के अंत में दी गयी संबंधित सामग्री का प्रयोग भी आप कर सकते हैं।

उद्देश्य :

- लिखने की अलग-अलग किस्में और इनमें फर्क कहाँ-कहाँ है को समझ पायेंगे।
- लिखना सिखाने के विभिन्न प्रकार के अभ्यासों को समझ पायेंगे।

लेखन के विभिन्न प्रकार

फार्म भरना

जीवन में विभिन्न अवसरों पर, हमें विभिन्न उद्देश्यों के लिए फार्म भरने की जरूरत पड़ती है। उदाहरण- प्रार्थना पत्र (Application form) फार्म, रेल में आरक्षण के लिए फार्म, मनीआर्डर फार्म, चेक आदि। बहुत से लोग फार्म भरते समय असहज महसूस करते हैं, और सदैव किसी न किसी की मदद की उन्हें जरूरत होती है। अधिकतर हमारा फार्म खारिज़ कर दिया जाता है, अगर वह उचित रूप से भरा नहीं होता। इसे एक मूलभूत लेखन के कौशल के रूप में देखा जाता है, जिसके अन्तर्गत शब्दकोश भी शामिल है और निपुणता भी जरूरी है।

आपको आश्चर्य होगा कि बच्चों को इस कौशल की स्कूल में आवश्यकता होती है। हाँ, उन्हें होती है। और यदि हम उन्हें कक्षा एक से ही प्रशिक्षित करें, तो वे बहुत ही आत्मविश्वास का अर्जन कर पाएँगे। अब हम कुछ सरल कार्यों (task) को देखेंगे जिसमें इस कौशल की जरूरत पड़ती है।

कार्य 1 : (Task 1)

यहाँ एक लेबल दिया गया है, जिसे आप अपनी इतिहास की कॉपी पर चिपकाना चाहते हैं इसे भरिए।

नाम :

कक्षा :

स्कूल :

विषय :

अब प्राइमरी स्कूल की एक छात्रा के लेबल पर नज़र डालिए।

नाम : सुप्रिया श्रीधर

कक्षा : तीसरी बी

स्कूल : शासकीय प्राथमिक शाला, कचना

विषय : इतिहास

सुप्रिया एक छोटी लड़की है। उसके पिताजी का नाम श्रीधर है वह 'बी' कक्षा में पढ़ती है। इतिहास उसके विषयों में से एक है।

अब अपने पड़ोसी की कॉपी के लेबल पर नज़र डालिए और उसके बारे में चार वाक्य लिखिए।

कार्य 2 : (Task 2)

राकेश सिन्हा 12 वर्ष का है। उसका जन्म 10 मई, 1983 को हुआ था। उसके पिता रमेश सिन्हा एक डॉक्टर हैं। वे मेघराज सेठी मार्ग, नं. 10, बम्बई में रहते हैं। राकेश आदर्श विद्याशरन में पढ़ता है। वह क्रिकेट व शतरंज खेलता है। चित्रकला और टिकट एकत्रित (Stamp collection) करने में उसकी रुचि है। राकेश लोकल चिल्ड्रन क्लब में शामिल होना चाहता है। क्या निम्नलिखित आवेदन पत्र को भरने में आप उसकी सहायता कर सकते हैं?

दि अन्धेरी चिल्ड्रन्स क्लब

1. नाम
2. उम्र
3. जन्मतिथि
4. पिता का नाम
5. पिता का व्यवसाय
6. घर का पता
7. स्कूल का नाम

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

8. खेल
9. रुचियाँ

कार्य 3 : (Task 3)

जॉन स्मिथ को उनके जन्मदिन पर निम्नलिखित तार मिला। इसके बारे में तीन वाक्य लिखें।

सेवा में,

जॉन स्मिथ

7, कस्तूरबा मार्ग,

नई दिल्ली – 110028

संदेश : जन्मदिन मुबारक

प्रेषक : अहमद खान

20, जवाहरलाल नेहरू रोड

मद्रास – 600017

1.2.2 सूचना हस्तांतरण

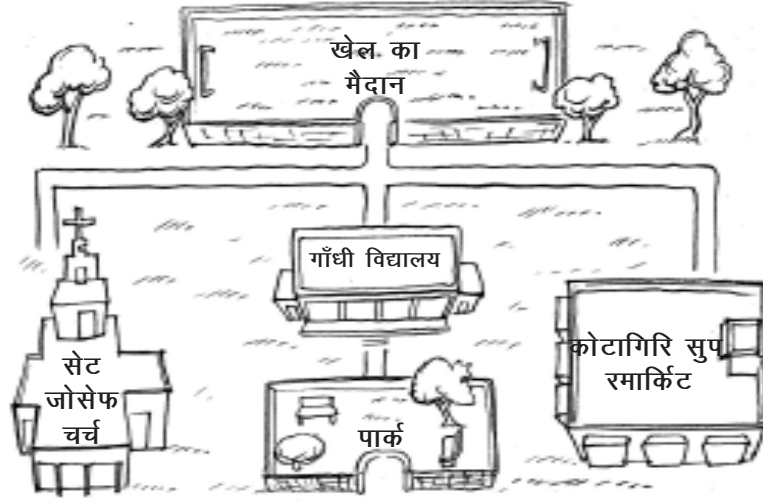
सूचना हस्तांतरण से आपका क्या अर्थ है? सामान्यतः इसका अर्थ है – सूचना का एक रूप से दूसरे रूप में हस्तांतरण उदाहरण के तौर पर ग्राफ के आधार पर गद्यांश लिखना या किसी दिए गए आँकड़ों के आधार पर तालिका या सारिणी बनाना। जीवन के हर स्तर पर हम इस कौशल का प्रयोग करते हैं। जहाँ गैर मौखिक सम्प्रेषण जैसे सारिणी या पार्ट का मौखिक सम्प्रेषण (गद्यांश या रिपोर्ट) में परिवर्तन होने से सम्मिश्रण कौशल विकसित होता है, वहीं इसकी विपरीत प्रक्रिया सीखने वाले की समझ के कौशल को विकसित करने में सहायता प्रदान करती है। यह एक महत्वपूर्ण अध्ययन कौशल है, जो बच्चों के विभिन्न विषयों जैसे मैथमैटिक्स (गणित), विज्ञान, इतिहास आदि के अध्ययन में उपयोगी सिद्ध होगा। दरअसल, फार्म भरना भी एक प्रकार का सूचना हस्तांतरण है।

कार्य 1 : (Task 1)

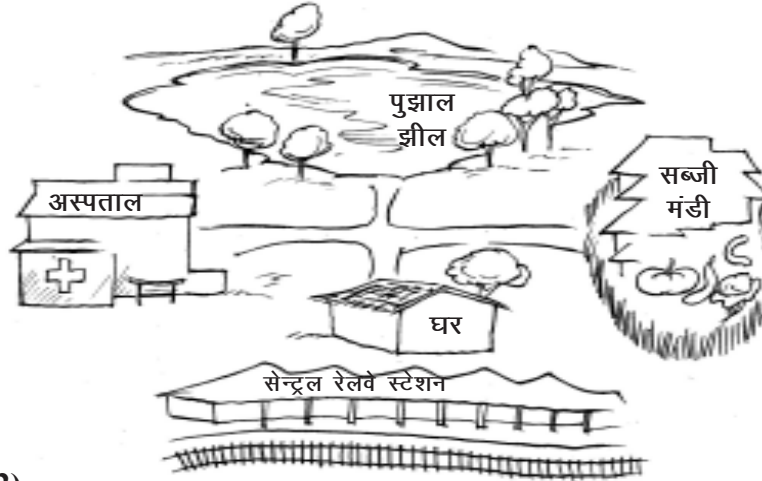
दीपिका के स्कूल का निम्नलिखित विवरण पढ़ें।

मैं गांधी विद्यालय में पढ़ती हूँ। मेरे स्कूल के सामने एक बहुत बड़ा पार्क है मेरे स्कूल के पीछे एक सामूहिक खेल का मैदान है मेरे स्कूल की बाईं तरफ प्रसिद्ध सुपरमार्केट कोटागिरि है, मेरे स्कूल की दाईं तरफ सेंट जोसफ चर्च है।

अब यहाँ स्कूल का रेखाचित्र दिया गया है।



अब, सुरेश चौधरी के घर के आसपास की व्यवस्था देखिए, और उस पर एक गद्यांश लिखिए।



कार्य 2 : (Task 2)

निम्नलिखित बॉक्स को देखिए और कॉफी बनाने के विधि का वर्णन कीजिए।

एक कप पानी को उबालिए	कॉफी मिलाइए	दूध मिलाइए	स्वादानुसार चीनी मिलाइए
-------------------------	----------------	---------------	----------------------------

कार्य 3 : (Task 3)

होटल द्वारका के मैन्यू कार्ड को पढ़िए –

इडली	–	3.00 रु.
रवा डोसा	–	6.00 रु.
मसाला डोसा	–	7.00 रु.
पुरी पोस्टैटो	–	5.00 रु.

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

पोंगल	—	4.00 रु.
समोसा	—	2.50 रु.
बड़ा	—	4.00 रु.
कॉफी	—	3.50 रु.
चाय	—	2.00 रु.

राजीव मेनन ने निम्नलिखित चीजों का आर्डर दिया —

1 प्लेट इडली	:	3.00 रु.
1 प्लेट बड़ा	:	4.00 रु.
1 चाय का कप	:	2.00 रु.

उसके दोस्त किशोर और रहीम कुछ अलग चीजें खाना चाहते हैं, कोई भी नाश्ते के लिए 10 से अधिक रु. खर्च करना नहीं चाहते हैं। क्या आप उनके लिए आर्डर लिख सकते हैं।

अपनी प्रगति को जानिए 1

1. उन विभिन्न फार्मों की सूची तैयार कीजिए जो बच्चे अपने स्कूली जीवन में भरते हैं।

2. अपने शिष्यों की विज्ञान/इतिहास/गणित की किताब का जिक्र कीजिए। उनमें से किसी भी सारिणी/ग्राफ/चित्र का चयन कीजिए और एक हस्तांतरण अभ्यास की कार्यशैली तैयार कीजिए।

1.2.3 सम्मिश्रण

चित्र हमेशा से ही शिक्षकों के बीच विख्यात रहे हैं, एन्ड्र्यू राइट भाषा सिखाने में चित्रों की भूमिका की सूची देते हैं।

1. चित्र बच्चों (विद्यार्थियों) को प्रेरित करते हैं। वे उन्हें ध्यान देने तथा भाग लेने हेतु प्रेरित करते हैं।
2. चित्र वास्तविक जीवन को कक्षा में लेकर आते हैं तथा भाषा सीखने के लिए एक संदर्भ प्रस्तुत करते हैं।
3. चित्रों पर विभिन्न प्रतिक्रियाएँ संभव हैं; उनका वस्तुनिष्ठ रूप में वर्णन किया जा सकता है या आत्मनिष्ठ रूप से/तरीके से प्रतिक्रिया किया अथवा समझा जा सकता है।
4. चित्र उद्दीपन दे सकते हैं और सूचना प्रदान करते हैं, जिनका इस्तेमाल वार्तालाप, कथा वाचन (story-telling) और चर्चा के संदर्भ में किया जा सकता है।

चित्रों को तैयार करना व व्यवस्थित करना आसान है। वे रुचिपरक होती हैं और भाषा के अर्थपूर्ण व विशुद्ध प्रयोग का अवसर प्रदान करती हैं।

चित्र बच्चों के साथ सभी स्तरों पर प्रयोग किए जा सकते हैं – कक्षा एक-दो से लेकर , बच्चों से वयस्क तक। एक बार यदि अध्यापक चित्रों का संग्रह कर लें और समझ ले कि उनका कैसे प्रयोग करना है, तो बाद में तैयारी के लिए बहुत कम समय की आवश्यकता होगी। एक बार यदि अध्यापक चित्रों का एक बैंक (Picture bank) बना ले तो वह आवश्यकतानुसार उनमें वृद्धि कर सकता है। भारत जैसे विकासशील देश जहाँ आधुनिक उच्च तकनीक से बने शैक्षिक उपकरण व्यावहारिक नहीं है, वहाँ चित्र एक आर्थिक और रुचिपरक साधन प्रस्तुत करते हैं। अब हम कुछ ऐसे कार्यों पर नज़र डालेंगे जहाँ चित्र, लेखन कौशल को विकसित करने में प्रयोग किए जा सकते हैं।

कार्य 1 : (Task 1)

यह कार्य छोटे बच्चों/नौसिखिए के लिए उपयुक्त है। बच्चों को चित्रों का मिश्रण दिया जा सकता है जो अपने आप में कहानी कहता हो। फिर हम प्रत्येक चित्र से मिलता वाक्य लिख सकते हैं। अब हम बच्चों को चित्रों व शब्दों का मिलान करने को कह सकते हैं और फिर सही क्रम में कहानी का पुनर्निर्माण करने को कह सकते हैं। उदाहरण जैसे—

- (क) चोर कार चलाकर दूर चले गए।
- (ख) वह स्ट्रेचर पर लेटा।
- (ग) एक चोर ने बैंक से 10,000/- रु. चुराए।
- (घ) अस्पताल का वार्ड ब्याय उसे ऑपरेशन थियेटर में लेकर गया।
- (ङ) पुलिस चोर के पीछे भागा।
- (च) वह उसे अस्पताल में ढूँढने गया पर वह ढूँढ नहीं पाया।
- (छ) वह अस्पताल के पिछले दरवाजे से भाग गया।

कार्य 2 : (Task 2)

यह कार्य विभिन्न स्तरों पर प्रयुक्त किया जाता है। हमें यहाँ ऐसे चित्रों की जरूरत है जिसमें कई चीजें गलत हों।

उदाहरणतः एक आदमी ने एक पैर में जूता पहना और दूसरे पैर में चप्पल पहनी। एक औरत ने कंधे वाला बैग ले रखा है, जिसमें कोई पट्टी नहीं है। वहाँ एक घड़ी है, जिसमें कोई सुई नहीं है। वहाँ एक सूचना है, जो उल्टी लगी है।

बच्चों को चित्रों को ध्यानपूर्वक देखना है और गलतियों को पहचानना है।

कार्य 3 : (Task 3)

आजकल बच्चे (क्यों, यहाँ तक वयस्क भी) कॉमिक्स पढ़ना पसंद करते हैं। हम एक कॉमिक्स की कहानी ले जा सकते हैं और उसमें से शब्द मिटाकर बच्चों को स्वयं से कहानी सुनाने के लिए कह सकते हैं। यदि आप कार्य को सरल रखना चाहते हैं, तो आप शब्दों को लिखा रहने दे सकते हैं और बच्चों को कहानी को कथावाचन रूप में दुबारा लिखने को कह सकते हैं।

कार्य 4 : (Task 4)

एक रुचिपरक चित्र अखबार व पत्रिका से बच्चों को दिया जा सकता है। और उन्हें इससे कहानी बनाने को कहा जा सकता है। बाद में वे अपनी कहानी की तुलना मौलिक रिपोर्ट से कर सकते हैं।

डायरियाँ

डायरी एक निजी लेखा-जोखा होती है। जिस तरह हम सामान्यतः अंग्रेजी लिखते हैं, डायरी लिखने का तरीका उससे भिन्न होता है। हमें पूरे वाक्य लिखने की जरूरत नहीं होती। और न ही हमें वाक्यों की निरन्तरता के प्रति चिंतित होना पड़ता है। विचार एवं भावनाएँ प्रायः असंबंधित रूप से अभिव्यक्त होते हैं, जैसे-जैसे वे मानस से गुजरते हैं।

डायरी की भाषा तार की भाषा के समान होती है।

कार्य 1 : (Task 1)

नीचे एक पन्ना शीला की डायरी से दिया गया है।

7 बजे उठी – मम्मी घर पर नहीं – दादी ने कहा कि वह अस्पताल गई है। मैं चिंतित हूँ। पिताजी 8 बजे घर आते हैं— मुझे स्कूल छोड़ते हैं। मैं अस्पताल जाना चाहती हूँ— पिताजी ना कहते हैं – शाम को पिताजी मुझे स्कूल से लेते हैं— हम दोनों खुश होते हैं— मुझे दो 5 Star देते हैं— हम सीधे अस्पताल जाते हैं— माँ को देखकर कितना अच्छा लगता है— वहाँ मेरा छोटा भाई है। बहुत मुलायम और लाड़ला— बिल्कुल एक गुड़िया की तरह। मैं उसे जो जो कहकर पुकारने वाली हूँ। वो मुझे अक्का पुकारेगा – आज मेरे जीवन का सबसे खुशी का दिन है।

निरन्तर गद्यांश के रूप में इस डायरी को दुबारा लिखे।

कार्य 2 : (Task 2)

जिस दिन आपका परिणाम निकला था और आपको पता चला था कि आप अगली कक्षा में पहुँच गए हैं, उस दिन की डायरी लिखिए।

कार्य 3 : (Task 3)

आपके हेडमास्टर अपने दैनिक क्रियाकलाप के बारे में डायरी लिखते हैं। वे आपके स्कूल के वार्षिक दिवस समारोह के दिन क्या लिखेंगे।

आप इस तरह शुरू कर सकते हैं

3 pm मेहमानों के लिए चाय

3.30 pm

4 pm

अपनी प्रगति को जानिए 2

1. भाषा की कक्षा में चित्रों का प्रयोग करने का क्या लाभ है?

2. डायरी लिखना तार लिखने से भिन्न कैसे है?

3. किसी भी चित्र का चयन करें और सोचें कि उसे सम्मिश्रण सिखाने हेतु कैसे प्रयोग करें?

4. अपने छात्रों को एक डायरी बनाने को कहें जिसमें वो अपने हिन्दी कक्षा के सम्बन्ध में प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करेंगे। उन्हें सप्ताह के अंत में एकत्रित कीजिए। वे आपको आपके बारे में, शिक्षण के बारे में क्या बताते हैं?

संवाद

संवाद अंग्रेजी के मौखिक रूप से सम्बन्धित है। अंग्रेजी के मौखिक रूप का निरीक्षण करना बहुत कठिन है, इसलिए इन्हें अंग्रेजी के सम्मिश्रण पाठ्यक्रम में एक भाग के रूप में सम्मिलित किया जाता है। संवाद इतने सरल हो सकते हैं जितने कि दिन प्रतिदिन की बातचीत। वे बहुत ही कल्पनात्मक व कलात्मक हो सकते हैं। जैसे कि साहित्यिक लेख— मुख्य उपन्यासों में। प्राथमिक व माध्यमिक स्तरों पर सरल संवादों पर ही ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।

संवाद को क्या प्राकृतिक बनाता है — जो हमारे दिन प्रतिदिन की बातचीत के तरीके के समान है।

(क) संवाद में जरूरी नहीं कि पूर्ण वाक्य हो।

(ख) यह बहुत है कि यदि सरल शब्दावली का उपयोग किया जाए।

(ग) इसके बहुत से संक्षिप्त चिह्न प्रयोग किये जाते हैं, उदाहरणतः Can't, don't, etc.

(घ) बातचीत के हाव-भाव शामिल किए जा सकते हैं। उदाहरणतः tummy, oops, wow, dad, etc.

कार्य 1 : (Task 1)

नीचे एक माता और पुत्र के बीच अपूर्ण वार्तालाप दी गई है। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए व संवाद को पूरा कीजिए।

पुत्र : माँ, मेरी कक्षा घूमने के लिए शिमला जा रही है।

माता :

पुत्र : मई में, गर्मियों की छुट्टियों के दौरान

माता :

पुत्र : दस दिन के लिए। दो अध्यापक हमारे साथ जा रहे हैं।

माता :

पुत्र : ज्यादा नहीं – सिर्फ 500 रु. प्रति व्यक्ति। माँ, क्या मैं जा सकता हूँ?

माता :

पुत्र : धन्यवाद माँ। तुम कितनी प्यारी हो, है ना माँ।

कार्य 2 : (Task 2)

नीचे अहमद और शरीफ के बीच की गई टेलीफोनिक वार्तालाप दी गई है। पूरे वार्तालाप की पुनर्रचना कीजिए।

अहमद :

शरीफ :

अहमद : और तुम्हे पता है, आज गणित के अध्यापक भी छुट्टी पर थे।

शरीफ : तुम्हे दो पीरियड खाली मिले? इसका मतलब यह कि मेरा ज्यादा नहीं छूटा।

अहमद : ओह, हमारा समय बहुत अच्छा बीता। मैंने कितना चाहा था कि तुम आज स्कूल आते। तुम और तुम्हारा बुखार।

शरीफ :

अहमद :

कार्य 3 : (Task 3)

कल्पना कीजिए कि आप अपने स्कूल की ओर जा रहे हैं। एक अनजान व्यक्ति आप से रेलवे स्टेशन का रास्ता पूछता है। अपने व अनजान व्यक्ति के बीच हुए संवाद को लिखिए।

कार्य 4 : (Task 4)

सामूहिक सम्मिश्रण – एक चित्र को इस तरह से प्रदर्शित किया जाए ताकि पूरी कक्षा उसे देख सके। प्रत्येक समूह इसका अध्ययन करे और फिर 5 मिनट का नाटक बनाए जो कि चित्र के साथ समाप्त हो। फिर वे नाटक को पूरी कक्षा के सामने प्रस्तुत करे। दूसरे अन्य समूह नाटक देखें और क्योंकि उसी चित्र का निरूपण किया जाता है, बच्चों की रुचि नाटक में बनी रहती है।

पत्र

हम सभी विभिन्न कारणवश पत्र लिखते हैं। पत्र हमें उन लोगों से सम्प्रेषण करने का सामर्थ्य प्रदान करते हैं, जो हमसे दूर हैं। कुछ उद्देश्य जिनके लिए हम पत्र लिखते हैं, वे हैं : सूचना देने हेतु, निमंत्रण देने हेतु, जाँच करने हेतु, शिकायत करने हेतु, बधाई देने हेतु, सहानुभूति जताने हेतु आदि प्रत्येक पत्र में एक

लेखक, एक पाठक व एक परिस्थिति होती है। पत्र दो प्रकार के होते हैं : औपचारिक पत्र मुख्यतः अपरिचितों के बीच व्यावसायिक उद्देश्य से लिखे जाते हैं। अनौपचारिक पत्र के अन्तर्गत सभी दोस्तों परिवार के सदस्यों और सम्बन्धियों के बीच पत्र व्यवहार आता है।

पत्र के महत्वपूर्ण भाग :

लेखक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पता, सेल्युटेशन (प्रणाम), पत्र का प्रधान अंश (body of the letter), भेजने वाले का नाम, हस्ताक्षर और लेखक का पूरा नाम हस्ताक्षर के नीचे।

एक अनौपचारिक पत्र के मुख्य भाग :

लेखक का पता, दिनांक, सेल्युटेशन (प्रणाम), पत्र का प्रधान अंश, (subscription) भेजने वाले का नाम, हस्ताक्षर।

अब हम पत्र लेखन के कुछ रुचिपूर्ण कार्यों पर नज़र डालेंगे।

कार्य 1 : (Task 1)

एक पेन फ्रेंड को चित्र पोस्ट कार्ड पर पत्र

दिनांक :	
<p>प्रिय जेनी, मेरा नाम रानी है, क्या तुम मेरी पेन फ्रेंड बनोगी? मेरी आयु 10 वर्ष है। मैं कक्षा 5 में पढ़ती हूँ। मेरा एक भाई है। मेरे पिताजी एक इंजीनियर है और मेरी माँ एक शिक्षिका है। मुझे तैराकी व साइकिल चलाना पसंद है। कृपया मुझे अपने बारे में लिखें।</p> <p style="text-align: right;">तुम्हारी स्नेही रानी</p>	<div style="border: 1px solid black; width: 100px; height: 40px; margin: 0 auto;"></div> <p>सुश्री जेनी गिलपिन 7, मेफिल्ड रोड, इडिनबर्ग, ग्रेट ब्रिटेन</p>

यह रानी का उसकी पेन फ्रेंड जेनी को पहला पत्र है। अब ऐसा ही पत्र अपने पेन फ्रेंड को लिखिए।

कार्य 2 : (Task 2)

पत्रों का मिश्रण

आशा के द्वारा अपनी माँ को लिखे गए इस पत्र को पढ़िए। आशा अपने हॉस्टल के जीवन का विवरण लिख रही है। पर गद्यांश मिश्रित रूप में है। उन्हें सही क्रम में लगाइए।

- रात को हमें खाने में चपाती और दूध का एक गिलास मिलता है। हम रात को दस बजे तक पढ़ते हैं। फिर लाइट बंद करनी होती है। आप जानते हैं न, ये मेरे लिए कितना कठिन है। मैं घर पर देर रात तक कितनी सारी फिल्में देखती थी।

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

- हम चार हॉस्टल में एक ही कमरे में साथ रहते हैं। सबके पास एक चारपाई, एक मेज़, एक डेस्क और एक अलमारी है। शर्मिला (कलकता से), सपना (दिल्ली से) और नंदिता (केरल से) मेरे साथ कमरे में रहती हैं। मैं कुछ बंगाली और मलयालम भी सीख रही हूँ। हम रात को देर तक बैठते हैं, और बातें करते हैं। हम सब कुछ एक साथ ही करते हैं।
- प्रिय, माँ, उम्मीद करती हूँ कि आपके साथ सब कुछ ठीक है। आपने मेरे हॉस्टल के बारे में पूछा था। अब मैं आपको अपने विवरण से बोर करूँगी (उबाऊ)।
- क्या आप विश्वास कर सकती हैं, आपकी प्रिय बेटा सुबह पाँच बजे उठती है? हाँ, हॉस्टल ने मुझे बहुत बदल दिया है। अब 6 बजे तक बिस्तर पर कॉफी नहीं मिलती, पर पागलों की तरह स्नानघर की तरफ भागती हूँ। अगर हम 8 बजे तक भोजनकक्ष में नहीं पहुँचते, तो कोई नाश्ता नहीं। ऐसा मत सोचना कि आपकी बेटा पीड़ा से गुज़र रही है। मुझे आपको अपने दोस्तों के बारे में जरूर बताना चाहिए।

कार्य 3 : (Task 3)

सुरेश ने अपने हेडमास्टर को एक पत्र लिखा। जब उसके हेडमास्टर ने वह पत्र पढ़ा तो बहुत गुस्सा हुए। क्यों? क्या आप इसको सही करने में सुरेश की मदद कर सकते हैं?

मेरे प्रिय हेडमास्टर,

आशा है आप ठीक होंगे। मैं बहुत अच्छा महसूस नहीं कर रहा हूँ। मुझे बुखार है। माफ कीजिए, मैं आज स्कूल नहीं आ सकता। कृपा करके मुझे माफ करें। क्या, मैं आज एक छुट्टी ले सकता हूँ।

कार्य 4 : (Task 4)

अंतरिक्ष से एक पत्र

यह पत्र मार्स की एक लड़की का अपने पृथ्वी के दोस्त राजेश को लिखा गया है।

5, सेन्टर स्ट्रीट

रेड कॉलोनी

मार्स (मंगल)

प्रिय राजेश,

आपके पत्रों और तस्वीरों के लिए धन्यवाद। उन्हें देखकर बहुत अच्छा लगा। आप कितने अलग दिखते हैं। आप मेरे बारे में जानना चाहते थे। मेरा पूरा नाम बीपेनटेनिया है। मेरे बाल लाल रंग के हैं और चेहरा हरे रंग का। क्या आपको पता है कि मुझे अपने स्कूल की सौंदर्य प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला है।

आप अपने दो हाथों से कार्य को कैसे संभालते हैं? हम सबके पास चार हाथ और चार आँखें होती हैं— हम चारों दिशाओं में एक ही समय पर देख सकते हैं। हम प्रचुर मात्रा में फल और फूल खाते हैं। हम सिर्फ दूध पीते हैं।

हम मार्टिना बोलते हैं। हमारे गाने सुन्दर हैं। नववर्ष के दिन, हम सारे दिन गाते और नाचते हैं। हम उपहारों का भी आदान-प्रदान करते हैं।

कृपा करके जल्द ही दुबारा लिखना और अपने बारे में और भी बताना।

प्यार के साथ

बीपेनटेनिया

अपनी प्रगति को जाँचिए – 3

1. कम से कम पाँच संदर्भ सोचिए जिनका स्कूलों में मुख्यतः सम्प्रेषण हेतु प्रयोग किया जाता है, उदाहरणतः एक अध्यापक एक बच्चे की प्रगति के बारे में चर्चा कर रहा है।

2. कम से कम, पाँच ऐसे अवसर ढूँढ़िए जिनमें विद्यार्थियों को पत्र लिखने की जरूरत होती है, उदाहरणतः छुट्टी के लिए एक पत्र।

3. प्रत्येक पर एक कार्य की रूपरेखा तैयार कीजिए –

(क) संवाद सिखाना

(ख) पत्र लेखन सिखाना

गद्यांश/निबंध

गद्यांश पत्र, निबंध, रिपोर्ट आदि के निरन्तर लेखन का एक भाग है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपने शिष्यों को अच्छा गद्यांश लिखना सिखाएँ। अच्छे लिखे हुए गद्यांश की निम्न विशेषताएँ हैं—

(क) इसमें एकबद्धता होती है : प्रत्येक गद्यांश एक निश्चित विचार से सम्बन्धित होता है। सामान्यतः प्रत्येक गद्यांश का एक विषय—वाक्य होता है, उदाहरणतः वह वाक्य जिसमें गद्यांश का मुख्य विचार होता है।

(ख) गद्यांश पूर्णतः व्यवस्थित होता है : उसकी निश्चित योजना होती है, गद्यांश को संगठित करने के विभिन्न प्रकार होते हैं, उदाहरणतः — किसी विचार को उदाहरणीकृत करना, वाचन अर्थात् घटनाओं का क्रमानुसार संगठन करना, तुलना करना — अन्तर बतलाना आदि।

(ग) गद्यांश में संयुक्तता होती है : प्रत्येक वाक्य तार्किक रूप से अपने पहले वाले वाक्य से सम्बन्धित होता है और अगले वाक्य का अदांजा देता है।

जब हम बच्चों को गद्यांश लेखन सिखाते हैं, तब इनके बारे में उनसे जरूर बातचीत करनी चाहिए।

कार्य 1 : (Task 1)

शुरुआती स्तर पर गद्यांश का एक प्रारूप प्रदान कर बच्चों को लगभग उसके जैसा लिखने को कहा जा सकता है।

किरन का पेन्सिल का डिब्बा खो गया है और उसने निम्नलिखित नोटिस लगाया—

मेरा पेन्सिल का डिब्बा लाल रंग का है। इसके ऊपर मिक्की माऊस का चित्र है। इसमें दो पेन्सिलें रखी हुई हैं। एक पेन्सिल का रंग काला है और दूसरी का नीला। उसके अन्दर एक गुलाबी रंग की रबड़ भी है। सुपरमैन का एक चित्र डिब्बे के अन्दर है। मैंने दो रुपये का सिक्का भी उसमें रखा था।

अब एक ऐसा ही गद्यांश अपने स्कूल बैग के बारे में लिखिए —

कार्य 2 : (Task 2)

नीचे दिए गए गद्य (passage) में, दो गद्यांशों (Paragraph) का मिश्रण दिया गया है। क्या आप उनको अलग कर सकते हैं?

एक बार एक शहर में एक सियार रहता था। एक दिन एक राजा ने एक बूढ़े आदमी को छोटा सा आम का पेड़ लगाते हुए देखा। उसने उससे पूछा — “तुम्हें इस पेड़ से कोई फल कब मिलेगा?” सेन्ट (संत) फ्रांसिस शहर का अवलोकन करने आए और वे सियार को देखना चाहते थे। राजा हँसा और बोला “जितने में उस पेड़ पर फल लगेंगे उससे पहले तुम मर जाओगे।”

लोगों ने उसे बताया कि वो मारा जाएगा। लेकिन संत ने नहीं सुना। बूढ़ा आदमी हँसा और बोला “हाँ, पर दूसरे लोग तो फल खा लें। अभी मैं उन पेड़ों के फल खाता हूँ जो मेरे परदादा ने उगाए थे। वह वन में चला गया। जब सियार उसकी तरफ भागा, उसने बोला “इधर आओ—सियार भाई।” राजा बहुत शर्मिंदा हुआ। क्रूर सियार ने अपना मुँह बंद किया और उसके पैरों में बैठ गया।

कार्य 3 : (Task 3)

निम्नलिखित संकेतों का एक गद्यांश लिखने हेतु प्रयोग कीजिए।

मोहनदास कर्मचन्द गाँधी — जन्म 1869 पोरबन्दर — पिता कर्मचन्द गाँधी — माता पुतली बाई — वकालत पढ़ने इंग्लैंड गए — वकील के रूप में साऊथ अफ्रीका में काम किया — भारत आए — स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया — सत्याग्रह व अहिंसा में विश्वास रखते थे — भारत के लिए 1947 में स्वतन्त्रता जीती — हमेशा सत्य बोलते थे — सादा जीवन जीने का प्रयास किया — हिन्दू—मुस्लिम एकता के लिए लड़े — 1947 में गोडसे द्वारा मारे गए — राष्ट्रपिता व महात्मा के रूप में याद रखे गये।

कार्य 4 : (Task 4)

एक पत्रिका से कोई भी रुचिपरक चित्र चुनिए। बच्चों से कहिए कि चित्र का वर्णन करते हुए एक गद्यांश लिखिए।

रिपोर्ट्स

एक रिपोर्ट एक घटना या अनुभव का वर्णन देती है। रिपोर्ट विभिन्न प्रकार की होती है : समाचार पत्र रिपोर्ट, वैज्ञानिक रिपोर्ट, या व्यापारिक रिपोर्ट। नीचे रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएँ दी गयी हैं—

1. रिपोर्ट एक सार होता है।
2. यह अधिकतर तृतीय पुरुष में लिखी जाती है।
3. इसके अन्तर्गत महत्वपूर्ण जानकारी ही सम्मिलित होती है— कोई भी विषयान्तरगमन नहीं होता।
4. इसमें भावनाओं की अत्यधिक प्रबलता नहीं होती।
5. विचार तार्किक रूप से व्यवस्थित होते हैं।

कार्य 1 : (Task 1)

मान लीजिए कि आप अपने स्कूल के समाचार पत्र "स्कूल टाइम्स" के संपादक हैं। आपको स्वतन्त्रता दिवस समारोह की रिपोर्ट देनी है। निम्नलिखित संकेतों का प्रयोग करके रिपोर्ट लिखिए—

15 अगस्त, 1995 — सुबह 7 बजे — ध्वजारोहरण स्थान के नीचे सभी बच्चे सफेद वर्दी पहनकर इकट्ठे हुए — मुख्य अतिथि, पुलिस कमिश्नर सुबह 7 बजे पहुँचे — झण्डा फहराया गया — सबने ध्वजगान गाया — "युवकों का भारतमाता के प्रति कर्तव्य" — स्कूल के प्रधानाचार्य द्वारा धन्यवाद प्रस्तुत किया गया — सभी शिष्यों के लिए चाय।

कार्य 2 : (Task 2)

नितिन ने बेन को टेलिफोन किया पर बेन घर पर नहीं था। उसकी बहन रीटा ने फोन उठाया नितिन और रीटा के बीच निम्नलिखित बातचीत हुई—

रीटा : हैलो, यह 8265279 है।

नितिन : हैलो, रीटा मैं नितिन हूँ। क्या मैं बेन से बात कर सकता हूँ?

रीटा : माफ कीजिए, वह बाहर गया हुआ है। क्या मैं उसके लिए संदेश ले सकती हूँ?

नितिन : हाँ। हम आज रात को साथ में पढ़ने की योजना बना रहे थे आपके घर पर, पर मेरी माँ को बुखार है और और मुझे उन्हें डॉ. के पास ले जाना है। क्या आप बेन को बता देंगी कि मैं आज रात को नहीं आ पाऊँगा? उससे कहना कि मैं बहुत सॉरी महसूस कर रहा हूँ।

रीटा : ठीक है, मैं यह उसे बता दूँगी।

नितिन : धन्यवाद, बाय।

अब रीटा बेन के लिए एक संदेश लिखती है। वह नितिन के साथ अपने वार्तालाप का विवरण प्रस्तुत करती है। यह निम्नलिखित रूप से शुरू हुई "तुम्हारे दोस्त नितिन ने यह कहने के लिए फोन किया था.....

कार्य 3 : (Task 3)

विद्यार्थीगण अपने वरिष्ठ विद्यार्थियों (seniors) के लिए विदाई समारोह के बारे में चर्चा करने के लिए मिले। सम्मेलन में निम्नलिखित विषयों से संबंधित चर्चा की गई—

1. दिनांक और स्थान
2. बजट

। डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

3. मैन्सू के चीजें
4. वरिष्ठ विद्यार्थियों के लिए उपहार
5. भाषण
6. मनोरंजन

इस बाहरी रूपरेखा का प्रयोग करके, समारोह की एक रिपोर्ट बनाइए, जो कि प्रधानाचार्य के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी।

अपनी प्रगति जाँचिए 4

सारांश

1. लिखना सिखाया जा सकता है, सिखाया जाना चाहिए।
2. अपने शिष्यों को यह सिखाना चाहिए कि जीवन में क्या प्रासंगिक है।
3. हमें लेखन के पारंपरिक प्रकारों को सिखाना चाहिए, जैसे कि गद्यांश, निबंध, पत्र, रिपोर्ट आदि।
4. हमें लेखन के गैर पारम्परिक प्रकारों को सिखाना चाहिए, जैसे—डायरी, फार्म भरना, सूचना हस्तांतरण आदि।
5. फार्म भरना एक मूलभूत लेखन कौशल है जो निपुणता की माँग करता है और बच्चों में आत्मविश्वास का विकास करता है।
6. सूचना हस्तांतरण का कौशल बच्चों को अंग्रेजी के अलावा अन्य विषयों का अध्ययन करने में मदद करता है।
7. चित्र विभिन्न प्रकार के लेखन कौशलों का विकास करने हेतु रुचिपूर्ण उद्दीपन प्रस्तुत करते हैं।
8. डायरी लेखन बच्चों को व्याकरणिक निपुणता की चिंता न करते हुए अपनी भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने में मदद करता है।
9. संवाद मौखिक भाषा के परीक्षण का अप्रत्यक्ष तरीका प्रस्तुत करता है।
10. पत्र औपचारिक और अनौपचारिक जीवन में विभिन्न उद्देश्यों हेतु उपयोग होते हैं, प्रत्येक की एक निश्चित रूपरेखा होती है।



अध्याय – 21

लिखना—बातचीत

परिचय :

भाषा की कक्षा में अध्यापक के लिए सबसे कठिन मोड़ तब आता है जब उसे बच्चों को लिखने का अभ्यास कराना होता है। लिखने के अभ्यास के साथ शुरू हो जाता है एक ही अक्षर को बार-बार लिखने का दुश्चक्र, एक अक्षर को बार-बार घोटना, उसे तब तक मिटा-मिटा के लिखना जब तक वो मानक स्तर तक ना पहुँच जाए, और ये सब बच्चे के मन में लिखने के प्रति एक घृणा को जन्म देता है। इसका परिणाम ये होता है कि बच्चे को पूरी लेखन क्रिया एक बेहद ही नीरस, यांत्रिक गतिविधि मालूम होती है।

मगर अगर ऐसा होता तो आज कविताएँ और उपन्यास अस्तित्व में न आते जिन्हें पढ़ व्यक्ति खो जाता है। संभवतः लेखन इतनी नीरस गतिविधि नहीं हो सकती।

इस पर्व के ज़रिये हम ये जानने की कोशिश करेंगे कि किस तरह हम कक्षा में लेखन गतिविधि को संवादात्मक और सार्थक बना सकते हैं। कक्षा में बच्चे लेखन क्रिया के अंतर्गत सफेद कागज़ पर काली लाइनों से जूझते हुए नहीं अपितु लेखन को भी संवाद का माध्यम समझते हुए, बातचीत की तरह लेखन को भी इस्तेमाल कर पायें।

उद्देश्य :

- लेखन क्रिया को शुरू करने से पहले की तैयारियों पर एक समझ बनाना।
- लेखन को कक्षा में एक सार्थक गतिविधि कैसे बनाए, इस पर एक समझ बनाना।
- लेखन क्रिया को रुचि पूर्ण बनाने के लिए कुछ गतिविधियों पर चर्चा करना।

लिखना एक तरह की बातचीत ही है। लिखते वक्त हम किसी से संवाद कर रहे होते हैं, हालाँकि प्रायः वह व्यक्ति हमारे सामने नहीं होता। बहुत-सी बातें हम किसी सूचना, विचार या याद को सुरक्षित रखने के लिए लिखते हैं। यदि मैं अपने आज के अनुभव एक डायरी में लिखूँ तो मैं इन अनुभवों को किसी और दिन पढ़ने की आशा में सुरक्षित रख सकूँगा।

अध्यापक की हैसियत से हमें बच्चों को लेखन का परिचय बातचीत के एक रूप में देना चाहिए। स्कूल में दाखिला लेने तक बच्चे कई तरह के लोगों से कई तरह के विषयों पर बात करने की सामर्थ्य हासिल कर चुके होते हैं। उनमें 'श्रोता बुद्धि' (यानी किससे क्या बात करनी है, कैसी करनी है?) का बीज पड़ चुका होता है। यह बुद्धि लिखना सीखने के लिए बहुत उपयोगी है पर इसका प्रयोग बच्चों को अब किसी दूर बैठे 'श्रोता' (या पाठक) के लिए करना होगा। कुछ किस्म के 'श्रोता' (जैसे अध्यापक या दूसरे बच्चे या स्वयं) पास में उपस्थित भी हो सकते हैं। यह अध्यापक पर निर्भर है कि बच्चे लिखने को संबोधन या किसी से कुछ कहने की तरह ले पाते हैं या नहीं।

यह साफ कर देना जरूरी है कि आज लिखना सिखाने के नाम पर जो कुछ हो रहा है हम उससे किसी एकदम भिन्न चीज की चर्चा कर रहे हैं।

लाखों बच्चों को लिखना एक यांत्रिक कौशल की तरह सिखाया जा रहा है। शुरू में उनसे अक्षरों की

आकृतियों को दर्जनों बार नकल करने के लिए कहा जाता है और अध्यापक उन उतारी हुई आकृतियों को बारीकी से देखता है। इस रीति से पूरी वर्णमाला से निपटने में कई हफ्ते लग जाते हैं। इस लंबी अवधि में लिखना सीखने का कैसा भी उद्देश्य बच्चों की दृष्टि में नहीं रह जाता। बाद में जब उनसे शब्द लिखने या और कुछ दिनों बाद वाक्य बनाने के लिए कहा जाता है तो वे अध्यापक का मुँह यह जानने के लिए ताकते हैं कि वे लिखें क्या? वे लिखने को अपनी कोई बात कहने के माध्यम के रूप में नहीं ले पाते। वे उसे एक कवायद या कर्मकांड के रूप में देखते हैं जिसे उन्होंने अध्यापक से सीखा है।

अब यदि हम इस स्थिति से हटना चाहते हैं तो हमें लेखन को बात के विस्तार की तरह प्रस्तुत करना होगा। अतः अध्याय के अंतर्गत दी गई गतिविधियाँ लिखने की गतिविधियाँ आयोजित करने के लिए बहुत उपयोगी होंगी। बातचीत हमें किसी श्रोता के सामने चीजों को व्यवस्थित करके सुनाने का मौका देती है। इसी कारण वह लिखना सिखाने के लिए इतनी उपयोगी है।

अभ्यास

- बातचीत व लेखन के संबंध के बारे में क्या कहा गया है?
- वर्तमान में कक्षाओं में किस तरह लिखना सिखाने की शुरुआत की जाती है? इस तरह से सिखाने में क्या समस्याएँ हैं?

बात और लेखन के बीच

बच्चों को लिखना सिखाने की शुरुआत करने के पूर्व यह पक्का कर लीजिए कि वे सब अपनी जिंदगी और आसपास हो रही चीजों के बारे में आत्मविश्वास के साथ बात करने लगे हों। इसका मतलब यह है कि:

1. उनमें अपने अनुभव और विचार दूसरों को बताने की इच्छा हो, और
2. अपना अनुभव या दृष्टिकोण क्रमबद्ध पेश करने की सामर्थ्य हो।

ये बच्चे लिखना सीखने के लिए तैयार हैं। लेकिन शब्द और वाक्य लिखने के पहले उन्हें और बहुत कुछ करना होगा।

किसी भी भाषा को लिपिबद्ध करने के लिए कागज़ पर जटिल आकृतियाँ बनानी होती हैं। अक्षरों की छोटी-छोटी आकृतियों के बारीक भेद देख पाना और याद रखना जरूरी होता है। लिखने के लिए यह भी जरूरी है कि अमूर्त प्रतीकों के जरिए अपने विचार और भाव व्यक्त करना आता हो। वर्णमाला के अक्षर अमूर्त प्रतीक होते हैं। वे अमूर्त इसलिए हैं कि उनकी आकृति और उनसे जुड़ी ध्वनियों के बीच कोई समरूपता नहीं है। उदाहरण के लिए 'अ' अक्षर की आकृति का 'अ' की ध्वनि से कोई तार्किक संबंध नहीं है। बस हम उसे 'अ' के रूप में स्वीकार करके चलते हैं। जो बच्चा हिंदी लिखना सीखना चाहता है उसे 'अ' को 'अ' रूप में स्वीकार करना होगा और उसका उपयोग उचित जगह पर करना सीखना होगा। उसे इस तरह के कई प्रतीकों का आदी बनना पड़ेगा। अमूर्त प्रतीकों के जरिए अपनी बात कहना ही तो लिखने का कौशल है।

ऊपर दी गई क्षमताओं का विकास एक दिन में नहीं हो सकता। इनका विकास करने का सबसे अच्छा तरीका बच्चों को ड्राइंग और रंगीन चित्र बनाने का नियमित अवसर देना है। सारे बच्चों के लिए ड्राइंग का कागज़ और रंग खरीदने लायक पैसा कम ही स्कूलों के पास होगा। यदि नीचे दी गई सामग्री का उपयोग किया जाए तो शायद बहुत सारे स्कूल चित्रकला का इंतजाम कर सकें।

- कोयले के टुकड़े, चाक, बत्ती, गेरू और गौरा पत्थर;

- रंगों के अन्य स्रोत जो स्थानीय रूप से उपलब्ध हों (जैसे नवरात्र के अवसर पर लड़कियाँ ईंट को पीसकर लाल रंग बनाती हैं, पलाश के फूलों से पीला रंग बनाया जा सकता है।);
- पुराने अखबार, इस्तेमाल किया हुआ कागज, पुरानी कॉपियाँ या कोई अन्य कागज;
- प्लास्टिक के कप या डिब्बे।

इनमें से अधिकांश चीजों का संग्रह अध्यापक धीरे-धीरे कुछ वर्षों के दौरान कर सकता है। इस सूची में जो एक चीज शामिल नहीं की गई है वह है ब्रश। यदि बच्चे सूखे रंगों का प्रयोग करें तो ब्रश की कोई जरूरत नहीं है। पर यदि अध्यापक चाहता है कि बच्चे रंगों को पानी की मदद से मिलाएँ तो उसे मोटे ब्रश प्राप्त करने होंगे। बहुत छोटे बच्चों के लिए रूई की सहायता से ब्रश बनाए जा सकते हैं, पर ऐसे ब्रशों को चलाना और उनकी देखरेख करना कठिन है। दूसरी तरफ यदि ठीक तरह के ब्रश एक बार खरीद लिए जाएँ और उन्हें हर बार इस्तेमाल करके सावधानी से धो लिया जाए तो वे लंबे समय तक चलेंगे।

तस्वीरें बनाने के लिए तमाम व्यवस्था कौन करेगा?

बच्चों को कागज कौन देगा, रंग कौन मिलाएगा, जब रंगीन पानी से भरा गिलास लुढ़क जाए तो फर्श कौन साफ करेगा? ये सारे काम खुद करने वाला और बच्चों से कोई मदद न लेने वाला अध्यापक संभव है, जल्दी ही थक जाए और कुछ निराशा महसूस करने लगे। हो सकता है, वह चित्रकला को बंद कर देने का दुखद निर्णय ले बैठे। इस संभावना को दूर करने के लिए हरेक अध्यापक को यह निश्चय कर लेना चाहिए कि कागज फैलाने, रंगों में पानी मिलाने, चित्र बन जाने पर उन्हें इकट्ठा करने और सारे ब्रश धो के रखने के काम में वह हरेक बच्चे की मदद लेगा। यह प्रशिक्षण बच्चों की शिक्षा का ही एक अंग है।

बच्चे अपने चित्रों में बनाएँगे क्या? संवाद और अभिव्यक्ति की इच्छा के विकास में इस प्रश्न का केन्द्रीय महत्व है। इस मामले में भी आज की स्थिति को समझकर उससे हटना है। ऐसे अधिकांश स्कूलों में जहाँ चित्रकारी होती है, बच्चों को कमल का फूल, पतंग, केला या ऐसा ही कोई अन्य रूढ़ विषय चित्र बनाने के लिए दे दिया जाता है। कमल का फूल बनाना कोई गलत काम नहीं है, गलत यह है कि पाँच वर्ष के बच्चे को अध्यापक बताए कि उसे क्या बनाना चाहिए।

अध्यापक को अच्छी तरह मालूम होता है कि कक्षा में हर समय उसी की चलती है। वह जो भी कहेगा, बच्चे उसे एक आदेश की तरह लेंगे (चाहे वे आदेश का पालन करें या न करें)। इसलिए यदि वह बच्चे से एक निश्चित चीज, जैसे केला, बनाने को कहे तो बच्चा इसे एक आदेश मानेगा। इस आदेश से वह समझेगा कि :

- अध्यापक को यह मालूम है कि मुझे अपने चित्रों में क्या बनाना है;
- चित्रकारी मेरे लिए स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है;
- मेरा बनाया केला अध्यापक को भी केले के रूप में मान्य हो, तभी मेरी सफलता है।

नर्सरी और प्राइमरी स्कूलों में यह एक आम दृश्य होता है कि बच्चे पतली पेंसिलों को बड़ी मुश्किल से पकड़कर अध्यापक के आदेश का पालन करने के लिए कमल का फूल या केला बना रहे हैं और उसे संतोषपूर्वक बना पाने की असमर्थता के कारण बुरी तरह निराश हो रहे हैं। प्राइमरी स्कूलों में ब्रश भले न हों,

पर बहुतेरे स्कूलों की यह माँग रहती है कि उनमें रबड़ अवश्य होने चाहिए। रबड़ को बच्चे परिपूर्णता हासिल करने के औजार की तरह इस्तेमाल करते हैं, वे एक बार केला बनाते हैं, फिर उसे मिटाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि वह ठीक नहीं बना उसे वे फिर बनाते हैं और फिर मिटाते हैं— जब तक कागज फट नहीं जाता और अध्यापक झुँझला नहीं जाता। इस प्रक्रिया में उँगलियों के संचालन का अभ्यास हो जाता है (जो निश्चय ही लिखने की दिशा में एक कदम है) पर अपनी कोई बात दूसरों तक पहुँचाने का संतोष नहीं मिल पाता। इस कारण पूरी गतिविधि फिजूल और नुकसानदेह बन जाती है।

चित्रकारी बच्चों के समग्र विकास में, और विशेषकर भाषा के प्रयोग और लेखन में, योग दे सकती है, बशर्ते कि बच्चे को चित्र माध्यम में पैठने को पूरी तरह आजाद छोड़ दिया जाए। यदि आप तीन-चार वर्ष के बच्चों के साथ काम कर रहे हैं तो एक अध्यापक के रूप में आपका मुख्य जिम्मा कागज और रंग उपलब्ध कराना और फिर बच्चे का काम पूरा होने तक धीरज रखना है। हमारे देश में अध्यापक से निर्देश लेने की परंपरा रही है, इसलिए बहुत से बच्चे आपसे पूछेंगे कि वे क्या बनाएँ या कैसे बनाएँ। **अध्यापक से निर्देश माँगने की जगह स्वयं अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए चित्र माध्यम का आनंदपूर्वक उपयोग करने की आदत आसानी से नहीं पड़ेगी।** ऐसी आदत तभी पड़ सकती है जब अध्यापक सब्र रखे, प्रोत्साहन दे और अपना लक्ष्य जानता हो।

रंगों के साथ चित्रकारी हाथों का संचालन विकसित करने का एकमात्र साधन नहीं है। कई अन्य गतिविधियाँ इस उद्देश्य में सहयोग दे सकती हैं, जैसे एक बर्तन से दूसरे बर्तन में पानी उँडेलना, बीजों (खासकर दानों, जैसे राजमा, चना, लोबिया) को अलग-अलग करना, चीजें उठाना, उन्हें वापस रखना, चीजों को छूकर उनके आकार का अनुभव करना। कई लोग सोचते हैं कि ऐसी गतिविधियाँ तो अधिकांश घरों में प्रायः होती ही होंगी। दुर्भाग्यवश यह सब घरों में होता है। कई घरों में (और इनमें गरीब और मध्यवर्गीय दोनों किस्म के घर शामिल हैं) बच्चों को चीजें छूने की मनाही रहती है। ऐसी चीज जो टूट सकती है, बच्चों की पहुँच से दूर रखी जाती है। इस तरह बच्चे किसी चीज को सावधानीपूर्वक उठाने, रखने के अनुभव से वंचित रह जाते हैं। बहुत बड़ी संख्या में बच्चे ऐसे बुनियादी अनुभव नहीं कर पाते जो उनके हाथों को हो चुकने चाहिए थे। इस अभाव का असर लिखने के कौशल पर भले ही अप्रत्यक्ष रूप से पड़े, पड़ता अवश्य है। जो अध्यापक इस अभाव को दूर कर सकने वाली गतिविधियाँ आयोजित करने की जहमत नहीं उठाता, उसे लिखने का कौशल सिखाने में गंभीर दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। चित्रकारी इन दिक्कतों को दूर करने का एक उम्दा साधन है।

अभ्यास

- लिखने सिखाने की शुरुआत में चित्र बनाना कैसे मदद करता है?
- हाथों का संचालन विकसित करने के लिए और क्या-क्या गतिविधियाँ बताई गई हैं?

लिखने की शुरुआत

यह निर्णय हर अध्यापक को स्वयं लेना होगा कि वह किस उम्र या अवसर से लिखना सिखाने की शुरुआत करे। निर्णय का आधार बच्चों की प्रगति की समीक्षा ही हो सकती है। यह भी देख लीजिए कि बच्चों ने चित्रकारी के जरिए हाथों और उँगलियों के संचालन में पर्याप्त लचीलापन और नियंत्रण हासिल कर लिया है या नहीं। जो बच्चे किताबों या पढ़ने की अन्य किसी सामग्री के संपर्क में रहे हैं, संभव है, वे खुद ही लिखने के अवसरों की माँग करें। इससे अध्यापक का काम आसान हो जाएगा। **जब बच्चे स्वयं कोई माँग करते हैं तो यह इस बात का पक्का संकेत है कि वे उस काम को करना चाहते हैं।** हो सकता है कि वह काम बहुत कठिन सिद्ध हो और इसलिए वे अपनी माँग कुछ समय बाद वापस ले लें, पर वह फिर कुछ दिन

बाद अवश्य उठेगी। बच्चे कई कौशलों पर ठीक इसी तरह अधिकार प्राप्त करते हैं। और लिखना कोई अलग चीज नहीं है।

जब आप लिखने का शिक्षण शुरू करने का निर्णय लें तो सबसे पहले बच्चों से पूछें कि वे आपसे क्या लिखवाना चाहेंगे? यदि आप 'लिखना' क्रिया का इस्तेमाल अपनी बातचीत में करते रहे हैं तो उन्हें आपकी बात समझने में कोई दिक्कत नहीं होगी। पर यदि उन्हें यह नहीं मालूम है कि आप क्या चाहते हैं तो आपको कुछ अलग ढंग अपनाना पड़ेगा। आप उनसे कुछ चीजों के नाम बताने को कहें— जैसे उनकी पसंद के जानवर, या उनकी पसंद की खाने की चीजें, चलने वाली चीजें, ऐसी चीजे जिनसे उन्हें डर लगता है, आदि। बच्चों को बताइए कि आप हर बच्चे की कापी में या फर्श पर एक शब्द लिखेंगे, अतः हर बच्चा आपको कोई भिन्न शब्द बताए। बच्चों से कहिए कि वे इस शब्द को उसके ठीक नीचे उतारें या उसी पर ट्रेस करें।

लिखना सीखने के लिए फर्श एक बढ़िया साधन है। आप उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिख सकते हैं। फर्श पर लिखना सस्ता भी है क्योंकि आपको सिर्फ चाक या कोयला या कोई स्थानीय रंग खरीदना होगा। परेशानी सिर्फ यह है कि फर्श को बाद में धोना पड़ेगा। इस काम में यदि आप बच्चों को भागीदार बना सकें तो लिखना सीखने के लिए उनकी प्रेरणा दूनी हो जाएगी। कुछ माता-पिता फर्श की धुलाई में बच्चों की साझेदारी से नाराज हो सकते हैं। यह अध्यापक को ही सोचना है कि वो उनकी नाराजगी से कैसे पेश आए।

लिखना शुरू करने के लिए ये एकमात्र तरीके नहीं हैं। बच्चों के साथ काम करने वाले लोगों ने कई अन्य विधियों के बारे में सुना होगा। सबसे प्रचलित विधि वर्णमाला के अक्षर लिखना सिखाने की है। चाहे हम ब्लैकबोर्ड पर बड़े आकार में वर्णमाला लिखें या गत्ते के अक्षर काटें या बच्चों से प्राइमर की नकल करने को कहें, एक बात हमें अवश्य याद रखनी चाहिए— यह कि **वर्णमाला में कोई अर्थ नहीं होता।** इसलिए वर्णमाला पर अत्यधिक जोर देना लेखन को सार्थक संवाद का माध्यम समझने से बच्चों को निरुत्साहित कर सकता है। पर जब एक बार अध्यापक शब्दों और अर्थ के बीच कई मजबूत पुल बना चुका हो तो वर्णमाला का परिचय बहुत उपयोगी हो सकता है। वर्णमाला कक्षा की एक दीवार पर लटकी रहे या एक लंबी पट्टी के रूप में चिपका दी गई हो तो वह पढ़ना लिखना सीखने की प्रक्रिया में सहायक स्रोत की भूमिका निभा सकती है। **यांत्रिक ढंग से वर्णमाला सिखाने के कई विकल्प हैं।** उदाहरण के लिए आप शब्दों की एक लंबी सूची बनाकर रख लीजिए और उनमें से उन थोड़े से शब्दों को बच्चों के सामने रखिए जिनका शुरू का अक्षर एक हो। बच्चों का ध्यान इस बात की ओर खींचकर उनसे कहिए कि वे ऐसे अन्य अक्षर ढूँढ़ें जो दिए गए शब्दों में एक से अधिक बार आए हों। हर बार इस गतिविधि के समय पिछली बार के शब्दों को दुहराइए। धीरे-धीरे सामान्य व्यवहार के शब्दों का भंडार इस तरह बढ़ने पर आप उन्हें विभिन्न विशेषताओं (जैसे लंबाई, अर्थ आदि) के आधार पर वर्गीकृत कीजिए और एक-एक वर्ग के शब्दों को बड़े कागज पर लिखकर दीवार पर चिपका दीजिए। कागज ऐसी जगह चिपकाइए जहाँ से वे सबको साफ दिख सके। यह बात मैं कहने लायक भी न समझता यदि मैं ऐसे कई स्कूलों में न गया होता जहाँ तस्वीरें या चार्ट बच्चों की पहुँच से बहुत ऊपर टंगे रहते हैं ऐसी सामग्री जो बच्चों से बहुत ऊँचे पर टाँगी गई हो, न केवल व्यर्थ जाती है बल्कि बच्चों का अपमान भी करती है।

शुरुआत के बाद

लिखने के शिक्षण की असली चुनौती तब शुरू होती है जब बच्चे लिखने के बुनियादी कौशल में दक्ष हो चुके हों। चुनौती इन दो बातों का विकास करने की है:

1. श्रोता बुद्धि

2. अपनी बात पहुँचाने यानी संप्रेषण की इच्छा

इन दो उद्देश्यों को पाने के लिए अध्यापक को हर छोटी गतिविधि का आयोजन करते समय दूरगामी परिप्रेक्ष्य सामने रखना होगा। यहाँ एक बार फिर याद रखना जरूरी है कि श्रोता-बुद्धि और संप्रेषण की इच्छा का संबंध लिखने और बातचीत दोनों से है। इसलिए बातचीत की गतिविधियों का लाभ लेखन को मिलेगा और लेखन की गतिविधियों का लाभ बातचीत को।

श्रोता बुद्धि के लिए जरूरी है कि लिखते वक्त हमारे मन में कोई निश्चित व्यक्ति हो। संप्रेषण की इच्छा के लिए जरूरी है कि लिखने का कोई निश्चित उद्देश्य हमारे सामने हो। बच्चों का लेखन-चाहे वह शब्दों में हो, वाक्यों या छोटी कहानी में हो- प्रायः अध्यापक के लिए होता है। श्रोता बुद्धि के विस्तार के लिए अध्यापक अलग अलग गतिविधियों में अलग अलग 'श्रोता' (या पाठक) सुझा सकता है, जैसे अगली सीट पर बैठा बच्चा, कक्षा का कोई अन्य सदस्य, किसी दूसरी कक्षा के बच्चे माता-पिता। आधी छुट्टी में स्कूल आने वाला कुत्ता, बस, पड़ोसी गाँव या शहर के बच्चे- इस तरह की कल्पनाशील संभावनाएँ लिखने के अभ्यास में जान डाल सकती हैं। बच्चे जैसे-जैसे बड़े होंगे, उनकी श्रोता-बुद्धि का विस्तार होगा और उसमें समाज के विभिन्न काम धंधों में लगे लोग शामिल होते जाएँगे।

अध्यापक को भाषा के उन विशेष विन्यासों को पहचानने की कोशिश करनी चाहिए जिनका प्रयोग बच्चा किसी निश्चित पाठक तक पहुँचने के लिए कर रहा है। इस तरह के प्रयोगों को बढ़ावा देना अध्यापक की एक विशेष जिम्मेदारी है। उदाहरण के लिए यदि हम बच्चों से यह बताने को कहें कि फल्लों कुत्ता उन्हें क्यों अच्छा लगता है तो उन्हें कोई ऐसी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करना जरूरी है जो कुत्ते की समझ में आ सके। कुत्ते से कहीं जाने वाली बात की विषयवस्तु और शैली किसी दोस्त से कही जा सकने वाली बात से भिन्न होगी। कुत्ते से हम कह सकते हैं, 'रोटी खा लो।' दोस्त से हम कहेंगे, चलो, अब खाना खा लें। किसी निश्चित श्रोता या पाठक के लिए विषयवस्तु का चुनाव शब्दों, मुहावरों और वाक्य की संरचना पर असर डालता है। पर हमें शब्दों और संरचनाओं को अलग से सिखाने की जरूरत नहीं है। जब बच्चों को तरह-तरह के पाठकों के लिए लिखने का मौका मिलेगा तो वे अपने शब्दों और संरचनाओं की अर्थवत्ता स्वयं समझने लगेंगे। कहने के लिए बच्चे के पास कुछ है या नहीं, यह बात बच्चे के व्यक्तित्व के कई पहलुओं पर निर्भर है। सबसे महत्वपूर्ण पहलू है अपने दृष्टिकोण में विश्वास के विकास की संभावना बहुत कम है। ऐसा बच्चा कुछ कहने के लिए उत्साहित महसूस करे यह भी जरा मुश्किल है। जब ऐसे बच्चे से कुछ कहने या लिखने के लिए कहा जाता है तो प्रायः उसका उत्तर होगा कि 'मुझे कुछ नहीं कहना है।' बच्चा ठीक ये शब्द भले न कहे, पर वह इस बात को व्यक्त कर देगा कि उसके पास कहने को कुछ नहीं है। यदि आप ऐसे बच्चों के साथ काम कर रहे हों तो आपके सामने दोगुनी चुनौती है क्योंकि आपको सबसे पहले उनके आत्मविश्वास की-दुनिया के प्रति अपने नजरिए की वैधता की पुनर्रचना करनी होगी।

अध्यापक की प्रतिक्रिया

एक बार बच्चे लिखना सीख लें, इसके बाद उनकी प्रगति बहुत कुछ अध्यापक की प्रतिक्रियाओं पर निर्भर होती है। हमारे देश के बहुत-से प्राइमरी स्कूलों में अध्यापक की प्रतिक्रिया के तौर पर बच्चे को सिर्फ अपनी व्याकरण या हिज्जे की गलतियों के सुधार मिलते हैं। बच्चों की कापियाँ लाल स्याही से किए गए सुधारों

से रंगी रहती हैं। दूसरी तरफ जब बच्चा हर चीज ठीक लिखकर लाता है तो अध्यापक केवल सही या चिह्न बनाकर दस्तखत कर देता है। ये दोनों ही प्रतिक्रियाएँ अधूरी और हानिप्रद हैं। बच्चे की गलतियाँ सुधारने या सही का चिह्न लगाने के अलावा अध्यापक को बच्चे के लेखन की प्रतिक्रिया में कुछ न कुछ स्वयं भी लिखना चाहिए। उसे पढ़कर क्या आपको किसी बात की याद आई? यदि बच्चे का लिखा अच्छा है तो क्या? इस विषय पर और कुछ क्या लिखा जा सकता था? क्या किसी ने एकदम भिन्न ढंग से लिखा है? लेखन पर अपनी प्रतिक्रिया देने के ऐसे सैकड़ों तरीके हो सकते हैं। जिस तरह बच्चे से बात करते समय आप उसकी बात को विस्तार देते हैं, इसी तरह बच्चे का लेखन पढ़कर आपको उसे विस्तार देना है। बच्चे की कापी पर एक-दो वाक्य लिखकर आप उसे इस बात का प्रमाण देंगे कि आप लेखन को एक यांत्रिक क्रिया नहीं, एक तरह का संवाद मानते हैं। आप भले व्याकरण का अभ्यास देख रहे हों (और यह तो आपको अक्सर करना होगा), आप कोई न कोई दिलचस्प और व्यक्तिगत बात संक्षेप में लिख सकते हैं। यह बात बच्चे के लिए आपके हस्ताक्षर से ज्यादा महत्वपूर्ण होगी।

गलतियाँ सुधारने के लिए उन पर चिह्न लगाना काफी नहीं है। यदि आप गलतियों को सिर्फ पहचान कर उन पर लाल स्याही से निशान बना देते हैं तो आप बच्चे की कमजोरी के उदाहरणों को ही उजागर करते हैं। ज्यादा आवश्यक यह है कि जहाँ बच्चे को सफलता मिली है वहाँ उसे पहचानें और जहाँ गलती हुई है उसका विकल्प दें। गलती को पहचानने और ठीक करने में आप बच्चे की सक्रिय मदद भी ले सकते हैं। यदि आपको किसी शब्द के हिज्जे ठीक करने हैं तो सही हिज्जे लिखकर उस शब्द को तीन तरह के हिज्जों में लिख दीजिए और बच्चे से कहिए कि सही हिज्जे पहचानें यदि आप गलतियाँ पकड़ने में बच्चे को सक्रिय बनाते हैं तो उसमें अपने लेखन को समीक्षा की दृष्टि से देखने की क्षमता विकसित होगी।

कुछ गतिविधियाँ

एक

जानी-पहचानी चीजें

घर में रोज काम आने वाली चीजों और अन्य जानी-पहचानी चीजों की चर्चा बच्चों से कीजिए। बच्चों से कहिए कि बर्तन, कपड़े और गाड़ियाँ जैसे समूह-नामों के अंतर्गत आने वाली अलग-अलग चीजों के नाम बताएँ, जैसे बर्तन के अन्तर्गत चम्मच, देगची, पतीली आदि। एक समूह में आने वाली चीजों की सूची बोर्ड पर बनाइए।

बच्चों को दो समूहों में बैठाइए। पहले समूह का हर बच्चा बोर्ड पर लिखी सूची में से कोई एक नाम अपनी कापी पर उतारेगा, जैसे कोई बच्चा लिखेगा-चम्मच, कोई लिखेगा-कड़ाही। दूसरे समूह के बच्चे एक-एक करके कोई एक चीज, जिसका नाम बोर्ड पर दिया है, पहले समूह से माँगेंगे। जिस भी बच्चे ने उस चीज का नाम अपनी कापी में नोट किया है, वह उसे माँगने वाले बच्चे के पास जाकर चीज का नाम लिखने में मदद करेगा।

दो

नामों का संग्रह

आप जहाँ कहीं भी रहते हैं वहाँ तरह-तरह के नाम आपको दुकानों, बसों या मील के पत्थरों और

दीवारों पर मिल जाएँगे। गाँवों में दीवारों पर लिखे नारे या पोस्टर और विज्ञापनों में लिखी जानकारी भी काम आ सकती है।

बच्चों से कहिए कि वे घर से स्कूल के रास्ते में दिखने वाले नामों या संदेशों की सूची बनाएँ। सारे नामों को ब्लैकबोर्ड पर लिख कर एक-एक कर बच्चों से उनकी व्याख्या (यानी वह कहाँ लिखा है, उसका अर्थ क्या है) करवाइए।

तीन शब्दपूर्ति

बच्चों के जोड़े बना दीजिए। एक बच्चा कोई शब्द लिखना शुरू करेगा, और दूसरा बच्चा उसे पूरा करेगा। वे तब तक अपनी बारी लेते जाएँगे जब तक दोनों 10 शब्द सफलतापूर्वक पूरे नहीं लिख लेते।

चार सिर्फ एक शब्द

पाँच-पाँच बच्चों के समूह बना दीजिए। हर समूह के पास एक कागज या कापी और एक पेंसिल होगी। हर टोली में एक बच्चे को 'नेता, यानी शुरू करने वाला नियुक्त कर दीजिए।

नेता अपने मन में कोई वाक्य सोचेगा पर कागज पर वह सिर्फ एक शब्द लिख कर कागज और पेंसिल अगले बच्चे को थमा देगा। यह बच्चा भी सिर्फ एक शब्द जोड़ेगा। यह शब्द ऐसा होना चाहिए जो पिछले शब्द से शुरू हुए वाक्य को आगे बढ़ाता हो। इस तरह कागज टोली में घूमता रहेगा जब तक वाक्य पूरा न हो जाए।

टोली का कोई भी सदस्य यह दावा कर सकता है कि वाक्य बीमार पड़ गया है, अतः उसे छोड़ दिया जाए। यदि बाकी बच्चे इस दावे से सहमत हो तो कागज नेता को वापस दे दिया जाएगा और वह एक नए वाक्य का पहला शब्द लिखेगा।

पाँच नक्शा बनाना

बच्चों से पूछिए कि वे घर कैसे पहुँचते हैं पहले उन्हें यह बताइए कि आप स्वयं कैसे घर पहुँचते हैं—रास्ते में पड़ने वाली जगहों और चीजों का संक्षेप में विवरण दीजिए।

जब सभी बच्चों को अपने घर का रास्ता बताने का मौका मिल चुका हो तब उनसे कहिए कि जो रास्ता उन्होंने अभी बताया है उसे एक नक्शा बनाकर दिखाएँ। स्वयं अपने घर का रास्ता ब्लैकबोर्ड पर बनाकर दिखाइए। बच्चे जब अपने नक्शे बनाने में व्यस्त हो तो उनके पास जाकर नक्शे में दिखाई गई किसी एक चीज जैसे पेड़, दुकान, डाक का डिब्बा, का नाम नक्शे में लिख दीजिए। बच्चों से यह नाम नक्शे के नीचे उतारने के लिए कहिए।

अगली बार यह गतिविधि किसी और जगह जाने के रास्ते को लेकर कीजिए, जैसे मेरे दोस्त का घर, सब्जी मंडी, अस्पताल।

हर बार नक्शे में लिखने के लिए शब्दों की संख्या बढ़ाइए।

छह इर्दगिर्द की जगहें

यह पिछली गतिविधि का विस्तार है लेकिन इसमें बच्चे अपने आसपास की जगहों के नक्शे बनाएँगे, न कि वहाँ जाने के रास्ते के।

उदाहरणतया

स्कूल का पिछवाड़ा
कक्षा का कमरा
पास स्थित तालाब या नदी

नक्शे में दिखाई गई किसी एक चीज का नाम उचित जगह पर लिख दीजिए। बच्चे से यही नक्शा फिर बनाने को कहिए और इस बार उसी से कहिए कि वह उस चीज को दिखाने की जगह उसका नाम नक्शे में लिखे।

सात वहाँ पहुँचना

बच्चों से कहिए कि अपने बड़ों से आसपास के गाँवों और शहरों के नाम पूछ कर आँ। इन नामों की सूची बोर्ड पर बनाइए और बच्चों से कहिए कि ये नाम उतार लें।

अब इन नामों को दिशा के अनुसार रखकर बोर्ड पर एक सरल नक्शा बनाइए। नाम बच्चों में बाँटकर बच्चों को नक्शे के अनुसार बैठाइए। दिशा और दूरी को लेकर एक संक्षिप्त संवाद रचिए।

उदाहरणतया

‘मैं झाँसी जा रहा हूँ।’
‘झाँसी कहाँ है?’
‘उत्तर में।’
‘कितनी दूर...’
दूरी और दिशा से संबंधित शब्द लिखना सिखाइए।

आठ तस्वीर का वर्णन

‘बाते करना’ अध्याय में दी गई आठवीं गतिविधि देखिए और उसे कुछ बड़े बच्चों के बीच आयोजित कीजिए। प्रश्नों के जवाब बताने की जगह लिखने को कहिए।

विज्ञापनों, पत्रिकाओं आदि के साथ साथ बच्चों द्वारा स्वयं बनाई गई तस्वीरें इस्तेमाल कीजिए। पहले पूछिए कि चित्र में क्या दिखाया गया है, फिर और जटिल प्रश्नों की तरफ़ जाइए।

नौ आवाजों की सूची

पहली बार इस गतिविधि को आयोजित करते समय चार-पाँच बड़े बच्चों को शामिल कर लीजिए। ये बच्चे 'रिकार्डर' का काम करेंगे।

बच्चों को पाँच या छह-छह की टोलियों में बाँट दीजिए। हर टोली को अपने सदस्यों द्वारा पहचानी गई सारी आवाजों की सूची बनानी है। हर टोली थोड़ा चल-फिर सकती है और बारी बारी से कुछ मिनट के लिए दरवाजे पर खड़े होकर या स्कूल के पीछे जाकर वहाँ होती हुई आवाजें सुन सकती है। जैसे ही कोई सदस्य एक नई आवाज पहचाने, वह रिकार्डर से उसे दर्ज करने को कहे। आवाजें कुछ भी हो सकती हैं, जैसे दरवाजे की चूँ, पत्तियों का हिलना आदि।

सारी टोलियों के वापस आने पर हर टोली का रिकार्डर अपनी सूची पढ़कर सुनाएगा। जिस सदस्य ने जो आवाजें सूची में शामिल कराई हो, उन्हें वह सूची में पहचाने और अलग कागज पर उतारे।

दस कविता बनाना

पाँच पाँच की टोलियाँ बनाइए। हर टोली को एक कविता की चार पंक्तियाँ दे दीजिए और कहिए कि टोली के सदस्य चार पंक्तियाँ और जोड़ें। हर टोली सोचने-बहस करने को पंद्रह बीस मिनट के लिए कुछ दूर एकांत में जा सकती है।

अभ्यास

- लिखना सिखाने से पूर्व की क्या तैयारियाँ हैं? और क्यों?
- गतिविधि नौ किस तरह से लिखने में मदद करेगी?
- एक स्कूल का शिक्षक बच्चों को क अक्षर लिखना सिखाने के लिए कहता है कि क दस बार सभी लिखो। दूसरा स्कूल का शिक्षक बच्चों को क से बनने वाले शब्दों को बच्चों से पूछता है। फिर उन्हें बोर्ड पर लिखता है। अब बच्चों को क पहचान कर गोला लगाने के लिए कहता है। फिर किसी चार्ट पर लिखी कविता में से क पहचानने को कहता है। फिर उनसे क लिखने को कहता है।

आप किस शिक्षक के सिखाने के प्रयास को सही मानते हैं और क्यों?

- बच्चों के लेखन पर अपनी प्रतिक्रिया देते समय किन दो मुख्य बातों का ख्याल रखेंगे?
- बच्चों का लेखन क्रिया का शुरुआत ड्राइंग अथवा रंगकरण, चित्रकारी आदि के करना क्यों आवश्यक है?



सीखने के प्रतिफल, कक्षा - 1

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें-

- अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बातचीत करने की भरपूर आजादी और अवसर हो। अपनी बात कहने (भाषिक और सांकेतिक माध्यम से) के लिए अवसर एवं प्रोत्साहन हों।
- बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के बच्चे कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसर उपलब्ध हों। इससे भाषाओं को कक्षा में समुचित स्थान मिल सकेगा और उनका शब्द-भंडार, अभिव्यक्तियों का भी विकास करने के अवसर मिल सकेंगे।
- कहानी, कविता आदि को बोलकर सुनाने के अवसर हों और उस पर बातचीत करने के अवसर हों।
- हिंदी में सुनी गई बात, कविता, खेल-गीत, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने-सुनाने के अवसर उपलब्ध हों।
- प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों।
- कक्षा अथवा विद्यालय (पढ़ने का कोना/पुस्तकालय) में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की एवं विभिन्न भाषाओं (बच्चों की अपनी भाषा/एँ, हिंदी आदि) में रोचक सामग्री; जैसे - बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो-विडियो सामग्री उपलब्ध हों। सामग्री ब्रेल में भी उपलब्ध हों,

सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)

बच्चे -

- LH101.** विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/ और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं; जैसे- कविता, कहानी, सुनाना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना।
- LH102.** सुनी सामग्री (कहानी, कविता आदि) के बारे में बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं, प्रश्न पूछते हैं।
- LH103.** भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के साथ खेलने का आनन्द लेते हैं; जैसे - इन्ना, बिन्ना, तिन्ना।
- LH104.** प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) और गैर-प्रिंट सामग्री (जैसे, चित्र या अन्य ग्राफिक्स) में अन्तर करते हैं।
- LH105.** चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हैं।
- LH106.** चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग-अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं।
- LH107.** पढ़ी कहानी, कविताओं आदि में लिपि चिह्नों/शब्दों/वाक्यों आदि को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर, समझकर उनकी पहचान करते हैं।
- LH108.** संदर्भ की मदद से आस-पास मौजूद प्रिंट के अर्थ और उद्देश्य का अनुमान लगाते हैं, जैसे -टॉफी के कवर पर लिखे नाम को 'टॉफी', 'लॉलीपॉप' या 'चॉकलेट' बताना।
- LH109.** प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों को पहचानते हैं, जैसे - 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, यह

<p>कमजोर दृष्टि वाले बच्चों को ध्यान में रखते हुए कुछ सामग्री बड़े अक्षरों में भी छपी हुई हों।</p> <ul style="list-style-type: none"> ● तरह-तरह की कहानियों, कविताओं को चित्रों के आधार पर अनुमान लगाकर पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों। ● विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे – किसी कहानी में किसी जानकारी को खोजना, कहानी में घटी विभिन्न घटनाओं के क्रम को तय करना, उसे अनुभव संसार से जोड़कर देख पाना आदि। ● सुनी, देखी, बातों को अपनी तरीके से कागज़ पर उतारने के अवसर हों। ● बच्चे अक्षरों की आकृति बनाना शुरू करते हैं भले ही उनके द्वारा बनाए गए अक्षरों में सुघड़ता न हो, इसे कक्षा में स्वीकार किया जाए। ● बच्चों द्वारा अपनी वर्तनी गढ़ने की प्रवृत्ति को भाषा सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा समझा जाए। 	<p>कहाँ लिखा हुआ है? / इसमें 'नाम' कहाँ लिखा हुआ है? / 'नाम' में 'म' पर अँगुली रखो।</p> <p>LH110. परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री (जैसे – मिड-डे मीड का चार्ट, अपना नाम, कक्षा का नाम, मनपसन्द किताब का शीर्षक आदि) में रूचि दिखाते हैं, बातचीत करते हैं और अर्थ का खोज में विविध प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं जैसे केवल चित्रों या चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुप्रास लगाना, अक्षर ध्वनि संबंध का इस्तेमाल करना, शब्दों को पहचानना, पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमाना लगाना।</p> <p>LH111. हिंदी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।</p> <p>LH112. स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनते हैं और पढ़ने की कोशिश करते हैं।</p> <p>LH113. लिखना सीखने की प्रक्रिया के दौरान अपने विकासात्मक स्तर के अनुसार चित्रों, आड़ी-तिरछी रेखाओं (कीरम-काटे), अक्षर-आकृतियों, स्व-वर्तनी (इनवेंटिड स्पैलिंग) और स्व-नियंत्रित लेखन (कनवैशनल राइटिंग) के माध्यम से सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपनी तरीके से लिखने का प्रयास करते हैं।</p> <p>LH114. स्वयं बनाए गए चित्रों के नाम लिखते (लेबलिंग) हैं, जैसे-हाथ के बने पंखे का चित्र बनाकर उसके नीचे 'बीजना' (ब्रजभाषा, जो कि बच्चे की घर की भाषा हो सकती है।) लिखना।</p>
--	--

सीखने के प्रतिफल, कक्षा-2

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें :-

- अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बातचीत करने की भरपूर आज़ादी और अवसर हों।
- हिंदी में सुनी गई बात, कविता, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने-सुनाने/ प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों।
- बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के बच्चे कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसर उपलब्ध हों। इससे भाषाओं को कक्षा में समुचित स्थान मिल सकेगा और उनका शब्द-भंडार, अभिव्यक्तियों का भी विकास करने के अवसर मिल सकेंगे।
- 'पढ़ने का कोना' में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की और विभिन्न भाषाओं (बच्चों की अपनी भाषा/एँ, हिंदी आदि) में रोचक सामग्री; जैसे - बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो-विडियो सामग्री उपलब्ध हों।
- चित्रों के आधार पर अनुमान लगाकर कर तरह-तरह की कहानियों, कविताओं को पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों।
- विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे - किसी कहानी में

सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)

बच्चे -

- LH201.** विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे- जानकारी पाने के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना, अपना तर्क देना आदि।
- LH202.** कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से सुनकर अपनी भाषा में बताते/ सुनाते हैं।
- LH203.** देखी, सुनी बातों, कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
- LH204.** अपनी निजी जिंदगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को सुनायी जा रही सामग्री; जैसे - कविता, कहानी, पोस्टर, विज्ञापन आदि से जोड़ते हुए बातचीत में शामिल करते हैं।
- LH205.** भाषा में निहित शब्दों और ध्वनियों के साथ खेल का मज़ा लेते हुए लय और तुक वाले शब्द बनाते हैं; जैसे - एक था पहाड़, उसका भाई था दहाड़, दोनों गए खेलने।
- LH206.** अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि कहते/सुनाते हैं/आगे बढ़ाते हैं।
- LH207.** अपने स्तर और पसन्द के अनुसार कहानी, कविता, चित्र पोस्टर आदि आनंद के साथ पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/ प्रश्न पूछते हैं।
- LH208.** चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हैं।
- LH209.** चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रहीं अलग-अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं।

किसी जानकारी को खोजना, कहानी में घटी विभिन्न घटनाओं के क्रम को तय करना, किसी घटना के होने के लिए तर्क दे पाना, पात्र के संबंध में अपनी पसंद या नापसंद के बारे में बता पाना आदि।

● कहानी, कविता आदि को बोलकर, पढ़कर सुनाने के अवसर हों और उस पर बातचीत करने के अवसर हों।

● सुनी, देखी, पढ़ी बातों को अपने तरीके से कागज़ पर उतारने के अवसर हों। ये चित्र भी हो सकते हैं, शब्द भी और वाक्य भी।

● बच्चे अक्षरों की आकृति को बनाने में अपेक्षाकृत सुघड़ता का प्रदर्शन करते हैं। इसे कक्षा में प्रोत्साहित किया जाए।

● बच्चों द्वारा अपनी वर्तनी गढ़ने की प्रवृत्ति को भाषा सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा समझा जाए।

● संदर्भ और उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त शब्दों और वाक्यों का चयन करने, उनकी संरचना करने के अवसर उपलब्ध हों।

LH210. परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री में रुचि दिखाते हैं और अर्थ की खोज में विविध प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं; जैसे – चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर-ध्वनि संबंध का इस्तेमाल करना, शब्दों को पहचानना, पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना।

LH211. प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों की अवधारणा को समझते हैं, जैसे – 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, इस वाक्य में कितने शब्द हैं? 'नाम' शब्द में कितने अक्षर हैं या 'नाम' शब्द में कौन-कौन से अक्षर हैं?

LH212. हिंदी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।

LH213. स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ने का प्रयास करते हैं।

LH214. स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत चित्रों, आड़ी-तिरछी रेखाओं (कीरम-काटे), अक्षर आकृतियों से आगे बढ़ते हुए स्व-वर्तनी का उपयोग और स्व-नियंत्रित लेखन (कनवैशनल राइटिंग) करते हैं।

LH215. सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से और तरह-तरह से चित्रों/शब्दों/वाक्यों द्वारा (लिखित रूप से) अभिव्यक्त करते हैं।

LH216. अपनी निजी जिंदगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को अपने लेखन में शामिल करते हैं।

LH217. अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि आगे बढ़ाते हैं।

सीखने के प्रतिफल, कक्षा-3

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की संप्राप्ति (Learning Ourcomes)
<p>सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें :-</p> <ul style="list-style-type: none"> • अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बातचीत करने की भरपूर आजादी और अवसर हों। • हिन्दी में सुनी गई बात, कविता, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने-सुनाने/ प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने, प्रतिक्रिया देने के अवसर उपलब्ध हों। • बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिन्दी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के बच्चों कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसर उपलब्ध हों। इससे भाषाओं को कक्षा में समुचित स्थान मिल सकेगा और उनका शब्द-भंडार, अभिव्यक्तियों का भी विकास करने के अवसर मिल सकेंगे। • 'पढ़ने का कोना/पुस्तकालय' में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की रोचक सामग्री; जैसे - बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो-वीडियो सामग्री उपलब्ध हो। • तरह-तरह की कहानियों, कविताओं, पोस्टर आदि को चित्रों और संदर्भ के आधार पर समझने-समझाने के अवसर उपलब्ध हों। • विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों का कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे - किसी कहानी में किसी जानकारी को खोजना, किसी जानकारी 	<p>बच्चे -</p> <p>LH301. कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से समझते हुए सुनते और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।</p> <p>LH302. कहानी, कविता आदि को उपयुक्त उतार-चढ़ाव, गति, प्रवाह और सही पुट के साथ सुनाते हैं।</p> <p>LH303. सुनी हुई रचनाओं की विषय-वस्तु घटनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, राय बताते हैं/अपने तरीके से (कहानी, कविता आदि) अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं।</p> <p>LH304. आस-पास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं और विभिन्न स्थितियों में हुए अपने अनुभवों के बारे में बताते, बातचीत करते और प्रश्न पूछते हैं।</p> <p>LH305. कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को समझते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं।</p> <p>LH306. तरह-तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक/लिखित रूप से) देते हैं।</p> <p>LH307. अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं/शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक, सांकेतिक) देते हैं।</p>

को निकाल पाना, किसी घटना या पात्र के संबंध में तर्क, अपनी राय दे पाना आदि।

- सुनी, देखी बातों को अपने तरीके से, अपनी भाषा में लिखने के अवसर हों।
- अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर हों।
- संदर्भ और उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त शब्दों और वाक्यों का चयन करने, उनकी संरचना करने के अवसर उपलब्ध हों।
- अपना परिवार, विद्यालय, मोहल्ला, खेल का मैदान, गाँव की चौपाल जैसे विषयों पर अथवा स्वयं विषय का चुनाव कर अनुभवों को लिखकर एक-दूसरे से बाँटने के अवसर हों।
- एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उन पर अपनी राय देने, उनमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग-अलग ढंग से लिखने के अवसर हों।

LH308. अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ सुनिश्चित करते हैं।

LH309. तरह-तरह की कहानियों, कविताओं/रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे – शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विभिन्न विराम चिह्नों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग करते हैं।

LH310. अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं/ शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं।

LH311. स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व-नियंत्रित लेखन (कनवैशनल राइटिंग) करते हैं।

LH312. विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में शब्दों के चुनाव, वाक्य संरचना और लेखन के स्वरूप (जैसे-दोस्त को पत्र लिखना, पत्रिका के संपादक को पत्र लिखना) को लेकर निर्णय लेते हुए लिखते हैं।

LH313. विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों, जैसे- पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।

LH314. अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (लिखित/ब्रेल लिपि आदि में) देते हैं।

सीखने के प्रतिफल, कक्षा-4

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)
<p>सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें :-</p> <ul style="list-style-type: none"> विभिन्न विषयों, स्थितियों, घटनाओं, अनुभवों, कहानियों, कविताओं आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने-सुनाने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों। 'पढ़ने का कोना/पुस्तकालय' में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की रोचक सामग्री; जैसे - बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो-वीडियो सामग्री, अखबार आदि उपलब्ध हों। तरह-तरह की कहानियों, कविताओं, पोस्टर आदि को पढ़कर समझने-समझाने, उस पर अपनी प्रतिक्रिया देने, बातचीत करने, प्रश्न करने के अवसर उपलब्ध हों। विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे - किसी घटना या पात्र के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया, राय, तर्क देना, विश्लेषण करना, आदि। कहानी, कविता आदि को बोलकर पढ़ने-सुनाने और सुनी, देखी, पढ़ी बातों को अपने तरीके से अपनी भाषा में कहने और लिखने (भाषिक और सांकेतिक माध्यम से) के अवसर एवं प्रोत्साहन उपलब्ध हों। ज़रूरत और संदर्भ के अनुसार अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर उपलब्ध हों। एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उस पर अपनी राय देने, उसमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग-अलग ढंग से लिखने के अवसर हों। 	<p>बच्चे -</p> <p>LH401. दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते और प्रश्न पूछते हैं।</p> <p>LH402. सुनी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बात के लिए तर्क देते हैं।</p> <p>LH403. कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं।</p> <p>LH404. भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते और उसका इस्तेमाल करते हैं।</p> <p>LH405. विविध प्रकार की सामग्री (जैसे समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका आदि) में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील बिन्दुओं को समझते और उन पर चर्चा करते हैं।</p> <p>LH406. पढ़ी हुई सामग्री और निजी अनुभवों को जोड़ते हुए उनसे उभरी संवेदनाओं और विचारों की (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं।</p> <p>LH407. अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री (बाल साहित्य/समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ते हैं।</p> <p>LH408. अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ ग्रहण करते हैं।</p> <p>LH409. पढ़ने के प्रति उत्सुक रहते हैं और पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ते हैं।</p>

<ul style="list-style-type: none"> • अपनी बात को अपने ढंग से/सृजनात्मक तरीके से अभिव्यक्त (मौखिक, लिखित, सांकेतिक रूप से) करने की आज़ादी हो। • आस-पास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं (जैसे—मेरे घर की छत से सूरज क्यों नहीं दिखता? सामने वाले पेड़ पर बैठने वाली चिड़िया कहाँ चली गई?) को लेकर प्रश्न करने, सहपाठियों से बातचीत या चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों। • कक्षा में अपने साथियों की भाषाओं पर गौर करने के अवसर हों; जैसे – आम, रोटी, तोता आदि शब्दों को अपनी-अपनी भाषा में कहे जाने के अवसर उपलब्ध हों। • विषय-वस्तु के संदर्भ में भाषा की बारीकियों और उसकी नियमबद्ध प्रकृति को समझने और उनका प्रयोग करने के अवसर हों। • अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे—गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझने और उसका संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार इस्तेमाल करने के अवसर हों। • पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील बिन्दुओं को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों। 	<p>LH410. पढ़ी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बात के लिए तर्क देते हैं।</p> <p>LH411. स्तरानुसार अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे— गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली की सराहना करते हैं।</p> <p>LH412. भाषा की बारीकियों, जैसे –शब्दों की पुनरावृत्ति, सर्वनाम, विशेषण, जेंडर, वचन आदि के प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं।</p> <p>LH413. किसी विषय पर लिखते हुए शब्दों के बारीक अंतर को समझते हुए सराहते हैं और शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए लिखते हैं।</p> <p>LH414. विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (बुलेटिन बोर्ड पर लगाई जाने वाली सूचना, सामान की सूची, कविता, कहानी, चिट्ठी के अनुसार लिखते हैं।</p> <p>LH415. स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जाँचते हैं और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं।</p> <p>LH416. अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं।</p> <p>LH417. विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम चिह्नों, जैसे पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।</p> <p>LH418. अपनी कल्पना से कहानी, कविता, वर्णन आदि लिखते हुए भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं।</p>
---	---

सीखने के प्रतिफल, कक्षा-5

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)
<p>सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें:-</p> <ul style="list-style-type: none"> • विभिन्न विषयों, स्थितियों, घटनाओं, अनुभवों, कहानियों, कविताओं आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में (मौखिक/लिखित/सांकेतिक रूप से) कहने-सुनाने/प्रश्न पूछने, टिप्पणी करने, अपनी राय देने की आज़ादी हो। • पुस्कालय/कक्षा में अलग-अलग तरह की कहानियाँ, कविताएँ अथवा/बाल साहित्य, स्तरानुसार सामग्री, साइनबोर्ड, होर्डिंग्स, अखबारों की कतरने उनके आस-पास के परिवेश में उपलब्ध हों और उन पर चर्चा करने के मौके हों। • तरह-तरह की कहानी, कविताओं, पोस्टर आदि को संदर्भ के अनुसार पढ़कर समझने-समझाने के अवसर उपलब्ध हों। • सुनी, देखी, पढ़ी बातों को अपने तरीके से, अपनी भाषा में लिखने के अवसर हों। • ज़रूरत और संदर्भ के अनुसार अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर हों। • एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उस पर अपनी राय देने, उसमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग-अलग ढंग से लिखने के अवसर हों। • आस-पास होने वाली गतिविधियों/घटने वाली घटनाओं को लेकर प्रश्न करने, बच्चों से बातचीत या चर्चा करने, टिप्पणी करने, राय देने के अवसर उपलब्ध हों। • विषय-वस्तु के संदर्भ में भाषा की बारीकियों और उसकी नियमबद्ध प्रकृति को समझने और 	<p>बच्चे -</p> <p>LH501. सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि की विषय-वस्तु, घटनाओं चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं/अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं/अपनी बात के लिए तर्क देते हैं/निष्कर्ष निकालते हैं।</p> <p>LH502. अपने आस-पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर मौखिक रूप से अपने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं।</p> <p>LH503. भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी (मौखिक) भाषा गढ़ते हैं।</p> <p>LH504. विभिन्न प्रकार की सामग्री (अखबार, बाल साहित्य, पोस्टर आदि) में आए संवेदनशील बिन्दुओं पर (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्त करते हैं, जैसे -'ईदगाह' कहानी पढ़ने के बाद बच्चा कहता है - मैं भी अपनी दादी की खाना बनाने में मदद करता हूँ।</p> <p>LH505. विभिन्न स्थितियों में उद्देश्यों (बुलेटिन पर लगाई जाने वाली सूचना, कार्यक्रम की रिपोर्ट, जानकारी आदि प्राप्त करने के लिए) के लिए पढ़ते और लिखते हैं।</p> <p>LH506. अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि)को समझते हुए पढ़ते और उसके बारे में बताते हैं।</p> <p>LH507. सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं/अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं/अपनी बात के लिए तर्क देते हैं/निष्कर्ष निकालते हैं।</p>

उनका प्रयोग करने के अवसर हों।

- नए शब्दों को चित्र शब्दकोश/शब्दकोश में देखने के अवसर उपलब्ध हों।
- अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे— गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझने और उसका संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार इस्तेमाल करने के अवसर हों।
- पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील मुद्दों को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों।

LH508. अपरिचित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजते हैं।

LH509. स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जांचते हैं और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं। जैसे— किसी घटना की जानकारी के बारे में बताने के लिए स्कूल की भित्ति पत्रिका के लिए लिखना और किसी दोस्त को पत्र लिखना।

LH510. भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते हैं और उसे अपने लेखन/ब्रेल में शामिल करते हैं।

LH511. भाषा की व्याकरणिक इकाइयों, जैसे— कारक—चिह्न, क्रिया, काल, विलोम आदि की पहचान करते हैं और उनके प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं।

LH512. विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम चिह्नों, जैसे— पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न, उद्धरण चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।

LH513. स्तरानुसार अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे — गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझते हैं और संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं।

LH514. अपने आस-पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर लिखित रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

LH515. उद्देश्य और संदर्भ के अनुसार शब्दों, वाक्यों, विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करते हुए लिखते हैं।

LH516. पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए संवेदनशील बिन्दुओं पर लिखित/ब्रेल लिपि में अभिव्यक्ति करते हैं।

LH517. अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते हैं। कविता, कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं।



छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध करमा नृत्य

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर